श्रीः ।

# सामुद्रिकशास्त्रम् ।

सान्वयभाषाटीकया सहितम् ।

★

★ ★

मुद्रक व प्रकाशक-

**खेमराज श्रीकृष्णदास,**

अध्यक्ष-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई.

संवत २००६, शके १८७१.

॥ श्रीः ॥

श्रीसमुद्रेण प्रोक्तम्

# सामुद्रिकशास्त्रम् ।

श्रीयुतपण्डित घनश्यामदास हमीरपुरीय भूतपूर्व डिपुटि इन्स्पेक्टर इत्येतस्य साहाय्येन अर्गलपुर निवासि राधाकृष्णमिश्रेण कृतया

सान्वयभाषाटीकया सहितम् ।

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष-"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,

बम्बई.

संवत् २००६. शके १८७१.

मुद्रक और प्रकाशक-

**खेमराज श्रीकृष्णदास,**

मालिक-"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस, बम्बई.

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयाध्यक्षाधीन है।

# प्रस्तावना।

—०—

यह सामुद्रिक क्या वस्तु है और इसमें क्या विषय है ? यह अवश्य जानने योग्य विषय है, इस वास्ते कुछ थोडासा विषय संक्षेपसे यहांपर लिखता हूँ। यह सामुद्रिक शास्त्र मुख्य एक ज्योतिषका अंग है। जैसे-जातक-ताजक-केरल-रमल और जरूर आदि हैं उसी प्रकार यह सामुद्रिक भी है। इसके उत्पत्तिके विषयमें बहुत वादानुवाद है. कोई कहता है कि, शिवजीने श्रीपार्वती महारानीके प्रति कहा है. कोई कहता है विष्णुभगवानने ही सामुद्रिक नामक ब्राह्मणका अवतार लेकर इसको प्रगट किया है और कोई कहता है समुद्रशायी विष्णु और लक्ष्मीकी सुन्दरता और शुभ लक्षणोंको देखकर नदनदीपति समुद्रदेवने ही यह शास्त्र निर्माण किया, इसीसे इसका सामुद्रिक नाम विख्यात हुआ। जो कुछ हो परन्तु इस शास्त्रके प्राचीन होनेमें सर्व जन निर्विवाद है और अनेक ज्योतिषसंहिता रचयिताओंने इसको अपने ग्रन्थमें स्थान दिया है और एक छोटासा ग्रन्थ पृथक भी मिलता है जो सर्वत्र भाषाटीकासहित छप चुका है, परन्तु उस अल्प ग्रंथमें क्या क्या लिखे और दूसरे "नटभटगणकचिकित्सकमुखकन्दराणि यदि न स्युः" इसके चरितार्थ कर्त्ताओंने उसको कितनी अशुद्धियोंसे दूषित कर दिया सो हम नहीं कह सकते, इस वास्ते मैं बहुत दिनोंसे इसके शुद्ध बृहद्ग्रन्थकी तलाशमें था परन्तु मित्रगण ! 'जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ' ये ईश्वरके नियम सत्य हैं सो मेरे परम मित्र आगरेके रईस सुप्रतिष्ठित पण्डित राधाकृष्णजीने यह सामुद्रिकका सबसे बडा और दुष्प्राप्य सामुद्रिक शास्त्र हमारे पास मुद्रणार्थ भेजा.

इस ग्रन्थको जगद्विख्यात महाराजाधिराज-श्रीराजपालकुलकमलदिवाकर श्रीजगदेव महाराजने अनेक प्राचीन और अर्वाचीन ग्रन्थोंके सहारे ललित आर्या छन्दोंमें अद्भुत प्रकारसे निर्माण किया है, इससे बडा इस विषयका अन्य ग्रन्थ नहीं है, इसके तीन अधिकार (अध्याय) हैं इनमें क्रमसे स्त्री पुरुषोंके प्रत्येक अङ्ग उपांगके शुभाशुभ लक्षणोंका उत्तम रीतिसे ऐसा वर्णन है कि, जैसा अन्य किसी ग्रन्थमें देखनेमें नहीं आता. यह सर्वगुणसम्पन्न ग्रन्थ सर्वोपकारी होय, इस अभिलाषासे उन्हीं पंडित राधाकृष्णजीने पंडित घनश्यामदासजी जोकि, हमीपुरके प्राचीन इन्स्पेक्टरोपाधिकारी थे उनकी सहायतासे इसका अन्वय-सहित सरल हिन्दी भाषाटीका किया और यह 'सोना सुगन्ध' इस वाक्यको चरितार्थ करनेवाला होगया.

सान्वय भाषाटीका सहित इस अद्वितीय सामुद्रिक ग्रन्थको पाकर हमने भी दिव्य पुष्ट टाईप और बढिया चिकने कागजपर अपने "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें मुद्रितकर प्रकाशित किया।

आशा है कि, अनुग्राहक ग्राहक इसे स्वीकार कर स्वयं लाभ उठावेंगे और हमारे परिश्रमको सफल करेंगे।

आपका कृपाकांक्षी—

**खेमराज श्रीकृष्णदास,**

"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस, बम्बई

स्त्रीणां नृणां यत्र शुभाशुभानि चिह्नानि सम्यक् प्रतिपादितानि ।
तद्ध्यस्ति सामुद्रिकमङ्कितं वै शास्त्रं बुधैश्चैरवलोकनीयम् ॥

स्त्री पुरुषोंके शरीरके समस्त शुभाशुभ लक्षण विस्तार पूर्वक जिसमें वर्णित हैं ऐसा अपूर्व मनोहर यह " सामुद्रिकशास्त्र " अत्यन्त शुद्ध सान्वय भाषाटीका सहित "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् यन्त्रालयमें नवीन छपकर तैयार है । यह शास्त्र ज्योतिर्विदोंको परमोपकारक है, पहिले यह समग्रशास्त्र मिलना अतिकठिन था जहां तहां विरल जगह खण्ड२ था, सम्पूर्ण एकत्र मिलनेमें नहीं आता था, अब यह शास्त्र महत्परिश्रमसे समग्र सांगोपांग एकत्र तैयार किया गया है सो इस शास्त्रका आनन्द अवलोकनसे विद्वज्जनोंको प्रतीत होगा । विद्वानोंको ज्योतिषशास्त्रका बहुत भी अवगाहन करनेसे जो फलादेश सामर्थ्य नहीं होती वह इससे अति शीघ्रही होजाती है ।

विद्वज्जनकृपाकांक्षी-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,-बम्बई.

॥ श्रीः ॥

# सामुद्रिकशास्त्रविषयानुक्रमणिका ।


| विषय. | पृष्ठांक. |
|---|---|
| मंगलाचरण । लक्ष्मीसहित विष्णुके लक्षण देख समुद्रका ध्यान करना | १ |
| विष्णुसे लक्ष्मीका कभी वियोग न होना, नेत्रोंके शुभाशुभ लक्षण युक्तका वर्णन, पृथ्वीकी प्रसिद्धिनिरूपण सामुद्रिक शास्त्र कथनका प्रयोजन | २ |
| यह विचारकर समुद्रका सामुद्रिक रचना फिर तिसका नारदादि कृत विस्तार इसकी पृथ्वीमें प्रसिद्धि और दुर्बोधत्व ऐसे भोजादि कृत ग्रन्थ | ३ |
| तिन खण्डितोंको देख और दूसरे संपूर्ण ग्रन्थ देख सामुद्रिकका करना, अंग उपांगोंका वर्णन, पहिले जन्मके शुभाऽशुभलक्षणों का देखना | ४ |
| बाहिर भीतरके भेदसे लक्षणोंका भेद, मुख्यतासे मनुष्योंका शरीर लक्षण वर्णन मनुष्योंके भौंरी आदिका कथन, कल्पवृक्षवत् शरीर वर्णन | ५ |
| पादतल आदि उपांग कथन, पादतल अंगुली पर्यन्त उपांग वर्णन | ६ |
| पृष्ठसे केशपर्यन्त उपांग वर्णन, तलुवासे केशपर्यन्त उपांग जानना, राज्यसंपत्ति देनेवाले पादतलके लक्षण | ७ |
| पादतलके शुभाऽशुभ लक्षण | ८ |
| हथेलीकी रेखाओंके शुभाऽशुभ फल, अंगूठे का शुभाऽशुभ लक्षण | ९ |
| अंगुलियोंके लक्षणोंका फल, पैरकी अंगुलियों के अशुभ लक्षण, पैरकी तर्जनीका फल | १० |
| मध्यमासे कनिष्ठिकातक अंगुलियोंके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | ११ |
| नखोंका शुभाशुभ लक्षण, चरण पृष्ठके शुभ लक्षण, ठकनोंके शुभाशुभ लक्षण | १२ |
| चरणकी बगलीके लक्षण, पिंडलीके लक्ष्मीदायक लक्षण | १३ |
| सिंह आदिकी सी तुल्य और मोटी आदि पिंडलीके शुभाऽशुभ फल, राजाओंके रोमोंका निरूपण | १४ |
| रोमोंका शुभाऽशुभ फल, हाथी आदि कीसी जानु होनेका फल | १५ |
| जानुके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | १६ |
| जंघाके शुभाऽशुभलक्षणोंका फल | १७ |
| कमरके शुभाऽशुभ लक्षण उष्ट्र आदिकी तुल्य कमरका फल | १८ |
| गुदाके शुभाऽशुभ लक्षण अण्डकोशके लक्षणोंसे राजयोग, अण्डकोशोंके शुभाशुभ लक्षण | १९ |
| इन्द्रियके शुभाशुभ लक्षण इन्द्रियके छोटे आदि लक्षणोंका फल | २० |
| मोटी नसें आदि लक्षणोंवाली इन्द्रिय होनेका फल, इंद्रियकी सुपारीके लक्षणोंसे राजयोगादि | २१ |
| इंद्रियकी सुपारीके शुभाऽशुभ लक्षणों का फल | २२ |
| वीर्यके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | २४ |
| अल्पकाल और चिरकाल मैथुन करनेवाले का निरूपण, मूत्रकी धारके लक्षणोंसे राजयोगादि । राजा आदिके मूत्रका लक्षण | २५ |
| मूंगे और लाख कमलरङ्ग समरुधिरका फल मध्यमाधम पुरुषोंके रुधिरका ज्ञान | २६ |
| पेडूके अशुभ लक्षण, नाभिके चौड़ापन आदि लक्षणका फल नाभिके कमलाकार | |

| विषय, | पृष्ठांक |
| --- | --- |
| संक्षेपसे मान कथन, तलुवे आदिकी लम्बाई चौड़ाई आदिका वर्णन; अनामिकादि अंगुलियोंका आयामादि निरूपण, जंघादिका दैर्घ्य प्रमाण निरूपण | ९१ |
| कुचों आदिकी लम्बाईका प्रमाण, भुजाकी लम्बाईका प्रमाण | ९२ |
| अंगुली आदि उपांगोंकी लम्बाईका प्रमाण फिर अंगमान कहना | ९३ |
| स्त्री पुरुष योग्यता दशक्षेत्रोंका निरूपण पहले क्षेत्रसे दशवेंतक जुदा २ वर्णन | ९४ |
| क्षेत्र क्रमसे दश दशा होना, पुरुषोंकी दश प्रकृतियोंका निरूपण | ९५ |
| पृथ्वीप्रकृतिवालेसे आकाश प्रकृति वालेतक वर्णन | ९६ |
| मनुष्य प्रकृतिवालेसे चतुष्पद प्रकृतिवालेतक वर्णन, दश प्रकृति कथनके अनंतर मिश्र लक्षण कथन | ९७ |
| ऐश्वर्यादिका होना बड़ी आयुवाले होनेसे वैतरण नामवाले होनेतक वर्णन | ९८ |
| दुन्दुवक्नाम वालेका वर्णन, सत्त्व रजोगुणों का वर्णन | ९९ |
| तमोगुणवालेका वर्णन, तमोगुणकी अधिकता वाले रजोगुणका वर्णन, देहमें शुभ अशुभ लक्षण जान तिनका फल कथन लम्बे आदि पुरुषोंका बुद्धिमान् आदि होना | १०० |
| दन्तुर आदि पुरुषोंको मूर्ख आदि होनेमें अचरज | १०१ |
| सुनेत्रवालेसे मांसल पुरुषपर्यंत वर्णन बहुधा सुखी होना दाहने तिल आदि चिन्ह होनेका फल नख आदिमें सचिक्कणता न होनेका फल | १०२ |
| बत्तीस लक्षणोंवालेका निरूपण, लक्ष्मीको प्राप्त होना, उच्चपदको प्राप्त होना धनवान होना | १०३ |
| नेत्र आदि बड़े होनेका फल, राजाके चौड़े छोटे अंगोंका होना, शब्द आदिकी गंभीरताका फल, पुरुषके खरगोश आदि भेद | १०४ |

| विषय. | पृष्ठांक. |
| --- | --- |
| खरगोशकी संज्ञावालेसे घोड़ेकी संज्ञावाले तक वर्णन | १०५ |
| पुरुषकी धन्य कथन, भौंरी आदिक लक्षण कथन, भौंरीका त्रिविधपना और शुभाशुभ वर्णन | १०६ |
| त्वचामें उत्पन्न भौंरी और लक्ष्मी हाथमें आनेका वर्णन, सम्पूर्ण पृथ्वीका राजा होना, हथेलीके साथियोंसे शिरके चूडावर्त चक्रतक वर्णन | १०७ |
| भौंरीके अशुभ फल | १०८ |
| मयूरकी समान चालसे हरिणकी समान चालतक वर्णन | १०९ |
| चालका शुभाऽशुभनिरूपण, छायाका निरूपण | ११० |
| छायाका शुभाऽशुभनिरूपण | १११ |
| सूर्यकी तुल्य छायासे ले स्फटिकमणिकी तुल्य छायातक वर्णन, समान सम्पत्तिवाली छायाका वर्णन | ११२ |
| सारसकीसी बोलीसे ले चक्रवाकीसी बोलीतक के फल, दरिद्रियोंकी और दुष्टोंकी बोली का निरूपण | ११३ |
| गन्धके दो भेदका वर्णन, कपूरकीसी गन्धसे मछलीकीसी गन्ध होनेतकके फल | ११४ |
| शरीरके रङ्गका तीन भेद और शुभाऽशुभ वर्णन, कमलपुष्पादिके सदृशरंग होनेका फल, सत्त्वको गम्भीर कहना और मनुष्यों को लक्ष्मी दुर्लभ न होना | ११५ |
| त्वचादिमें सत्त्व होनेसे सत्त्वके तुल्य गुण होने तक वर्णन | ११६ |
| सत्त्वकी मुख्यतासे ले लक्ष्मी न स्थिर रहने तक वर्णन | ११७ |
| सत्त्वकी अधिकताका और सत्त्ववालेका वर्णन, पुरुष लक्षण सदृश स्त्रियोंके लक्षण होना, स्त्रियोंके शुभाशुभ फल कथन, | ११८ |
| तलुवेकी रेखासे वक्षस्थल पर्यंत उपांगों का वर्णन | ११९ |
| चूचियोंसे ले बालोंतक उपांगोंका वर्णन | १२० |
| तलुवेके शुभाशुभ फल | १२१ |





| विषय. | पृष्ठांका. |
| --- | --- |
| अभागिनीसे ले धनिक पतिको प्राप्त होनेवालीतक वर्णन, तलुवेमें कुत्ता आदिके चिन्ह होनेका फल | १२२ |
| पैरके अंगूठेका शुभाऽशुभ निरूपण पैरकी अंगुलियोंका शुभाऽशुभ निरूपण | १२३ |
| चालसे स्त्रीका शुभाऽशुभ वर्णन | १२४ |
| पैरके बीचकी अंगुली छोटी होनेका फल, कन्यापनमें व्यभिचारिणी होना, नखोंका शुभाऽशुभ फल वर्णन, रानीपन होना | १२५ |
| पृष्ठके अशुभ लक्षणोंका फल, टकनोंके शुभाऽशुभ फल, पांवके शुभाऽशुभ फल | १२६ |
| पिंडलीके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | १२७ |
| रोमावली आदि पिंडली होनेका फल घुटनों के शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | १२८ |
| स्त्रीकी जांघके शुभाऽशुभ फल | १२९ |
| कमर अच्छी बुरी होना स्त्रीके कूल्होंका शुभाऽशुभ वर्णन | १३० |
| कमरके पिंडोंका शुभाऽशुभ होनेका फल प्रथम बायें पगकरि चलनेका फल | १३१ |
| योनिके शुभ लक्षण | १३२ |
| पुत्रवती होना, दाहिनी ओर ऊंची योनिसे ले धन पैदा करनेवालीतक वर्णन थोड़े रोमवाली योनिसे ले सुखी योनितक वर्णन | १३३ |
| चूल्हेसी योनिसे शंखसी योनितक वर्णन | १३४ |
| संकडीयोनिसे ले ढीलीयोनितक वर्णन योनि के भालका निरूपण | १३५ |
| पेडूके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | १३६ |
| नाभिके शुभाऽशुभ लक्षण | |
| कुक्षिके शुभाऽशुभ लक्षण, मुलायम पांसुओं का फल, खरदरी पांसुओंका फल | १३८ |
| स्त्रीका रानीहोना, रानीके पेटका वर्णन घडेसरीखे पेटवालीसे ले चौड़ापेटवाली तक वर्णन | १३९ |
| मध्यस्थलका मुष्टिमें आनेका फल पूर्ण तीन सलवट होनेके फल | १४० |
| रोमलतासे शुभाऽशुभ लक्षण स्त्रियोंके हृदय का शुभाऽशुभ लक्षण | १४१ |
| छातीका शुभाऽशुभ निरूपण गोलआदि कुचोंका फल | १४२ |

| विषय. | पृष्ठांक. |
| --- | --- |
| ऊंच कुचोंसे ले घड़ेके तुल्य कुचोंतक वर्णन | १४३ |
| कुच मिलनेसे ले कुचोंकी नोकोंतक वर्णन, नोकोंसे व्यभिचारिणी होना | १४४ |
| कंधोंके लक्षणोंसे भोगवती और नटखट होना, कंधोंके लक्षणोंसे बांझ और दुःखवती होना, शुभकन्धोंसे सौभाग्यवती होना | १४५ |
| कन्धोंके अशुभ लक्षणोंसे दरिद्रिणी होना कांखोंके शुभाऽशुभ लक्षण | १४६ |
| भुजाओंके शुभाऽशुभ लक्षण हाथोंका सौंदर्य वर्णन | १४७ |
| स्त्रियोंकी हथेलीका शुभाऽशुभ फल हथेलीमें रेखा होनेका फल | १४८ |
| प्रसंगसे हस्तरेखाओंका कहना, हथेलीमें पूर्ण तीन रेखा होनेका फल मच्छी आदिकीसी रेखा होनेका फल स्त्रियोंमें श्रेष्ठ होना | १४९ |
| भर्तृघ्नीरेखासे ले कछुवेकी रेखातक वर्णन | १५० |
| ध्वजाकी रेखासे ऊंटकी रेखाओंतकका फल स्त्रियोंके अंगूठे अंगुलियोंका शुभाऽशुभ फल | १५१ |
| शुभनखोंका वर्णन, अशुभ नखोंका धनहीन और व्यभिचारिणी होना | १५२ |
| पीठके शुभाऽशुभ फल | १५३ |
| घेंटीके शुभाऽशुभ लक्षण स्त्रियोंके कण्ठ के लक्षण | १५४ |
| ग्रीवाके शुभाऽशुभ लक्षण, ठोढी और हनुके शुभाऽशुभ लक्षण | १५५ |
| सुन्दर कपोलोंका वर्णन, मुखके शुभलक्षण | १५६ |
| मुखके अशुभ, ओष्ठोंके शुभलक्षण | १५७ |
| ओष्ठोंके शुभाऽशुभ लक्षण | १५८ |
| स्त्रियोंके दांतोंके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | १५९ |
| दांतोंके अशुभ लक्षणोंके फल, जीभके शुभ लक्षण | १६० |
| जीभके अशुभ लक्षण, तालुके शुभाऽशुभ लक्षण | १६१ |
| तालुके अशुभ लक्षण, घेंटीका शुभाऽशुभ होना, हंसनेका शुभाऽशुभ लक्षण, नासिकाके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | १ |

| विषय | पृष्ठांक |
|---|---|
| आदि लक्षणोंका फल, विषम आदि सलवटोंका फल | २७ |
| कोखके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल पसवाड़ोंके लक्षणोंसे राजयोग | २८ |
| पसवाड़ोंके अशुभ लक्षणोंका फल, पेटके लक्षणोंसे चक्रवर्ती आदि योग | २९ |
| पेटके अशुभ और शुभ लक्षणोंका फल | ३० |
| एकादि सलवटोंसे मृत्यु यागादि बलिरहित और सरल बलिवाले पुरुषका निरूपण | ३१ |
| छातीके लक्षणोंसे राजा आदि होनेका कथन दरिद्रता करनेवाली छातीके लक्षण, राजाओंकी छातीका निरूपण, छातीके लक्षणोंसे धनवान आदि होनेका निरूपण स्तनोंके शुभाऽशुभ लक्षण | ३२ |
| कन्धेकी सन्धियोंका मोटे आदि लक्षणोंका फल, कन्धोंके लक्ष्मीदायक लक्षण, कन्धोंके शुभाशुभ लक्षण | ३३ |
| धनिक निर्धनकी कोखोंके लक्षण, घोटूतक लम्बी आदि भुजाओंका फल | ३४ |
| राजा आदिसे हाथोंका निरूपण पूरीरेखा युक्त पहुंचेका फल, पहुंचेकी संन्धियोंसे राजा आदि होना | ३५ |
| राजा आदिको हस्तपृष्ठका निरूपण, हथेलीके निचाई आदि लक्षणोंका फल | ३६ |
| बावरक्त आदि युक्त हथेलीसे धनिक आदि होना, बहु रेखावाली आदि हथेलीसे अल्पायु आदि होना स्त्री पुरुषके दाहिने बायें हाथमें लक्षण कथन, कर रेखाओंसे स्त्री पुरुषोंका जीवितादि प्राप्ति | ३७ |
| हथेलीकी रेखाओंसे धनिक होना, करतल रेखाओंका सुन्दर होना, सरवती रंग आदि कीसी रेखाओंके फल | ३८ |
| फैली आदि रेखाओंके फल गोत्रादिकी रेखाओंका निरूपण, फटी टूटी आदि रेखाओंका फल, छोटी आदि रेखाओंसे छेदा वैद्यादि होना | |
| हाथोंसे आयुका ज्ञान | ३९ |
| | ४० |

| विषय. | पृष्ठांक. |
|---|---|
| रेखाओंसे ऋद्धि सिद्धियुक्त आदिका होना, ऊर्ध्वरेखाका फल | ४१ |
| धनकनकाढ्य करना, काकपद फल | ४२ |
| पहुंचेकी तिहरी दुहरी यवमालाका फल, इकहरी आदि यवमालाओंका फल | ४३ |
| आयुकी रेखासे धर्ममें तत्पर होना, राजा होना, पुरुषके स्त्रियें आदिकी इयत्ता | ४४ |
| पुरुषके अच्छी बुरी स्त्री होनेका निरूपण, पुत्रोंका और भ्राताओंकी इयत्ता | ४५ |
| अल्पमृत्यु आदिकी इयत्ता, हाथमें मछली आदिके चिह्न होनेका फल | ४६ |
| हथेलीमें ऊंचा पर्वत आदि रेखाहोनेका फल, श्रीवत्स आदि चिह्नोंका निरूपण | ४७ |
| हथेलीमें त्रिकोण आदि रेखाओंका फल | ४८ |
| हथेलीमें दंडसहित छत्रादि चिह्न होनेका फल, ब्राह्मणके हाथमें यज्ञस्तम्भादि चिन्होंका फल, अँगुष्ठके जड़में यवचिन्ह होनेका फल | ४९ |
| तिलड़ी आदि यवमालाका फल, अंगुष्ठके नीचे काकपद फल | ५० |
| हाथीकी रेखाओंका शुभाऽशुभ कथन, धनवानोंके अंगुष्ठका वर्णन, भाग्यवान् आदि पुरुषोंकी अंगुलियोंका वर्णन, छः अंगुलिवालेका वर्णन | ५१ |
| कनिष्ठिकादि अंगुलियोंमें छिद्र होनेका फल | ५२ |
| राजादि कर-नखोंका वर्णन, दीर्घादि नखोंके फल | ५३ |
| पृष्ठका वर्णन | ५४ |
| ह्रस्वग्रीवादिका वर्णन,महिषग्रीवादिका वर्णन, ठोढीका शुभाऽशुभ वर्णन | ५५ |
| जाबड़ोंका शुभाऽशुभ कथन, श्मश्रु आदिका निरूपण, मूछोंका भेद | ५६ |
| कपोलोंका वर्णन, मुखलक्षणोंसे राजा आदि होना | ५७ |
| अभाग्य पुरुषादि मुख लक्षण, पापी आदि पुरुषोंका मुख वर्णन | ५८ |
| बिंबादि सदृश ओठोंसे धनिकादि होना मोटे आदि ओष्ठोंसे युक्तका वर्णन | ५९ |





| विषय. | पृष्ठांक. |
|---|---|
| कुन्दकली आदिके समदन्तोंका वर्णन, खरादि सम दन्तवालेका वर्णन, दन्तगणनासे भोगी आदि होना राजदन्तादि निरूपण | ६० |
| लाल आदि जिह्वासे मिष्टान्नभोजी आदि होना | ६१ |
| सफेद आदि जिह्वावालेका निरूपण, तालुके लक्षणोंसे पराक्रमी आदि होना | ६२ |
| तालुके अशुभ लक्षण, घण्टिकाका शुभाऽशुभ निरूपण, सुखी पुरुषोंका हसित वर्णन, मध्यम पुरुषोंका हास्य वर्णन | ६३ |
| बडी आयुवालेकी नासिका वर्णन, ऊंची नाकवाला आदिका वर्णन, राजादि नासिका वर्णन | ६४ |
| सुकड़ी नासिका आदिका वर्णन, भोगी आदि पुरुषोंकी छींक संख्याका वर्णन, मंगलकारी छींकका वर्णन | ६५ |
| धनवानोंके नेत्रोंका वर्णन, नेत्र लक्षणोंसे चक्रवर्ती आदि होना, नेत्र लक्षणोंसे राजादि होना | ६६ |
| नेत्र लक्षणोंसे मध्यम पुरुषादि वर्णन, सीधे मनवाले आदिका वर्णन | ६७ |
| दृष्टिके लक्षणोंसे लक्ष्मी हीनादि होना, दृष्टिदोषसे अन्धा आदि होना | ६८ |
| उल्लूकीसी आंखवाले आदिका वर्णन, अद्भुतकाले आंखके तारावाले आदिका वर्णन, मुख आदिकी मुख्यतावर्णन | ६९ |
| बाफनोंके लक्षणोंसे चिरकाल जीवी आदि होना, द्विमात्र निमेषादिका वर्णन | ७० |
| थोडे पलक लगनेवाले नेत्रों आदिका वर्णन, मात्रा संज्ञा रुदन लक्षणोंसे राजपाल होना, अश्रुपातका शुभाशुभ वर्णन | ७१ |
| भृकुटि लक्षणोंसे धनिकादि होना भृकुटि लक्षणोंसे धनसंतान युक्त आदि होना | ७२ |
| राजाके कानोंका वर्णन, कर्णलक्षणोंसे सुखी आदि होना, चिपके कानोंवाले आदिका वर्णन | ७३ |
| चौड़ा ऊंचा आदि मस्तकवालेका वर्णन | ७४ |

| विषय. | पृष्ठांक |
|---|---|
| मस्तककी रेखाओंसे अधमादि होना मस्तककी रेखाओंसे आयुका वर्णन | ७५ |
| | — |
| सौ वर्षकी आयुवालोंके तिर्यगादि रेखा होना, अशीतिवर्षादिकी आयु होनेका वर्णन | ७६ |
| भृकुटियोंके ऊपरकी रेखाओंका फल श्रीवत्स और धनुषचिह्नका निरूपण | ७७ |
| राजादिके मस्तकका वर्णन, दो मस्तकवाले आदिका वर्णन | ७८ |
| राजादिके केशोंका वर्णन, स्त्री पुरुषोंका अंगवर्णन, पहिले आयुकी परीक्षा करना | ७९ |
| बाहिर भीतरके लक्षणोंको जानना क्षेत्रसंज्ञा कथन | ८० |
| संहननादि संज्ञा संहतिका वर्णन, बडी आयुवालेका निरूपण | ११ |
| सुख दुःख भोगनेवालेका वर्णन | ८१ |
| सत्वसारोंका फलकथन, चिकनी आदि चर्मवालेका निरूपण, रक्तसार आदि पुरुषोंका निरूपण | ८२ |
| शुक्रसारवाले आदिका वर्णन, अनुकूल कहना, सिंहादिकेसे आचरण होनेका फल | ८३ |
| वानरादिकसे आचरण तथा छः प्रकार स्नेह संज्ञाका फल जानना | ८४ |
| प्रियबोलना और जीभकी चिकनाई आदि होनेका फल, उन्मान कथन शरीरके तोलका फल चिकनापन जानना | ८६ |
| आयाम संज्ञा दुरकी लम्बाईका निरूपण, टकने आदिकी लम्बाईका निरूपण | ८७ |
| गर्दन आदिकी लम्बाईसे लेके उत्तमादि पुरुषोंकी आयुतकवर्णन, समयादिके अनुमानसे पुरुषोंका उत्तमादि होना, राम और बलिके दुखी होनेका कारण मान संज्ञा मानयुक्त शरीरवाला आदिका वर्णन तिर्यग्मानादि संज्ञाका वर्णन परिणाहसे उत्तम होना | ८९ |

| विषय. | पृष्ठांक |
|---|---|
| ठोंकका शुभाऽशुभ निरूपण, शुभ नेत्रों का वर्णन | १६३ |
| नेत्रोंके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल नेत्रोंके अशुभ लक्षण, काणी स्त्रीका वर्णन | १६५ |
| बाफनोंके शुभाशुभ लक्षण, स्त्रियोंके रोनेका निरूपण, भृकुटियोंके शुभाऽशुभ लक्षणों का फल | १६६ |
| कानोंके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | १६७ |
| स्त्रियोंके चन्द्रसमान ललाटका फल, ललाटके शुभाऽशुभ लक्षण मांगके शुभ लक्षण | १६८ |
| शिरके शुभाऽशुभ लक्षण, केशोंके शुभ लक्षण | १६९ |
| केशोंके अशुभ लक्षण | १७० |
| व्यंजनके लक्षण कथन और व्यञ्जनसंज्ञा, मशकादिका ज्ञान, मशकादिके चिह्नसे रानी होना | १७१ |
| दायें कपोलसे बांये कुचतक मशकादि चिह्न होनेका फल | १७२ |
| योनि और नाक और नाककी लफनोंमें और नाभिके नीचे मशकादि चिह्न होनेका फल | १७३ |
| टकनेमें और बांयें हाथमें मशकादि चिह्न होनेका फल, मशकादि शुभाऽशुभ होना स्त्रियोंकी प्रकृतिके भेद तिनके फल | १७४ |
| चिकने नख रोम त्वचा होनेका फल, कोमल त्वचा और कमलकेसे पैरोंवालीका और बड़े नेत्रवालीका वर्णन | १७५ |
| निद्रावतीका वर्णन, पित्तप्रकृतिवाली आदिका | १७६ |
| वातप्रकृतिवालीका वर्णन | १७७ |
| स्वप्न देखनेवालीसे ले देवप्रकृतिवाली तक वर्णन | १७८ |
| विद्याधरस्वभाववालीसे ले राक्षसी स्वभाव वालीतक वर्णन | १७९ |
| भयंकरीसे ले खरके स्वभाववालीतक वर्णन | १८० |
| कुटिलगामिनीका वर्णन, सिंहप्रकृतिवालीका वर्णन, मंदूक, कुक्षिवालीसे ले स्त्रीस्वामिनी तक वर्णन | १८१ |

| विषय. | पृष्ठांक |
|---|---|
| रानी तथा आठ पुत्र जननेवालीसे ले स्त्री भाग्यवालीतक वर्णन | १८२ |
| रक्तनेत्रादिवालीका वर्णन | १८३ |
| गोलमुख गोलकुचवाली आदिका वर्णन, पद्मिन्यादि चार भेदोंका कथन | १८४ |
| पद्मिनी हस्तिनी और शंखिनीका वर्णन | १८५ |
| चित्रिणीका वर्णन, भूरे हाथ पांववाली से ले काले आंखवालीतक वर्णन | १८६ |
| लम्बे कुचवाली स्त्रीसे ले ज्वालामुखीतक वर्णन | १८७ |
| कुठारीसे ले पिशाचिनीतक वर्णन | १८८ |
| आंखचलानेवालीसे ले त्याज्य स्त्रीतक वर्णन | १८९ |
| हिचन देनेवाली स्त्रीसे ले दांतकाटनेवाली तक वर्णन | १९० |
| काकमुखी आदिका वर्णन | १९१ |
| पर्वत, नदी नामकी स्त्रीसे मृगीतक वर्णन | १९२ |
| कामिनीके मृगी आदि तीन भेद लक्षणोंसे स्त्रीका हरिणी घोडी हथिनी होना, हरिणी आदि स्त्रियोंकी हरिण घोड़ा हाथी ऐसे नरोंके साथ प्रीति होना, कामिनीका वर्णन, नेत्रोंकी अवस्थाका होना | १९३ |
| वीर्यरजकी अधिक न्यूनताका फल, स्त्रियोंका स्नेहादि पुरुषोंके सम जानना, दुश्चारिणी और प्रशंसा योग्यस्त्रियोंका वर्णन | १९४ |
| शीलयुक्त स्त्रीका शुभ होना, स्वरूप और गुणोंका एकत्र निवास रङ्गकी प्रशंसा योग्य होना, शुभरङ्गका निरूपण | १९५ |
| स्त्रियोंके शुभाऽशुभ रंगका वर्णन, चांदनी केसे रंगवालीका वर्णन, बिना सुगन्ध स्त्री शुभ न होना | १९६ |
| गंधके लक्षण कथन, चम्पे आदिकीसी गंध वाली प्रशंसनीय होना गंधके शुभाऽशुभ लक्षणोंका फल | १९७ |
| बाई दाहिनी हथेलीसे ले पृष्ठके वंशतक चक्रादि चिन्ह होनेका फल | १९८ |
| भौंरोंके शुभ अशुभलक्षणोंका फल, भौंरी लक्षणोंसे विषवादि होना | १९९ |





| विषय. | पृष्ठांक. |
|---|---|
| मस्तकमें भौंरी होनेका फल, पीठ अथवा ठुंडीमें भौंरी होनेका फल | २०० |
| पराक्रमरहित स्त्री जानना, स्वरके शुभ लक्षणों का फल | २०१ |
| स्वरके अशुभ लक्षणोंका फल, राजाओंकी रानीकी चालका वर्णन | २०२ |

| विषय. | पृष्ठांक. |
|---|---|
| बैलकीसी चालवालीसे ले हरिणकीसी चाल-वालीतक वर्णन और छायालक्षण | २०३ |
| छायासे स्त्रीका सौंदर्यवर्णन | २०४ |
| प्रशंसायोग्यछायासे दुर्लभा स्त्रीका वर्णन | २०५ |
| कविके वृत्तान्तोंका प्रारम्भ | २०६ |
| कविवृत्तान्तकी समाप्ति | २०८ |


इति सामुद्रिकशास्त्रविषयानुक्रमणिका ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥

# सामुद्रिकशास्त्रम् ।

## सान्वयभाषाटीकासमेतम् ।

श्रीपतिनाभिप्रभवः कनकच्छायः प्रयच्छतु शिवं वः ।
कल्पादिसृष्टिहेतुः पद्मासनसंश्रितो देवः ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ-( पद्मासनसंश्रितो देवः ब्रह्मा वः शिवं प्रयच्छतु )कमलासनपै स्थित जो देव अर्थात् आदिदेव ब्रह्मा सो तुमको कल्याण देओ ( कथंभूतो देवः-श्रीपतिनाभिप्रभवः ) कैसे हैं वह देव कि, श्रीपति जो हैं विष्णु तिनकी नाभिकमलसे उत्पन्न ( पुनः कथंभूतः-कनकच्छायः ) फिर कैसे हैं वह देव कि, सुवर्णकीसी है कांति जिनकी ( पुनः कथंभूतः देवः-कल्पादिसृष्टिहेतुः ) फिर कैसे हैं वह देव कि, कल्पकी आदिमें जो सृष्टि हुई तिसके कारण हैं ॥ १ ॥

स्फुरदेकलक्षणमपि त्रैलोक्यलक्षणं वपुर्यस्याः ।
अविकलशब्दब्रह्म ब्राह्मी सा देवता जयति ॥ २ ॥

अन्वयार्थौ-( सा ब्राह्मी देवता जयति ) सो ब्राह्मी देवता अर्थात् सरस्वती देवी सर्वोत्कर्षकरिके जयवती हो अर्थात् जयकारी हो ( कथंभूता सा ब्राह्मी देवता-अविकलशब्दब्रह्म स्फुरदेकलक्षणमपि ) सो कौनसी देवी है कि, विकलतारहित शब्दरूप ब्रह्म और देदीप्यमान है मुख्यलक्षण जिसमें ऐसा ( यस्याः त्रैलोक्यलक्षणं वपुः ) जिसका त्रैलोक्यरूप लक्षण शरीर है॥२॥

पुरुषोत्तमस्य लक्ष्म्या समं निजोत्सङ्गमधिशयानस्य ।
शुभलक्षणानि दृष्ट्वा क्षणं समुद्रः पुरा दध्यौ ॥ ३ ॥

अन्वयार्थौ-(समुद्रः पुरुषोत्तमस्य शुभलक्षणानि दृष्ट्वा क्षणं पुरा दध्यौ) समुद्र जो है सो पुरुषोत्तम कहिये विष्णु तिनके शुभलक्षणोंको देखकरके क्षणमात्र पहिले ध्यान किया ( कथंभूतस्य पुरुषोत्तमस्य-लक्ष्म्या सम

निजोत्संगमधिशयानस्य ) कैसे हैं वह पुरुषोत्तम कि, लक्ष्मीके साथ अपनी गोदमें शेषशय्यापर शयन करते हैं ॥ ३ ॥

भोक्ता त्रिखण्डभूमेर्भङ्क्ता मधुकैटभादिदैत्यानाम् ।
रूपवशीकृतयाऽसौ क्षणमपि न वियुज्यते लक्ष्म्या ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ–(त्रिखण्डभूमेः भोक्ता ) तीन खण्ड पृथ्वी तिसका भोगनेवाला ( च पुनः मधुकैटभादिदैत्यानां भंक्ता ) और मधुकैटभ आदि दैत्योंके मारनेवाला(असौ रूपवशीकृतया लक्ष्म्या क्षणमपि न वियुज्यते)ऐसे यह विष्णु रूपकरिके वश भई लक्ष्मी तिससे क्षणमात्र भी अलग नहीं होते ॥ ४ ॥

इहेक्षणलक्षणयुतं तदपरमपि हन्त भजति श्रीः ।
विपरीतलक्षणयुतस्त्रिजगत्यपि किङ्करो भवति ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ–(इह ईक्षणलक्षणयुतं तत् अपरम् अपि हन्त श्रीः भजति) इस लोकमें नेत्रोंको लक्षणयुक्त अन्य पुरुषको भी यह हर्षकी बात है कि, उसको लक्ष्मीजी भजती हैं अर्थात् उसके भी निवास करती हैं और ( च पुनः–विपरीतलक्षणयुतः पुरुषः त्रिजगति अपि किंकरः भवति) जो विपरीतलक्षण अर्थात् अशुभलक्षणयुक्त जो पुरुष है सो तीनों लोकोंमें दास होताहै ५

अथ चेह मध्यलोके सकलेष्वपि सत्सु जन्तुजातेषु ।
मर्त्यः प्रधानजातो यदाख्यया मर्त्यलोकोऽयम् ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ–( अथ च इह मध्यलोके सकलेषु अपि जन्तुजातेषु सत्सु अयं मर्त्यः प्रधानजातः ) इसके अनन्तर इस मध्यलोकमें सब जीवजंतुओंके समूह होते संते मनुष्य प्रधान हुआ और ( यदाख्यया अयं मर्त्यलोक प्रसिद्धः ) जिसके नामकरिके यह मर्त्यलोक विख्यात है ॥ ६ ॥

उत्पत्तिः स्त्रीमूला तस्या अपि ततः प्रधानमेषापि ।
क्रियते लक्षणमनयोर्यदि तदिह स्याज्जनोपकृतिः ॥ ७ ॥

अन्वयार्थौ–( उत्पत्तिः स्त्रीमूला ततः तस्या अपि एषा अपि प्रधाना ) स्त्री है मूल अर्थात् जड उत्पत्ति जिसकी तिससे यह स्त्री भी प्रधान है (



अनयोः लक्षणं क्रियते तत् इह जनोपकृतिः स्यात् ) जो इन दोनोंके लक्षण करे जायँ तो इस लोकमें सबका उपकार होय ॥ ७ ॥

इत्थं विचिन्त्य सुवरे स्वहृदि समुद्रेण सम्यगवगम्य ।
नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं रचयाञ्चक्रे तदादि तथा ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ–(समुद्रेण इत्थं सुवरे स्वहृदि विचिन्त्य सम्यक् च अवगम्य) समुद्रने श्रेष्ठ अपने हृदयमें विचार ऐसा करके और अच्छे प्रकार समझिके (नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं तथा तदादि रचयांचक्रे) मनुष्य और स्त्रीके हैं लक्षणजिसमें ऐसा शास्त्र और आदिमें मनुष्यके हैं लक्षण जिसमें सो रचा अर्थात् बनाया ८

तदपि नारदलक्षकवराहमाण्डव्यषण्मुखप्रमुखैः ।
रचितं क्वचित्प्रसङ्गात्पुरुषस्त्रीलक्षणं किञ्चित् ॥ ९ ॥

अन्वयार्थौ–(तदपि नारदलक्षकवराहमाण्डव्यषण्मुखप्रमुखैः प्रसङ्गात् पुरुषस्त्रीलक्षणं किंचित् क्वचित् रचितम् ) तब भी नारद मुनि जाननेवाले और वराह मांडव्य स्वामिकार्तिक आदिकोंने प्रसङ्गसे पुरुष और स्त्रीके लक्षणों करके युक्त कुछ कुछ शास्त्र कहीं बनाया ॥ ९ ॥

तदनन्तरमिह भुवने ख्यातं स्त्रीपुंसलक्षणज्ञानम् ।
दुर्बोधं तन्महदिति जडमतिभिः खण्डतां नीतम् ॥ १० ॥

अन्वयार्थौ–( तदनन्तरम् इह भुवने स्त्रीपुंसलक्षणज्ञानं ख्यातम् अतिदुर्बोधं तत् महत् जडमतिभिः खण्डतां नीतम् ) ताके पीछे इस लोकमें स्त्रीपुरुषके लक्षणोंका ज्ञान प्रगट हुआ–तिससे वह बडे जाननेके कठिन होनेसे जडबुद्धियोंने खंडित कर दिया ॥ १० ॥

श्रीभोजनृपसुमन्तप्रभृतीनामग्रतोऽपि विद्यन्ते ।
सामुद्रिकशास्त्राणि प्रायो गहनानि तानि परम् ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौ–( श्रीभोजनृपसुमन्तप्रभृतीनाम् अपि अग्रतः सामुद्रिकशास्त्राणि विद्यन्ते ) श्रीमान् भोज और सुमन्त आदि राजाओंके आगे भी सामुद्रिक शास्त्र थे ( प्रायः तानि परं गहनानि सन्ति ) परन्तु वे बहुधाकरिके अत्यन्त कठिन और गूढ थे ॥ ११ ॥

खण्डीकृतानि च पुनः पिण्डीकृत्याखिलानि तान्यधुना ।
सामुद्रिकं शुभाशुभमिह किंचिद्वच्मि संक्षेपात् ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौ-( पुनः खंडीकृतानि अखिलानि तानि पिण्डीकृत्य इह शुभाशुभं सामुद्रिकं किंचित् संक्षेपात् अधुना वच्मि ) फिर वे जो संपूर्ण खंडित होगये थे तिन्हें इकट्ठे करिके इस लोकमें शुभ और अशुभ लक्षणोंका जो सामुद्रिक शास्त्र तिसे संक्षेपसे कुछ एक अब कहता हूँ ॥ १२ ॥

सामुद्रमङ्गलक्षणमिति सामुद्रिकमिदं हि देहवताम् ।
प्रथममवाप्य समुद्रः कृतवानिति कीर्त्यते कृतिभिः ॥ १३ ॥

अन्वयार्थौ-(समुद्रः प्रथमम् अवाप्य इदं सामुद्रिकं देहवतां शुभाशुभम् अङ्गलक्षणम् इदं शास्त्रं कृतवान् तत् अधुना कृतिभिः कीर्त्यते ) समुद्रने पहिले मनुष्योंके अंगका शुभाशुभ लक्षण इस सामुद्रिक शास्त्रको किया तो अब उसीको पण्डित कहते हैं ॥ १३ ॥

ऊरू जठरमुरःस्थलबाहुयुगं पृष्ठमुत्तमाङ्गं च ।
इत्यष्टाङ्गानि नृणां भवन्ति शेषाण्युपाङ्गानि ॥ १४ ॥

अन्वयार्थौ-(ऊरू-जठरम्-उरःस्थलं-बाहुयुगं-पृष्ठम्-उत्तमाङ्गं च नृणाम् इति अष्टाङ्गानि भवन्ति-तथा शेषाणि उपाङ्गानि भवन्ति ) दो जाँघ-पेट-छाती- दो भुजा-पीठ-शीश मनुष्योंके ये आठ अंग मुख्य हैं जिनमें और बाकी उपअंग हैं अर्थात् छोटे अंग हैं ॥ १४ ॥

पूर्वभवान्तरजनितं शुभमशुभमिहापि लक्ष्यते येन ।
पुरुषस्त्रीणां सद्भिर्निगद्यते लक्षणं तदिह ॥ १५ ॥

अन्वयार्थौ-( येन पूर्वभवान्तरजनितं शुभाशुभलक्षणम् इह अपि लक्ष्यते तत् इह पुरुषस्त्रीणां लक्षणं सद्भिः निगद्यते ) जिससे पहिले जन्मके उत्पन्न शुभाशुभ लक्षण जो देखेजायँ सोही पुरुष स्त्रियोंके लक्षण पण्डितों करिके कहे जाते हैं ॥ १५ ॥



देहवतां तद्बाह्याभ्यन्तरभेदेन जायते द्विविधम् ।
वर्णस्वरादि बाह्यं पुनरन्तः प्रकृतिसत्त्वादि ॥ १६ ॥

अन्वयार्थौ-( देहवतां तत् लक्षणं बाह्याभ्यन्तरभेदेन द्विविधं जायते वर्णस्वरादि बाह्यं, पुनः प्रकृतिसत्त्वादि अन्तः ) शरीरके वे ही लक्षण बाहर और भीतरके भेदसे दो प्रकारके होते हैं सो वर्ण और स्वरको आदि लेकर बाह्य लक्षण कहाते हैं और प्रकृति सत्त्व आदि वे अन्तरके लक्षण हैं ॥ १६ ॥

आद्यं तदाश्रयतया निखिलेष्वपि लक्षणेषु शारीरम् ।
मनुजानां तस्मादिह वक्ष्यामि तदेव मुख्यतया ॥ १७ ॥

अन्वयार्थौ-( निखिलेषु अपि लक्षणेषु तदाश्रयतया आद्यं शारीरं तस्मात् इह मनुजानां मुख्यतया तदेव वक्ष्यामि ) संपूर्ण लक्षणोंमें उसके आश्रय करिके आदिमें शरीरसे ही संबन्ध रखता है तिससे मनुष्योंके मुख्य उसी शरीरके लक्षण कहता हूं ॥ १७ ॥

शरीरावर्तगतिच्छायास्वरवर्णवर्णगन्धसत्त्वानि ।
इत्यष्टविधं हयवत्पुरुषस्त्रीलक्षणं भवति ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौ-( शरीरावर्तगतिच्छायास्वरवर्णवर्णगन्धसत्त्वानि हयवत् इति अष्टविधं पुरुषस्त्रीलक्षणं भवति ) शरीरमें आवर्त कहिये भौंरी १ गति कहिये चाल २ छाया कहिये कान्ति ३ स्वर कहिये बोलना ४ वर्ण कहिये रंग ५ वर्ण कहिये अक्षर ६ गंध कहिये सुगंध दुर्गंध ७ सत्त्व कहिये पराक्रम ८ इस प्रकार जैसे आठ प्रकारके लक्षण घोडेके होते हैं तैसे ही पुरुष और स्त्रियोंके भी होते हैं ॥ १८ ॥

इह तावदूर्ध्वमूलो नरकल्पतरुर्भवेदधःशाखः ।
पादतलात्तदिदानीं शारीरं लक्षणं वक्ष्ये ॥ १९ ॥

अन्वयार्थौ-( इह तावत् ऊर्ध्वमूलः नरकल्पतरुः अधःशाखः भवेत् तत् इदानीं पादतलात् शारीरं लक्षणं वक्ष्ये ) इस ग्रंथमें ऊर्ध्वसे मूलतक

मनुष्यका शरीर कल्पवृक्षके समान नीची शाखावाला है, सो पांवके तलुवा अर्थात् नीचेसे ही शरीररूपी वृक्षके लक्षणोंको कहता हूं ॥ १९ ॥

आदौ पदस्य तलमथ रेखांगुष्ठांगुलीनखं पृष्ठम् ।
गुल्फौ पाली जङ्घायुगलं रोमाणि जानुयुगम् ॥ २० ॥

अन्वयार्थौ–इसके आदिमें पांवका तलुआ और रेखा अंगूठा अंगुली नख पांवकी पीठ गुल्फौ अर्थात् टकने पाली अर्थात् गढेले जंघायुगलम् अर्थात् दोनों पिंडली रोमाणि अर्थात रोंगटे जानुयुगम् अर्थात् दोनों जाँघ जानो ॥ २० ॥

ऊरू तथा कटितटस्फिग्युग्मं तदनु पायुरथ मुष्कौ ।
शिश्नस्तन्मणिरेतोमूत्रं शोणितमथो बस्तिः ॥ २१ ॥

अन्वयार्थौ–ऊरू-दोनों जाँघ । कटितट-कमरका किनारा । स्फिग्युग्मं दोनों कोख । तदनु पायुः–तिसके पीछे गुदा । मुष्कौ-अंडकोश । शिश्नः–इन्द्री । तन्मणिः–इन्द्रीकी सुपारी । रेतः–धातु मूत्र । शोणितम् रुधिर । बस्ति -पेडू जानो ॥ २१ ॥

नाभिः कुक्षी पार्श्वे जठरं मध्यं ततश्च वलयोऽस्मिन् ।
हृदयमुरः कुचचूचुकयुग्मं जत्रुद्वयं स्कन्धौ ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौ–नाभिः-टूंडी । कुक्षी-दोनों कोख । पार्श्वे-पांसू । जठरं मध्यं-पेटका बीच । वलयः-पेटकी सलवट । हृदयं छाती । उरः कलेजा । कुच-चूँची । चूचुकयुग्मं दोनों चूंचीकी नोंकें । जत्रुद्वयं-कंधेकी दोनों हसली । स्कन्धौ-दोनों कंधा जानो ॥ २२ ॥

अंसौ कक्षे बाहू पाणियुगं तस्य मूलपृष्ठतलम् ।
मीनाद्याकृतिरेखांगुलीकं नखाः क्रमशः ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौ–अंसौ-कंधे । कक्षे-दोनों कांख । बाहू-दोनों भुजा । पाणियुगम्-हाथ । तस्य मूलम्–तिसकी कलाई । पृष्ठतलं–हथेलीकी पीठ । मीनाद्याकृतिः-मछलीकीसी सूरत । रेखा-लकीर । अंगुली । नख ये क्रमसे जानो ॥ २३ ॥



पृष्ठं कृकाटिकाथ ग्रीवा चिबुकं सकूर्चहनुगण्डम् ।
वदनोष्ठदशनरसना तालु ततो घण्टिका हसितम् ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौ–पृष्ठं-पीठ । कृकाटिका-गलेका गट्टा । ग्रीवा-गर्दन । चिबुकं-ठोडी । सकूर्च-बालसहित । हनुगण्ड-गालोंकी हड्डियाँ । वदन-मुख । ओष्ठ-होठ । दशन-दांत । रसना-जीभ । तालु-तलुवा । घण्टिका-गलेकी घण्टी हसितं हँसना जानो ॥ २४ ॥

नासाक्षुतमक्षियुगं पक्ष्माणि ततो निमेषरुदिते च ।
भ्रूशङ्खकर्णभालं तल्लेखा मस्तकं केशाः ॥ २५ ॥

अन्वयार्थौ–नासा-नाक । क्षुतं-छींक । अक्षियुगं-दोनों आंखें । पक्ष्माणि-आँखोंकी बाफनी । निमेष-पलक । रुदित-रोना । भ्रूशंख-भौंहें और कनपटी । कर्ण-कान । भाल-ललाट । तल्लेखा-तिसकी लेखालिलावट । मस्तकं-माथा । केशाः-बाल जानो ॥ २५ ॥

इत्यापादतलकेशप्रान्तमिहानुक्रमेण शारीरम् ।
अङ्गोपांगविभक्तं लक्षणविद्भिर्नृणां ज्ञेयम् ॥ २६ ॥

अन्वयार्थौ–( इति आपादतलकेशप्रान्तम् इह अनुक्रमेण शारीरम् अंगोपांगविभक्तं लक्षणविद्भिः नृणां ज्ञेयम् इति ) पाँवके तलुवेसे लेकर बालोंके अन्ततक यह क्रमसे शरीरके अंग उपअंगके जुदे जुदे लक्षण मनुष्योंके जानने चाहिये ॥ २६ ॥

अस्वेदमुष्णमरुणं कमलोदरकान्ति मांसलं श्लक्ष्णम् ।
स्निग्धं समं पदतलं नृपसंपत्तिं दिशति पुंसाम् ॥ २७ ॥

अन्वयार्थौ–( अस्वेदम् उष्णम् अरुणं कमलोदरकान्ति मांसलं श्लक्ष्णं स्निग्धं समम् एतादृशं पदतलं पुंसां नृपसंपत्तिं दिशति ) पसीना-रहित, गरम रहै, लाल होय, कमलके उदरकीसी कांति होय, मांस पुष्ट होय, चिकना होय, एकसा बराबर होय ऐसा पैरका तलुवा जो होय तो मनुष्योंको राजाकी संपत्तिका देनेवाला होय ॥ २७ ॥

पाचरस्यापि चरणतलं यस्य कोमलं तत्र ।
पूर्णस्फुटोर्द्ध्वरेखा स भवेद् विश्वम्भराधीशः ॥ २८ ॥

अन्वयार्थौ–पांवसे चलनेवालेका भी पादतल जिसका कोमल होय तहां पूरी प्रगट ऊर्द्धरेखा होय तो ऐसा पांवोंके तलुवेवाला संपूर्ण पृथिवीका मालिक होय ॥ २८ ॥

वंशच्छिदे कुपादं द्विजहत्यायै विपक्वमृत्सदृशम् ।
पीतमगम्यारतये कृष्णं स्यान्मद्यपानाय ॥ २९ ॥

अन्वयार्थौ–( कुपादं वंशच्छिदे भवति ) जो पाँवका तलुवा बरा मैला होय तो कुलका नाश करनेवाला होय और ( विपक्वमृत्सदृशं द्विजहत्यायै भवति ) जो पकीहुई मट्टीके तुल्य होय तौ द्विजहत्याका करनेवाला होय और ( अगम्यारतये पीतं भवति ) जो पीला होय तौ जिनसे रत नहीं चाहिये जैसे–बहिन-भानजी-पुत्री-गुरुस्त्री आदि तिनसे रति करै और ( मद्यपानाय कृष्णं स्यात् ) जो काला होय तौ मदिरा पीनेवाला होता है ॥ २९ ॥

पाण्डुरमभक्ष्यभक्षणकृते तलं लघु दरिद्रतायै स्यात् ।
रेखाहीनं कठिनं रूक्षं दुःखाय विस्फुटितम् ॥ ३० ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पादतलं पांडुरम् अभक्ष्यभक्षणकृते लघु दरिद्रतायै स्यात् ) जिसके पांवका तलुवा पीतामाटीके रंगके तुल्य होय सो जो खाने योग्य वस्तु नहीं उसके खानेवाला होय और जो छोटा हलका होय तो दरिद्री होता है ( रेखाहीनं कठिनं रूक्षं विस्फुटितं दुःखाय स्यात् ) और जो रेखाहीन और कडा होय और रूखा फटा खुरदरा होय तो ऐसे पांवके तलुवेवाला दुःखी रहै ॥ ३० ॥

तलमन्तः संक्षितं स्त्रीकार्ये मृत्युमादिशति पुंसाम् ।
रोगाय विगतमांसं मार्गाय ज्ञेयमुत्कटम् ॥ ३१ ॥

अन्वयार्थौ–( पुंसां पादतलम् अन्तः संक्षितम् ) जिस पुरुषका पांवका तलुवा बीचमें खाली होय तौ ( स्त्रीकार्ये मृत्युम् आदिशति ) स्त्रीके कार्यमें मरै और ( विगतमांसं पादतल रोगाय भवति ) जो पांवका तलुआ मांसरहित सूखा दुबला होय तौ रोगी रहै और ( उत्कटं मार्गाय ज्ञेयम् ) जो खुरदरा होय तौ मार्गका चलनेवाला होय ॥ ३१ ॥



रेखाः शंखच्छत्राङ्कुशकुलिशशशिध्वजादिसंस्थानाः ।
अच्छिन्ना गम्भीराः स्फुटास्तले भागधेयवताम् ॥ ३२ ॥

अन्वयार्थौ–( भागधेयवतां तले रेखाः शंख-छत्र-अंकुश-कुलिश-शशि-ध्वजादिसंस्थानाः अच्छिन्ना गभीराः स्फुटाः भवंति ) भाग्यवानोंकी हथेलीमें जो शंख छत्र अंकुश वज्र चंद्रमा ध्वजादिके आकार पूरी गहरी प्रगट रेखा होय तौ वह पुरुष भाग्यशाली होता है ॥ ३२ ॥

ताः शंखाद्याकृतयः परिपूर्णा मध्यभेदतो येषाम् ।
श्रीभोगभाजनं ते जायन्ते पश्चिमे वयसि ॥ ३३ ॥

अन्वयार्थौ–( येषां ताः शंखाद्याकृतयः रेखाः मध्यभेदतः सहिताः परिपूर्णाः ते पश्चिमे वयसि श्रीभोगभाजनं जायन्ते ) जिनके शंख आदि स्वरूपकी रेखा मध्यभेदके सहित परिपूर्ण होयँ तौ वे पुरुष पिछली अवस्थामें लक्ष्मी और अनेक प्रकारके भोगनेवाले ( पात्र ) होते हैं ॥ ३३ ॥

ता गोधासैरिभजंबुकमूषककाककंकसमाः ।
रेखाः स्युर्यस्य तले तस्य न दूरेऽतिदारिद्यम् ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौ–( गोधा-सैरिभ-जंबुक-मूषक-काक-कंकसमाः रेखाः यस्य पाणितले स्युः तस्य दारिद्यम् अतिदूरे न ) गौ भैंसा गीदड मूषक कौवा कंकपक्षी इनके स्वरूपकी तुल्य जिसके हाथकी हथेलीमें रेखा होयँ तौ उससे दरिद्र बहुत दूर नहीं रहै अर्थात् दरिद्र उसे घेरे रहै ॥ ३४ ॥

वृत्तो भुजगफणाकृतिरुत्तुंगो मांसलः शुभांगुष्ठः ।
सशिरो ह्रस्वश्चिपिटोऽचक्रोऽविपुलः स पुनरशुभः ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य अंगुष्ठः वृत्तः भुजगफणाकृतिः उत्तुंगः मांसलः भवति स शुभः ) जिस पुरुषका अंगूठा गोल सर्पकी फणाके आकार और

ऊंचा मांसका भराहुवा होय तो ऐसा शुभ है और ( सशिरः ह्रस्वः चिपिटः अचक्रः अविपुलः एतादृशः स पुनः अशुभो भवति ) जिसके अँगूठेमें नसें दीखें और छोटा चपटा चक्ररहित चौडा होय तौ ऐसा फिर अशुभ होताहै ॥ ३५ ॥

श्लक्ष्णा वृत्ता मृदवो घना दलानीव पद्मस्य ।
ऋजवोऽङ्गुलयः स्निग्धाः सेभसंख्यान्वितं दधति ॥ ३६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य अंगुलयः श्लक्ष्णाः वृत्ताः मृदवः घनाः पद्मस्य दलानि इव ऋजवः स्निग्धाः भवंति स इभसंख्यान्वितं दधति ) जिस पुरुषकी अंगुली सचिक्कण और गोल कोमल घनी कमलके दलके आकार सूधी खरदरी न हो चिकनी होयँ तौ वह पुरुष हाथियोंकी गिनतियोंको धारण करे है ॥ ३६ ॥

विरलाश्चिपिटाः शुष्का लघवो वक्राः खटाः पदांगुलयः ।
यस्य भवन्ति शिरालाः स किङ्करत्वं करोत्येव ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पदांगुलयः विरलाः चिपिटाः शुष्काः लघवः वक्राः खटाः शिरालाः एतादृशाः भवंति स किंकरत्वं करोत्येव ) जिस पुरुषके पैरकी अंगुली छिरछिरी चपटी सूखी छोटी टेढी हलके आकार और नसें निकली हुई ऐसी होयँ तौ वह दासपदवीको करै नौकर बने रहैं ॥ ३७ ॥

स्त्रीसम्भोगानाप्नोत्यंगुष्ठदीर्घया प्रदेशिन्या ।
प्रथममशुभं च गृहिणीमरणं वा ह्रस्वया च कलिम् ॥ ३८ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पुरुषस्य अंगुष्ठदीर्घया प्रदेशिन्या स्त्रीसंभोगान् आप्नोति ) जिस पुरुषके पैरकी अंगुली अंगूठेके पासकी तर्जनी अँगूठेसे बडी होय तो वह स्त्रीके संभोगको प्राप्त होय और ( ह्रस्वया प्रथमम् अशुभं पुनः गृहिणीमरण कलिमाप्नोति ) जो अँगूठेसे छोटी होय तो पहले अशुभ है फिर स्त्रीके मरण और कलहको अर्थात् दुःखको प्राप्त होता है ॥ ३८ ॥



आयतया मध्यमया कार्यविनाशो ह्रस्वया दुःखम् ।
घनया समया पुत्रोत्पत्तिः स्तोकं नृणामायुः ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ–( पुरुषस्य आयतया मध्यमया कार्यविनाशो भवति ) जिस पुरुषके पैरके बीचकी मध्यमा अंगुली बडी लंबी होय तौ कार्यको नाश करै और ( तथा ह्रस्वया दुःखं भवति ) छोटी होय तो दुःख होय और ( घनया समया पुत्रोत्पत्तिः नृणां स्तोकम् आयुः भवति ) बहुत पासपास बराबर होय तौ पुत्रोंकी उत्पत्ति थोडी होय और उस पुरुषकी आयु भी थोडी होय ॥ ३९ ॥

यस्यानामा दीर्घा स प्रज्ञाभाजनो मनुजः ।
ह्रस्वा स्याद्यस्य पुनः स कलत्रवियोजितो नित्यम् ॥४०॥

अर्थ–जिस पुरुषकी अनामिका अंगुली मध्यमासे बडीहो वह बुद्धिमान् होता है । और यदि वही अधिक छोटी होतो सदा स्त्रीवियोगी रहता है॥४०॥

दीर्घा कनिष्ठिकापि स्याद्यस्य स्वर्णभाजनं स नरः ।
यदि सापि पुनर्लघ्वी परदारपरायणः सततम् ॥ ४१ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पुरुषस्य कनिष्ठिका दीर्घा स्यात् स नरः स्वर्णभाजनं भवति ) जिस पुरुषकी कनिष्ठिका अंगुली बडी होय तो वह पुरुष स्वर्णका पात्र अर्थात् धनवान् होय ( यदि सा अपि पुनः लघ्वी स पुरुषः परदारपरायणः सततं भवति ) जो वही अंगुली बहुत छोटी होय तौ वह पुरुष पर स्त्रीमें सदा रत होय ॥ ४१ ॥

यस्य प्रदेशिनीतः कनिष्ठिका स्याद्ध्रुवं स्थूला ।
शिशुभावे तस्य पुनर्जननी पंचत्वमुपयाति ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पुरुषस्य प्रदेशिनीतः ध्रुवं कनिष्ठिका स्थूला भवेत् ) जिस पुरुषकी प्रदेशिनी अंगुलीसे कनिष्ठिका निश्चय मोटी होय ( तस्य पुनः जननी शिशुभावे पंचत्वम् उपयाति ) तिसकी माता लडकपनमें ही मृत्युको प्राप्त होय ॥ ४२ ॥

विमलाः प्रवालरुचयः स्निग्धाः कूर्मोन्नता नखाः श्लक्ष्णाः ।
मुकुराकाराः सूक्ष्माः सौख्यं यच्छंति मनुजानाम् ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थौ–( विमलाः प्रवालरुचयः स्निग्धाः कूर्मोन्नताः श्लक्ष्णाः मुकुराकाराः सूक्ष्मा एतादृशाः पादनखाः मनुजानां सौख्यं यच्छन्ति ) निर्मल मूंगेके रंग चिकने कछुवेकी पीठके समान ऊचे चमकदार दर्पणके आकार पतले जिस पुरुषके पांवके नख ऐसे होयँ तो वह सुखके देनेवाले हैं ॥ ४३ ॥

स्थूलैर्नखैर्विदीर्णैः शूर्पाकारैश्च दीर्घनखैः ।
असितैः सितैर्दरिद्रा भवन्ति तेजोरुचारहितैः ॥ ४४ ॥

अन्वयार्थौ–( स्थूलैः विदीर्णैः शूर्पाकारैः दीर्घनखैः असितैः सितैः तेजोरुचारहितैः एतादृशैः पादनखैः मनुजाः दरिद्रा भवन्ति ) मोटे फटे हुए सूपके आकार लंबे काले श्वेत प्रकाश और कांतिरहित जिस मनुष्यके पांवके नख ऐसे होंय तो वे दरिद्र होते हैं ॥ ४४ ॥

मांसोपचितं स्निग्धं गूढशिरं कोमलं चरणपृष्ठम् ।
रोमस्वेदै रहितं स्थूलं कमठोन्नतं शस्तम् ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थौ–( मांसोपचितं स्निग्धं गूढशिरं कोमलं रोमस्वेदैः रहितं स्थूलं कमठोन्नतम् एतादृशं नरस्य पादपृष्ठं शस्तम् ) मांससे भरा चिकना जिसमें नसें नहीं चमकें नरम रोम और पसीनेरहित चौडा कछुवेकी पीठके समान ऊँची जिस मनुष्यकी पांवकी पीठ अर्थात् थापी होय तौ बहुत श्रेष्ठ अर्थात् कल्याणके देनेवाली होती है ॥ ४५ ॥

अन्तर्गूढा गुल्फाः सरोजमुकुलोपमाः श्रियं ददते ।
सूकरवत्ते विषमाः शिथिलाः प्रथयन्ति वधबंधौ ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौ–( अन्तर्गूढाःसरोजमुकुलोपमा एतादृशा गुल्फाः श्रियं ददते ) जिस पुरुषके टकने मांसमें दबे हुए और कमलकी कलीके तुल्य होयँ तौ लक्ष्मीके देनेवाले हैं और ( शिथिलाः सूकरवत् विषमाः ते गुल्फा वधबन्धौ प्रथयन्ति ) जो गुलगुले और सूकरके ऐसे रोमदार खुरदरे होयँ तौ वे टकने मारना बांधना अर्थात् कैदके देनेवाले होते हैं ॥ ४६ ॥



महिषसमानैर्गुल्फैश्चिपिटैर्वा दुःखसंयुताः पुरुषाः ।
तैरपि रोमोपगतैर्नित्यमपत्येन परिहीनाः ॥ ४७ ॥

अन्वयार्थौ–( महिषसमानैः वा चिपिटैः गुल्फैः पुरुषाः दुःखसंयुताः भवन्ति ) जिस पुरुषके टकने भैंसेकेसे आकार और चपटे होंय तो दुःखके देनेवाले होते हैं और ( रोमोपगतैः अपि गुल्फैः पुरुषाः नित्यम् अपत्ये परिहीनाः भवन्ति ) जो वेही टकने रोमसहित होंय तौ सदा संतानरहित करैं अर्थात् संतान नहीं होय ॥ ४७ ॥

कन्दः पादांबुरुहस्य यस्य भवेद्वर्तुला पार्ष्णिः ।
तं नरमनुरागादिव नियतं रमयति रमा रामा ॥ ४८ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पार्ष्णिः पादांबुरुहस्य कन्दः इव वर्तुला भवेत् ) जिस पुरुषकी चरण कमलकी बगली कन्दके तुल्य नरम गोलाकार होय तो ( रमा रामा तं नरम् अनुरागात् इव नियतं रमयति ) लक्ष्मी और स्त्री उस पुरुषको प्रीतिसे निश्चय रमावै अर्थात् भोगे ॥ ४८ ॥

समपार्ष्णिः सुखसहितो दीर्घायुः स्यान्नरो महापार्ष्णिः ।
स्वल्पायुरल्पपार्ष्णिः प्रोन्नतया विनिजयो भवति ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थौ–( समपार्ष्णिः पुरुषः सुखसहितः च पुनः महापार्ष्णिः दीर्घायुः स्यात् ) जिस पुरुषकी बराबर बगली होय वह सुखसहित रहै और जो बडी बगली होय तो बडी आयुवाला होय और ( अल्पपार्ष्णिः स्वल्पायुः ) जो छोटी बगली होय तो थोडी आयु होय और ( प्रोन्नतया नरः विनिजयो भवति ) जो ऊँची बगली होय तौ विजयी होय अर्थात् जीतवाला होय ॥ ४९ ॥

पिशितान्तर्गतनलिका कुरङ्गजङ्घोपमा श्रियं पुंसाम् ।
प्रविरलमृदुतररोमा दत्ते क्रमवर्तुला जङ्घा ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य जंघा पिशितान्तर्गतनलिका भवति तथा कुरंग-जंघोपमा सा पुंसां श्रियं दत्ते ) जिसकी पिंडलीकी नली मांसमें घुसी होय और हिरणकी जांघकी तुल्य होय तो उस पुरुषको लक्ष्मीकी देने-वाली होती है और ( यस्य जंघा प्रविरलमृदुतररोमा क्रमवर्तुला पुंसां श्रियं दत्ते ) जिसकी पिंडलीमें दूर दूर थोडे नरम रोम होंय और क्रमसे गोलाई लिये होय तो उस पुरुषको लक्ष्मीकी दाता-अर्थात् लक्ष्मी देती है ॥ ५० ॥

लक्ष्मीं दिशति केसरिमीनव्याघ्रोपमा नृणाम् ।
जङ्घा ऋक्षसदृक्षा वधबन्धौ निःस्वतां प्रायः ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थौ-( केसरिमीनव्याघ्रोपमा जंघा नृणां लक्ष्मीं दिशति ) सिंह मछली बघेरा इनकी तुल्य जो पिंडली होय तो मनुष्योंको लक्ष्मी देती है और ( ऋक्षसदृक्षा जंघा प्रायः वधबन्धौ निःस्वतां दिशति ) जो रीछकी सदृश जंघा होय तौ बहुधा बंधन मरण और दरिद्रता आदि मनुष्योंको देनेवाली है ॥ ५१ ॥

स्थूला दीर्घा मार्गं वितरत्युद्बद्धपिण्डिका जङ्घा ।
श्वशृगालकरभरासभवायसजंघोपमा त्वशुभा ॥ ५२ ॥

अन्वयार्थौ-( स्थूला दीर्घा उद्बद्धपिण्डिका जंघा मार्गं वितरति ) मोटी और लंबी और बंधा हुआ है पिण्ड जिसका ऐसी पिण्डली मार्ग चलानेवाली होती है और ( श्वशृगालकरभरासभवायसजंघोपमा जंघा तु अशुभा भवति ) कुत्ता-गीदड़-ऊंट-गधा कौवा इनकी तुल्य जो पिण्डली होय तो अशुभ होती है ॥ ५२ ॥

ललितानि स्निग्धानि भ्रमरश्यामानि देहरोमाणि ।
जायन्ते भूमिभुजां मृदूनि विलसन्ति सूक्ष्माणि ॥ ५३ ॥

अन्वयार्थौ-( भूमिभुजां ललितानि स्निग्धानि देहरोमाणि जायन्ते तथा मृदूनि सूक्ष्माणि रोमाणि विलसंति ) राजाओंके शरीरमें सुन्दर चिकने भौंरेके समान काले और नरम पतले ऐसे रोम शोभायमान होते हैं ॥ ५३ ॥



सुभगो रोमयुतः स्याद्विद्वान्घनरोमसंयुतो मनुजः ।
उद्वृत्तरोमभिः पुनरङ्गैर्बहुभिश्च वित्तसंकलितः ॥ ५४ ॥

अन्वयार्थौ-( रोमयुतः मनुजः सुभगः स्यात् ) रोमसंयुक्त पुरुष सुन्दर होता है और ( घनरोमसंयुतः मनुजः विद्वान् भवति ) बहुत रोम-संयुक्त पुरुष पंडित होता है और ( पुनः उद्वृत्तरोमभिः बहुभिः अंगैः मनुजः वित्तसंकलितः भवति ) गुच्छेके गुच्छे अंगमें ऐसे बहुत रोम होय तो वह पुरुष धनवान् होता है ॥ ५४ ॥

रोमकं नृपतेर्द्वंद्वं श्रोत्रियधनाढ्यबुद्धिमताम् ।
आदीन्येतानि पुनर्निःस्वानां मूर्धजेष्वेवम् ॥ ५५ ॥

अन्वयार्थौ-( नृपतेः रोमैकैकं भवति ) राजाके एकएक रोम होते हैं और ( श्रोत्रियधनाढ्यबुद्धिमतां द्वंद्वं भवति ) वेदपाठी और धनवानके और विद्वानोंके रोम दो दो तक होते हैं फिर ( पुनः एवम् आदीनि एतानि निःस्वानां मूर्द्धजेषु एवं ज्ञेयम् ) इनको आदिलेकर दरिद्रियोंके रोमोंमें अधिकता ऐसेही जाननी चाहिये ॥ ५५ ॥

रोमरहितः परिव्राट् स्यादधमः स्थूलरूक्षखररोमा ।
पापः पिङ्गलरोमा निःस्वः स्फुटिताग्ररोमापि ॥ ५६ ॥

अन्वयार्थौ-( रोमरहितः परिव्राट् स्यात् ) रोमरहित पुरुष संन्यासी वैरागी होय और ( स्थूलरूक्षखररोमा पापः स्यात् ) मोटे रूखे खुरदरे रोमवाला नीच होता है और ( पिङ्गलरोमा पापः स्यात् ) भूरे रोम-वाला पापी होता है और ( स्फुटिताग्ररोमा अपि निःस्वः स्यात् ) फूटा फटा है अग्र जिसका ऐसे रोमवाला दरिद्री होता है ॥ ५६ ॥

कुञ्जरजानुर्मनुजो भोगयुतः पीनजानुरवनीशः ॥
संश्लिष्टसंधिजानुर्वर्षशतायुर्भवेत्प्रायः ॥ ५७ ॥

अन्वयार्थौ-( कुञ्जरजानुः मनुजः भोगयुतो भवति ) हाथीकीसी जान जिसकी ऐसा पुरुष भोग करनेवाला होय और ( पीनजानुः अव-

नीशो भवति ) मोटी जानुवाला राजा होय और ( संश्लिष्टसंधिजानुः प्रायः वर्षशतायुर्भवति ) छिपी और मिली है संधि जिसकी ऐसी जानुवाला बहुधा सौ वर्षकी आयुवाला होय ॥ ५७ ॥

निम्नैः स्त्रीपरवशगः शशिवृत्तैर्गूढमांसलै राज्यम् ।
दीर्घैर्महद्भिरायुः सुभगत्वं जानुभिः स्वल्पैः ॥ ५८ ॥

अन्वयार्थौ-( निम्नैः स्त्रीपरवशगो भवति ) गहिरी है जानु जिसकी ऐसा पुरुष स्त्रीके वशमें होय और ( शशिवृत्तैः गूढमांसलैः राज्यं भवति ) चन्द्रमाके तुल्य गोल और बहुत मोटे जानुवाला राज्यका कर्ता होय और ( दीर्घैः महद्भिः जानुभिः आयुर्भवति ) लंबी जानुवाला बडी आयुवाला होता है और ( स्वल्पैः जानुभिः सुभगत्वं भवति ) छोटी जानुवाला सुंदर स्वरूपवान् होता है ॥ ५८ ॥

दिशति विदेशे मरणं मनुजानां जानु मांसपरिहीनम् ।
कुम्भनिभं दुर्गततां तालफलाभं तु बहुदुःखम् ॥ ५९ ॥

अन्वयार्थौ-( मांसपरिहीनं जानु मनुजानां विदेशे मरणं दिशति ) मांसरहित जानु अर्थात् सूखी पतली मनुष्योंको परदेशमें मृत्यु देती है । और( कुम्भनिभं जानु दुर्गततां दिशति ) घडेके तुल्य जानु दरिद्रताको देती है और ( तालफलाभं जानु बहुदुःखं दिशति ) तालफलके तुल्य जानु बहुत दुःखदेनेवाली होती है ॥ ५९ ॥

जानुद्वितयं हीनं यस्य सदा सेवते स वधबंधौ ।
इदमेव यस्य विषमं स पुनः प्राप्नोति दारिद्र्यम् ॥ ६० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य जानुद्वितयं हीनं भवति, स वधबंधौ सदा सेवते ) जिसकी दोनों जानु बलहीन होंय सो पुरुष वध और बन्धनको सदा सेवन करै और ( यस्य इदम् एव जानु विषमं भवति स पुनः दारिद्र्यं प्राप्नोति ) जिसकी जानु ऊंची नीची होय सो फिर दरिद्रताको प्राप्त होय ॥ ६० ॥



ऊरू यस्य समांसौ रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते ।
कोमलतनुरोमचितौ स जायते भूपतिः प्रायः ॥ ६१ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य ऊरू समांसौ रंभास्तंभभ्रमं वितन्वाते कोमलतनुरोमचितौ एतादृशौ ऊरू भवतः स प्रायः भूपतिः जायते ) जिसकी जांघ बहुत मांससे भरी केलेके थंभके भ्रमको करती होयँ और नरम और छोटे रोमों करिके युक्त होय तो ऐसी जांघवाला पुरुष बहुधा राजा होता है ॥ ६१ ॥

स्निग्धावूरू मृदुलौ क्रमेण पीनौ प्रयच्छतो लक्ष्मीम् ।
विकटौ स्त्रीवल्लभतां गुणिनां सहितौ कृतौ भवतः ॥ ६२ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य ऊरू स्निग्धौ मृदुलौ क्रमेण पीनौ भवतः तौ लक्ष्मीं प्रयच्छतः ) जिसकी दोनों जांघें सचिक्कण और नरम क्रमसे मोटी होंय तो लक्ष्मीको देनेवाली होती हैं और ( यस्य ऊरू विकटौ भवतः स्त्रीवल्लभतां दिशतः ) जिनकी वेही जांघें चौडी होयँ तो वह स्त्रीका प्यारा होय और ( गुणिनां सहितौ कृतौ भवतः ) गुणवान् पुरुषोंकी जांघें रानोंसे मिलीहुई होती हैं ॥ ६२ ॥

स्थूलाग्रौ मध्यनतौ स्यातां मार्गानुसंधिनौ पुंसाम् ।
कठिनौ चिपिटौ विपुलौ निर्मांसौ दुर्भगत्वाय ॥ ६३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य ऊरू स्थूलाग्रौ मध्यनतौ पुंसां मार्गानुसंधिनौ स्याताम्) जिसकी जांघें आगेसे मोटी और बीचमें झुकीहुई होंय तो उस पुरुषको मार्ग चलानेवाला करती हैं और ( यस्य ऊरू कठिनौ चिपिटौ विपुलौ निर्मांसौ दुर्भगत्वाय भवतः ) जिसकी जांघें कडी और चिपटी चौडी मांसरहित होंय तो वह पुरुष कुरूप अर्थात् बुरी सूरतका होता है ॥ ६३ ॥

यस्य कटिः स्याद्दीर्घा पीना पृथुला भवेत्स वित्ताढ्यः ।
सिंहकटिर्मनुजेन्द्रः शार्दूलकटिश्च भूनाथः ॥ ६४ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य पुरुषस्य कटिः दीर्घा पीना पृथुला स्यात् स वित्ताढ्यो भवति ) जिस पुरुषकी कमर लंबी मोटी चौडी होय वह धनवान् होता है ।

और ( यः सिंहकटिः स मनुजेन्द्रो भवति ) जिसकी सिंहके समान कमर होय वह पुरुष राजा होता है ( च पुनः यः शार्दूलकटिः स भूनाथो भवति ) और जिसकी बघेरेकी तुल्य कमर होय वह पृथ्वीका स्वामी होता है ॥ ६४ ॥

रोमशकटिर्दरिद्रो ह्रस्वकटिर्दुर्भगो मनुजः ।
शुनमर्कटकरभकटिर्दुःखी सङ्कटकटिः पापः ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य कटिः रोमशा स दरिद्रो भवति ) जिसकी कमर रोम सहित होय वह पुरुष दरिद्री होय और ( यस्य कटिः ह्रस्वा स मनुजः दुर्भगो भवति ) जिसकी कमर छोटी होय सो पुरुष दुर्भग अर्थात् बुरी सूरतका होय और ( यः शुनमर्कटकरभकटिः स दुःखी स्यात् ) जिसकी कमर कुत्ता, वानर, ऊँटकी तुल्य होय तो वह दुःखी रहे और (संकटकटिः पुरुषः पापः स्यात् ) सुकडी कमरवाला पुरुष पापी होता है ॥ ६५ ॥

मण्डूकस्फिङ् नृपतिः सिंहस्फिङ् मण्डलद्वयाधिपतिः ।
धनमांसस्फिग्धनवान्व्याघ्रस्फिङ्मण्डलाधिपतिः ॥ ६६ ॥

अन्वयार्थौ–( मंडूकस्फिक् मनुजः नृपतिर्भवति ) जिसका मेंडककासा कमरका पिण्ड होय वह पुरुष राजा होता है और ( यदि सिंहस्फिक् पुरुषः मंडलद्वयाधिपतिर्भवति ) जो सिंहकासा कमरका पिंड होय तो दो छोटे देशोंका राजा होय और ( घनमांसस्फिक् पुरुषः धनवान् भवति ) बहुत मांसका भराहुवा कमरका पिंड होय वह पुरुष धनवान् होय और ( व्याघ्रस्फिक् पुरुषः मंडलाधिपतिर्भवति ) जो बघेरेकीसी कमरका पिंड होय तो देशका राजा होता है ॥ ६६ ॥

उष्ट्रप्लुवंगमस्फिग्धनधान्यविवर्जितः पुमान्नियतम् ।
पीनस्फिङ् ना निःस्वो ह्यूर्ध्वस्फिग्व्याघ्रमृत्युःस्यात् ॥ ६७ ॥

अन्वयार्थौ–( उष्ट्रप्लुवंगमस्फिक् पुरुषः नियतं धनधान्यविवर्जितो भवति) जो ऊँट बन्दरकी तुल्य स्फिक् होय तो वह पुरुष निश्चय धनधान्यसे हीन रहे और ( पीनस्फिक् ना निःस्वो भवति ) जो मांसकी भरी स्फिक्



होय तो वह पुरुष दरिद्री और ( ऊर्ध्वस्फिक् पुरुषः व्याघ्रमृत्युः स्यात् ) जिसका ऊंचा कमरका पिण्ड होय उस पुरुषकी बघेरेसे मृत्यु जानना चाहिये ॥ ६७ ॥

युतमांसो गम्भीरः सुकुमारः संवृतः शोणः ।
पायुः शुभो नराणां पुनरशुभो भवति विपरीतः ॥ ६८ ॥

अन्वयार्थौ–( नराणां पायुः युतमांसैः गंभीरः सुकुमारः संवृतः शोणः शुभो भवति ) मनुष्योंकी जो गुदा मांससे भरी और नरम मिली हुई लाल होय तो शुभ है और ( पुनः विपरीतः अशुभो भवति ) जो वेही लक्षण गडबड और प्रकारसे होंय तो अशुभ होते हैं ॥ ६८ ॥

मुष्काः स्वयं प्रलम्बा जायन्ते सुपरिनिष्ठिता यस्य ।
स भवति भर्ता नियतं भूमेः सप्ताब्धिवलयायाः ॥ ६९ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पुरुषस्य मुष्काः स्वयं प्रलम्बाः सुपरिनिष्ठिताः जायन्ते ) जिस पुरुषके अण्डकोश आपसेही लंबे और अच्छी बनावटके होंय तो ( स सप्ताब्धिवलयायाः भूमेः नियतं भर्त्ता भवेत् ) सो सात समुद्रकी भूमिका निश्चय पालन करनेवाला अर्थात् मालिक होय ॥ ६९ ॥

श्लक्ष्णैः समैर्नृपत्वं चिरमायुर्भवति लम्बितैर्वृषणैः ।
जलमरणमद्वितीयैर्मनुजानां कुलविनाशोऽपि ॥ ७० ॥

अन्वयार्थौ–( समैः श्लक्ष्णैः वृषणैः पुरुषः नृपत्वम् आप्नोति ) जिसके अंडकोष बराबर सुंदर होंय वह पुरुष राजा होय और ( लंबितैः वृषणैः चिरमायुर्भवति ) जो लंबे वृषण होंय तो बडी आयुवाला होय और ( अद्वितीयैः वृषणैः मनुजानां जलमरणं कुलविनाशोपि स्यात् ) जो एकही वृषण होय तो उस मनुष्यका जलसे मरण और कुलका नाश करनेवाला होय ॥ ७० ॥

स्त्रीलोलत्वं विषमैः प्राक्पुत्रो दक्षिणोन्नतैर्वृषणैः ।
वामोन्नतैश्च तैरपि दुःखेन समं भवति दुहिता ॥ ७१ ॥

अन्वयार्थौ–( विषमैः वृषणैः स्त्रीलोलत्वं भवति ) जो ऊंचे नीचे वृषण होंय तो स्त्रीमें चंचलता रहे और ( दक्षिणोन्नतैर्वृषणैः प्राक्पुत्रो भवति )

जो दाहिना वृषण ऊंचा होय तो पहिलेही पुत्र होय और ( तैः अपि वामो-
न्नतैर्वृषणैः दुःखेन समं दुहिता भवति ) जो बाई ओरका वृषण ऊंचा
होय तो दुःखके साथ अर्थात् कठिनतासे पुत्री होय ॥ ७१ ॥

निःस्वः शुष्कस्थूले रम्यै रमणीरतास्तुरङ्गसमैः ।
पुनरर्द्धार्द्धैर्वृषणैर्भवंति न चिरायुषः पुरुषाः ॥ ७२ ॥

अन्वयार्थौ–( शुष्कस्थूलैः वृषणैः निःस्वो भवति ) जो सूखे और मोटे
वृषण होंय तो दरिद्री होय और ( तुरंगसमैः रम्यैः वृषणैः नराः रमणीरवा
भवंति ) जो घोडेकेसे सुंदर वृषण होंय तो मनुष्य स्त्रीके भोगनेवाले होते हैं
और ( पुनः अर्द्धार्द्धैर्वृषणैः पुरुषाः चिरायुषः न भवन्ति ) जो प्रमाणसे आधे
वृषण होंय तो वे पुरुष बडी आयुवाले नहीं होते हैं ॥ ७२ ॥

शिश्नमनिम्नसमुन्नतमदीर्घमलघु च सुसंयुतं मृदुलम् ।
उष्णं धनधान्यवतामश्लथमृजुवर्तुलं विशिरम् ॥ ७३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य शिश्नम् अनिम्नसमुन्नतम् अदीर्घम् अलघु च
सुसंयुतं मृदुलम् उष्णम् अश्लथम् ऋजु वर्तुलं विशिरं धनधान्यवताम् एता-
दृशं भवति ) जिसकी इंद्री गहरी ऊंची न बडी न छोटी कोमल और
अच्छी गरम शिथिल नहीं सूधी और गोल जिसमें नसें नहीं दीखती
होयँ ऐसी धनधान्यवाले पुरुषोंकी इंद्री होती है ॥ ७३ ॥

स्थूलग्रन्थिरतिसुखी केशनिगूढो महीपतिः शिश्नम् ।
व्याघ्रहयसिंहतुल्यो भोगी स्यादीश्वरः प्रायः ॥ ७४ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य शिश्नः स्थूलग्रंथिः स अतिसुखी भवेत् ) जिसकी
इंद्रीकी मोटी गांठि अर्थात् बडी सुपारी होय सो अतिसुखी होय और
( यस्य शिश्नः केशनिगूढः स महीपतिर्भवति ) जिसकी इंद्री ऐसी छोटी
बादामीसी होय जो बालोंमें छिपजाय सो राजा होता है ( यस्य शिश्नः
व्याघ्रहयसिंहतुल्यो भवति स प्रायः भोगी च पुनः ईश्वरः स्यात् ) जिसकी
इंद्री बघेरा घोडा सिंह इनकी इन्द्रीके तुल्य बडी होय सो निश्चय भोगी
और समर्थ होय ॥ ७४ ॥



स्पष्टशिरं निचितत्वग्घीनं चेन्मेहनं कृशं विमलम् ।
लघु मृदु सुरभि परिमलं पुंसां सौभाग वि करम् ॥ ७५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पुरुषस्य एतादृशं मेहनं भवति स्पष्टशिरं निचित-
त्वग्हीनं कृशं विमलं लघु मृदु सुरभिपरिमलं सौभाग्यवित्तकरं भवति )
जिन पुरुषोंकी इन्द्री ऐसी होय कि नसें दीखती होंय, दृढचर्म होय, निर्बल,
लटी, दुबली, स्वच्छ, छोटी, नरम, अच्छी गंधवाली जो होय तो अच्छा
भाग्य और धनके करनेवाली होती है ॥ ७५ ॥

लिङ्गे लघुनि धनाढ्यो निरपत्यो वा शिरायुतेऽल्पसुतः ।
दक्षिणविनते पुत्री वामनते कन्यकाजनकः ॥ ७६ ॥

अन्वयार्थौ–( लिङ्गे लघुनि सति धनाढ्यो भवति ) जो इंद्री छोटी
होय तो धनवान् होय और ( लिङ्गे शिरायुते सति निरपत्यः वा अल्पसुतः
भवति ) जिसकी इंद्रीमें नसें निकली होंय तो संतानरहित वा थोडे
पुत्रवाला होय और ) लिङ्गे दक्षिणविनते सति स पुत्रो भवति ) जिसकी
इंद्री दाहिनीओर झुकी होय वह पुत्रवाला होय और ( लिङ्गे वामनते सति
कन्यकाजनको भवति ) जो इंद्री बाई ओरको झुकी होय तो पुत्रीका
पिता होय अर्थात् कन्याकी संतानवाला होय ॥ ७६ ॥

यः समचरणनिषण्णो गुल्फौ न तु शेफसा परिस्पृशति ।
स सुखी ज्ञयो यदि पुनरवनितलं प्रायशो दुःखी ॥ ७७ ॥

अन्वयार्थौ–( यः पुरुषः समचरणनिषण्णः सन् शेफसा गुल्फौ न तु
परिस्पृशति स सुखी ज्ञेयः ) जो पुरुष बराबर पैरोंके बैठनेसे इंद्री करिके
टकनोंको न छुए वह सुखी होय और ( यदि पुनः अवनितलं परिस्पृशति
स प्रायशः दुःखी भवति ) जो इंद्री करिके धरतीको स्पर्श करे सो निश्चय
दुःखी होता है ॥ ७७ ॥

स्थूलोऽधोविनतः स्यात्तीक्ष्णाग्रो दीर्घ उन्नतः शिथिलः ।
समलो धनहीनानां शिश्नो भुग्नः सदोन्मिषितः ॥ ७८ ॥

अन्वयार्थौ-( धनहीनानां पुरुषाणां शिश्नः स्थूलः अधोविनतः तीक्ष्णाग्रः दीर्घः उन्नतः शिथिलः समलः भुग्नः सदा उन्मिषितः स्यात् ) धनहीन पुरुषोंकी इंद्री मोटी, नीचेको झुकीहुई, सीधा है अग्रभाग जिसका लम्बी-ऊंची-ढीली-मैलसहित-टेढी-सदा सुकडीसी रहे सो निर्धन पुरुषोंकी इन्द्री ऐसी होती है ॥ ७८ ॥

स्थूलशिरेण विशालच्छिद्रवता प्रजननेन दारिद्र्यम् ।
अतिकोमलेन लभते नरः प्रमेहादिना मरणम् ॥ ७९ ॥

अन्वयार्थौ-( स्थूलशिरेण विशालच्छिद्रवता प्रजननेन दारिद्र्यं भवति ) मोटी हैं नसें जिसमें, और जिसकी इंद्रीका बडा मुख होय ऐसी इंद्रीवाला दरिद्री होय और ( अतिकोमलेन प्रजननेन प्रमेहादिना नरः मरणं लभते ) बहुतही नरम जिसकी इंद्री होय तो प्रमेहादि रोगसे उस पुरुषका मरण होय ॥ ७९ ॥

हरितांजनाभरेखो महामणिर्जायते समोत्तानः ।
मन्थानकपुष्पनिभो यस्य स भर्ता भुवो भवति ॥ ८० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य पुरुषस्य शिश्नस्य महामणिः हरितांजनाभरेखः समोत्तानः मन्थानकपुष्पनिभः जायते स भुवो भर्ता भवति ) जिस पुरुषकी इन्द्रीकी सुपारीमें नीलेथोथेके रंगकीसी रेखा होय और बराबर ऊँची रुईके पुष्पके समान होय सो पुरुष पृथ्वीका स्वामी अर्थात् राजा होय ॥ ८० ॥

मणिभिर्धनिनो रक्तैः स्मेरजपापुष्पसन्निभैर्भूपाः ।
श्लक्ष्णैः स्निग्धैः सुखिनो मध्योत्तानैश्च पशुमन्तः ॥ ८१ ॥

अन्वयार्थौ-( नराः शिश्नस्य रक्तैर्मणिभिः धनिनो भवन्ति ) जिस पुरुषकी इन्द्रीकी सुपारी लाल होय और ( स्मेरजपापुष्पसन्निभैः



भूपा भवन्ति ) खिलेहुए गुडहरके फूलके समान रंग जिस इंद्रीकी सुपारीका होय सो राजा होय और ( नराः श्लक्ष्णैः स्निग्धैः मणिभिः सुखिनो भवन्ति ) जिस पुरुषकी चिकनी और अच्छी सुपारी होय तो सुखी होय और ( मध्योत्तानैः पशुमन्तो भवन्ति ) जिसकी बीचमें सुपारी ऊँची होय तो पशुवाला होय ॥ ८१ ॥

कलधौतरजतमुक्ताफलप्रवालोपमा महामणयः ।
येषां भवन्ति दीप्तास्ते सतजलधिभूमिभर्तारः ॥ ८२ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां महामणयः कलधौतरजतमुक्ताफलप्रवालोपमा दीप्ता भवन्ति ) जिनकी इंद्रीकी सुपारी सोने चांदी मोती मूंगेके रंगके समान चमकदार होंय ( ते सप्तजलधिभूमिभर्त्तारो भवंति ) वे पुरुष सात समुद्र सहित भूमिके स्वामी अर्थात् पालन करनेवाले राजा होंय ॥ ८२ ॥

दारिद्र्यजुषः परुषैः परुषाभैर्विपाण्डुरैर्मणिभिः ।
मध्योच्चैर्बहुकन्या जायन्ते दुःखिनः स्फुटितैः ॥ ८३ ॥

अन्वयार्थौ-( नराः परुषैः मणिभिः दारिद्र्यजुषो भवंति ) जिन पुरुषोंकी इंद्रीकी सुपारी खरदरी कडी होय तो दरिद्री होंय और ( परुषाभैः विपाण्डुरैर्मणिभिः मध्योच्चैर्बहुकन्या भवंति ) खरदरी जो चीज हैं वैसी आभा चमक तथा पोतामाटी कीसी रंगके समान सुपारी बीचमें ऊंची होय तो बहुतसी पुत्री होयँ और ( स्फुटितैर्दुःखिनः जायन्ते ) फूटी फटीसी दरार होय तो दुःखी रहैं ॥ ८३ ॥

विद्रुमहेमोपमया महामणौ रेखया नरो धनवान् ।
दौर्भाग्यवान् शबलया धूसरया जायते निस्स्वः ॥ ८४ ॥

अन्वयार्थौ-( नरः महामणौ विद्रुमहेमोपमया रेखया धनवान् भवति) जिस पुरुषकी इंद्रीकी सुपारीमें मूंगे और सुवर्णकीसी चमकदार रेखा होंय तो धनवान् होय और ( शबलया धूसरया दौर्भाग्यवान् निःस्वो

अभागी और जायते ) अनेक रंग और धूसरके रंगकीसी रेखा होयँ तो अभागी और दरिद्री होय ॥ ८४ ॥

रेतसि पुष्पसुगन्धिनि राजा यज्वा नरः सुरागन्धे ।
मधुगन्धे बहुवित्तः सुखधनवान् मीनगन्धे स्यात् ॥ ८५ ॥

अन्वयार्थौ-( पुरुषस्य रेतसि पुष्पसुगन्धिनि सति राजा स्यात् ) जिस पुरुषके वीर्यमें फूलकीसी सुगन्ध होय तो राजा होय और ( रेतसि सुरागंधे सति यज्वा भवेत् ) जिसके वीर्यमें मदिराकीसी गंध होय तो यज्ञ करनेवाला होय और ( रेतसि मधुगंधे सति नरः बहुवित्तः स्यात् ) जिसके वीर्यमें शहदकीसी गंध होय तो वह पुरुष बहुत धनवाला होय और ( रेतसि मीनगंधे सति सुखधनवान् भवेत् ) जिसके वीर्यमें मछलीकीसी गंध होय तो सुखी और धनवान् होय ॥ ८५ ॥

सुरभिद्रव्यसुगन्धे श्रियोऽन्यगन्धे तु दारिद्यम् ।
लाक्षागन्धे पुत्र्यो नःस्वे भोगी पुनः पिशितगंधे ॥ ८६ ॥

अन्वयार्थौ-( सुरभिद्रव्यसुगंधे सति श्रियो भवंति ) जिसके वीर्यमें सुगंधयुक्त वस्तुकीसी जो गंध होय तो लक्ष्मी और शोभा होय और ( अन्यगन्धे सति दारिद्र्यं भवति ) जो और किसीप्रकारकी गंध होय तो दरिद्री होय और ( लाक्षागंधे सति पुत्र्यो भवंति ) जो लाखकीसी गंध होय तो पुत्री होय और ( पुनः पिशितगंधे सति नैःस्वे भोगी स्यात् ) जो मांसकीसी गंध होय तो दारिद्य भोगनेवाला होय ॥ ८६ ॥

जम्बूवर्णेन सुखी दुग्धसवर्णेन रेतसा नृपतिः ।
धूम्रेण दुःखसहितः स्याद् दुःस्थः श्यामवर्णेन ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौ-( जम्बूवर्णेन रेतसा नरः सुखी भवति ) जामुनकासा ऊदा रंग जो वीर्यका होय तो वह पुरुष सुखी होय और ( दुग्धसवर्णेन रेतसा नरः नृपतिर्भवति ) जो दूधके रंगकासा वीर्य होय तो वह पुरुष राजा होय और ( धूम्रवर्णेन रेतसा नरः दुःखसहितो भवति ) जो धुवेंकासा रंग वीर्यका होय तो वह पुरुष दुःख सहनेवाला होय और ( श्यामवर्णेन रेतसा नरः दुःस्थः स्यात् ) जो काला रंग वीयका होय तो वह पुरुष दुःखसे डोलनेवाला होय ॥ ८७ ॥



यस्य च्यवते रतो लघुमैथुनगामिनो बहुस्निग्धम् ।
दीर्घायुः संपत्तिं पुत्रानपि विन्दते स पुमान् ॥ ८८ ॥

अन्वयार्थौ-( लघुमैथुनगामिनः यस्य बहुस्निग्धं रेतः च्यवते ) थोडी देर मैथुन करनेवाले पुरुषका जो बहुत चिकना वीर्य गिरे तो ( स पुमान् दीर्घायुः सम्पत्तिं पुत्रान् अपि विन्दते ) सो पुरुष बडी आयु और सम्पत्ति तथा पुत्रोंको पावे ॥ ८८ ॥

न पतति शुक्रं स्तोकं चिरमैथुनसंगतस्यापि ।
दारिद्यं सोऽल्पायुर्बहुकन्याजनकतां भजते ॥ ८९ ॥

अन्वयार्थौ-( चिरमैथुनसंगतस्यापि यस्य स्तोकं शुक्रं न पतति ) बहुत देर मैथुन करनेवाले पुरुषका जो थोडाभी वीय नहीं गिरै तो ( स दारिद्यम् अल्पायुः बहुकन्याजनकतां भजते ) सो पुरुष दरिद्र थोडी आयु और बहुत कन्याओंकी उत्पत्तिकरनेवाला होय ॥ ८९ ॥

द्वित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणावर्तगामि मूत्रं स्यात् ।
पिङ्गलवर्णं नृपतिः सुखिनो वलितैकधाराद्यम् ॥ ९० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य प्रदक्षिणावर्तगामि मूत्रं पिङ्गलवर्णं द्वित्रिचतुर्धाराभिः स्यात् ) जिस पुरुषके मूत्रकी धार दहिनी ओरको झुकी हुई पीले रंग करिके दो तीन चार धारसे होय तो ( नृपतिः भवति तथा वलितैकधाराद्यं सुखिनो भवन्ति ) सो राजा होय और जो मिलीहुई धाराओंसे होय तो सुखी होय ॥ ९० ॥

कृतशब्दमेकधारं नृपस्य मूत्रं द्विधारमाद्ये च ।
निःशब्दं बहुधारं तदपि दरिद्रस्य विज्ञयम् ॥ ९१ ॥

अन्वयार्थौ-( नृपस्य मूत्रम् एकधारं कृतशब्दं भवति ) राजाका मूत्र एक धारासे शब्दसहित होता है और ( दरिद्रस्य तत् अपि मूत्रम् आये

द्विधारं तथा निःशब्दं बहुधारं विज्ञेयम् ) दरिद्रीका मूत्र आदिमें दो धार शब्दसहित पीछे बहुत धारवाला जानिये ॥ ९१ ॥

स्निग्धं प्रवालतुल्यं यस्याङ्गे भवति शोणितं न चिरम् ।
स वहेत् स्वकीयभुजया मनुजो निखिलाब्धिमेखलां वसुधाम् ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य पुरुषस्यांगे शोणितं प्रवालतुल्यं न चिरं स्निग्धं भवति ) जिस पुरुषके अंगमें रुधिर मूँगेके रंगके समान बहुत चिकना होय तो ( स मनुजः स्वकीयभुजया निखिलाब्धिमेखलां वसुधां वहेत् ) सो पुरुष शीघ्र अपनी भुजाओं करिके समुद्र सहित संपूर्ण पृथ्वीको भोगे ॥ ९२ ॥

रुधिरं यस्य शरीरे रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति ।
भुजवल्लिकङ्कणरणत्कारा तमनुसरति राज्यश्रीः ॥ ९३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य शरीरे रुधिरं रक्ताम्बुजवर्णसंमितं भवति ) जिसके शरीरमें रुधिर लाल कमलके रंगके तुल्य होय तो ( भुजवल्लिकंकणरणत्कारा राज्यश्रीः तमनुसरति ) भुजारूपी बेलीमें जो कंगन तिसका जो रणत्कारशब्द जिसके ऐसी जो राज्यलक्ष्मी स्त्री सो मिलती हैं ॥ ९३ ॥

किंचित् पीतं शोणं शोणितमिह भवति मध्यमे पुंसि ।
ईषत्कृष्णं रक्तं तत्तु जघन्ये परिज्ञेयम् ॥ ९४ ॥

अन्वयार्थौ-( इह मध्यमे पुंसि शोणितं किञ्चित पीतं शोणं भवति ) इस लोकमें मध्यम पुरुषके शरीरमें रुधिर कुछ पीला कुछ लाल होता है और ( जघन्ये पुंसि तत् रक्तम् ईषत् कृष्णं परिज्ञेयम् ) अधम पुरुषका लाल और कुछ काला होता है ॥ ९४ ॥

शक्ता बस्तिः पुंसां विस्तीर्णा मांसलोन्नता स्निग्धा ।
शुक्ता विकटा कठिना दारिद्र्यं दिशति वा बहु दुःखम् ॥ ९५ ॥

अन्वयार्थौ-( पुंसां बस्तिः शक्ता विस्तीर्णा मांसलोन्नता स्निग्धा शुक्ता विकटा कठिना बहु दुःखं वा दारिद्र्यं दिशति ) जिन पुरुषोंका पेड़ू ठीक, चौड़ा, मांसका भरा, ऊंचा, चिकना, लम्बा, चौडा, कडा जो होय तो बहुत दुःख वा दरिद्रके देनेवाला होता है ॥ ९५ ॥



श्वशृगालकरभसैरिभतुल्या बस्तिर्नता भवति येषाम् ।
संकीर्णक्लिन्ना ते धनहीनाः स्युर्नराः प्रायः ॥ ९६ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां नराणां बस्तिः श्वशृगालकरभसैरिभतुल्या नत संकीर्णक्लिन्ना भवति ते नराः प्रायः धनहीनाः स्युः ) जिन पुरुषोंका पेडू कुत्ता, गीदड, ऊंट, भैंस इनके तुल्य झुकाहुआ, सिकुडा, लिबलिबा होय तौ वे पुरुष बहुधा धनहीन होते हैं अर्थात् धन न होय ॥ ९६ ॥

पृथुरुच्चस्था नाभिगभीरा चाण्डाकृतिः सौख्यम् ।
विदधाति धनं मेधां मनुजानां दक्षिणावर्त्ता ॥ ९७ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां मनुजानां नाभिः पृथुः उच्चस्था अतिगम्भीरा च पुनः अण्डाकृतिः दक्षिणावर्ता सौख्यं मेधां धनं विदधाति ) जिन पुरुषोंकी टूंडी चौडी ऊंची बहुत गहरी अंडेकी सूरत और दाहिनी ओर झुकीहुई जो होय तो सुख, बुद्धि, धनको देनेवाली होती है ॥ ९७ ॥

शतपत्रकर्णिकाभा नाभि स्याद्यस्य मनुजमात्रस्य ।
प्राप्नोति सपदि स पुमान् ससुवर्णां साणवामवनिम् ॥ ९८ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य मनुजमात्रस्य नाभिः शतपत्रकर्णिकाभा स्यात् ) जिस पुरुषमात्रकी टूंडी कमलके फूलकीसी आभा चक्राकारवाली होय तो ( स पुमान् सपदि ससुवर्णां साणवाम् अवनिं प्राप्नोति ) सो पुरुष शीघ्रही सोनेसहित समुद्रसहित पृथ्वीको प्राप्त होय ॥ ९८ ॥

पुंसां नाभिर्दीर्घा यथाक्रमं पार्श्वयोस्तदूर्ध्वमधः ।
दीर्घा पुरीश्वरत्वं गोस्वामित्वं सदा तनुते ॥ ९९ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां पुंसां नाभिः दीर्घा यथाक्रमं पार्श्वयोः ऊर्ध्वम् अधः भवति ) जिस पुरुषकी टूंडी बडी जैसे क्रमसे पसलियोंके बीचमें ऊंची नीची होय ( सा नाभिः पुरीश्वरत्वं च पुनः गोस्वामित्वं सदा तनुते ) सो पुरुषको नगरीका स्वामी और गउओंका अधिकारी सदा करै है ॥ ९९ ॥

विषमवलिर्मध्यस्था नैःस्वं शूलं करोति नीचस्था ।
तुङ्गा स्वल्पा क्लेशं वामावर्ता नृणां शाठ्यम् ॥ १०० ॥

अन्वयार्थौ–( येषां पुंसां मध्यस्था विषमवलिः नृणां नैःस्वं शूलं करोति ) जिन पुरुषोंके बीचमें स्थित विषम सलवट १-३-५-आदि होयँ तो मनुष्योंको दरिद्र और शूलको करे और ( नीचस्था वलिः तुङ्गा स्वल्पा क्लेशं करोति ) जो सलवट कुछ बीचसे नीची ऊंची छोटी वा खंडित होय तो दुःखको करे और ( वामावर्ता वलिः नृणां शाठ्यं करोति ) जो बाईओरको झुकीहुई सलवट होय तो मनुष्योंको मूर्खता करे ॥१००॥

क्षोणिपतिस्तनुकुक्षिः शूरो भोगान्वितश्च समकुक्षिः ।
धनहीन उच्चकुक्षिर्मायावी स्याद्विषमकुक्षिः ॥ १०१ ॥

अन्वयार्थौ–( तनुकुक्षिः क्षोणिपतिर्भवति ) छोटी कोखवाला राजा होय और ( समकुक्षिः शूरः च पुनः भोगान्वितो भवति ) बराबर कोखवाला बलवान् और भोगी होय और ( उच्चकुक्षिः धनहीनो भवति ) ऊंची कोखवाला धनहीन होय और ( विषमकुक्षिः मायावी स्यात् ) कुछ ऊंची नीची कोखवाला कपटी छल करनेवाला होय ॥ १०१ ॥

कुक्षिर्यस्य गभीरा विनिपातं स लभते नरः प्रायः ।
उत्ताना यस्य पुनर्नारीवृत्तेन जीवते सोऽपि ॥ १०२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पुरुषस्य कुक्षिः गभीरा भवति ) जिस पुरुषकी कोख गहरी होय ( स नरः प्रायः विनिपातं लभते ) सो पुरुष निश्चय गिरनेको प्राप्त होय कहींसे गिरपडे और ( पुनः यस्य कुक्षिः उत्ताना भवति ) जिसकी कोख ऊंची होय ( सः अपि नारीवृत्तेन जीवति ) सो पुरुष स्त्रीसे जीविका करे अर्थात् उसका स्त्रीसे जीवन होय ॥ १०२ ॥

पार्श्वे मांसोपचिते प्रदक्षिणावर्तरोमणी मृदुनी ।
यस्य भवेतां वृत्ते नियतं जगतीपतिः स स्यात् ॥१०३॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पार्श्वे मांसोपचिते भवेतां च पुनः प्रदक्षिणावर्तरोमणी मृदुनी भवतः ) जिसके पसवाडे मांससे भरे होयँ



और उनमें दाहिनी ओरको नरम नरम रोंगटे होंय और ( यस्य पार्श्वे वृत्ते भवेतां स जगतीपतिः नियतं स्यात् ) जिसके पसवाडे गोल होंय सो पृथ्वीपति निश्चय होय ॥ १०३ ॥

निम्नैर्भोज्यवियुक्ताः पार्श्वैः पिशितोज्झितैर्धनविहीनाः ।
स्थूलास्थिभिः पुमांसः कुटिलैः पुरुषाः परप्रेष्याः ॥ १०४ ॥

अन्वयार्थौ–( निम्नैः पार्श्वैः पुरुषाः भोज्यवियुक्ताः भवन्ति ) नीचे पसवाडेवाले पुरुष अनेक प्रकारके भोजनसे रहित होते हैं और ( पिशितोज्झितैः पार्श्वैः धनहीनाः भवंति ) जिसके मांसरहित पसवाडे होंय वे धनहीन होते हैं और ( स्थूलास्थिभिः कुटिलैः पार्श्वैः पुमांसः परप्रेष्याः भवंति ) जिसके मोटी हड्डियोंवाले टेढे पसवाडे होंय तो वे पुरुष दूसरेके दूत बने जैसे हलकारे होते हैं ॥ १०४ ॥

जठरं यस्य समं स्यादभितः स पुमान्महार्थाढ्यः ।
सिंहनिभं यस्य पुनः प्राप्नोति स चक्रवर्तित्वम् ॥ १०५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य जठरम् अभितः समं स्यात् स पुमान् महार्थाढ्यो भवति ) जिसका पेट सब प्रकारसे बराबर होय सो पुरुष बहुत धनवाला होय और ( पुनः यस्य जठरं सिंहनिभं स्यात् स नरः चक्रवर्तित्वं प्राप्नोति ) जिसका पेट सिंहकी तुल्य होय, सो पुरुष चक्रवर्ती राजा होय ॥ १०५ ॥

भेकोदरो नरपतिर्वृषभमयः परदारभोगी च ।
वृत्तोदरः सुखी स्यान्मीनव्याघ्रोदरः सुभगः ॥ १०६ ॥

अन्वयार्थौ–( भेकोदरः नृपतिर्भवति ) मेंढकके तुल्य पेटवाला राजा होय और ( वृषभमयः परदारभोगी स्यात् ) बैलके तुल्य पेटवाला परस्त्रीभोगी होय और ( वृत्तोदरः सुखी स्यात् ) गोल पेटवाला सुखी होय और ( मीनव्याघ्रोदरः सुभगः स्यात् ) मछली और बघेरेके तुल्य पेटवाला सुन्दर भाग्यवान् होय ॥ १०६ ॥

पिठरजठरो दरिद्रो घटजठरो दुर्भगः सदा दुःखी ।
भुजगजठरो भुजिष्यो बहुभोजी जायते मनुजः ॥ १०७ ॥

अन्वयार्थौ–( पिठरजठरः नरो दरिद्रो भवति ) हंडियाकेसा पेटवाला पुरुष दरिद्री होय और ( घटजठरो दुर्भगः तथा सदा दुःखी स्यात् ) घडेकेसे पेटवाला पुरुष कुरूपी और सदा दुःखी रहे और ( भुजगजठरः मनुजः भुजिष्यः च पुनः बहुभोजी जायते ) सर्पकेसे पेटवाला पुरुष टहलुवा और बहुभोजी अर्थात् बहुत खानेवाला होय ॥ १०७ ॥

श्ववृकोदरो दरिद्रः शृगालतुल्योदरो दरोपेतः ।
पापः कृशोदरः स्यान्मृगभुक्सदृशोदरश्चौरः ॥१०८॥

अन्वयार्थौ–( श्ववृकोदरः पुरुषः दरिद्रः स्यात् ) कुत्ता और भेडियाकासा पेटवाला पुरुष दरिद्र होय और ( शृगालतुल्योदरः दरोपेतः स्यात् ) गीदडके तुल्य पेटवाला डरपोकना होय और ( कृशोदरः पापः स्यात् ) दुर्बल पतले पेटवाला पापी होय और ( मृगभुक्सदृशोदरः चौरः स्यात् ) चीतेकेसे पेटवाला चोर होता है ॥ १०८ ॥

जायेत यस्य मध्यं मुशलोदरसोदरं तनुत्वेन ।
स पुमान्नृपतिर्ज्ञेयो विपर्ययो भवति विपरीते॥ १०९॥

अन्वयार्थौ–( यस्य उदरं मध्यं तनुत्वेन मुशलोदरसोदरं जायेत स पुमान् नृपतिर्ज्ञेयः ) जिसका पेट बीचमें पतला मूशलके आकार होय सो पुरुष राजा जानिये ( विपरीते सति विपर्ययो भवति ) और किसी प्रकारसे उल्टा होय तो दरिद्री और विपरीतको करै ॥ १०९ ॥

प्रहरणमरणं रमणीभोगानाचार्यपदमनेकसुतताम् ।
एकद्वित्रिचतुर्भिः क्रमेण वलिभिः पुमाँल्लभते ॥ ११० ॥

अन्वयार्थौ–( पुमान् क्रमेण एकद्वित्रिचतुर्भिः वलिभिः प्रहरणमरणं रमणीभोगान् तथा आचार्यपदम् अनेकसुततां लभते ) पुरुषक्रमसे १-२-३-४ वलि अर्थात् सलवटों करिके शस्त्रसे मरना और स्त्रीसे भोग और आचार्यपद और अनेक पुत्रोंको प्राप्त होता है ॥ ११० ॥



अवलिर्नृपतिः सुखभाक्परदाररतो हि नूनं स्यात् ।
सरलवलिः पापरतो नित्यमगम्याभिगमनमनाः ॥ १११ ॥

अन्वयार्थौ–( अवलिः पुरुषः नृपतिः तथा सुखभाक् ) वलिरहित पुरुष राजा होय और सुख भोगनेवाला और ( परदाररतः नूनं स्यात् ) पराई स्त्रीमें निश्चय करिके सुख पाने और ( सरलवलिः पापरतः ) जिसकी सीधी सलवटें होय वह पापकर्म करे और(नित्यम् अगम्याभिगमनमनाः भवति) जिनसे भोग करना उचित नहीं उनसे नित्य भोग करनेमें जिसका मन होय॥ १११॥

अभ्युन्नतेन मांसोपचितेन सुसंहतेन भूमिभुजः ।
हृदयेन महार्थजुषः पृथुना दीर्घायुषः पुरुषाः ॥ ११२ ॥

अन्वयार्थौ–( अभ्युन्नतेन मांसोपचितेन सुसंहतेन हृदयेन भूमिभुजो भवन्ति ) उँचाईलिये मांससे भराहुवा, अच्छी बनावटकी ऐसी छाती जो होय तो राजा होय और ( पृथुना हृदयेन पुरुषाः महार्थजुषः च पुनः दीर्घायुषो भवंति ) जो चौडी छातीवाले पुरुष होंय तो बडे धनवाले और बडी आयुवाले होयँ ॥ ११२ ॥

स्थूलशिरापरिकलितं खररोमसमन्वितं पुंसाम् ।
हृदयं पुनः सकंपं निःस्वत्वं शश्वदाददते ॥ ११३ ॥

अन्वयार्थौ–( स्थूलशिरापरिकलितं खररोमसमन्वितं पुनः सकंपं हृदयं पुंसां शश्वत् निःस्वत्वम् आददते ) मोटी नसोंसे मिलीहुई, खरदरे बालोंसे युक्त कंपसहित जो छाती होय तो पुरुषोंको सदा दरिद्रताको देनेवाली होती है ॥ ११३ ॥

पृथुलं भवत्युरःस्थलमचलशिलाकठिनमुन्नतं नृपतेः ।
मृगनाभीपत्रलतासमानमुरो रोमराजिचितम् ॥ ११४ ॥

अन्वयार्थौ–( नृपतेः उरःस्थलं पृथुलम् अचलशिलाकठिनम् उन्नतं भवति ) राजाकी छाती चौडी पर्वतकी शिलाके तुल्य कडी उंची होती है ( च पुनः उरः मृगनाभीपत्रलतासमानं रोमराजिचितं भवति) फिर वही छाती मृगनाभीपत्रलताके तुल्य बालोंकी लकीरें करिके व्याप्त होती है ॥ ११४ ॥

उरसा घनेन धनवान्पीनेन भटस्तथोर्ध्वरोम्णा स्यात् ।
निःस्वस्तनुना विषमेणाकालमृतिरकिंचनश्च नरः ॥ ११५ ॥

अन्वयार्थौ–( घनेन उरसा धनवान् तथा पीनेन ऊर्ध्वरोम्णा उरसा भटः स्यात् ) बहुत कड़ी छातीवाला धनवान् और मांसकी भरी हुई ऊपरसे रोमयुक्त ऐसी छातीवाला योद्धा अर्थात् शूरवीर होता है और ( तनुना उरसा निःस्वः स्यात् ) छोटी छातीवाला दरिद्र होय और ( विषमेण उरसा अकालमृतिः स्यात् ) ऊंची नीची छातीवालोंकी अकालमृत्यु होती है और ( च पुनः नरः अकिंचनो भवति ) वह मनुष्य धनरहित अर्थात् दरिद्र होय ॥ ११५ ॥

वृत्ताः स्तनाः प्रशस्ताः सुस्निग्धाः कोमलाः समाः पुंसाम् ।
विषमाः परुषा विकटाः प्रायो दुःखाय जायन्ते ॥ ११६ ॥

अन्वयार्थौ–(वृत्ताः सुस्निग्धाः कोमलाः समाः पुंसां स्तना प्रशस्ताः सन्ति ) गोल बहुत चिकने नरम और बराबरवाले पुरुषोंके स्तन अच्छे होते हैं और ( विषमाः परुषाः विकटाः प्रायः दुःखाय जायंते ) ऊंचे नीचे कठोर भयानक बहुधा दुःख देनेवाले होते हैं ॥ ११६ ॥

मांसोपचितैर्भूपाः सुभगाः स्युश्चूचुकैरपि द्वन्द्वैः ।
पीनैः सुखिनो विषमायतैः सदा निःस्वताभाजः ॥ ११७ ॥

अन्वयार्थौ–( मांसोपचितैः अपि चूचुकैः द्वंद्वैः सुभगाः भूपाः स्युः) मांससे भरीहुई दोनों कुचोंकी नोकवाले श्रेष्ठ राजा होते हैं और ( पीनैः सुखिनो भवंति ) मोटेपनसे सुखी होते हैं और ( विषमायतैः सदा निःस्वताभाजः स्युः ) जो वेही कुच ऊंचे नीचे लंबे होंय तो निर्धन अर्थात् सदा दरिद्र होते हैं ॥ ११७ ॥

पीनेन धनाधिपतिर्जत्रुयुगेनोन्नतेन भोगी स्यात् ।
विषमोन्नतेन दुःखी नतास्थिबन्धेन धनहीनः ॥ ११८ ॥

अन्वयार्थौ–( पीनेन जत्रुयुगेन धनाधिपतिर्भवति)मोटी दोनों संधि होयँ वो धनवान् होय और (उन्नतेन भोगी स्यात् ) जो ऊँची होय तो भोगी



नेवाला होय और ( विषमोन्नतेन दुःखी स्यात् ) जो उंची और नीची होय तो दुःखी होय और ( नतास्थिबंधेन धनहीनः स्यात् ) जो झुकेहुये हड्डियोंके बंधन होंय तो निर्धन अर्थात् दरिद्री होय ॥ ११८ ॥

स्कन्धावनुक्रमतो मूले पीनौ समुन्नतौ किञ्चित् ।
वृषककुदसमौ ह्रस्वौ लक्ष्मीं दृढसंहतिं वहतः ॥ ११९ ॥

अन्वयार्थौ–( अनुक्रमात् मूले पीनौ किंचित् समुन्नतौ वृषककुदसमौ ह्रस्वौ स्कन्धौ चेत् लक्ष्मीं दृढसंहतिं वहतः ) जो क्रमसे जडमें मोटे ऊँचे बैलकी टांटिके तुल्य छोटे कंधे होंय तो लक्ष्मीके अचल समूहको देते हैं अर्थात् बहुत लक्ष्मीके देनेवाले होते हैं ॥ ११९ ॥

हुडवद्दीर्घौ स्कंधौ निर्मांसौ भारवाहकौ पुंसाम् ।
कुटिलौ कृशावतितनू खेदकरौ रोमशौ बहुशः ॥ १२० ॥

अन्वयार्थौ–( पुंसां हुडवद्दीर्घौ निर्मांसौ स्कन्धौ भारवाहकौ भवतः ) जो बैलकेसे बडे मांसरहित जिन पुरुषोंके कंधे होंय वे बोझेके ढोनेवाले होंय और ( कुटिलौ अतिकृशौ बहुशः रोमशौ खेदकरौ भवतः ) जो टेढे बहुत पतले, छोटे, बहुत बालोंसे युक्त होंय तो खेद अर्थात् दुःखके करनेवाले होते हैं ॥ १२० ॥

भुग्नौ मांसविहीनावंसौ नतरोमशौ कृशौ यस्य ।
निर्लक्षणेन लक्ष्म्या नामापि न श्रुतं तेन ॥ १२१ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य अंसौ भुग्नौ मांसविहीनौ नतौ रोमशौ कृशौ भवतः ) जिसके कंधे टेढे झुकेहुऐ विनामांसके रोमवाले दुबले पतले होंय तो ( निर्लक्षणेन तेन लक्ष्म्या नाम अपि न श्रुतम् ) वे अभागे पुरुष लक्ष्मीका नाम भी न सुनें कि लक्ष्मी कैसी होती है ॥ १२१ ॥

अत्युच्छ्रितौ यदंसौ किंचिद्बाह्वोः समुन्नतिं दधतः ।
सुश्लिष्टसंधिबन्धौ वपुषोधनिशूरयोः स्याताम् ॥ १२२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य सुश्लिष्टसंधिबंधौ अत्युच्छ्रितौ अंसौ बाह्वोः किंचित् समुन्नतिं दधतः ) जिसके अच्छे मिलेहुए जोडबंध कन्धे बाहुसे कुछएक

ऊँचे होंय तो ( धनिशूरयोः वपुषोः एतादृशौ स्कंधौ स्यातामू ) धनी और शूरवीरोंके शरीरमें ऐसे कंधे होते हैं ॥ १२२ ॥

मृदुतनुरोमे कक्षे प्रस्वेदमलोज्झिते सुरभिगन्धी ॥
पीनोन्नते धनवतामतोऽन्यथा वित्तहीनानाम् ॥ १२३ ॥

अन्वयार्थौ–( मृदुतनुरोमे प्रस्वेदमलोज्झिते सुरभिगंधी पीनोन्नते एतादृशौ कक्षे धनवतां स्यातामू ) कोमल पतले रोंगते, पसीने और मल करिके रहित, सुंदर गंधवाली और मोटी ऊँची कांखें धनवानोंकी होतीहैं और ( वित्तहीनानाम् अतः अन्यथा स्यातात ) इससे अन्यथा निर्धनोंकी होती हैं ॥१२३॥

बाहू वामविवलितौ वृत्तावाजानुलंबिनौ पीनौ ।
पाणी फणछत्राङ्कौ करिकरतुल्यौ समौ नृपतेः ॥ १२४ ॥

अन्वयार्थौ–( वामविवलितौ वृत्तौ आजानुलंबिनौ पीनौ बाहू तथा फणछत्रांकौ करिकरतुल्यौ समौ नृपतेः पाणी स्यातामू ) बाई ओरको फिरीहुई गोल घोंटूतक लंबी लटकतीहुई मोटी बाहें और फण छत्रके आकार और हाथीकी सूंडके समान ऐसे हाथ राजाके होते हैं ॥ १२४ ॥

गोपुच्छाकृति पीनं हीनं खररोमबहुलरोमभिर्दीर्घम् ।
निर्मग्नशिरासन्धि प्रशस्यते भुजयुगं पुंसाम् ॥ १२५ ॥

अन्वयार्थौ–( गोपुच्छाकृति पीनं हीनं खररोमबहुलरोमभिर्दीर्घं, निर्मग्नशिरासंधि पुंसां भुजयुगं प्रशस्यते ) गऊकी पूंछके आकार मोटी, खरदरे रोम और बहुतसे रोमोंकरिके हीन और बडी, जिनकी नसोंकी संधि डूबीहुई ऐसे पुरुषोंकी दोनों भुजा प्रशंसनीय हैं ॥ १२५ ॥

दुष्टः प्रोद्बद्धभुजो बहुरोमा बहुभुजिष्यः स्यात् ।
विषमभुजश्चौर्यरतिः समपीनभुजो नरो दुःस्थः ॥ १२६ ॥

अन्वयार्थौ–( प्रोद्बद्धभुजः दुष्टः स्यात ) खूब गठीली फूलीहुई भुजावाला दुःखदाई होय और ( बहुरोमा बहुभुजिष्यः स्यात ) बहुत रोमोंकी भुजावाला होय तो उसके बहुत नौकर चाकर होंय और ( विषमभुजः



चौर्यरतः स्यात ) ऊंची नीची भुजावाला चोरीमें तत्पर रहे और ( समपीनभुजः नरो दुःस्थः स्यात ) बराबर मोटी भुजवाला पुरुष एक जगह न ठहरे फिरता रहे ॥ १२६ ॥

पाणी नृपतेः श्लक्ष्णौ निःस्वेदौ मांसलौ तथाच्छिद्रौ ।
अरुणावकर्मकठिनावुष्णौ दीर्घांगुली स्निग्धौ ॥ १२७ ॥

अन्वयार्थौ–( श्लक्ष्णौ निःस्वेदौ मांसलौ तथा अच्छिद्रौ अरुणौ अकर्मकठिनौ उष्णौ दीर्घांगुली स्निग्धौ नृपतेः पाणी स्यातामू ) अच्छे चमकदार पसीने रहित मांससे भरे हुए और छिद्ररहित लालवर्णवाले विना काम करे कडे रहैं गरम बडी बडी अंगुली चिकने राजाके ऐसे हाथ होते हैं ॥१२७॥

विस्तीर्णौ ताम्रनखौ स्यातां कपिवत्करौ धनाढ्यस्य ।
शार्दूलवद्विरूक्षौ विकृतौ निःस्वस्य निर्मांसौ ॥ १२८ ॥

अन्वयार्थौ–( विस्तीर्णौ ताम्रनखौ कपिवत्करौ धनाढ्यस्य स्यातामू ) लम्बे चौडे लाल नखवाले, बन्दरकेसे हाथ जिसके ऐसे हाथ धनवालेके होते हैं और ( शार्दूलवत् विरूक्षौ विकृतौ निर्मांसौ निःस्वस्य स्यातामू ) बघेरेकेसे बूरे सूखेसे विना मांसके होय तौ ऐसे हाथ दरिद्रीके होते हैं ॥ १२८ ॥

रेखाभिः पूर्णाभिस्तिसृभिः करमूलमङ्कितं यस्य ।
धनकाञ्चनरत्नयुतं श्रीः पतिमिव भजति लुब्धेव ॥ १२९ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य करमूलं पूर्णाभिः रेखाभिः तिसृभिः अंकितं स्यात ) जिसका पहुँचा पूरी तीन रेखा करिकै युक्त होय तो ( लुब्धा इव श्रीः धनकांचनरत्नयुतं पतिमिव भजति ) तिसको लोभी हो करिके लक्ष्मी धन कांचन रत्नयुक्त पतिकी नाई भजै है ॥ १२९ ॥

करमूलैश्च निगूढैः सुदृढं सुश्लिष्टसन्धिभिर्भूपाः ।
निःस्वाः श्लथैः सशब्दैः पाणिच्छेदान्वितैर्हीनाः ॥ १३० ॥

अन्वयार्थौ–( निगूढैः सुदृढं सुश्लिष्टसंधिभिः करमूलैर्भूपाः भवंति ) छिपेहुए बहुत कड मोटे अच्छेप्रकार मिलीहुई संधिवाले पहुँचे वा पंजेसे

युक्त राजा होते हैं और (श्लथैः निःस्वाः भवन्ति ) शिथिलतासे दरिद्री होते हैं और ( सशब्दैः पाणिच्छेदान्वितैः हीनाः भवन्ति ) ढीले और शब्दसे युक्त होंय तो हीन होते हैं ॥ १३० ॥

अवहस्तं करपृष्ठं विस्तीर्णं पीनमुन्नतं स्निग्धम् ।
विनिगूढशिरं परितः क्षोणिपतेः फणिफणाकारम् ॥ १३१ ॥

अन्वयार्थौ-( अवहस्तं विस्तीर्णं पीनम् उन्नतं स्निग्धं परितः निगूढशिरं फणिफणाकारं करपृष्ठं क्षोणिपतेः भवति ) अच्छा चौडा मोटा ऊंचा चिकना जिसके छोर चारोंओरसे मांसमें डुबेहुए और साँपके फणके आकार हाथकी पीठ ऐसी राजाओंकी होती है ॥ १३१ ॥

मणिबन्धसमं निम्नं निर्मांसं रोमसंचितं सशिरम्
करपृष्ठं निःस्वानां रूक्षं पुरुषं विवर्णं स्यात् ॥ १३२ ॥

अन्वयार्थौ-( मणिबंधसमं निम्नं निर्मांसं रोमसंचितं सशिरं रूक्षं परुषं विवर्णं करपृष्ठं निःस्वानां स्यात् ) पहुंचेकी बराबर नीची विना मांसके रोमोंसे युक्त नसों समेत रूखी कडी बुरे रंगकी हाथकी पीठ ऐसी दरिद्रियोंकी होती है ॥ १३२ ॥

सुवृत्तनिम्नेन धनी पाणितलेनोन्नतेन दानरुचिः ।
निम्नेन जनकवित्तत्यक्तो विषमेण धनहीनः ॥ १३३ ॥

अन्वयार्थौ-( सुवृत्तनिम्नेन पाणितलेन धनी भवति ) गोल निचाई लिये हथेलीसे धनी होता है और ( उन्नतेन दानरुचिर्भवति ) ऊंची हथेलीसे दानमें रुचि करनेवाला होता है और ( निम्नेन जनकवित्तत्यक्तो भवति ) नीची हथेलीसे पिताके धन करिके छोडा हुआ होता है और ( विषमेण धनहीनो भवति ) ऊंची नीची हथेलीसे धनहीन होता है ॥ १३३ ॥



अरुणेनाढ्यः पीतेनागम्यस्त्रीरतिः करतलेन ।
सितासितेन दरिद्रो नीलेनापेयपायी स्यात् ॥ १३४ ॥

अन्वयार्थौ-( अरुणेन करतलेन आढ्यः स्यात् ) लाल हथेलीसे धनवान् होता है और ( पीतेन अगम्यस्त्रीरतिः स्यात् ) पीली हथेलीसे जिनसे भोग उचित नहीं उनसे भोगकी इच्छा रहे और ( सितासितेन दरिद्रः स्यात् ) सफेद और काली हथेलीसे दरिद्री होता है और ( नीलेन अपेयपायी स्यात् ) नीली हथेलीसे पीने योग्य नहीं उसका पीनेवाला अर्थात् मदिराका पीनेवाला होता है ॥ १३४ ॥

बहुरेखापरिकलितं पाणितलं भवति यस्य मनुजस्य ।
यदि वा रेखाहीनं सोऽल्पायुर्दुःखितो निःस्वः ॥ १३५ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य मनुजस्य पाणितलं बहुरेखापरिकलितं भवति यदि वा रेखाहीनं सः अल्पायुः च पुनः दुःखितो निःस्वो भवति ) जिस मनुष्यकी हथेली बहुत रेखाओंसे युक्त होय अथवा रेखा न होय सो थोडी आयु और दुःखी दरिद्री होता है ॥ १३५ ॥

अधुना मीनाद्याकृतिरेखाणां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये ।
वामकरे नारीणां दक्षिणहस्ते नराणां तु ॥ १३६ ॥

अन्वयार्थौ-( अधुना नराणां दक्षिणहस्ते तथा नारीणां वामकरे मीनाद्याकृतिरेखाणां लक्षणं स्फुटं वक्ष्ये ) अब मनुष्योंके दाहिने हाथ और स्त्रियोंके बांये हाथमें जो मछलीके आकार रेखा हैं उनके लक्षण प्रगट करता हूं १३६

जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुःखमिह जगत्यखिलम् ।
कररेखाभिः प्रायः प्राप्नोति नरोऽथवा नारी ॥ १३७ ॥

अन्वयार्थौ-( नरः अथवा नारी इह जगति अखिलं जीवितमरणं लाभालाभं सुखदुःखं प्रायः कररेखाभिः प्राप्नोति ) मनुष्य वा स्त्री इस जगतमें जीना मरना लाभ हानि सुख दुःख संपूर्ण बहुधा करिके हाथकी रेखाहीसे पाता है ॥ १३७ ॥

अन्तर्मुखेन मीनद्वयेन पूर्णेन पाणितलमध्यम् ।
यस्याङ्कितं भवेदिह स धनी स चाप्रदो मनुजः ॥ १३८ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य मनुजस्य पाणितलमध्यम् अंतर्मुखेन पूर्णेन मीनद्वयेन अंकितं भवेत् स इह धनी सः अप्रदो भवति)जिस मनुष्यकी हथेलीके बीच भीतरको है मुख जिनका ऐसी पूर्ण दो मछली करिके युक्त रेखा होय वह पुरुष धनवान् तो होय परन्तु देनेवाला न होय ॥ १३८ ॥

अच्छिन्ना गम्भीरा पूर्णा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला ।
अन्तर्वृत्ता स्निग्धा कररेखा शस्यते पुंसाम् ॥ १३९ ॥

अन्वयार्थौ–( पुंसां करतले अच्छिन्ना गंभीरा पूर्णा रक्ताब्जदलनिभा मृदुला अन्तर्वृत्ता स्निग्धा कररेखा शस्यते ) पुरुषके हाथमें टूटी गहरी न होय और लाल कमलकी पत्तीके बराबर नरम भीतरसे गोल चिकनी ऐसी हाथकी रेखा होय तो वे श्रेष्ठ हैं ॥ १३९ ॥

मधुपिङ्गाभिः सुखिनः शोणाभिस्त्यागिनो गभीराः स्युः ।
सूक्ष्माभिर्धीमन्तः समातमूलाभिरथ सुभगाः ॥ १४० ॥

अन्वयार्थौ–( मधुपिङ्गाभिःरेखाभिःसुखिनो भवन्ति )सरबती रंगकीसी आभा जिस रेखाकी होय तो ऐसी रेखासे सुखी होय और ( शोणाभिः रेखाभिः त्यागिनः च पुनः गभीराः स्युः ) लाल रंगकी रेखाओंसे दानी और गंभीर होय और ( सूक्ष्माभिः धीमन्तो भवंति ) पतली रेखाओंसे बुद्धिमान् होय और ( अथ समातमूलाभिः रेखाभिः सुभगाः स्युः ) जडसे लगाय पूरी रेखा होय तो ऐसी रेखाओंसे सुन्दर और रूपवान् होय ॥ १४० ॥

पल्लविता विच्छिन्ना विषमाः परुषाः समास्फुटितरूक्षाः ।
विक्षिप्ताश्च विवर्णा हरिताः कृष्णाः पुनरशुभाः ॥ १४१ ॥

अन्वयार्थौ–( पल्लविताः विच्छिन्नाः विषमाः परुषाः समास्फुटितरूक्षाः विक्षिप्ताः च पुनः विवर्णाः हरिताः कृष्णाः पुनः अशुभाः भवन्ति



फैली हुई टूटी ऊंची नीची खरदरी बराबर फटीहुई रूखी बिखरी और बुरे रंगकी हरी काली ऐसी रेखाओंके लक्षण अशुभ होते हैं ॥ १४१ ॥

पल्लवितायां क्लेशश्छिन्नायां जीवितस्य सन्देहः ।
विषमायां धननाशः परुषायां कदशनं तस्याम् ॥ १४२ ॥

अन्वयार्थौ–( पल्लवितायां तस्यां क्लेशो भवति ) पत्तेयुक्त शाखाके तुल्य फैली रेखावालेको दुःख होय और ( छिन्नायां तस्यां जीवितस्य संदेहो भवति ) फटीहुई रेखावालेको जीनेका सन्देह होय और ( विषमायां तस्यां धननाशो भवति ) ऊंची नीची रेखासे धनका नाश होय और ( परुषायां तस्यां कदशनं भवति ) खरदरी रेखासे बुरा भोजन होता है ॥ १४२ ॥

आपाणिमूलभागान्निःसृत्यांगुष्ठतर्जनीमध्ये ।
आद्या भवन्ति तिस्रो गोत्रद्रव्यायुषां रेखाः ॥ १४३ ॥

अन्वयार्थौ–( आपाणिमूलभागात् निःसृत्य अंगुष्ठतर्जनीमध्ये आद्या स्तिस्रः रेखाः गोत्रद्रव्यायुषां भवन्ति ) हाथके मूलभागसे निकलकर अंगूठा और तर्जनीके बीचमें पहले ही तीन रेखा क्रमसे जो होय तो ऐसी रेखा गोत्र द्रव्य आयुकी होती है ॥ १४३ ॥

विच्छिन्नाभिस्ताभिः स्वल्पानि भवन्ति कुलधनायूंषि ।
रेखाभिर्दीर्घाभिर्विपरीताभिर्भवति विपरीतम् ॥ १४४ ॥

अन्वयार्थौ–( विच्छिन्नाभिस्ताभिः रेखाभिः स्वल्पानि कुलधनायूंषि भवन्ति ) फटी टूटी रेखाओंसे थोडी संतान और थोडा ही धन और थोडी आयु होती है और ( दीर्घाभिः विपरीताभिः रेखाभिः विपरीतं भवति ) बडी पूरी रेखा होय फटी टूटी विपरीत न होय तो बहुत संतान बहुत धन और बहुत आयुवाला होता है ॥ १४४ ॥

मणिबन्धान्निर्गच्छति रेखायस्य प्रदेशिनीमूलम् ।
बहुबन्धुजनाकीर्णं तस्य पुनर्जायतेऽभिजनम् ॥ १४५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य रेखा मणिबन्धात् प्रदेशिनीमूलं निर्गच्छति पुनः तस्य बहुबन्धुजनाकीर्णम् अभिजनं जायते ) जिसके पहुँचेसेरेखा प्रदेशिनी

अर्थात् अंगूठेके पासकी तर्जनी अंगुलीकी जडतक जाय तो तिस पुरुषके बहुत भाई और बहुत मनुष्यका कुल होय ॥ १४५ ॥

लघ्व्या पुनर्नराणां लघुरिह दीर्घोऽथ दीर्घया वंशः ।
परिभिन्नो विज्ञेयः प्रतिभिन्नया च्छिन्नया छिन्नः ॥ १४६ ॥

अन्वयार्थौ-( पुनः नराणां लघ्व्या रेखया वंशः लघुः ) फिर मनुष्योंकी छोटी रेखासे वंश छोटा होता है और ( दीर्घया रेखया वंशः दीर्घः ) बडी रेखासे वंश बडा होय और ( प्रतिभिन्नया परिभिन्नः छिन्नया छिन्नः विज्ञेयः ) टूटी फूटी रेखासे वंश बिखरा हुआ होय और कटी हुई रेखासे वंश भी कटा हुआ विशेषकरि जानिये ॥ १४६ ॥

रेखा कनिष्ठिकाया ज्येष्ठामुल्लंघ्य यस्य याति परम् ।
अच्छिन्ना परिपूर्णा स नरो वत्सरशतायुः स्यात् ॥ १४७ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य कनिष्ठिकाया अच्छिन्ना परिपूर्णा रेखा ज्येष्ठाम् उल्लंघ्य परं याति स नरः वत्सरशतायुःस्यात् ) जिस मनुष्यकी कनिष्ठिका अंगुलीकी बराबर पूरी रेखा ज्येष्ठा अर्थात् बीचकी अंगुलीको उलांघि जाय तो उस मनुष्यकी सौ वर्षकी आयु होय ॥ १४७ ॥

यावन्मात्राश्छेदाज्जीवितरेखाः स्थिरा भवन्ति नृणाम् ।
अपमृत्यवोऽपि तावन्मात्रा नियतं परिज्ञेयाः ॥ १४८ ॥

अन्वयार्थौ-( नृणां जीवितरेखाः छेदात् यावन्मात्राः स्थिराः भवन्ति ) मनुष्योंके जीनेकी रेखा टूटी हुई जितनी स्थिर होंय तो ( तावन्मात्राः अपमृत्यवः अपि नियतं परिज्ञेयाः ) उतनीही अपमृत्यु निश्चय करि जानने योग्य हैं ॥ १४८ ॥

पुंसामायुर्भागे प्रत्येकं पंचविंशतिः शरदाम् ।
कल्प्याः कनिष्ठिकांगुलिमूलादिह तर्जनीपरतः ॥ १४९ ॥

अन्वयार्थौ-( पुंसाम् आयुर्भागे प्रत्येकं शरदां पंचविंशतिः कनिष्ठिकांगुलिमूलात् इह तर्जनीपरतः कल्प्या ) मनुष्योंकी आयुके भावमें हरएक



अंगुलिके नीचेतक पचीस वर्ष और कनिष्ठिकाके मूलसे तर्जनीतक कल्पना करनी चाहिये ॥ १४९ ॥

रेखा मणिबन्धाद्यदि यात्यंगुष्ठप्रदेशिनीमध्यम् ।
ऋद्धियुतं ख्यापयति विज्ञानविचक्षणं पुरुषम् ॥ १५० ॥

अन्वयार्थौ-( यदि रेखा मणिबन्धात् अंगुष्ठप्रदेशिनीमध्यं याति ) जो रेखा पहुँचेसे अँगूठा और तर्जनीके बीचमें जाय तो ( तदा ऋद्धियुतं विज्ञानविचक्षणं पुरुषं ख्यापयति ) वह ऋद्धिसिद्धि युक्त विशेष ज्ञानमें चतुर पुरुषको जनाती है ॥ १५० ॥

चेदंगुष्ठं गच्छति सैव ततो वितनुते महीशत्वम् ।
यदि सैव तर्जनीं वा साम्राज्यं मंत्रिपदमथवा ॥ १५१ ॥

अन्वयार्थौ-( चेत् सा एव रेखा अंगुष्ठं गच्छति तर्हि महीशत्वं वितनुते ) सो वही रेखा जो अंगूठेतक जाय तो पृथ्वीका राजा होय और ( यदि सा एव रेखा तर्जनीं वा गच्छति तर्हि साम्राज्यम् अथवा मन्त्रिपदं ददाति ) जो वही रेखा तर्जनीतक जाय तो राजाओंका राजा अथवा मन्त्रिके पदको देती है ॥ १५१ ॥

निष्क्रान्ता मणिबन्धात्प्राप्ता यदि मध्यमांगुलीं रेखा ।
नृपतिं सेनाधिपतिं सा कुरुते वा तमाचार्यम् ॥ १५२ ॥

अन्वयार्थौ-( यदि मणिबन्धात् निष्क्रान्ता रेखा मध्यमांगुलीं प्राप्ता ) जो मणिबन्धसे निकलकर रेखा बीचकी अँगुलीतक जाय ( तर्हि नृपतिं सेनापतिं कुरुते वा तम् एव पुरुषम् आचार्यं कुरुते ) तो उसे राजा तथा राजाका सेनापति अर्थात् फौजका मालिक करे अथवा उसी पुरुषको आचार्य अर्थात् गुरु करे ॥ १५२ ॥

न च्छिन्ना न स्फुटिता दीर्घतरा विगतपल्लवा पूर्णा ।
ऊर्ध्वा रेखा कुरुते सहस्रजनपोषमेकोऽपि ॥ १५३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य ऊर्ध्वरेखा न छिन्ना न स्फुटिता तथा दीर्घतरा विगतपल्लवा पूर्णा भवति एकः अपि स सहस्रजनपोषं कुरुते ) एक ही जो

ऊर्ध्व रेखा टूटी फूटी न होय और लम्बी बडी और शाखा न लगी होय पूरी होय तौ वह हजार मनुष्योंका पालन करनेवाला होय ॥ १५३ ॥

सा ब्राह्मणस्य रेखा वेदकरी क्षत्रियस्य राज्यकरी ।
वैश्यस्य महार्थकरी सौख्यकरी भवति शूद्रस्य ॥ १५४ ॥

अन्वयार्थौ–( सा एव ऊर्ध्वा रेखा ब्राह्मणस्य वेदकरी–क्षत्रियस्य राज्यकरी–वैश्यस्य महार्थकरी–शूद्रस्य सौख्यकरी भवति ) सो वही ऊर्ध्व रेखा जो ब्राह्मणके होय तो वेदपाठी और क्षत्रियके होय तो राज्यकी करनेवाली और वैश्यके होय तो बहुत धनकी करनेवाली और शूद्रके होय तो सुखको करनेवाली होती है ॥ १५४ ॥

करमूलान्निर्याता यदि रेखाऽनामिकांगुलीमेति ।
विदधाति सार्थवाहं सार्थाढ्यं तं नृपतिमान्यम् ॥ १५५ ॥

अन्वयार्थौ–( यदि ऊर्ध्वा रेखा करमूलान्निर्याता तथा अनामिकांगुलीम् एति तदा तं सार्थवाहं सार्थाढ्यं नृपतिमान्यं विदधाति ) जो वही ऊर्ध्वरेखा हाथकी जडसे निकलकर अनामिका अंगुलीतक जाय तो सौदागर साहूकार करे अथवा धनी राजाओंकरिके पूजने योग्य होय ॥ १५५॥

निष्क्रान्ता पाणितलात्प्राप्नोति कनिष्ठिकांगुलीं रेखा ।
धनकनकाढ्यं श्रेष्ठिमिह कुरुते सा यशोनिष्ठम् ॥ १५६ ॥

अन्वयार्थौ–( या रेखा पाणितलान्निष्क्रान्ता कनिष्ठिकांगुलीं प्राप्नोति सा इह धनकनकाढ्यं श्रेष्ठिं यशोनिष्ठं कुरुते ) जो रेखा हथेलीसे निकलकर कनिष्ठिका अंगुलीतक जाय तो वह उस पुरुषको सुवर्णसे युक्त यशके काममें लगे हुए सेठको करे अर्थात् वह सेठजी होय ॥ १५६ ॥

आलिखितं काकपदं धनरेखायां तु सदृशतो यस्य ।
अर्जयति धनानि पुनस्तत्क्षणमपि स व्ययं कुरुते ॥ १५७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य धनरेखायाम् आलिखितं सदृशतः काकपदं भवति स धनानि अर्जयति पुनः तत्क्षणम् अपि स व्ययं कुरुते ) जिसकी धनरेखामें काकपदके तुल्य लिखा हुआ होय सो बहुत धनको इकट्ठा करै फिर उसी समय शीघ्र खर्च करै ॥ १५७ ॥



त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति यस्य मणिबन्धे ।
नियतं महार्थपतिश्च सार्वभौमो नराधिपतिः ॥ १५८ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य मणिबन्धे त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति स नियतं महार्थपतिः तथा सार्वभौमः नराधिपतिः ) जिसके मणिबंधमें तिहरी प्रकट जौमाला होय सो निश्चय बडे धनका पति और सार्वभौम अर्थात् सब पृथ्वीका राजा होय ॥ १५८ ॥

करमूले यवमाला द्विपरिक्षेपा मनोहरा यस्य ।
मनुजः स राजमंत्री विपुलमतिर्जायते मतिमान् ॥ १५९ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य करमूले द्विपरिक्षेपा मनोहरा यवमाला भवति स मनुजः राजमन्त्री विपुलमतिर्मतिमान् जायते ) जिसके करमूलमें दुहरी सुन्दर जौमाला होय तो वह पुरुष राजाका मन्त्री बडी बुद्धिवाला और बुद्धिमान् अर्थात् चतुर होय ॥ १५९ ॥

सुभगैकपरिक्षेपा यवमाला यस्य पाणिमूले स्यात् ।
स भवति धनधान्ययुतः श्रेष्ठिजनपूजितो मनुजः ॥ १६० ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पाणिमूले सुभगा एकपरिक्षेपा यवमाला स्यात् स मनुजः धनधान्ययुतः श्रेष्ठिजनपूजितो भवति ) जिसके हाथके मूलमें सुन्दर इकहरी जौमाला होय सो पुरुष धनधान्य करिके युक्त उत्तम पुरुषों अर्थात् सेठों करिके पूजित होय ॥ १६० ॥

यदि तिस्रोऽपरमाला मणिबंधादुभयतो विनिस्सृत्य ।
परिवेष्टयन्ति पृष्ठं तदधिकतममिह फलं ज्ञेयम् ॥ १६१ ॥

अन्वयार्थौ–( यदि मणिबन्धात् उभयतः विनिःसृत्य तिस्रः अपरमालाः पृष्ठं परिवेष्टयंति इह तत् अधिकतमं फलं ज्ञेयम् ) जो मणिबन्धसे

दोनों ओर निकलकर और जौमाला हाथके पीठको ढक लेय तो इससे अधिक फल जानना चाहिये ॥ १६१ ॥

इह ताभिः पूर्णाभिः पूर्णां प्राप्नोति संपदं सदसि ।
मध्याभिर्वा मध्यां ह्रस्वाभिर्वा पुमान् ह्रस्वाम् ॥ १६२ ॥

अन्वयार्थौ–( इह ताभिः पूर्णाभिः पुमान् सदसि पूर्णां संपदं प्राप्नोति ताभिर्मध्याभिः वा मध्यां संपदं प्राप्नोति तथा ह्रस्वाभिः ह्रस्वां संपदं प्राप्नोति ) वही जौमाला पूरी होय तो उस पुरुषको पूरी संपदा मिलै और जौमाला कुछ बहुत न थोडी होय तौ मध्यम संपदा मिलै और जो थोडीही जौमाला होय तौ थोडो संपदा प्राप्त होय ॥ १६२ ॥

आयुर्लेखानामांगुलिमूलान्तर्गता भवेदूर्ध्वा ।
यस्य व्यक्ता रेखा स धर्मनिरतो नरः सततम् ॥ १६३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य आयुर्नाम रेखा अंगुलिमूलान्तर्गता ऊर्ध्वं व्यक्ता स नरः सततं धर्मनिरतो भवति ) जिसकी आयुकी ऊर्ध्वरेखा अंगुलियोंकी जडतक जाय और प्रकट होय सो पुरुष सदा धर्ममें तत्पर होय अर्थात् धर्मके काममें लगा रहै ॥ १६३ ॥

यदि रेखा सर्वांगुलिसमस्तपर्वान्तरे स्थिता व्यक्ता ।
स्पष्टो यवोऽपि पुंसा महीयतां तन्महीशत्वम् ॥ १६४ ॥

अन्वयार्थौ–( यदि रेखा सर्वांगुलिसमस्तपर्वान्तरे स्थिता व्यक्ता तथा यवः अपि स्पष्टः महीयतां पुंसां तन्महीशत्वं भवति ) जो रेखा सब अंगुलियोंके सब पर्वों अर्थात् टुकडोंपर प्रकट होय और जौ भी प्रकट होय तो वह पुरुष पूजनीय पुरुषोंमें पृथ्वीका राजा होय ॥ १६४ ॥

रेखाः कनिष्ठिकायुर्लेखामध्ये नरस्य यावंत्यः ।
तावन्त्यो महिलाःस्युर्महिलायाः पुनरपि मनुष्याः ॥ १६५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य नरस्य कनिष्ठिकायुर्लेखयोः मध्ये यावन्त्यः रेखाः स्युः तावन्त्यः महिलाः स्युः महिलायाः पुनः अपि मनुष्याः स्युः ) जिस पुरुषकी कनिष्ठा अंगुलीकी आयुकी रेखाके बीचमें जितनी रेखा होयँ उतनी ही स्त्री अथवा विवाह होने चाहिये और स्त्रीके होयँ तो उतनेही पुरुष जानिये ॥ १६५ ॥



रेखाभिर्विषमाभिर्विषमा समाभिरथ सुदीर्घाभिः ।
सुभगा सूक्ष्माभिः स्यात्स्फुटिताभिर्दुर्भगा नारी ॥ १६६ ॥

अन्वयार्थौ–( विषमाभिः रेखाभिः विषमा अथ दिर्घाभिः समाभिः सुभगा सूक्ष्माभिः स्फुटिताभिः दुर्भगा नारी भवति ) विषम अर्थात् कहीं थोडा कहीं बहुत रेखाओंसे विषम स्त्री होती है और बडी बराबर रेखाओंसे अच्छे चलनवाली होती है और पतली छोटी फटी रेखाओंसे कुचालिनी स्त्री होती है ॥ १६६ ॥

मूलेंऽगुष्ठस्य नृणां स्थूला रेखा भवन्ति यावन्त्यः ।
तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः पुत्रिकास्ताभिः ॥ १६७ ॥

अन्वयार्थौ–( नृणाम् अंगुष्ठस्य मूले यावन्त्यः स्थूला रेखाः भवन्ति तावन्तः पुत्राः स्युः सूक्ष्माभिः ताभिः पुत्रिकाः स्युः ) मनुष्योंके अंगूठेकी जडमें जितनी मोटी रेखा होयँ उतनेही पुत्र होते हैं और पतली रेखाओंसे उतनीही पुत्रियां होती हैं ॥ १६७ ॥

यावन्त्यो मणिबन्धायुर्लेखान्तः प्रतीक्षिताः स्थूलाः ।
तावत्संख्याकान्वै भ्रातॄन् सूक्ष्माः पुनर्भगिनीः ॥ १६८ ॥

अन्वयार्थौ–( यावन्त्यः रेखाः मणिबंधात् आयुर्लेखांतः स्थूलाः प्रतीक्षितास्तावत्संख्याकान्भ्रातॄन्वदन्ति पुनः ता रेखाः सूक्ष्माः भगिनीः वदन्ति ) जितनी रेखा पहुँचेके और आयुरेखाके बीचमें मोटी दीखें उतनीही गिनतीके भाई कहे जायँ फिर वेही रेखा जो पतली होयँ तो बहिनें होयँ ॥ १६८ ॥

रेखाभिश्छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भा विमृत्यवो ज्ञेयाः ।
यावन्त्यस्ताः पूर्णा नियतं जीवन्ति रेखाभिः ॥ १६९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य आयुर्लेखाभिः छिन्नाभिर्भिन्नाभिर्भा विमृत्यवो ज्ञेयाः यावन्त्यस्ताः पूर्णाः ताभिः रेखाभिः नियतं जीवन्ति ) जितनी आयुकी रेखा टूटी होवैं उतनीही होनहार अल्पायु जानिये और जो वही रेखा पूरी होय तो निश्चय करिके उन पूरी रेखाओंसे उतनेही वर्षतक आयु होय अर्थात् निश्चय जीवै ॥ १६९ ॥

मीनो मकरः शङ्खः पद्मो वान्तमुखः सदा फलदः ।
पाणौ बहिर्मुखो यदि तस्य फलं पश्चिमे वयसि ॥ १७० ॥

अन्वयार्थौ-( यदि पाणौ मीनः मकरः शंखः वा पद्मः अंतर्मुखः तदा सदा फलदः भवति-यदि बहिर्मुखः तस्य फलं पश्चिमे वयसि भवति ) जो हाथमें मछली मगर शंख वा कमल हाथके भीतर मुख किये होयँ तो सदा फलके देनेवाले होते हैं और जो वेही बाहर मुख किये होयँ तो उसका फल पिछली अवस्थामें होय ॥ १७० ॥

मीनांकः शतभागी सहस्रभागी सदैव मकराङ्कः ।
शंखांको लक्षपतिः कोटिपतिर्भवति पद्माङ्कः ॥ १७१ ॥

अन्वयार्थौ-( मीनाङ्कः शतभागी स्यात्-मकराङ्कः सदैव सहस्रभागी स्यात्, शंखाङ्कः लक्षपतिर्भवति, पद्माङ्कः कोटिपतिर्भवति ) मछलीके चिह्नवाला सौका धनी होय और कमलके चिह्नवाला सदा हजारका धनी होय और शंखके चिह्नवाला लक्षपति होय और कमलके चिह्नवाला करोडपति होय ॥ १७१ ॥

छिन्नैर्भिन्नैः स्फुटितैरव्यक्तैः किमपि नास्ति फलमेतैः ।
रहितैः सुमुखाः पाणौ प्रायोऽमी सार्वभौमानाम् ।

अन्वयार्थौ-( पाणितले एतैश्छिन्नैर्भिन्नैः स्फुटितैः अव्यक्तैः रहितैः किमपि फलं नास्ति प्रायः अमी सार्वभौमानाम् सुमुखा जायन्ते )



जो हाथकी हथेलीमें वेही चिह्न टूटे फूटे निर्मल न दीखें तो इनसे कुछ फल नहीं है, बहुधा येही चिह्न राजा महाराजाओंके सीधे सुमुख होते हैं ॥ १७२॥

शैलः प्रांशुः पाणेर्यस्य तले विस्फुटः स्फुरति ।
स पुमान् प्रायो राज्यं लभते निजभुजसहायोऽपि ॥ १७३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य पाणेः तले प्रांशुः शैलः विस्फुटः स्फुरति, निजभुजसहायः अपि सः पुमान् प्रायः राज्यं लभते ) जिसकी हथेलीमें ऊंचा पर्वत प्रकट होय वह पुरुष अपनी भुजाओंके बलसे भी बहुधा राज्यको पाता है ॥ १७३ ॥

स्युः रथवाहनकुञ्जरवाजिवृषाद्याः स्फुटाः करे येषाम् ।
परसैन्यजयनशीलास्ते सैन्याधिपतयः पुरुषाः ॥ १७४ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां करे रथवाहनकुंजरवाजिवृषाद्याः स्फुटाः स्युः ते पुरुषाः परसैन्यजयनशीलाः सैन्याधिपतयः भवन्ति ) जिनके हाथमें रथ पालकी हाथी घोडा बैल आदिके आकार प्रकट दिखाई देवें वे पुरुष पराई सेनाके जीतनेवाले, सेनाके स्वामी अर्थात् फौजके मालिक होते हैं ॥ १७४ ॥

उडुपो वा वेडी वा पोतो वा यस्य करतले पूर्णः ।
धनकाञ्चनरत्नानां पात्रं सांयात्रिकः स स्यात् ॥ १७५ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य करतले उडुपः वा वेडी वा पोतः पूर्णः भवति सः धनकाञ्चनरत्नानां पात्रं सांयात्रिकः स्यात् ) जिसके हाथकी हथेलीमें डोंगा बेडा वा नाव पूरी होय वह पुरुष धन सुवर्ण और रत्नोंका पात्र अर्थात् जहाजी सौदागर नावोंका व्यापारी माल भरनेवाला होय ॥ १७५ ॥

श्रीवत्साभा सुखिनां चक्राभा भूभुजां करे रेखा ।
वज्राभा विभववतां सुमेधसां मीनपुच्छाभा ॥ १७६ ॥

अन्वयार्थौ-( सुखिनां करे श्रीवत्साभा भवति, भूभुजां करे चक्राभा भवति, विभववतां करे वज्राभा भवति, सुमेधसां करे मीनपुच्छाभा

भवति ) सुखी पुरुषोंके हाथमें श्रीवत्सचिह्नके आकार रेखा होती है और राजाओंके हाथमें चक्रके आकार रेखा होती है और ऐश्वर्यवालेके हाथमें वज्रकी रेखा होती है और उत्तम बुद्धिवालोंके हाथमें मछलीकी पूँछके आकार रेखा होती है ॥ १७६ ॥

वापीकूपजलाद्यैर्धर्मपरः स्यात्त्रिकोणरेखाभिः ।
सीरेण नरः कृषिमानुलूखलप्रभृतिभिर्यज्वा ॥ १७७ ॥

अन्वयार्थौ-( त्रिकोणरेखाभिः वापीकूपजलाद्यैर्धर्मपरः स्यात् सीरेण नरः कृषकः स्यात् उलूखलप्रभृतिभिः श्रीमान् यज्वा भवति ) जो त्रिकोण रेखा होय तौ बावडी कुँवा तालाव आदिके बनानेवाला और धर्ममें तत्पर होय, जो हलकी तुल्य रेखा होय तौ खेती करनेवाला होय और जो ओखली आदिकी तुल्य रेखा होयँ तो धनवान् और यज्ञ करनेवाला होय ॥ १७७ ॥

करवालांकुशकार्मुकमार्गणशक्त्यादयः करे यस्य ।
नियतं स क्षोणिपतिर्वीरः शत्रुभिरजेयः स्यात् ॥ १७८ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य करे करवालांकुशकार्मुकमार्गणशक्त्यादयो रेखाः भवंति स पुरुषः नियतं क्षोणिपतिर्भवति स वीरः शत्रुभिः अजेयः स्यात् ) जिसके हाथमें तलवार और अंकुश वा धनुषबाणके आकार जो रेखा होय तौ वह पुरुष निश्चय राजा होय और उस वीरपुरुषको शत्रु भी नहीं जीत सकते हैं ॥ १७८ ॥

जायन्ते श्रीमन्तः प्रासादैर्दामभिः स्फुटं मनुजाः ।
निधिनायकाः कमंडलुकलशस्वस्तिकपताकाभिः ॥ १७९ ॥

अन्वयार्थौ-( प्रासादैर्दामभिः रेखाभिः मनुजाः स्फुटं श्रीमन्तो जायन्ते तथा कमंडलुकलशस्वस्तिकपताकाभिः मनुजाः निधिनायकाः जायन्ते ) मंदिर और मालारूप रेखाओं करिके मनुष्य धनवाले होते हैं और कमंडलु कलश सथियाँ ध्वजाके आकार रेखा होय तौ वे पुरुष नवनिधिके नायक अर्थात् मालिक होते हैं ॥ १७९ ॥



यस्य सदण्डं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं पाणौ ।
सोऽम्बुधिरशनावसनां भुनक्ति भूमिं भुजिष्योऽपि ॥ १८० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य पाणौ सदण्डं छत्रं चामरयुग्मं प्रतिष्ठितं भवति, सः भुजिष्यः अपि अम्बुधिरशनावसनां भूमिं भुनक्ति ) जिसके हाथमें दंडसहित छत्र और दो चमर प्रतिष्ठित होयँ सो पुरुष दासभी होय तो समुद्र ही है रशना और वसन जिसके ऐसी पृथ्वीका भोगनेवाला होता है ॥ १८० ॥

विप्रस्य यस्य यूपो वेदनिभं ब्रह्मतीर्थमपि हस्ते ।
विश्वाधिपतिर्नियतं स भवेदथवाऽग्निहोत्री सः ॥ १८१ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य विप्रस्य हस्ते यूपः वेदनिभं ब्रह्मतीर्थम् अपि सः नियतं विश्वाधिपतिः अथवा सः अग्निहोत्री भवेत् ) जिस ब्राह्मणके हाथमें यज्ञस्तंभ और वेदके तुल्य और ब्रह्मतीर्थके आकार रेखा होयँ तो वह पुरुष निश्चय जगत्का पति अथवा अग्निहोत्री होता है ॥ १८१ ॥

भाग्येन भवन्ति यवाः पुंसश्चांगुष्ठपर्वसु स्पष्टाः ।
पोषविशेषनिमित्तात्कर्मकृतं यशस्तुरङ्गी स्यात् ॥ १८२ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य पुंसः अंगुष्ठस्य पर्वसु यवाः भाग्येन स्पष्टाः भवंति पोषविशेषनिमित्तात्कर्मकृतं यशः तथा तुरंगी स्यात् ) जिसके अँगूठेके पोरुवेमें जौका चिह्न भाग्यवश करिके प्रकट होय तो वह पालन करनेके विशेष कारणसे कर्मजन्य यशवाला और घोडे युक्त होता है ॥ १८२ ॥

सुतवन्तः श्रुतवन्तो जायन्तेऽङ्गुष्ठमूलगैस्तु यवैः ।
मध्यगतैर्धनकाञ्चनरत्नाढ्या भोगिनः सततम् ॥ १८३ ॥

अन्वयार्थौ-( अंगुष्ठमूलगैः यवैः सुतवन्तः श्रुतवन्तो जायन्ते तथा मध्यगतैः यवैः धनकांचनरत्नाढ्याः सततं भोगिनो भवंति ) जिसके अंगूठेकी जडमें जौका चिह्न होय वह पुत्र और शास्त्रवाला होय और जिसके अंगूठेके बीचमें जौका चिह्न होय वह धन सुवर्ण रत्नों करिके आढ्य और सदा भोगनेवाला होता है ॥ १८३ ॥

त्रिपरिक्षेपा मूलेऽङ्गुष्ठगता भवति यस्य यवमाला ।
द्विपसुसमृद्धः स पुमान्राजा वा राजसचिवो वा ॥ १८४ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य अंगुष्ठगता मूले यवमाला त्रिपरिक्षेपा भवति, स पुमान् द्विपसुसमृद्धः राजा वा राजसचिवो भवति ) जिसके अंगूठेकी जडमें जौमालाकी तिलडी होय सो पुरुष हाथियोंकी ऋद्धि समेत राजा वा राजमंत्री होता है ॥ १८४ ॥

यस्य द्विपरिक्षेपा सैव नरो राजपूजितः स स्यात् ।
यस्यैकपरिक्षेपा यवमाला सोऽपि वित्ताढ्यः ॥ १८५ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य सा एव यवमाला द्विपरिक्षेपा स नरः राजपूजितः स्यात्, यस्य यवमाला एकपरिक्षेपा स अपि वित्ताढ्यः स्यात् ) जिसके वही जौमाला दुलडी होय सो पुरुष राजाका पूजनीय होय और जिसके जौमाला एक होय सो धनी होता है ॥ १८५ ॥

यस्यांगुष्ठाधस्तात्काकपदं भवति विस्पष्टम् ।
स नरः पश्चिमकाले शूलेन विपद्यते सद्यः ॥ १८६ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य नरस्य अंगुष्ठाधस्तात्काकपदं विस्पष्टं भवति स नरः सद्यः पश्चिमकाले शूलेन विपद्यते ) जिस पुरुषके अंगूठेके नीचे कौवेके आकारका चिह्न प्रकट होय सो मनुष्य पिछली अवस्थामें शूलसे शीघ्र ही मरजाय ॥ १८६ ॥

अव्यक्ताः स्युस्तनवः खण्डा रेखाः करे स्थिता यस्य ।
तिग्मांशोरिव रजनी श्रीस्तस्य पलायते सततम् ॥ १८७ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य करे रेखाः अव्यक्ताः खण्डाः तनवः स्थिताः स्युः तस्य श्रीः सततं तिग्मांशोः रजनी इव पलायते ) जिसके हाथकी रेखा स्वच्छ नहीं होय खंडित होय और बहुत पतली होय तिसके लक्ष्मीजी सदा नहीं रहे भागिजाती है जैसे सूर्यसे रात्रि भागिजाती है ॥ १८७ ॥



एवमपरापि पाणौ शुभसंस्थाना शुभावहा रेखा ।
किंबहुना मनुजानामशुभा पुनरशुभसंस्थाना ॥ १८८ ॥

अन्वयार्थौ-( एवं मनुजानां पाणौ अपरापि शुभसंस्थाना रेखा शुभावहा बहुना किं पुनः अशुभसंस्थाना रेखा अशुभा ) ऐसेही मनुष्योंके हाथमें और भी शुभ रेखा शुभकी करनेवाली होती हैं, बहुत कहनेसे क्या है फिर अशुभ रेखा अशुभ होती है ॥ १८८ ॥

ऋजुरंगुष्ठः स्निग्धस्तुङ्गो वृत्तः प्रदक्षिणावर्त्तः ।
अंगुष्ठेऽपि धनवतां सुघनानि समानि पर्वाणि ॥ १८९ ॥

अन्वयार्थौ-( धनवताम् अंगुष्ठः अपि ऋजुः स्निग्धः तुंगः वृत्तः प्रदक्षिणावर्तो भवति च पुनः धनवताम् अंगुष्ठे अपि सुघनानि वा समानि पर्वाणि भवंति ) धनवानोंका अंगूठा सीधा चिकना ऊंचा गोल दाहिनी-और झुकाहुआ होता है और धनवानोंके अंगूठेमेंभी कठिन और बराबर पोरुवे होते हैं ॥ १८९ ॥

सततं भवन्ति वलिताः सौभाग्यवतां सुमेधसां सूक्ष्माः ।
पाण्यंगुलयः सरला दीर्घा दीर्घायुषां पुंसाम् ॥ १९० ॥

अन्वयार्थौ-( सौभाग्यवतां सुमेधसां पुंसां पाण्यंगुलयः सततं वलिता भवन्ति यथा दीर्घायुषां पुंसां सरला वा दीर्घा भवन्ति ) भाग्यवान् और बुद्धिमान् पुरुषोंके हाथकी अंगुली निरंतर मिली हुई होती हैं और बडी आयुवाले पुरुषोंकी अंगुली सूधी और बडी होती हैं ॥ १९० ॥

नियतं कनिष्ठिकांगुलिरनामिकापर्व उल्लङ्घ्य ।
यद्यधिकतरा पुंसां धनमधिकं जायते प्रायः ॥ १९१ ॥

अन्वयार्थौ-( यदि पुंसां कनिष्ठिकांगुलिः नियतम् अनामिकापर्व उल्लंघ्य अधिकतरा भवति तेषां प्रायः अधिकं धनं जायते ) जो पुरुषका कनिष्ठिका ( छोटी अंगुली ) निरन्तर अनामिका अंगुलीके पोरुवेको उलांघि करि अधिक हो तो बहुधा धन अधिक होय ॥ १९१ ॥

दीर्घायुरंगुलीभिः सौभाग्ययुतः सुदीर्घपर्वाभिः ।
विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिर्भवति धनहीनः ॥ १९२ ॥

अन्वयार्थौ–( दीर्घाभिः अंगुलीभिः दीर्घायुर्भवति च पुनः दीर्घपर्वाभिः अंगुलीभिः सौभाग्ययुतः स्यात् तथा विरलाभिः कुटिलाभिः शुष्काभिः अंगुलीभिः धनहीनो भवति ) लम्बी अंगुलियों करिके बडी आयुवाला होय और बडे पोरुवोंकी अंगुलीसे भाग्यवान् होय और छीदी टेढी सूधी पतली अंगुलियोंसे धनहीन अर्थात दरिद्री होता है ॥ १९२ ॥

स्थूला धनोज्झितानां शस्त्रयुतानां बहिर्नताः पुंसाम् ।
ह्रस्वांगुल्यश्चिपिटाश्चेटानां हन्त जायन्ते ॥ १९३ ॥

अन्वयार्थौ–( धनोज्झितानां पुंसां स्थूला भवन्ति शस्त्रयुतानां पुंसां बहिर्नताः भवन्ति हंत चेटानां पुंसां ह्रस्वाः चिपटाः अंगुल्यो भवंति ) धनरहित पुरुषोंकी अंगुली मोटी होती हैं और हथियारवाले पुरुषोंकी अंगुली बाहरको झुकी होती हैं और बड़े खेदकी बात है कि दासोंकी अंगुली छोटी और चपटी होती हैं ॥ १९३ ॥

अंगुष्ठांगुलयो वा संख्यान्यूनाधिकाः स्फुटं यस्य ।
धनधान्यैः परिहीनः सोऽल्पायुर्भूतले भवति ॥ १९४ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य अंगुष्ठांगुलयः वा स्फुटं संख्यान्यूनाधिकाः भवंति स भूतले धनधान्यैः परिहीनः अल्पायुर्भवति ) जिसके अंगुठेकी अंगुली प्रगट कमती बढती जैसे पांचसे छठी संख्या हो तो पृथ्वीमें धनधान्य करके हीन और थोडी आयुवाला होता है ॥ १९४ ॥

छिद्रं मिथः कनिष्ठानामामध्यप्रदेशिनीनां स्यात् ।
वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशो नरस्य सुखम् ॥ १९५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य कनिष्ठानामामध्यप्रदेशिनीनां मध्ये यदि छिद्रं स्यात् तस्य नरस्य वृद्धत्वे तारुण्ये बाल्ये क्रमशः सुखं भवति ) जिसकी कनिष्ठिकामें छिद्र होय तो बूढेपनमें सुख होय और अनामिकामें छिद्र होय तो तरुणाईमें सुख होय और मध्यमा प्रदेशिनीके बीचमें जो छिद्र होय तो बालकपनमें सुख होवे ॥ १९५ ॥



विद्रुमरुचयः श्लक्ष्णाः पाणिनखाः कच्छपोन्नताः स्निग्धाः ।
सशिखाः क्रमेग विपुलाः पर्वार्धमिता महीशानाम् ॥१९६॥

अन्वयार्थौ–( महीशानां पाणिनखाः विद्रुमरुचयः श्लक्ष्णाः कच्छ–पोन्नताः स्निग्धाः सशिखाः विपुलाः क्रमेण पर्वार्द्धमिता भवन्ति ) राजा–ओंके हाथोंके नख मूँगेकेसे रंग और चिकने कछुवेकी पीठके तुल्य ढला–ववाले चमकदार बडे बडे पोरुवेके आधे तक होते हैं ॥ १९६ ॥

दीर्घाः कुटिला रूक्षाः शुक्तिनिभा यस्य करनखा विशिखाः ।
तेजोमृजाविहीनाः स हीयते धान्यधनभोगैः ॥ १९७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पुरुषस्य करनखाः दीर्घाः कुटिलाःरूक्षाः शुक्तिनिभाः तेजोमृजाविहीनाः विशिखाः भवन्ति स धान्यधनभोगैः हीयते ) जिस पुरु–षके हाथके नख बडे टेढे रूखे सफेद तेजकरिके और स्वच्छतासे हीन चम–त्काररहित ऐसे होंय सो धन धान्यके भोगसे हीन होते हैं ॥ १९७ ॥

पुष्पयुतैर्दुःशीलाः श्वेतैः श्रमणास्तुषोपमैः क्लीबाः ।
परतर्कका विवर्णैश्चिपिटैः स्फुटितैर्नखैर्निःस्वाः ॥ १९८ ॥

अन्वयार्थौ–( पुष्पयुतैर्नखैः दुःशीला भवन्ति तथा श्वेतैः श्रमणास्तु–षोपमैः क्लीबाः भवंति वा विवर्णैः परतर्ककाः चिपिटैः स्फुटितैः निःस्वाः भवन्ति ) पुष्पयुक्त छींटेवाले नखोंसे दुःशील अर्थात् कुटिल स्वभावके होते हैं और सफेद नखोंसे भिखारी होते हैं और जिनके भूसीके समान नख होयँ वे नपुंसक होते हैं, और बुरे रंगवाले नख पराई तर्क करनेवाले होते हैं और चिपटे टूटे फटे नखोंसे धनहीन अर्थात् दरिद्री होते हैं ॥ १९८ ॥

अपसव्यसव्यकरयोर्नखेषु सितबिन्दवश्चरणयोर्वा ।
आगन्तवः प्रशस्ताः पुरुषां भोजराजमतम् ॥ १९९ ॥

अन्वयार्थौ-( पुरुषाणाम् अपसव्यसव्यकरयोः वा चरणयोर्नखेषु आगन्तवः सितबिन्दवः प्रशस्ताः इति भोजराजमतम् ) मनुष्योंके बायें वा दायें हाथके वा पांवके नखोंमें आये हुए सफेद बूँद अच्छे होते हैं यह भोजराजका मत है ॥ १९९ ॥

कच्छपपृष्ठो राजा हयपृष्ठो भोगभाजनं भवति ।
धनसंपत्तिसुसेनाधिपतिः शार्दूलपृष्ठोऽपि ॥ २०० ॥

अन्वयार्थौ-( कच्छपपृष्ठः राजा भवति हयपृष्ठः भोगभाजनं भवति शार्दूलपृष्ठः अपि धनसंपत्तिसुसेनाधिपतिर्भवति ) कछुवेकीसी पीठवाला राजा होय और घोडेकीसी पीठवाला भोगका पात्र अर्थात् भोगी होय औरबघेरे कीसी पीठवाला धन और संपत्ति युक्त सेनाका स्वामी होता है ॥ २०० ॥

लभते शिरालपृष्ठो निर्धनतां भुग्नवंशपृष्ठोऽपि ।
कष्टं रोमशपृष्ठः पृथुपृष्ठो बन्धुविच्छेदम् ॥ २०१ ॥

अन्वयार्थौ-( शिरालपृष्ठः भुग्नवंशपृष्ठः अपि निर्धनतां लभते रोमशपृष्ठः कष्टं लभते पृथुपृष्ठः बंधुविच्छेदं लभते ) नसीली पीठवाला वा टेढी पीठवाला निर्धनताको पाता है और रोमयुक्त पीठवाला कष्ट अर्थात् दुःख पाता है मोटी पीठवाला भाइयोंसे नाशको प्राप्त होता है ॥ २०१ ॥

नियतं कृकाटिका चेद् रोमशिरासंयुता नराणां सा ।
कुरुते कुटिला विकटा विसंकटा रोगदारिद्र्यम् ॥ २०१ ॥

अन्वयार्थौ-( रोमशिरासंयुता कुटिला विकटा विसंकटा कृकाटिका यदि भवति सा एव कृकाटिका नियतं नराणां रोगदारिद्र्यं कुरुते ) रोम भी हों नसेंभी हों टेढी ऊंची सकडी नारि और पीठकी संधि जिसकी होयँ सो कृकाटिका निश्चय मनुष्योंको रोग और दारिद्री करती है ॥ २०२ ॥



ह्रस्वग्रीवः शस्तो वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः ।
कम्बुग्रीवस्तु भवेदेकातपवारणो नृपतिः ॥ २०३ ॥

अन्वयार्थौ-( ह्रस्वग्रीवः शस्तः स्यात् वृत्तग्रीवः सुखी धनी सुभगः स्यात् कम्बुग्रीवः एकातपवारणो नृपतिर्भवति ) छोटी नारिवाला श्रेष्ठ होता है और गोल नारिवाला सुखी धनवान् सुन्दर होता है तीन रेखावाली शंखकीसी नारिवाला एकच्छत्रधारी राजा होता है ॥ २०३ ॥

महिषग्रीवः शूरो लम्बग्रीवोऽपि वस्मरः सततम् ।
पिशुनो वक्रग्रीवः शस्तविनाशो महाग्रीवः ॥ २०४ ॥

अन्वयार्थौ-( महिषग्रीवः शूरः स्यात् लम्बग्रीवः अपि सततं वस्मरः स्यात् वक्रग्रीवः पिशुनः स्यात् महाग्रीवः शस्तविनाशः स्यात् ) भैंसेकीसी नारिवाला शूर अर्थात् योधा होय और लम्बी नारिवाला निरंतर बहुत खानेवाला होय और टेढी नारिवाला चुगली खानेवाला होय और बडी नारिवाला श्रेष्ठ बातको नाश करता है ॥ २०४ ॥

रासभकरभग्रीवो दुःखी स्याद्दांभिको बकग्रीवः ।
शुष्कशिरालग्रीवश्चिपिटग्रीवश्च धनहीनः ॥ २०५ ॥

अन्वयार्थौ-( रासभकरभग्रीवः दुःखी स्यात् बकग्रीवः दांभिकः स्यात् चिपिटग्रीवः शुष्कशिरालग्रीवः च धनहीनः स्यात् ) गधा और ऊंटकीसी नारिवाला दुःखी होय और बकुलाकीसी नारिवाला पाखंडी होय और चपटी सूखीसी नसोंकी नारिवाला धनहीन होता है ॥ २०५ ॥

पुण्यवतामिह चिबुकं वृत्तं मांसलमदीर्घलघु मृदुलम् ।
अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्रभागं दरिद्राणाम् ॥ २०६ ॥

अन्वयार्थौ-( इह पुण्यवतां चिबुकं वृत्तं मांसलम् अदीर्घलघु मृदुलं भवति तथा अतिकृशदीर्घस्थूलं द्विधाग्रभागं चिबुकं दरिद्राणां भवति ) इस संसारमें पुण्यवानोंकी ठोढी गोल मांससे भरी न बडी न छोटी नरम सुडोल

होती है और पतली दुबली बडी और दो भागवाली अर्थात् गढेलेदार ऐसी ठोढी दरिद्रीयोंकी होती है ॥ २०६ ॥

हनुयुगलं सुश्लिष्टं चिबुकोभयपार्श्वसंस्थितं पुंसाम् ।
दीर्घं चक्रं शस्तं पुनरशुभं भवति विपरीतम् ॥ २०७ ॥

अन्वयार्थो-(पुंसां चिबुको भयपार्श्वसंस्थितं हनुयुगलं दीर्घं चक्रं सुश्लिष्टं शस्तं पुनः विपरीतम् अशुभं भवति ) पुरुषकी ठोढीके दोनों ओर स्थित दोनों जावडे अच्छे प्रकार मिले हुए बडे और गोल श्रेष्ठ होते हैं फिर वेही जो विपरीत होंय तो अशुभ होते हैं ॥ २०७ ॥

कूर्चं प्रलम्बमुज्ज्वलमस्फुटिताग्रं निरन्तरं मृदुलम् ।
स्निग्धं पूर्णं सूक्ष्मं मेचकमपि शस्यते पुंसाम् ॥ २०८ ॥

अन्वयार्थो-( पुंसां प्रलंबम् उज्ज्वलम् अस्फुटिताग्रं निरंतरं मृदुलं स्निग्धं पूर्णं सूक्ष्मं मेचकम् अपि कूर्चं शस्यते ) पुरुषके लंबे निर्मल जिनकी नोक फटी नहीं अतिनिबिड नरम चिकने पूरे महीन काले चमकदार दाढीके बाल हों तो अच्छे होते हैं ॥ २०८ ॥

परदाररताश्चौराः श्मश्रुभिररुणैर्नटा नखैः स्थूलैः ।
रूक्षैः सूक्ष्मैः स्फुटितैः कपिलैः केशान्विता बहुशः ॥ २०९ ॥

अन्वयार्थो-( अरुणैः श्मश्रुभिः परदाररताश्चौराः भवंति तथा स्थूलैः रूक्षैः सूक्ष्मैः स्फुटितैः कपिलैः नखैः बहुशः केशान्विता नटा भवंति ) लाल दाढी मूछोंके पुरुष पराई स्त्रीके भोगनेवाले चोर होते हैं और मोटे, रूखे, पतले, टूटे फूटे, कंजाकेसे रंगके नखोंसे बहुतसे बालोंकरिकेयुक्त नट होते हैं ॥ २०९ ॥

सांतर्द्वितीयदशमिह शुक्रो द्व्येकोऽधिकः क्रमेण नृणाम् ।
तदयं श्मश्रुविभेदस्तद्विकृतिः षोडशे वर्षे ॥ २१० ॥

अन्वयार्थो-(नृणां क्रमेण तदयं श्मश्रुविभेदः सांतर्द्वितीयदशं द्व्येकोऽधिक इह शुक्रो भवेत् च पुनः षोडशे वर्षे तद्विकृतिः स्यात् ) मनुष्योंके



क्रम करिके मूछोंका भेद है सो बीस वर्षके भीतर वा २१ वर्षके भीतर जो मूछें निकलें तौ वीर्यको उत्पन्न करनेवाली होती हैं और जो सोलह वर्षके भीतर निकलें तौ वीर्यको रोग करनेवाली होती हैं ॥ २१० ॥

सुखिनः समुन्नतैः स्युः परिपूर्णा भोगयुताश्चमांसयुतैः ।
सिंहद्विपेन्द्रतुल्यैर्गण्डैर्नराधिपा नरा धन्याः ॥ २११ ॥

अन्वयार्थो-( समुन्नतैः गण्डैः नराः सुखिनो भवन्ति ) ऊंचे गंडस्थल होनेसे मनुष्य सुखी होते हैं और ( मांसयुतैः गण्डैः परिपूर्णा भोगयुताः स्युः ) मांसके भरे गंडस्थलसे भरे पूरे भोगी होते हैं और ( सिंहद्विपेन्द्रतुल्यैः गंडैः धन्याः नराधिपाः स्युः ) सिंह वा हाथीके समान गण्डस्थल होनेसे उत्तम पुरुष राजा होते हैं ॥ २११ ॥

निम्नौ यस्य कपोलौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ।
पापास्ते दुखःजुषो भाग्यविहीनः परप्रेष्या ॥ २१२ ॥

अन्वयार्थो-( यस्य कपोलौ निम्नौ निर्मांसौ स्वल्पकूर्चरोमाणौ ते पापाः दुःखजुषः भाग्यविहीनाः परप्रेष्याः भवंति ) जिसके कपोल नीचे मांसरहित छोटी मूछों और रोमों करिके युक्त होयँ वे पापी दुःख पानेवाले अभागी और पराये दूत अर्थात् नौकर होते हैं ॥ २१२ ॥

वर्तुलमभीरु सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समं सुरभि वदनम् ।
सिंहेभनिभं राज्यं संपूर्णं भोगिनां चेति ॥ १२३ ॥

अन्वयार्थो-( यस्य वदनं वर्तुलम् अभीरु सूक्ष्मं स्निग्धं सौम्यं समं सुरभि सिंहेभनिभं राज्यं स्यात् ) जिसका मुख सबओरसे गोल, डरावना नहीं, छोटा, चिकना, दर्शनीय, बराबर, सुगंध लिये, सिंह और हाथीके तुल्य हो तो वह राज्य करनेवाला होता है और ( च पुनः संपूर्ण भोगिनामपि भवति ) भोगियोंकाभी ऐसाही संपूर्ण सुख होता है ॥ २१३ ॥

जननीमुखानुरूपं मुखकमलं भवति यस्य मनुजस्य ।
प्रायो धन्यः स पुमानित्युक्तमिदं समुद्रेण ॥ २१४ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य मनुजस्य मुखकमलं जननीमुखानुरूपं भवति सः पुमान् प्रायः धन्यो भवति समुद्रेण इतीदमुक्तम् ) जिस मनुष्यका मुख-कमल माताके मुखकासा होय सो पुरुष बहुधा करिके धन्य होता है यह समुद्रने इस प्रकार कहा है ॥ २१४ ॥

दौर्भाग्यवतां पृथुलं पुंसां स्त्रीमुखमपत्यरहितानाम् ।
चतुरस्रं धूर्तानामतिह्रस्वं भवति कृपणानाम् ॥ २१५ ॥

अन्वयार्थौ–( दौर्भाग्यवतां पुंसां मुखं पृथुलं भवति ) अभागे पुरुषोंका मुख चौडा भाडसा होता है और (अपत्यरहितानां स्त्रीमुखं भवति) संतानर-हित पुरुषोंका मुख स्त्रीकासा होता है और ( धूर्तानां मुखं चतुरस्रं भवति ) दगा-बाज मायावी पुरुषोंका मुख चौकोर होता है और ) कृपणानां मुखम् अति ह्रस्वं भवति ) लोभी और कंजूसोंका मुख बहुत छोटा होता है ॥२१५॥

भीरु मुखं पापानां निम्नं कुटिलं च पुत्रहीनानाम् ।
दीर्घं निर्द्रव्याणां भाग्यवतां मण्डलं ज्ञेयम् ॥ २१६ ॥

अन्वयार्थौ–( पापानां भीरु मुखं भवति ) पापियोंका डरपोक मुख होता है और पुत्रहीनानां मुखं निम्नं च पुनः कुटिलं भवति ) पुत्रही-नोंका मुख नीचा और टेढा होता है और ( निर्द्रव्याणां मुखं दीर्घं भवति ) ( धनहीनोंका मुख लंबा होता है और ( भाग्यवतां मुखं मण्डलं ज्ञेयम् ) भाग्यवानोंका मुख गोल होता है ॥ २१६ ॥

रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखाः दुःखभागिनः पुरुषाः ।
जिह्ममुखाः विकृतमुखाः शुष्कमुखाःहयमुखाःनिःस्वाः॥२१७॥

अन्वयार्थौ–( रासभकरभप्लवगव्याघ्रमुखाः पुरुषाः दुःखभागिनो भवंति गधा, ऊंट, बंदर, बघेरेकेसे मुखवाले पुरुष दुःख भोगनेवाले होते हैं और ( जिह्ममुखाः विकृतमुखाः शुष्कमुखाः हयमुखाः निःस्वाः भवन्ति ) टेढे मुख, बुरे मुख, सूखे घोडेकेसे मुखवाले दरिद्री होते हैं ॥ २१७ ॥



बिम्बाधरो धनाढ्यः प्रज्ञावान् पाटलाधरो भवति ।
प्रायो राज्यं लभते प्रवालवर्णाधरस्तु नरः ॥ २१८ ॥

अन्वयार्थौ–( बिम्बाधरः धनाढ्यः स्यात् ) कुंदुरूकेसे लाल रङ्गके होठवाला धनवान् होता है और ( पाटलाधरः प्रज्ञावान् ) स्यात् गुला-बकेसे होठवाला बुद्धिमान् होता है और ( प्रवालवर्णाधरः नरः प्रायः राज्यं लभते ) मूंगेके रंगकेसे चमकदार होठवाला पुरुष निश्चय राज्यको पाता है ॥ २१८ ॥

यस्याधरोत्तरोष्ठौ द्व्यंगुलमानौ सुकोमलौ मसृणौ ।
मृदुलौ समसृक्काणौ स जायते प्रायशो धनवान् ॥ २१९ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य अधरोत्तरोष्ठौ द्व्यंगुलमानौ सुकोमलौ मसृणौ मृदुलौ समसृक्काणौ प्रायशः स धनवान् जायते ) जिसके होठ ऊपर नीचेके नापमें दो अंगुलके, नरमाई लिये और चिकने, बराबर किनारेके होयँ सो बहुत धनवान् होता है ॥ २१९ ॥

पीनोष्ठः सुभगः स्याल्लंबोष्ठो भोगभाजनं मनुजः ।
अतिविषमोष्ठो भीरुर्लघ्वोष्ठो दुःखितो भवति ॥ २२० ॥

अन्वयार्थौ–( पीनोष्ठः सुभगः स्यात् ) मोटे होठवाला अच्छे चलनका होता है और ( लम्बोष्ठःमनुजः भोगभाजनं स्यात् ) लम्बे होठवाला मनुष्य भोगोंका पात्र होता है और ( अतिविषमोष्ठः भीरुः स्यात् ) बहुत छोटे बडे होठोंवाला डरपोक होता है और ( लघ्वोष्ठः दुःखितो भवति ) छोटे होठवाला दुःखी होता है ॥ २२० ॥

रूक्षैः कृशैर्विवर्णैः प्रस्फुटितैः खंडितैरतिस्थूलैः ।
ओष्ठैर्धनसुखहीना दुःखयुताः प्रायशः प्रेष्याः ॥ २२१ ॥

अन्वयार्थौ–( रूक्षैः कृशैर्विवर्णैः प्रस्फुटितैः खंडितैः अतिस्थूलैः ओष्ठैः धनसुखहीनाः दुःखयुताः प्रायशः प्रेष्याः भवन्ति ) रूखे, पतले, बुरे रंगके फटे हुये खंडित और मोटे होठोंसे धन और सुखसे हीन और दुःखी बहुधा दूत अर्थात् हरकारे होते हैं ॥२२१॥

कुन्दमुकुलोपमाः स्युर्यस्यारुणपीडिकासमाः सुघनाः ।
दशनाःस्निग्धाःश्लक्ष्णास्तीक्ष्णा दंष्ट्राः स वित्ताढ्यः ॥ २२२ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य दशनाः कुंदमुकुलोपमाः अरुणपीडिकासमाः सुघनाः स्निग्धाः सुतीक्ष्णाः दंष्ट्राः स्युः स वित्ताढ्यः भवति ) जिसके दांत कुंदकी कलीके तुल्य या लाल फुन्सीके समान, बहुत घने चिकने स्वच्छ और तेज डाढ़ोंसे युक्त होय सो धनवान् होता है ॥ २२२ ॥

धनिनः खरद्विपरदा निःस्वा भल्लूकवानररदाः स्युः ।
निंद्याः करालविरलद्विपंक्तिशितिविषमरूक्षरदाः ॥ २२३ ॥

अन्वयार्थौ-( खरद्विपरदाः धनिनो भवन्ति ) गधे और हाथीकेसे लंबे दांतवाले धनी होते हैं और ( भल्लूकवानररदाःनिःस्वा भवन्ति ) रीछ और बंदरकेसे दांतवाले दरिद्री होते हैं और ( करालविरलद्विपंक्तिशितिविषमरूक्षरदाः निंद्याः स्युः ) भयंकर ओर जुदे जुदे दोपांतवाले, काले, ऊंचे, नीचे, रूखे दांतवाले निंद्य अर्थात् बुराई करनेयोग्य होते हैं ॥ २२३ ॥

द्वात्रिंशता नरपतिर्दशनैस्तैरेकविरहितैर्भोगी ।
स्यात्त्रिंशता तनुधनोऽष्टाविंशत्या सुखी पुरुषः ॥ २२४ ॥

अन्वयार्थौ-( द्वात्रिंशता दशनैः पुरुषः नरपतिर्भवति ) बत्तीस दांतवाले पुरुष राजा होते हैं और ( एकविरहितैः दशनैः भोगी स्यात् ) जो वेही पांत ३१ होयँ तो भोगी होय और ( त्रिंशता दशनैः तनुधनःस्यात् ) ३० दांतवाला थोडे धनवाला होय और ( अष्टाविंशतिदशनैः सुखी स्यात् ) २८ दांतवाला सुखी होता है ॥ २२४ ॥

दारिद्र्यदुःखभाजनमेकोनत्रिंशता सदा दशनैः ।
ऊर्द्धमधस्तात्तैरपि विहीनसंख्यैर्नरो दुःखी ॥ २२५ ॥

अन्वयार्थौ-( एकोनत्रिंशता दशनैः सदा दारिद्र्यदुःखभाजनं भवति ) २९ दांतवाला सदा दरिद्री और दुःखका भाजन होताहै और( ऊर्ध्वम् अधस्तात् तैः विहीनसंख्यैः दशनैः स पुरुषः दुःखी स्यात् ) ऊपर नीचेसे वेही दाँत संख्यासे कमती होयँ सो पुरुष दुःखी होता है ॥ २२५ ॥



स्यातां द्विजावधः प्राक् द्वादशमे मासि राजदन्ताख्यौ ।
शस्तावूर्ध्वावशुभौ जन्मन्येवोद्गतौ तद्वत् ॥ २२६ ॥

अन्वयार्थौ-( द्विजौ द्वादशमे मासि प्राक् अधः स्यातां तौ राजदन्ताख्यौ शस्तौ ) १२ महीनेके भीतर नीचेके दो दाँत निकलें तो राजदन्त कहावें ये शुभ हैं और ( ऊर्ध्वौ अशुभौ ) जो ऊपरको निकलें तो अशुभ हैं और ( तद्वत् जन्मनि एव उद्गतौ अशुभौ ) जो एक साथ जन्मसेही निकलें तो वे भी अशुभ हैं ॥ २२६ ॥

सर्वे भवन्ति दशनाः पूर्णे वर्षद्वये जनिप्रभृति ।
आसप्तमदशमान्तं नियतं पुनरुद्गमं यान्ति ॥ २२७ ॥

अन्वयार्थौ-( जनिप्रभृति वर्षद्वये पूर्णे सति सर्वे दशनाः भवन्ति ) जन्मसे लेकर दो वर्षतक पूरे होनेपर सब दाँत होते हैं और ( आसप्तमदशमान्तं नियतं पुनः उद्गमं यान्ति ) सातवें वर्षसे दशवें वर्षके अंततक निश्चय फिर उत्पन्न होते हैं ॥ २२७ ॥

रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनुसमा येषाम् ।
मिष्टान्नभोजिनस्ते यदि वा त्रैविद्यवक्तारः ॥ २२८ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां रसना रक्ता दीर्घा सूक्ष्मा मृदुला तनुसमा भवति ते मिष्टान्नभोजिनो भवंति ) जिनकी जीभ लाल बडी छोटी नरम, पतली, बराबर होय वे मीठेके खानेवाले होते हैं और ( यदि वा त्रैविद्यवक्तारो भवंति अथवा तीनों वेदोंके वक्ता ( कहनेवाले ) होते हैं ॥ २२८ ॥

सङ्कीर्णाग्रा स्निग्धा रक्ताम्बुजपत्रसन्निभा रसना ।
न स्थूला न च पृथुला यस्य स पृथ्वीपतिर्मनुजः ॥ २२९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य रसना संकीर्णाग्रा स्निग्धा रक्ताम्बुजपत्रसन्निभा न स्थूला न च पृथुला स मनुजः पृथ्वीपतिर्भवति ) जिस मनुष्यकी जीभके

आगेका भाग सुकडा होय और चिकना लाल कमलके फूलकी पंखडी अर्थात् पत्तेके समान न मोटी न चौडी होय सो मनुष्य पृथ्वीपति अर्थात् राजा होय ॥ २२९ ॥

शौचाचारविहीनाः सितजिह्वाः सन्ततं भवंति नराः ।
धनहीनाः शितिजिह्वाः पापोपगताः शबलजिह्वाः ॥ २३० ॥

अन्वयार्थौ–( सितजिह्वाः नराः सन्ततं शौचाचारविहीनाः भवन्ति ) सफेद जीभवाले मनुष्य शौच आचारसे सदा भ्रष्ट होते हैं और ( शितिजिह्वाः धनहीनाः भवंति ) काली जीभवाले मनुष्य धनहीन होते हैं और ( शबलजिह्वाः पापोपगताः स्युः ) कबरी चित्र विचित्र रंगकी जीभवाले मनुष्य पापयुक्त होते हैं ॥ २३० ॥

सूक्ष्मा रूक्षा परुषा स्थूला पृथुला मलान्विता यस्य ।
जिह्वा पीता स पुमान् मूर्खो दुःखाकुलः सततम् ॥ २३१ ॥

आन्वयार्थौ–( यस्य जिह्वा सूक्ष्मा रूक्षा परुषास्थूला पृथुला मलान्विता पीता भवति स पुमान् मूर्खः सततं दुःखाकुलो भवति ) जिसकी जीभ पतली रूखी कठोर मोटी चौडी मलसंयुक्त पीली होय सो पुरुष मूर्ख और सदा दुःखसे व्याकुल रहता है ॥ २३१ ॥

रक्ताम्बुजतालुदरो भूमिपतिर्विक्रमी भवति मनुजः ।
वित्ताढ्यः सिततालुर्गजतालुर्मण्डलाधीशः ॥ २३२ ॥

अन्वयार्थौ–( रक्ताम्बुजतालुदरोमनुजः विक्रमी भूमिपतिर्भवति ) लाल कमलके समान जिसके तलुवेका बीच होय वह पुरुष पराक्रमी पृथ्वीका राजा होता है और ( सिततालुः वित्ताढ्यो भवति ) सफेद तलुवेवाला धनवान् होता है और ( गजतालुः मंडलाधीशः स्यात् ) हाथीकेसे तलुवेवाला मंडलका स्वामी होता है ॥ २३२ ॥



रूक्षं शबलं परुषं मलान्वितं न प्रशस्यते तालु ।
कृष्णं कुलनाशकरं नीलं दुःखावहं पुंसाम् ॥ २३३ ॥

अन्वयार्थौ–( रूक्षं शबलं परुषं मलान्वितं पुंसां तालु न प्रशस्यते ) रूखा, चित्र विचित्र, टेढा, मलयुक्त पुरुषोंका तालुवा अच्छा नहीं होता है और ( कृष्णं तालु कुलनाशकरं भवति ) काला तालुवा कुलके नाश करनेवाला होता है और ( नीलं तालु पुंसां दुःखावहं भवति ) नीला तालुवा पुरुषको दुःख देनेवाला होता है ॥ २३३ ॥

अरुणस्तालुर्गुणिनस्तीक्ष्णाग्रा घंटिका शुभा स्थूला ।
लम्बा कृष्णा कठिना सूक्ष्मा चिपिटा नृणां न शुभा॥२३४॥

अन्वयार्थौ–( अरुणस्तालुः गुणिनो भवति ) लाल तालुवा गुनवानका होता है और ( तीक्ष्णाग्रा नृणां घंटिका शुभा भवति ) पैनी नोंककी मनुष्योंकी घंटी शुभ होती है और ( स्थूला लंबा कृष्णा कठिना सूक्ष्मा चिपिटा न शुभा भवति ) मोटी, लंबी, काली, कडी, छोटी, चिपटी शुभ नहीं होती है ॥ २३४ ॥

हसितमलक्षितदशनं किंचिद्विकसितकपोलमतिमधुरम् ।
पुंसां धीरमकम्पं प्रायेण स्यात् प्रधानानाम् ॥ २३५ ॥

अन्वयार्थौ–( अलक्षितदशनं किंचिद्विकसितकपोलम् अतिमधुरं धीरम् अकम्पं हसितं प्रायेण प्रधानानां पुंसां स्यात् ) नहीं दीखें दांत जिसमें, कुछ विकसितकपोल, बहुत, मीठा, धीरयुक्त, काँपनेसे रहित हँसना बहुधा प्रधान ( मुखिया ) पुरुषोंका होता है ॥ २३५ ॥

उत्कंपितांसकशिरः संमीलितलोचनं निपतदश्रु ।
विकृतस्वरमुद्धूतं मध्यानामसकृदन्ते स्यात् ॥ २३६ ॥

अन्वयार्थौ–( उत्कम्पितांसकशिरः संमीलितलोचनं निपतदश्रु विकृतस्वरम् अंते असकृत् उद्धूतं हास्यं मध्यमानां स्यात् ) कंपते हैं कंधे और शिर जिसमें मूंदिगये हैं नेत्र और गिरते हैं आंसू ।जिसमें विकृत स्वरवाला बारबार अन्तमें भारी ऐसा हास्य मध्यम पुरुषोंका होता है ॥ २३६ ॥

चतुरंगुलप्रमाणा स्थूलपुटाऽन्तस्तनुच्छिद्रा ।
न च प्रपीनाऽवलिता चिरायुषां भोगिनां नासा ॥ २३७ ॥

अन्वयार्थौ-( चतुरंगुलप्रमाणा स्थूलपुटा अन्तस्तनुच्छिद्रा न च प्रपीना अवलिता नासा चिरायुषां भोगिनां च स्यात् ) चार अंगुल प्रमाण लंबी, मोटी, भीतर छोटा छिद्र, बहुत मोटी न होय और सुकडी न होय ऐसी नाक बडी आयुवाले भोगी पुरुषकी होती है ॥ २३७ ॥

उन्नतनासः सुभगो गजनासः स्यात्सुखी महार्थाढ्यः ।
ऋजुनासो भोगयुतश्चिरजीवी शुष्कनासः स्यात् ॥ २३८ ॥

अन्वयार्थौ-( उन्नतनासः सुभगः स्यात् ) ऊंची नाकवाला बहुत अच्छे चलनवाला होता है और ( गजनासः सुखी च पुनः महार्थाढ्यः स्यात् ) हाथीकीसी नाकवाला सुखी और बहुत धनवान् होता है और ( ऋजुनासः भोगयुक्तः स्यात् ) सीधी नाकवाला भोगयुक्त होता है और ( शुष्कनासः चिरजीवी स्यात् ) सूखी नाकवाला बहुत कालतक जीवता है ॥२३८॥

तिलपुष्पतुल्यनासः शुकनासो भूपतिर्मनुजः ।
आढ्योऽग्रवक्रनासो लघुनासः शीलधर्मपरः ॥ २३९ ॥

अन्वयार्थौ-( तिलपुष्पतुल्यनासः पुनः शुकनासः मनुजः भूपतिः स्यात् ) तिलके फूलके समान नाकवाला और तोतेकीसी नाकवाला मनुष्य राजा होता है और ( अग्रवक्रनासः आढ्यः स्यात् ) अग्रभागमें टेढी नाकवाला धनवान् होता है और ( लघुनासः शीलधर्मपरः स्यात् ) छोटी नाकवाला शीलधर्ममें तत्पर होता है ॥ २३९ ॥

क्रमविस्तीर्णसमुन्नतनासा महीशितुर्भवति ।
द्वेधा स्थिताग्रभागातिदीर्घह्रस्वा च निःस्वस्य ॥ २४० ॥

अन्वयार्थौ-( क्रमविस्तीर्णसमुन्नतनासामहीशितुर्भवति ) क्रमसे फैली हुई उठी नाक राजाकी होती है और ( द्वेधा स्थिताग्रभागातिदीर्घह्रस्वा च निःस्वस्य ) दो प्रकारसे जिसका आगेका भाग स्थित होय और बहुत लंबी अथवा बहुत छोटी नाकवाला दरिद्र होता है ॥ २४० ॥



कुश्चत्या चौर्यरतिर्नासिकया चिपिटया युवतिमृत्युः ।
छिन्नानुरूपया स्यादगम्यरमणीरतः पापः ॥ २४१ ॥

अन्वयार्थौ-( कुंचत्या नासिकया चौर्यरतिः ) सुकडतीहुई नाकवाला चोरीमें प्रीतिकर नेवाला होता है और ( चिपिटया नासिकया युवतिमृत्युः स्यात् ) चपटी नाकवालेकी स्त्रीसे मृत्यु होती है और ( छिन्नानुरूपया नासिकया अगम्यरमणीरतः पापः स्यात् ) कटीसी सूरतकी नाकवाला जिनसे भोग उचित नहीं तिन स्त्रियोंसे भोग करनेवाला पापी होता है २४१

विकृता मध्यविहीना स्थूलाग्रा पिच्छिला सदुःखस्य ।
दक्षिणवक्रा नासा अभक्ष्यभक्षकक्रूरयोर्ज्ञेया ॥ २४२ ॥

अन्वयार्थौ-( विकृता मध्यविहीना स्थूलाग्रा पिच्छिला नासा सदुःखस्य भवति ) बुरी, बीचमें हीन, आगेसे मोटी और रपटनी ऐसी नाकवाला पुरुष दुःखी होता है और ( दक्षिणवक्रा नासा अभक्ष्यभक्षकक्रूरयोः ज्ञेया ) दाहिनी ओरसे टेढी नाकवाला नहीं खाने योग्य वस्तुको खानेवाला और क्रूर होता है ॥ २४२ ॥

निर्ह्रादि सानुनादं सकृत्क्षुतं भोगिनां धनवतां द्विः ।
दीर्घायुषां प्रयुक्तं सुसंहितं त्रिर्भवति पुंसाम् ॥ २४३ ॥

अन्वयार्थौ-( भोगिनाम् सकृत सानुनादं निर्ह्रादि धनवतां द्विः क्षुतं भवति ) भोगी पुरुषकी नाकसे बारबार शब्दवाली एक छींक होती है और धनवानोंकी दो छींक होती हैं और ( दीर्घायुषां पुंसां सुसंहितं प्रयुक्तं त्रिः क्षुतं भवति ) बडी आयुवाले पुरुषोंकी एक साथ करी हुई तीन छींक होती हैं ॥ २४३ ॥

स्खलितं लघु च नराणां क्षुतं चतुर्भवति भोगवताम् ।
ईषदनुनादसहितं करोति कुशलं निरन्तरं पुंसाम् ॥ २४४ ॥

अन्वयार्थौ-( भोगवतां नराणां स्खलितं तथा लघु चतुः क्षुतं भवति ) भोगी पुरुषोंकी कुछ खाली कुछ भरी और हलकी छींक होती हैं और ( ईषदनुनादसहितं क्षुतं पुंसां निरंतरं कुशलं करोति ) थोडे शब्दयुक्त जो

छींक है सो पुरुषोंको निरन्तर कुशल करै है अर्थात् मङ्गलकारी होती है ॥ २४४ ॥

नेत्रे निर्मलनीलस्फटिकारुण्ययुते ईषत्स्निग्धे ।
स्यातामंतर्मेचककृशान्तशोणे दृशौ धनिनः ॥ २४५ ॥

अन्वयार्थौ-( निर्मलनीलस्फटिकारुण्ययुते ईषत्स्निग्धे नेत्रे तथा अन्तर्मेचककृशान्तशोणे दृशौ धनिनः स्याताम् ) जिस पुरुषके दोनों नेत्र निर्मल और नीले स्फटिकवेसे रंगके लालयुक्त कुछ चिकने बीचमें चमकदार काले और छोटे तथा लाल हैं कोर जिनके ऐसे नेत्र धनवानोंके होते हैं ॥ २४५ ॥

हरितालाभैर्नयनैर्जायन्ते चक्रवर्तिनो नियतम् ।
नीलोत्पलदलतुल्यैर्विद्वांसो मानिनो मनुजाः ॥ २४६ ॥

अन्वयार्थौ-( हरितालाभैर्नयनैः मनुजाः नियतं चक्रवर्तिनो जायन्ते ) हरितालके रंगकेसे नेत्रवाले पुरुष निश्चय चक्रवर्ती होते हैं और (नीलोत्पलदलतुल्यैः नयनैः मनुजाः मानिनः विद्वांसो भवन्ति ) नीलकमलके दलके समान नेत्रवाले पुरुष गर्ववाले और पंडित होते हैं ॥ २४६ ॥

लाक्षारुणैर्नरपतिर्नयनैर्मुक्तासितैः श्रुतज्ञानी ।
भवति महार्थः पुरुषो मधुकांचनलोचनैः पिङ्गैः ॥ २४७ ॥

अन्वयार्थौ-( लाक्षारुणैः नयनैः नरपतिर्भवति ) लाखकेसे लालरंगके नेत्रवाला राजा होता है और ( मुक्तासितैः नयनैः श्रुतज्ञानी भवति ) मोतीकेसे सफेद रंगके नेत्रवाला शास्त्रज्ञानी होता है ( पिंगैः मधुकांचनलोचनैः पुरुषः महार्थो भवति ) पीले और शहद सोनेकेसे रंगके नेत्रवाला पुरुष बहुत धनवान् होता है ॥ २४७ ॥

सेनापतिर्गजाक्षश्चिरजीवी जायते सुदीर्घाक्षः ।
भोगी विस्तीर्णाक्षः कामी पारावताक्षोऽपि ॥ २४८ ॥

अन्वयार्थौ-( गजाक्षः सेनापतिः स्यात् ) हाथीकेसे नेत्रवाला सेनापति होता है और (सुदीर्घाक्षः चिरजीवी जायते) बहुत बडे नेत्रवाला बहुत समयतक जीवै है और ( विस्तीर्णाक्षः भोगी स्यात् ) लम्बे चौडे नेत्रवाला भोगी होता है और ( पारावताक्षः अपि कामी स्यात् ) कबूतरकेसे नेत्रवाला कामी होता है ॥ २४८ ॥



श्यावदृशां सुभगत्वं स्निग्धदृशां भवति भूरिभोगित्वम् ।
स्थूलदृशां धीमत्त्वं दीनदृशां धनविहीनत्वम् ॥ २४९ ॥

अन्वयार्थौ-( श्यावदृशां सुभगत्वं भवति ) धूमले नेत्रवाला अच्छा होता है और ( स्निग्धदृशां भूरिभोगित्वं भवति ) चिकने नेत्रवाला बडा भोगी होता है और ( स्थूलदृशां धीमत्त्वं भवति ) मोटे नेत्रवाला बुद्धिमान् होता है और ( दीनदृशां धनविहीनत्वं भवति ) दीनदृष्टिवाला धनहीन होता है ॥ २४९ ॥

नकुलाक्षमयूराक्षा जायन्ते जगति मध्यमाः पुरुषाः ।
अधमा मण्डूकाक्षाः काकाक्षा धूसराक्षाश्च ॥ २५० ॥

अन्वयार्थौ-( नकुलाक्षमयूराक्षाः पुरुषाः जगति मध्यमाः जायन्ते ) नौले और मोरकेसे नेत्रवाले पुरुषको जगत्में मध्यम कहते हैं और ( मंडूकाक्षाः तथा काकाक्षाः धूसराक्षाः अधमाः जायन्ते ) मेंढक कउवे और धूसर रंगके नेत्रवाले अधम होते हैं ॥ २५० ॥

बहुवयसो धूम्राक्षाः समुन्नताक्षा भवन्ति तनुवयसः ।
विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषा नातिक्रामन्ति तारुण्यम् ॥ २५१ ॥

अन्वयार्थौ-( धूम्राक्षाः बहुवयसो भवंति ) धूमले नेत्रवाले बहुत आयुके होते हैं और ( समुन्नताक्षाः तनुवयसो भवंति ) ऊंची आँखवाले थोडी आयुके होते हैं और ( विष्टब्धवर्तुलाक्षाः पुरुषाः तारुण्यं नातिक्रामन्ति ) अकडे और गोलनेत्रवाले पुरुष तरुणाई नहीं उलाँघते अर्थात् तरुणाईके पहले ही मरजाते हैं ॥ २५१ ॥

ऋजु पश्यति सरलमनाः पश्यंत्यूर्ध्वं सदैव पुण्याढ्याः ।
पश्यत्यधः सपापस्तिर्यक्पश्यति नरः क्रोधी ॥ २५२ ॥

अन्वयार्थौ-( सरलमनाः ऋजु पश्यति ) सीधे मनवाला सीधा देखता है और ( पुण्याढ्याः सदैव ऊर्द्ध्वं पश्यंति ) पुण्यवान् सदा ऊपरको देखते हैं और ( सपापः अधः पश्यति ) पापी नीचेको देखता है और ( क्रोधी नरः तिर्यक् पश्यति ) क्रोधी मनुष्य तिरछा देखता है ॥ २५२ ॥

सततमबद्धो लक्ष्म्या विघूर्णते कारणं विना दृष्टिः ।
यस्य म्लाना रूक्षा स पापकर्मा पुमान् नियतम् ॥ २५३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य दृष्टिः कारणं विना विघूर्णते स सततं लक्ष्म्या अबद्धो भवति ) जिसकी दृष्टि विना प्रयोजन घूमें सो पुरुष सदा लक्ष्मीहीन होता है और ( यस्य दृष्टिः म्लाना रूक्षा स पुमान् नियतं पापकर्मा भवति ) जिसकी दृष्टि मलिन और रूखीसी होय सो पुरुष निश्चय पापकर्मका करनेवाला होता है ॥ २५३ ॥

अंधः क्रूरः काणः काणादपि केकरो मनुजात् स्यात् ।
काणात्केकरतोऽपि क्रूरतरः कातरो भवति ॥ २५४ ॥

अन्वयार्थौ-( अंधः काणः क्रूरो भवति ) अंधा और काणा क्रूर होता है और ( काणात् अपि मनुजात् केकरः क्रूरः स्यात् ) काणेसे भी अधिक दृष्टि फेरनेवाला मनुष्य क्रूर होता है और ( काणात् केकरतः अपि कातरः क्रूरतरो भवति ) काणे और दृष्टि फेरनेवालेसे अधिक आँख चुरानेवाला बडा क्रूर अर्थात् खोटा होता है ॥ २५४ ॥

अहिदृष्टिः स्याद्रोगी बिडालदृष्टिः सदा पापी स्यात् ।
दुष्टो दारुणदृष्टिः कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति ॥ २५५ ॥

अन्वयार्थौ-( अहिदृष्टिः रोगी स्यात् ) सर्पकीसी दृष्टिवाला रोगी होता है ( बिडालदृष्टिः सदा पापी स्यात् ) बिलावकीसी दृष्टिवाला सदा पापी होता है और ( दारुणदृष्टिः दुष्टः स्यात् ) भयकारी दृष्टिवाला दुष्ट होता है और ( कुक्कुटदृष्टिः कलिप्रियो भवति ) मुरगेकीसी दृष्टिवाला लडाई करनेवाला होता है ॥ २५५ ॥



अतिदुष्टा घूकाक्षा विषमाक्षा दुःखिताः परिज्ञेयाः ।
हंसाक्षा धनहीना व्याघ्राक्षाः कोपना मनुजाः ॥ २५६ ॥

अन्वयार्थौ-( घूकाक्षाः अतिदुष्टाः भवंति ) उल्लूकीसी आँखोंवाले बडे दुष्ट अर्थात् दुःख देनेवाले होते हैं और ( विषमाक्षाः दुःखिताः परिज्ञेयाः ) छोटी बडी आँखोंवाले दुःखी जानने और ( हंसाक्षाः धनहीनाः भवंति ) हंसकीसी आँखोंवाले दारिद्री होते हैं और ( व्याघ्राक्षाः मनुजाः कोपनाः भवंति ) बघेरेकीसी आँखोंवाले पुरुष क्रोधी होते हैं ॥ २५६ ॥

नियतं नयनोद्धारः पुंसामत्यन्तकृष्णताराणाम् ।
भूरिस्निग्धदृशः पुनरायुः स्वल्पं भवेत्प्राज्ञः ॥ २५७ ॥

अन्वयार्थौ-( अत्यन्तकृष्णताराणां पुंसां नियतं नयनोद्धारो भवति ) बहुत काली आँखके तारावाले मनुष्यकी आँखें निश्चय निकाली जायँ अर्थात् आँखें बनाई जायँ और ( भूरिस्निग्धदृशः पुंसः आयुः स्वल्पं पुनः प्राज्ञः भवेत् ) बहुत चिकनी आँखवाले पुरुषकी आयु थोडी होती है फिर भी पंडित होय ॥ २५७ ॥

अतिपिङ्गलैर्विवर्णैर्विभ्रान्तैर्लोचनैश्चलैरशुभः ।
अतिहीनारुणरूक्षैः सजलैः समलैर्नरा निःस्वाः ॥ २५८ ॥

अन्वयार्थौ-( अतिपिंगलैः विवर्णैः विभ्रान्तैः चलैर्लोचनैः नरः अशुभः भवति ) बहुत बुरे रंगके भ्रान्त चलायमान नेत्रोंसे पुरुष अशुभ होता है और ( अतिहीनारुणरूक्षैः सजलैः समलैः लोचनैः नराः निःस्वाः भवंति ) बहुत हीन छोटे लाल रूखे जलसे भरे मैलसहित नेत्रवाले पुरुष दरिद्री होते हैं ॥ २५८ ॥

इह वदनमर्द्धरूपं वपुषो यदि का समनुरूपमिदम् ।
तत्रापि वरा नासा ततोऽपि मुख्ये दृशौ पुंसाम् ॥ २५९ ॥

अन्वयार्थौ-( इह वपुषः अर्द्धरूपं वदनं यदि वा इदं समनुरूपं तत्रापि नासा वरा ततः अपि पुंसां मुख्ये दृशौ भवतः ). इस शरीरमें आधा रूप

तो मुख है, यदि यह मुख बराबर है तिस मुखसेभी नाक श्रेष्ठ है और नाकसेभी पुरुषोंके नेत्र मुख्य होते हैं ॥ २५९ ॥

सुदृढैः कृष्णैर्नयनच्छेदस्थैः पक्ष्मभिर्घनैः सूक्ष्मैः ।
सौभाग्यं चिरमायुर्लभते मनुजो धनेशत्वम् ॥ २६० ॥

अन्वयार्थौ-( मनुजः सुदृढैः कृष्णैः नयनच्छेदस्थैः घनैः सूक्ष्मैः पक्ष्मभिः सौभाग्यं चिरम् आयुः धनेशत्वं च लभते ) मनुष्य सुदृढ काले नेत्रोंके छेदोंमें स्थित घने पतले पक्ष्म ( बरौनी ) से अच्छा भाग्य बहुत कालकी आयु और धनका स्वामी होता है ॥ २६० ॥

पक्ष्मभिरधमा विरलैः पिङ्गैः स्थूलैर्विवर्णैश्च ।
पक्ष्मततिविरहिताः पुनरगम्यनारीरताः पापाः ॥ २६१ ॥ ॥

अन्वयार्थौ-( विरलैः पिंगैः स्थूलैः विवर्णैः पक्ष्मभिः अधमा भवन्ति) विरल, पीली, मोटी, बुरी रंगकी बरौनीवाले पुरुष अधम होते हैं और ( पुनः पक्ष्मततिविरहिताः पुरुषाः अगम्यनारीरताः पापाः भवंति ) फिर बरौनीकी पंक्ति रहित पुरुष जो स्त्री भोगनेयोग्य नहीं तिन स्त्रियोंको भोगनेवाले और पापी होते हैं ॥ २६१ ॥

अनिमेष इष्टरहितः पुरुषः स्यादेकमात्रनिमिषोऽपि ।
नियतं द्विमात्रनिमिषः परजन्माश्रित्य जीवितं तस्य ॥२६२॥

अन्वयार्थौ-( अनिमेषः एकमात्रनिमिषः अपि पुरुषः इष्टरहितः स्यात्) थोडे निमेषवाला और एक मात्रामें निमेष लगानेवाला पुरुष इष्टोंसे रहित होता है और ( द्विमात्रनिमिषः यः पुरुषः तस्य नियतं परजन्माश्रित्य जीवितम्) दो मात्रामें जितना समय लगे उतने समयमें निमेषवाला पुरुष निश्चय दूसरे मनुष्यके आसरेसे रहे ॥ २६२ ॥

धनिनस्त्रिमात्रमेषास्तथा चतुर्मात्रनिमिषवंतोऽपि ।
न तु पंचमात्रनिमिषश्चिरायुषो भोगिनो धनिनः ॥ २६३ ॥

अन्वयार्थौ-( त्रिमात्रनिमिषाः तथा चतुर्मात्रनिमिषवंतः अपि धनिनो भवंति ) तीन मात्रामें तथा चार मात्रामें पलक लगानेवाले धनी होते हैं



और ( पंचमात्रनिमिषाः चिरायुषः भोगिनः धनिनो न तु भवन्ति ) जिसका पांचमात्रामें पलक लगै वह बडी आयुवाले और भोगी धनी नहीं होते हैं २६३

नयननिमेषैरल्पैर्मध्यैर्दीर्घैश्च जायते पुंसाम् ।
आयुः स्वल्पं मध्यं सुदीर्घमथानुपूर्विकया ॥ २६४ ॥

अन्वयार्थौ-( पुंसाम् अल्पैः मध्यैर्दीर्घैः नयननिमेषैः आयुः स्वल्पं मध्यं सुदीर्घं आनुपूर्विकया जायते ) जिन पुरुषोंके नेत्र थोडे पलक लगनेवाले हों उनकी आयु थोडी होती है, मध्यम हो तो मध्यमायु और जो बहुत देरमें पलक लगनेवाले होयँ उनकी दीर्घ आयु होती है इस क्रमसे आयु जाननी चाहिये ॥ २६४ ॥

जानु प्रदक्षिणीकृत्य यावत् करो घण्टिकामादत्ते ।
तदिदमिह समयमानं मात्राशब्देन जानीयात् ॥ २६५ ॥

अन्वयार्थौ-( यावत् करः जानु प्रदक्षिणीकृत्य घंटिकाम् आदत्ते,तदिदं समयमानम् इह मात्राशब्देन जानीयात् ) हाथ जितनी देरमें जानुतक फिरके गलेकी घंटीको पकडे उतनेही समयको यहाँ मात्रा जानलेना ॥ २६५ ॥

मन्दरमन्थानकमथ्यमानजलराशिघोषगंभीरम् ।
बालस्य यस्य रुदितं स महीं महीयान् संपालयति ॥२६६॥

अन्वयार्थौ-( यस्य बालस्य रुदितं मंदरमंथानकमथ्यमानजलराशिघोषगंभीरं स्यात् स महीयान् महीं संपालयति ) जिस बालकका रोना मंदरपर्वतसे मथे जाते समुद्रके शब्दके तुल्य गंभीर हो वह महान् पृथ्वीका पालनेवाला होता है ॥ २६६ ॥

बाष्पाम्बुविनिर्मुक्तं स्निग्धमदीनरोदनं शस्तम् ।
रूक्षं दीनं घर्घरमश्रु पुनर्दुःखदं पुंसाम् ॥ २६७ ॥

अन्वयार्थौ-( पुंसां विनिर्मुक्तं बाष्पाम्बु स्निग्धम् अदीनरोदनं शस्तम् ) पुरुषके छोडे हुए आंसू चिकने गरीबोंकेसे नहीं ऐसा रोनेवाला श्रेष्ठ होता है

और ( पुनः रूक्षे दीनं घर्घरम् अश्रु दुःखदं भवति ) रूक्षे गरीबीके जिसमें घर्घर शब्दके आंसू निकलें वह दुःखका देनेवाला होता है ॥ २६७ ॥

बालेन्दुनते वित्तं दीर्घे पृथुलोन्नते श्यामे ।
नासावंशविनिर्गतदले इव भ्रूदले दिशतः ॥ २६८ ॥

अन्वयार्थौ-( बालेन्दुनते दीर्घे पृथुलोन्नते श्यामे नासावंशविनिर्गतदले इव भ्रूदले वित्तं दिशतः ) बालचंद्रमासी झुकीहुई, बडी, चौडी, ऊंची, काली और नाकके बांशेसे निकली भौंहें बहुत धनको देती हैं ॥ २६८ ॥

नृणामयुते स्निग्धे मृदुतनुरोमान्विते भ्रुवौ श्यामे ।
हीने स्थूले सूक्ष्मे खरपिङ्गलरोमके न शुभे ॥ २६९ ॥

अन्वयार्थौ-( नृणां भ्रुवौ अयुते स्निग्धे मृदुतनुरोमान्विते शस्ते ) मनुष्योंकी भौंहें मिली न होंय चिकनी और नरम छोटे रोमोंसे युक्त हों तो श्रेष्ठ होती हैं और ( हीने स्थूले सूक्ष्मे खरपिंगलरोमके न शुभे ) हीन, मोटी, छोटी, खरदरी तथा पिंगलवर्णके रोमोंवाली भौंहें शुभ नहीं हैं ॥ २६९ ॥

ह्रस्वान्ता बहुदुःखानामगम्ययोषाजुषां च मध्यनताः ।
स्तोकायुषामतिनता विषमाः खण्डा भ्रुवो दरिद्राणाम् ॥२७०॥

अन्वयार्थौ-( बहुदुःखानां पुरुषाणां भ्रुवः खंडा ह्रस्वांता भवंति ( बहुत दुःखी पुरुषोंकी भौंहके खंड अर्थात् टूक छोटे छोरवाले होते हैं और ( अगम्ययोषाजुषां भ्रुवः खंडा मध्यनता भवंति ) अगम्य स्त्रियोंके गमन करनेवालोंकी भौंहके टुकडे बीचमें झुके हुए होते हैं और ( स्तोकायुषां भ्रुवः खंडा अतिनताः भवंति ) थोडी आयुवालोंकी भौंहके खंड बहुत झुके हुए होते हैं और ( दरिद्राणां भ्रुवः खंडाः विषमाः भवंति ) दरिद्रियोंकी भौंहके खंड ऊंचे नीचे होते हैं ॥ २७० ॥

धनवन्तः सुतवन्तः शिखरैः पुरुषाः समुन्नतैर्विशदैः ।
निम्नैः पुनर्भवन्ति द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः ॥ २७१ ॥

अन्वयार्थौ-( पुरुषाः समुन्नतैः विशदैः शिखरैः धनवन्तः सुतवन्तो भवन्ति ) पुरुष अच्छी और ऊंची भौंहों करिके धन और संतानवाले होते हैं



( पुनः निम्नैः शिखरैः द्रव्यसुखापत्यपरिहीनाः भवन्ति ) और नीची भौंहोंसे धन, सुख तथा सन्तानसे रहित होते हैं ॥ २७१ ॥

परिपूर्णकर्णपाली पिप्पलिकाद्यवयवः सुसंस्थानः ।
लघुविवरो विस्तीर्णः कर्णः प्रायेण भूमिभुजाम् ॥२७२ ॥

अन्वयार्थौ-( श्लोकेऽस्मिन् क्रमान्वयः ) परिपूर्ण हैं कानके अङ्ग जिसमें पिप्पलिकाको आदि अवयव अच्छे सुडौल बने हुए, छोटे छेदवाले ऐसे बडे कान बहुधा राजाओंके होते हैं ॥ २७२ ॥

आद्ये प्रलम्बकर्णः सुखी स्वभावपीनमृदुकर्णः ।
मतिमान्मूषककर्णश्चमूपतिः शङ्कुकर्णः स्यात् ॥ २७३ ॥

अन्वयार्थौ-( प्रलंबकर्णः स्वभावपीनमृदुकर्णः आद्ये सुखी स्यात् ) लम्बे कानवाला और स्वभाव करिके नरम तथा मोटे कानोंवाला पहिलीही अवस्थामें सुखी होता है और ( मूषककर्णः मतिमान् भवेत् ) मूसेकेसे कानवाला बुद्धिमान् होता है और ( शंखकर्णः चमूपतिः स्यात्) शंखकेसे कानोंवाला सेनाका पति अर्थात् स्वामी होता है ॥ २७३ ॥

चिपिटश्रवणैर्भोगी दीर्घायुर्दीर्घरोमभिः श्रवणैः ।
अतिपीनैरतिभोगी श्रवणैर्जनुनायको भवति ॥ २७४ ॥

अन्वयार्थौ-( चिपिटश्रवणैः भोगी भवति ) मनुष्य चिपकेसे कानोंसे भोगी होता है और ( दीर्घरोमभिः श्रवणैः दीर्घायुर्भवति ) बडे २ रोमोंवाले कानोंसे बडी आयुवाला होता है और ( अतिपीनश्रवणैः अतिभोगीं तथा जननायको भवति ) बहुत मोटे कानोंसे अतिभोगी और मनुष्योंका स्वामी होता है ॥ २७४ ॥

ह्रस्वैर्निःस्वाः कर्णैर्निर्मांसैः पापमृत्यवो ज्ञेयाः ।
व्यालंबिभिः शिरालैः क्रूराः स्युः प्रायशः कुटिलैः ॥ २७५ ॥

अन्वयार्थौ-( ह्रस्वैः कर्णैः नराः निःस्वा भवन्ति ) छोटे कानोंसे मनुष्य दरिद्री होते हैं ( तथा निर्मांसैः पापमृत्यवः ज्ञेयाः ) मांस-

रहित कानोंसे पापसे मरनेवाले होते हैं और ( व्यालंबिभिः शिरालैः तथा कुटिलैः कर्णैः प्रायशः क्रूराः स्युः ) लम्बे नसीले और कुटिल अर्थात् टेढे कानोंसे बहुधा क्रूर अर्थात् खोटे होते हैं ॥ २७५ ॥

येषां पृथुलाः क्षुद्राः कर्णाः स्युः कर्णशष्कुलीहीनाः ।
स्वल्पायुषो दरिद्रा विलोक्यमाना विरूपास्ते ॥ २७६ ॥

अन्वयार्थौ–( येषां कर्णाः पृथुलास्ते पुरुषाः स्वल्पायुषः स्युः ) जिनके कान चौडे होयँ वे पुरुष स्वल्पायु होते हैं और ( येषां कर्णाः क्षुद्राः ते दरिद्रा भवंति ) जिनके कान ओछे हों वे दरिद्री होते हैं और ( येषां कर्ण शष्कुलीहीनाः ते पुरुषाः विरूपाः विलोक्यमानाः भवन्ति ) बीचकी नसोंसे हीन कानोंवाले पुरुष कुरूप होते हैं ॥ २७६ ॥

यदि विपुलमूर्ध्वमधिकमुन्नतमर्द्धेन्दुसम्मितं राज्यम् ॥
प्रदिशत्याचार्यपदं शुक्तिविशालं नृणां भालम् ॥ २७७ ॥

अन्वयार्थौ–( यदि विपुलम् ऊर्ध्वम् अधिकम् उन्नतम् अर्द्धेन्दुसंमितं नृणां भालं राज्यं प्रदिशति) मनुष्यका लिलार चौडा ऊंचा और आधेचंद्रमाके आकार होय तो राज्य देनेवाला होता है और ( शुक्तिविशालं नृणां भालम् आचार्यपदं प्रदिशति ) सीपीकी नाईं चमकदार और बड़ा मनुष्यका लिलार होय तो आचार्यको देनेवाला होता है ॥ २७७ ॥

स्वल्पैर्धर्मप्रवणा धनहीनाः संवृतैस्तथा विषमैः ।
निम्नैः केवलबन्धनवधभाजः क्रूरकर्माणः ॥ २७८ ॥

अन्वयार्थौ–( स्वल्पैः भालैः धर्मप्रवणाः भवंति ) छोटे लिलारवाले धर्ममें तत्पर होते हैं और ( संवृतैः तथा विषमैः भालैः धनहीनाः भवंति ) ढके वा औंधे तथा ऊंचे नीचे लिलारवाले धनहीन होते हैं और ( निम्नैः भालैः केवलबंधनवधभाजः क्रूरकर्माणो भवंति ) नीचे लिलारवाले केवल कैद मार इनके पानेवाले और क्रूरकर्म अर्थात खोटे काम करनेवाले होते हैं ॥ २७८ ॥



भालस्थलस्थिताभिः शिराभिरधमाः सदैव पापकराः ।
अभ्युन्नताभिराढ्यास्ताभिरपि स्वस्तिकाकृतिभिः ॥२७९॥

अन्वयार्थौ–( भालस्थलस्थिताभिः शिराभिः अधमाः सदैव पापकराः भवन्ति ) लिलारमें स्थित नसें करिके जो युक्त होय तो नीच और सदा पाप करनेवाले होते हैं और ( अभ्युन्नताभिः तथा स्वस्तिकाकृतिभिः अपि ताभिः आढ्याः भवन्ति ) ऊंची और स्वस्तिकके आकार उनही लिलारकी नसोंसे जो युक्त होय तो धनवान् अर्थात् धनाढ्य होते हैं ॥ २७९ ॥

रेखाभिर्वर्षशतं पञ्चभिरायुर्ललाटसंस्थाभिः ।
पुरुषाणां स्त्रीणां वा कर्मकरत्वं करोति श्रीः ॥ २८० ॥

अन्वयार्थौ–( ललाटसंस्थाभिः पंचभिः रेखाभिः पुरुषाणां वा स्त्रीणां वर्षशतम् आयुर्भवति ) लिलारमें स्थित जो पाँच रेखा होयँ तो पुरुष वा स्त्रीकी सौवर्षकी आयु होती है और ( श्रीः कर्मकरत्वं करोति ) लक्ष्मी उनके कामको करनेवाली अर्थात् टहलनी होती है ॥ २८० ॥

भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणाम् ।
वर्षाण्यशीतिरायुर्वसुधेशत्वं पुनर्भवति ॥ २८१ ॥

अन्वयार्थौ–( भालस्थलस्थितेन स्फुटेन रेखाचतुष्टयेन नृणाम् अशीतिः वर्षाणि आयुर्भवति) लिलारमें स्थित प्रकट चार रेखा करिके मनुष्यकीअस्सी वर्षकी आयु होती है और ( पुनः वसुधेशत्वं भवति ) पृथ्वीका राजा होता है ॥ २८१ ॥

स्यादायुर्लेखाभिस्तिसृभिर्द्वाभ्यामथैकया नियतम् ।
शरदां सततिषष्टिं चत्वारिंशतमपि क्रमशः ॥ २८२ ॥

अन्वयार्थौ–( तिसृभिः रेखाभिः शरदां सततिः ) तीन रेखा करिके ७० वर्षकी आयु होती है और ( द्वाभ्यां रेखाभ्यां षष्टिः ) दो रेखा करिके ६० वर्षकी आयु होती है और ( एकया रेखया चत्वा-

रिंशतम् अपि क्रमशः नियतम् आयुर्भवति ) एक रेखा करिके ४० वर्षकी क्रमसे निश्चय आयु होती है ॥ २८२ ॥

भाले लेखाहीने पंचाधिकविंशद्वायनायुः स्यात् ।
तस्य स्याद् ध्रुवमखिला जायंते संपदः सपदि ॥ २८३ ॥

अन्वयार्थौ-( भाले लेखाहीने सति पंचाधिकविंशद्धायनायुः स्यात् ) जो रेखारहित लिलार होय तो ५५ वर्षकी आयु होय और ( ध्रुवम् तस्य अखिलाःसंपदःसपदि जायन्ते(निश्चय उसको संपूर्ण संपदा शीघ्रही होय २८३

यदि वा तिर्यग्दीर्घास्तिस्रो रेखाः शतायुषां भाले ।
भूमिजुषां तु चतस्रः पुनरायुः पंचहीनशतम् ॥ २८४ ॥

अन्वयार्थौ-( यदि वा शतायुषां भाले दीर्घाः तिर्यक् तिस्रः रेखा भवंति ) अथवा सौवर्षकी आयुवालीके लिलारमें बडी तिरछी तीन रेखा होती हैं और ( पुनः भूमिजुषां तु चतस्रः पंचहीनशतम् आयुर्भवति ) फिर भूमिवालोंके लिलारमें बडी तिरछी चार रेखा होयँ तो पांच कम सौवर्षकी आयु होती है ॥ २८४ ॥

जीवति वर्षाशीतिर्यदि वा केशान्तमुपगते रेखे ।
भालेन वर्षनवतिः पुरुषो रेखाचितेन पुनः ॥ २८५ ॥

अन्वयार्थौ-(यदि शकोन्तमुपगते रेखे भवतः तर्हि अशीतिःवर्षाणि नरो जीवति ) जो दो रेखा केशोंके अंत तक जाँय तो वह पुरुष ८० वर्षतक जीवै और ( पुनः रेखाचितेन भालेन पुरुषः वर्षनवतिर्जीवति ) जो फिर अनेक रेखा करिके युक्त लिलार होय तो वह पुरुष ९० वर्ष जीवे ॥ २८५ ॥

रेखाः सप्ततिरायुः पंचैवाग्रस्थिताः पुनः षष्टिः ।
बह्वयो नृणां शतार्द्धं दशोनमपि भंगुरा ददते ॥ २८६ ॥

अन्वयार्थौ-( यदि पंचैव रेखा अग्रस्थिता भवंति तदा सप्ततिर्वा षष्टिरायुर्भवति ) जो पांच रेखा आगे स्थित होय तौ ७० अथवा ६० वर्षकी आयु होती है और ( नृणां बह्वयः रेखाः शतार्द्धम् आयुः ददते ) मनुष्योंकी



बहुत रेखा होंय तो ) ५० वर्षकी आयु होती है और ( यदि भंगुराः पंच रेखा भवंति तदा दशोनम् अपि शतार्द्धम् आयुः ददते ) जो वेही पांच रेखा टूटीफूटी हों तो दश कम पचास अर्थात् ४० वर्षकी आयु होती है २८६

भ्रूयुग्मोपगताभिस्त्रिंशद्वर्षाणि जीवति शरीरी ।
विंशत्यब्दानि पुनर्लेखाभिर्वा च वक्राभिः ॥ २८७ ॥

अन्वयार्थौ-( भ्रूयुग्मोपगताभिः रेखाभिः शरीरी त्रिंशद्वर्षाणि जीवति ) दोनों भौंहोंके ऊपर जो रेखा होय तो मनुष्य तीस वर्षतक जीवै है और (पुनः वक्राभिः रेखाभिः विंशत्यब्दानि जीवति ) फिर जो वेही टेढी रेखा होंय तो २० वर्ष जीवै है ॥ २८७ ॥

छिन्नाभिरगम्यस्त्रीगामी क्षुद्राभिरपि नरोऽल्पायुः ।
रेखाभिर्मनुजः स्यादित्याह सुमंतविप्रेन्द्रः ॥ २८८ ॥

अन्वयार्थौ-( छिन्नाभिः रेखाभिः अगम्यस्त्रीगामी स्यात् ) टूटी फूटी रेखाओंसे मनुष्य अगम्या स्त्रीसे भोग करनेवाला होय और ( क्षुद्राभिः अपि रेखाभिः नरः अल्पायुः स्यात् ) छोटी रेखाओंसे भी मनुष्य थोडी आयुवाला होताहै और ( रेखाभिः एवम् मनुजः स्यात् इति सुमन्तविप्रेन्द्र आह )सुमन्त नाम ब्राह्मणने मनुष्यकी ऐसी रेखाओंका यह फल कहा है ॥ २८८ ॥

श्रीवत्सकार्मुकाद्या यस्य शिरारोमभिः कृता भाले ।
रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी वा जायते सपदि ॥ २८९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य भाले श्रीवत्सकार्मुकाद्याः शिरारोमभिः रेखाभिः कृताः भवंति स नृपतिर्वा भोगी सपदि जायते ) जिसके लिलारमें नसों रोमोंकी रेखाओं करिके श्रीवत्स और धनुषको आदि लेकर चिह्न हों सो पुरुष राजा वा भोगी शीघ्र ही होता है ॥ २८९ ॥

मस्तकमिभकुम्भनिभं भूमिभुजां मण्डलं गवाद्यानाम् ।
भोगवतां भवति समं क्रमोन्नतं मण्डलेशानाम् ॥ २९० ॥

अन्वयार्थौ–( भूमिभुजां मस्तकम् इभकुंभनिभं भवति ) राजाओंके मस्तक हाथीके मस्तकके तुल्य हो तो ( गवायानां मंडलं भवति ) उनके यहां गौ आदिका समूह होता है और ( भोगवतां मस्तकं समं भवति ) भोगनेवालोंका मस्तक बराबर होता है और ( मंडलेशानां मस्तकं क्रमोन्नतं भवति ) मंडलेशोंका मस्तक कम करिके ऊंचा होता है ॥ २९० ॥

विकसच्छत्राकारं यस्य शिरो युवतिकुचनिभं वापि ।
नृपतिः स सार्वभौमो निम्नं वा यस्य स महीशः ॥ २९१ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य शिरः विकसच्छत्राकारं वा युवतिकुचनिभं भवति स सार्वभौमः नृपतिर्भवति ) जिसका मस्तक खुले हुए छातेके आकार वा जवान स्त्रीके कुचके आकार हो वह सर्वभूमिका राजा होता है और ( यस्य शिरः निम्नं स महीशो भवति ) जिसका मस्तक नीचा होय सो भूमिका राजा होता है ॥ २९१ ॥

विषमो धनहीनानां करोटिकाभश्चिरायुषो मूर्द्धा ।
द्राघिष्ठो दुःखवतां चिपिटो मातापितृघ्नानाम् ॥ २९२ ॥

अन्वयार्थौ–( धनहीनानां मूर्द्धा विषमो भवति ) दरिद्रोंका मस्तक ऊंचानीचा होता है और ( चिरायुषः मूर्द्धा करोटिकाभो भवति ) बडी आयुवालोंका मस्तक खोपडीके आकार होता और ( दुःखवतां मूर्द्धा द्राघिष्ठो भवति ) दुःख पानेवालोंका मस्तक बहुतही लम्बा होता है और ( मातापितृघ्नानां मूर्द्धा चिपिटो भवति ) माता पिताके मारनेवालोंका मस्तक चिपटासा होता है ॥ २९२ ॥

धनविरहितो द्विमौलिः पापरतो मीनमौलिरतिदुःखी ।
अधमरुचिर्घटमौलिर्घननतमौलिः सदा निन्द्यः ॥ २९३ ॥

अन्वयार्थौ–( द्विमौलिः धनविरहितः स्यात् ) दो मस्तकवाला दरिद्री होता है और ( मीनमौलिः पापरतः वा अतिदुःखी स्यात् ) मछलीके मस्तकवाला पाप करनेमें चाह रक्खै और बहुत दुःखी होता है और ( घटमौलिः अधमरुचिः स्यात् ) घडकेसे मस्तकवाला नीचोंमें संगति करनेवाला होता है और ( घननतमौलिः सदा निंद्यः स्यात् ) कडे और झुके हुए मस्तकवाला सदा निन्दनीय होता है ॥ २९३ ॥



अत्रुटिताग्राः स्निग्धा ऋजवो मृदवः समास्तनीयांसः ।
अस्तोकदीर्घबहवस्तरङ्गिणो भूभुजां केशाः ॥ २९४ ॥

अन्वयार्थौ–( अत्रुटिताग्राः स्निग्धाः ऋजवः मृदवः समाः तनीयांसः अस्तोकदीर्घबहवः तरङ्गिणः भूभुजां केशाः भवन्ति ) नहीं टूटे हैं शिरे जिनके और चिकने, सीधे, नरम, बराबर, पतले, बहुत लंबे और बहुत छोटे नहीं व बलदार ऐसे बाल राजाओंके होते हैं ॥ २९४ ॥

ऊर्ध्वा रूक्षाः कपिलाः स्थूला विषमाः खरा विभिन्नाग्राः ।
अतिह्रस्वदीर्घकुटिला जटिला विरला दरिद्राणाम् ॥२९५॥

अन्वयार्थौ–( ऊर्ध्वाः रूक्षाः कपिलाः स्थूलाः विषमाः खरा विभिन्नाग्राः अतिह्रस्वदीर्घकुटिलाः जटिलाः विरलाः दरिद्राणां भवन्ति ) ऊंचे, रूखे, भूरे, ऊंचे, नीचे, खरदरे, आगे फटे हुए, बहुत छोटे, बहुत बड़े, बहुत टेढे बलदार मिले हुए, जुदे ऐसे बाल दरिद्रियोंके होते हैं ॥ २९५ ॥

अङ्गं यद्यपि पुंसां स्त्रीणां वा पिशितविरहितं सूक्ष्मम् ।
परुषं शिरावनद्धं तत्तदनिष्टं परं ज्ञेयम् ॥ २९६ ॥

अन्वयार्थौ–( यद्यपि पुंसाम् अंगं वा स्त्रीणाम् अपि अंगं पिशितविरहितं सूक्ष्मं परुषं शिवरावनद्धं तत्तत्परम् अनिष्टं ज्ञेयम् ) जिन पुरुषोंका अंग वा स्त्रियोंका अंग मांसरहित, पतला, खरदरा, चमकती हैं नसें जिसमें ऐसा हो तो बुरा है ॥ २९६ ॥

आयुः परीक्ष्य पूर्वं पुरुषाणां लक्षणं ततो ज्ञेयम् ।
व्यर्था लक्षणवीक्षा लोके क्षीणायुषां यस्मात् ॥ २९७ ॥

अन्वयार्थौ–( पुरुषाणाम् आयुः पूर्वं परीक्ष्य ततो लक्षणं ज्ञेयम् यस्माल्लोके क्षीणायुषां लक्षणवीक्षा व्यर्था भवति ) मनुष्योंकी आयुकी परीक्षा

पूर्वमें करे तो वह लक्षणभी ठीक है जिससे कि लोकमें बहुत कमती आयु-वालोंके लक्षण झूठे होते हैं ॥ २९७ ॥

यल्लक्ष्म पुनः शुभमपि कररेखाप्रभृतिकं च संवदति ।
बाह्याभ्यन्तरमपरं तत्र समुद्रेण निर्दिष्टम् ॥ २९८ ॥

अन्वयार्थौ-( यल्लक्ष्म शुभम् अपि पुनः कररेखाप्रभृतिकं च पुनः संवदति अपरं लक्षणं बाह्याभ्यंतरं तत्र समुद्रेण निर्दिष्टम् ) जो लक्षण शुभभी हैं और हाथकी रेखाओंके लक्षणभी कहता है तिन दोनोंमें बाहिरी और भीतरी लक्षणोंको औरभी जानने चाहिये यह समुद्रने कहा है ॥ २९८ ॥

इति महत्तमश्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते तिलकापरनाम्नि
नरस्त्रीलक्षणशास्त्रे शारीरिकाधिकारः प्रथमः ॥ १ ॥

---

संहतिसारानूकस्नेहोन्मानप्रमाणमानानि ।
क्षेत्राणि प्रकृतिस्थो मिश्रमेतदपि शारीरम् ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ-( संहतिसारानूकस्नेहोन्मानप्रमाणमानानि क्षेत्राणि प्रकृतिः अपि एतत् मिश्रं शारीरम् ) बनावट जोड बल आचरण प्रीति ऊंचाई संख्या चौडाई क्षेत्र स्वभाव इनके मिलनेका नाम शारीर है ॥ १ ॥

यत्र मिथः श्लिष्टत्वं मांसस्नाय्वस्थिसंधिबंधानाम् ।
संहननं संघातः संहतिरिति कथ्यते सद्भिः ॥ २ ॥

अन्वयार्थौ-( यत्र मांसस्नाय्वस्थिसंधिबंधानां मिथः श्लिष्टत्वं संहननं संघातः सद्भिः संहतिः इतिकथ्यते ) मांस बडी बडी नसें और हाड जोडकी जगह बंधान आपसमें मिलना इसका नाम संहनन और संघात है सत्पुरुष इसको संहति कहते हैं ॥ २ ॥

यंत्रारिष्टमिवाङ्गं प्रत्यङ्गं यदि दृश्यते देहे ।
संस्थानेन सुरूपं महेच्छ सा संहतिर्भवति ॥ ३ ॥

अन्वयार्थौ-( इह देहे यंत्रारिष्टम् इव यत् अंगं प्रत्यङ्गं संस्थानेन सुरूपं दृश्यते हे महेच्छ ! सा संहतिर्भवति ) इस शरीरमें यंत्रकीसी भांति जो शुभाशु-



लक्षण अंग प्रत्यंगमें दीखते हैं सोई बनावट करिके सुरूप होता है तो हे महेच्छ अर्थात् महाशय ! सोई संहति होती है ॥ ३ ॥

मांसास्थिसन्धिबन्धः कायेऽशिथिलो हि लक्ष्यते यस्य ।
स च संहतिमान् धन्यो दीर्घायुर्जायते नियतम् ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य काये मांसास्थिसन्धिबंधः अशिथिलः लक्ष्यते सः संहतिमान् नियतं धन्यः दीर्घायुर्जायते ) जिसके शरीरमें मांस, हाड, सन्धि-बंधन ढीले नहीं दीखें सो संहतिमान् ऐसे शरीरवाला निश्चय धन्य और बडी आयुवाला होता है ॥ ४ ॥

संहतिरहितो रूक्षः पिशितविहीनः शिरायुतः शिथिलः ।
स्थूलास्थिसन्निवेशो भवति क्लेशावहः स पुमान् ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ-( यः पुरुषः संहतिरहितः रूक्षः पिशितविहीनः शिरायुतः शिथिलः स्थूलास्थिसन्निवेशः स पुमान् क्लेशावहः भवति ) जिस पुरुषका शरीर अच्छी बनावटका नहीं होय और रूखा मांसरहित थोड मांसका, बडी बडी नसें दीखें और ढीला, मोटे हाड होयँ जिसमें सो ऐसा पुरुष दुःख भोगनेवाला होता है ॥ ५ ॥

## अथ सारः ।

त्वग्रक्तमांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राण्यनुक्रमेण नृणाम् ।
साराः सप्त भवेयुः समासतस्तत्फलं ब्रूमः ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ-( अनुक्रमेण नृणां त्वक् रक्तं मांसं मेदः अस्थि मज्जा शुक्रम् इति सप्त साराः भवेयुः समासतः तत्फलं वयं ब्रूमः ) क्रमसे मनुष्योंके ७ सार होते हैं-चर्म, रक्त, मांस, चर्बी, हाड, मज्जा, वीर्य सो संक्षेपसे उनका फल हम कहते हैं ॥ ६ ॥

स्निग्धत्वचो धनाढ्यास्तनुत्वचः कुबुद्धयो मनुजाः ।
सुभगा मृदुत्वचः स्युः प्रागुक्तत्रित्वचः सुखिनः ॥ ७ ॥

अन्वयार्थौ–( स्निग्धत्वचः मनुजाः धनाढ्याः तनुत्वचः मनुजाः कुबुद्धयः मृदुत्वचः सुभगाः स्युः, प्रागुक्तत्रित्वचः सुखिनो भवन्ति ) चिकनी खालवाले मनुष्य ज्ञानवान् होते हैं और पतली खालवाले मनुष्य खोटी बुद्धिके होते हैं और नरम खालवाले सुन्दर होते हैं और पहले कहीगई तीन त्वचावाले सुखी होते हैं ॥ ७ ॥

रसनोष्ठदन्तपीठकरांघ्रिगुदतालुलोचनान्तेन ।
रक्तेन रक्तसारा धनतनयस्त्रीसुखोपेताः ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ–( रसनोष्ठदन्तपीठकरांघ्रिगुदतालुलोचनान्तेन रक्तेन मनुजाः रक्तसाराः धनतनयस्त्रीसुखोपेता भवंति ) जीभ, होठ, मसूढे, हाथ, पांव, गुदा, तालुवा, नेत्रोंके अंत जो ये सात लाल होयँ तो वे पुरुष रक्तसार कहाते हैं, वे धन-संतान-स्त्री करिके युक्त सुखी होते हैं ॥ ८ ॥

सर्वाङ्गीणेन चितो यथाप्रदेशं घनेन मांसेन ।
उक्तः स मांससारो विद्याधनरूपपरिकलितः ॥ ९ ॥

अन्वयार्थौ–( यथाप्रदेशं घनेन सर्वांगीणेन मांसेन चितः स मांससारः उक्तः विद्याधनरूपपरिकलितो भवति ) जैसा जिस जगह चाहिए वैसे कडे मांस करके जो पुरुष युक्त होय सो मांससार कहाता है और वह विद्या, धन, रूप इन करिके युक्त होता है ॥ ९ ॥

नखदन्तदृशि स्निग्धो मेदस्सारः सुखान्वितः सुतवान् ।
स्थूलास्थिरस्थिसारः कान्तो विद्यां गतः सबलः ॥ १० ॥

अन्वयार्थौ–( नखदन्तदृशि स्निग्धः मनुजः मेदस्सारो भवति सुखान्वितः सुतवान् स्यात् ) नख, दांत, दृष्टि यह जिस पुरुषके चिकने होयँ वह मेदःसार कहाता है, वह सुखी और पुत्रवान् होता है और ( स्थूलास्थिरस्थिसारः मनुजः कान्तः विद्यां गतः सबलः स्यात् ) मोटे हाडवाला अस्थिसार कहाता है वह पुरुष विद्यावान् और बलवान् होता है ॥ १० ॥



घनशुक्रोपचययुतः संस्थितिमान् यो महाबलः स्निग्धः ।
कथितः स मज्जसारो बहुतनयः स्त्रैणसुखभोगी ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौ–( यः घनशुक्रोपचययुतः संस्थितिमान् स्निग्धः महाबलः स मज्जसारः कथितः स एव बहुतनयः स्त्रैणसुखभोगी स्यात् ) जो बहुत वीर्यके समूहसे स्थित है, जिसकी मज्जा चिकनी, बहुत बल करिके युक्त होय सो मज्जसार कहाता है। सो पुरुष बहुत पुत्र और स्त्रियोंके सुखका भोगनेवाला होता है ॥ ११ ॥

यो भवति शुक्रसारो विद्यासौभाग्यरूपपरिकलितः ।
प्रायेण सत्तसारः सर्वोत्कर्षप्रदः पुरुषः ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौ–( यः पुरुषः शुक्रसारो भवति स विद्यासौभाग्यरूपपरिकलितः स्यात् ) जो पुरुष शुक्रसार अर्थात् वीर्यका बलयुक्त होय तो विद्या और सौभाग्य रूप करिके युक्त होता है और ( यः पुरुषः प्रायेण सत्तसारो भवति सः सर्वोत्कर्षप्रदो भवति ) जो पुरुष सत्तसार होय तो सब प्रकार करिके अधिकता देनेवाला होता है ॥ १२ ॥

## अथाऽनूकम् ।

पूर्वभवे ह्यनवरतं सत्त्वस्वरूपगतिभिरभ्यस्तम् ।
पुनरिह यदनुक्रियते तदनूकं कथ्यते सद्भिः ॥ १३ ॥

अन्वयार्थौ–( सत्त्वस्वरूपगतिभिः पूर्वभवे अभ्यस्तम् अनवरतम् इह पुनः यत् अनुक्रियते सद्भिः तत् अनूकं कथ्यते ) जैसे सत्त्वस्वरूप गति मनुष्योंने पहिले जन्ममें अभ्यास किया था वही इस जन्ममें भी बराबर होय तो उसीके नामको पंडित अनूक कहते हैं ॥ १३ ॥

सिंहव्याघ्रगरुत्मद्वृषभानूका भवन्ति ये मनुजाः ।
अप्रतिहतप्रतापा विजितरथास्ते नराधीशाः ॥ १४ ॥

अन्वयार्थौ–( ये मनुजाः सिंहव्याघ्रगरुत्मद्वृषभानूका भवंति ते अप्रतिहतप्रतापा विजितरथाः नराधीशाः भवन्ति ) जिन मनुष्योंके सिंह-बघेरे-

गरुड-बैलकेसे आचरण होयँ तो नहीं रुका है तेज जिनका और जीते हैं रथी आदि योद्धा जिन्होंने सो ऐसे मनुष्य राजा होते हैं ॥ १४ ॥

वानरमहिषक्रोडच्छगलानूकाः सुखार्थसुतसहिताः ।
रासभकरभानूका धनहीना दुःखिताः प्रायः ॥ १५ ॥

अन्वयार्थौ–( वानरमहिषक्रोडच्छगलानूकाःसुखार्थसुतसहिता भवन्ति तथा रासभकरभानूकाः प्रायः धनहीनाः दुःखिता भवंति ) बंदर, भैंसा, सूकर, बकरा इनकेसे आचरणवाले सुख, अर्थ, पुत्र सहित होते हैं और गधा, ऊंट इनकेसे आचरणवाले निश्चय दरिद्री और दुःखी होते हैं ॥ १५ ॥

## अथ स्नेहः ।

चित्तप्रसत्तिजननं प्रीणनमिति कथ्यते ध्रुवं स्नेहः ।
तन्मूलमिह ज्ञेयं सुखसौभाग्यादिकं सर्वम् ॥ १६ ॥

अन्वयार्थौ–( चित्तप्रसत्तिजननं प्रीणनं ध्रुवं स्नेहः इति कथ्यते इह तन्मूलं सर्वं सुखसौभाग्यादिकं ज्ञेयम् ) चित्तकी प्रसन्नताको उत्पन्न करनेवाला स्नेह है, सो इस लोकमें इससे सकल सुख सौभाग्य आदि प्राप्त होते हैं ॥ १६ ॥

रसनायां दशनेषु त्वचि लोचनयोर्नखेषु केशेषु ।
पुण्यवतां प्रायेण स्नेहोऽयं षड्विधो ज्ञेयः ॥ १७ ॥

अन्वयार्थौ–(पुण्यवतां रसनायां दशनेषु त्वचि लोचनयोः नखेषु केशेषु प्रायेण अयं स्नेहः षड्विधः ज्ञेयः ) पुण्यवानोंके जीभमें, दाँतोंमें, त्वचामें, नेत्रोंमें, नखोंमें, बालोंमें यह स्नेह अर्थात् चिकनाई छः प्रकारसे जानने योग्य है ॥ १७ ॥

प्रियभाषित्वं रसनास्निग्धत्वं सुभोजनं रदाः स्निग्धाः ।
अतिसौख्यं त्वक्स्निग्धा नियतं भजते भुजिष्योऽपि ॥१८॥

अन्वयार्थौ–( यस्य रसनास्निग्धत्वं स भुजिष्योऽपि नियतं प्रियभाषित्वं भजते ) जिसकी जीभ चिकनी हो वह दासभी निश्चय प्रिय बोलनेवाला हो



( यस्य रदाः स्निग्धाः स भुजिष्योऽपि नियतं सुभोजनं भजते ) जिसके दाँत चिकने हों वह दासभी सुभोजन पाता है और ( यस्य त्वक् स्निग्धा स भुजिष्योऽपि नियतम् अतिसौख्यं भजते ( जिसकी त्वचा चिकनी हो वह ( दास भी ) निश्चित अतिसुख पाता है ॥ १८ ॥

जनतास्निग्धो नयनस्निग्धः समधिकधन नखस्निग्धः ।
केशस्निग्धो बहुविधसुगन्धमाल्यं नरो लभते ॥ १९ ॥

अन्वयार्थौ–( नयनस्निग्धः जनतास्निग्धः भवति ) नेत्रोंमें चिकनाईसे मनुष्योंमें प्रीति करनेवाला होता है ( नखस्निग्धः समधिकधनं लभते ) और नखोंमें चिक्कणता होय तो अधिक धनवाला होता है और ( केशस्निग्धः नरः बहुविधसुगंधमाल्यं लभते ) बालोंमें जिसके चिकनाई होय वह पुरुष अनेक प्रकारकी सुगंधमालाको प्राप्त करता है ॥ १९ ॥

## अथोन्मानम् ।

मञ्जिष्ठादीनामिव तुलया यत्तोलनं भवति पुंसाम् ।
उन्मीयतेऽत्र नियतं तदुच्यते सद्भिरुन्मानम् ॥ २० ॥

अन्वयार्थौ–( पुंसां मंजिष्ठादीनाम् इव तुलया यत्तोलनं भवति अत्र नियतम् उन्मीयते सद्भिः तत् उन्मानम् उच्यते ) मंजीठ आदि चीजोंको जैसे तराजूमें तोलना होता है तैसे ही पुरुषोंका भी उन्मान किया जाता है इसलिये निश्चय बुद्धिमान् पुरुष उसको उन्मान कहते हैं ॥ २० ॥

यो द्व्यर्द्धभारदेहः स निखिलविश्वम्भरेश्वरो भवति ।
भारवपुर्यः पुनरिह जगति स कोटिध्वजो भवति ॥ २१ ॥

अन्वयार्थौ–( यः द्व्यर्धभारदेहः स निखिलविश्वम्भरेश्वरो भवति ) जिसका शरीर ढाई भार तोलमें हो वह संपूर्ण पृथ्वीका पालनेवाला राजा होय और ( पुनः इह भारवपुः यः जगति स कोटिध्वजो भवति ) जिस पुरुषका शरीर एक भार तोलमें हो वह करोडपति होता है ॥ २१ ॥

भाराद्धं यस्याङ्गं स सुखाढयो भोगभाजनं भवति ।
भाराद्धार्द्धतनुर्यः स दुर्गतो दुःखितः प्रायः ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य अङ्गं भाराद्धं सः पुरुषः सुखाढ्यः भोगभाजनं भवति ) जिसका अंग आधा भार तोलमें होय सो पुरुष सुख और भोगका पानेवाला होय और ( यः पुरुषः भाराद्धार्द्धतनुः प्रायः स दुर्गतः दुःखितः स्यात ) जिस पुरुषका शरीर चौथाई भार तोलमें होय तो निश्चय दरिद्र और दुःख भोगनेवाला होता है ॥ २२ ॥

काष्ठेषु मणिषु वज्रेष्वाकरधातुषु तथान्यवस्तुषु च ।
स्निग्धं यत्तद्वद्गुरु यद्रूक्षं च लघु तद्वदिदम् ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौ–( काष्ठेषु मणिषु वज्रेषु आकारधातुषु तथा अन्यवस्तुषु यत् स्निग्धत्वं रूक्षत्वं तद्वत् गुरु च पुनः तत् इदं लघु भवति ) काठमें मणिमें हीरामें जितनी खानिकी धातु हैं उनमें वा और वस्तुओंमें जो चिकनाई और रूखापन है वैसे स्निग्धादिगुणवाले मनुष्य होते हैं ॥ २३ ॥

## अथ प्रमाणम् ।

आपार्ष्णितलशिरोऽन्तं यदिह वपुर्मीयते प्रकर्षेण ।
प्रवदन्ति तत्प्रमाणं केऽप्यायामं पुनः प्राहुः ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौ–( आपार्ष्णितलशिरोऽन्तं यत् इह वपुः प्रकर्षेण मीयते तत् प्रमाणं प्रवदन्ति केऽपि पुनः आयामं प्राहुः ) पाँवके तलुवेसे लेकर शिरतक जो यह शरीर नापा जाय उसीको प्रमाण कहते हैं कोई आयाम कहते हैं ॥ २४ ॥

शतमष्टभिः समधिकं ज्येष्ठः स्यान्मध्यमोऽपि षण्णवतिः ।
चतुरधिकाशीतिरथांगुलानि दैर्घ्यात्पुमानधमः ॥ २५ ॥

अन्वयार्थौ–( यः पुमान् दैर्घ्यात् अंगुलानि अष्टभिः अधिकं शतं स ज्येष्ठः स्यात ) जिस पुरुषकी लम्बाई १०८ अंगुलकी होय सो ज्येष्ठ



अर्थात् उत्तम होता है और ( षण्णवतिः दैर्घ्यात् अंगुलानि अपि मध्यमः स्यात् ) जिसकी लम्बाई ९६ अंगुलकी होय सो मध्यम होता है और ( चतुरधिकाशीतिः दैर्घ्यात् अंगुलानि अधमः स्यात् ) जिसकी लम्बाई ८४ अंगुलकी होय सो अधम अर्थात् नीच होता है ॥ २५ ॥

दैर्घ्या गुल्फोपगता चतुरंगुलिका भवेदथो जङ्घा ।
दैर्घ्येण चतुर्विंशतिरथांगुलचतुष्टयं जानु ॥ २६ ॥

अन्वयार्थौ–( गुल्फोपगता दैर्घ्या चतुरङ्गुलिका भवेत् अथो जंघा दैर्घ्येण चतुर्विंशतिर्भवेत् अथ जानु अंगुलचतुष्टयं भवेत् ) टकनेकी लंबाई ४ अंगुल होय और पिंडलीकी लम्बाई २४ अंगुल होय और जानुकी लंबाई ४ अंगुल होती है ॥ २६ ॥

ऊरू जंघातुल्यौ बस्तिः स्याद् द्वादशांगुलायामा ।
तदर्द्धमितं नाभियुतमुदरं च कुचसहितम् ॥ २७ ॥

अन्वयार्थौ–( ऊरू जंघातुल्यौ द्वादशांगुलायामा बस्तिः स्यात् नाभियुतं कुचसहितम् उदरं तदर्द्धमितं स्यात ) ऊरू और जंघा बराबर होती हैं और १२ अंगुलकी लम्बी बस्ति कहते हैं और नाभियुक्त कुचसहित उदरकी लंबाई उससे आधी होती है ॥ २७ ॥

चत्वारि ग्रीवा स्याच्चिबुककचान्तमंगुलानि मुखम् ।
द्वादश पुंसां भवतीत्यायामोऽष्टाधिकं शतकम् ॥ २८ ॥

अन्वयार्थौ–( चत्वारि ग्रीवा स्यात् चिबुककचान्तं द्वादश अंगुलानि मुखं भवति पुंसाम् अष्टाधिकं शतकम् आयामः ) गर्दनकी लंबाई चारअंगुलकी और ठोढीसे कचतक लम्बाई १२ अंगुलकी मुखमें होती है और पुरुषकी लंबाई १०८ अंगुलकी कहते हैं ॥ २८ ॥

एतदपि मतं केषामष्टोत्तरमुत्तमस्य भवति शतम् ।
मध्यस्याष्टविहीनं ततो दशोनं जघन्यस्य ॥ २९ ॥

अन्वयार्थौ-( उत्तमस्य पुरुषस्य अष्टोत्तरं शतम् अंगुलं शरीरं मध्यस्य पुरुषस्य अष्टविहीनं जघन्यस्य ततः दशोनम् अंगुलं शरीरम्-एतत् केषाम् अपि मतं भवति ) उत्तम पुरुषका १०८ अंगुलका शरीर होता है और मध्यम पुरुषका १०० अंगुलका और अधम पुरुषका ९८ अंगुलका शरीर होता है यह भी किसीका मत है ॥ २९ ॥

इदमपि मतमन्यस्य उत्तममुत्तमनरे भवत्यायुः ।
मध्ये मध्यं हीने तदपि विहीनं परिज्ञेयम् ॥ ३० ॥

अन्वयार्थौ-( उत्तमनरे उत्तमम् आयुः मध्ये नरे मध्यम् आयुः हीने नरे हीनम् आयुः इतीदमप्यन्यस्य मतं परिज्ञेयम् ) उत्तम पुरुषकी १०८ वर्ष और ५ दिनकी आयु होती है और मध्यम पुरुषकी मध्यम आयु होती है और अधम पुरुषकी अधम आयु होती है यह भी और किसीका मत है ॥ ३० ॥

उत्तममध्यमहीनाः कालक्षेत्रानुमानतो ये स्युः ।
निजपर्वांगुलिसंख्या नियतं तेषां विबोद्धव्या ॥ ३१ ॥

अन्वयार्थौ-( कालक्षेत्रानुमानतः ये नराः उत्तममध्यमहीनाः स्युःतेषां निजपर्वांगुलिसंख्या नियतं विबोद्धव्या ) समय क्षेत्रके अनुमानसे जो मनुष्य उत्तम मध्यम अधम होते हैं, तिन पुरुषोंकी अपने पोरुओंके अंगुलोंसे गिनती निश्चय जाननी चाहिये ॥ ३१ ॥

रामो दशरथसूनुर्बलिरपि विंशतिशतांगुलावेव ।
पूर्वं मानाधिक्यात् पुनरेतौ दुःखितौ जातौ ॥ ३२ ॥

अन्वयार्थौ-( दशरथसूनुः रामः तथा बलिः अपि विंशतिशतांगुलौ बभूवतुः पूर्वं मानाधिक्यात् एव एतौ दुःखितौ जातौ ) दशरथका पुत्र राम और राजा बलि ये दोनों १२० अंगुलके थे, पहले मान अधिक होनेसे सोई वे इतने दुःखी हुए ॥ ३२ ॥



## अथ मानम् ।

जलभृतकटाहमध्यासीनस्य चतुर्दिशं नरस्य बहिः ।
पतति यदम्बु द्रोणं परिणाहत्वेन तन्मानम् ॥ ३३ ॥

अन्वयार्थौ-( जलभृतकटाहमध्यासीनस्य नरस्य चतुर्दिशं बहिः यत् द्रोणम् अम्बु पतति परिणाहत्वेन तत् मानम् ) जलकी भरी हुई कढाईके बीचमें जिस मनुष्यके बैठनेसे चारों ओर बाहरको जो ३२ सेर पानी गिरे उस प्रमाण करिके उसे मान कहते हैं ॥ ३३ ॥

मानोपेतशरीराश्चिरायुषः संपदान्विताः पुरुषाः ।
तद्धीनाधिक्ययुताः पुनर्भजन्ते सदा दुःखम् ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौ-( मानोपेतशरीराः पुरुषाः चिरायुषः संपदान्विताः भवन्ति ) मानसे युक्त शरीर जो ऐसे पुरुष होयँ वे बडी आयुवाले और संपदायुक्त होते हैं और ( पुनः तद्धीनाधिक्ययुताः सदा दुःखं भजन्ते ) फिर उससे कमती बढती मानके शरीरवाले होयँ तो सदा दुःखको भजते हैं ॥ ३४ ॥

यत्स्यात् तिर्यङ्मानं नरस्य पद्मासनोपविष्टस्य ।
जानुयुगलबाह्यपक्षांतराश्रितं सोऽत्र परिणाहः ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ-( पद्मासनोपविष्टस्य नरस्य यत् तिर्यङ्मानं स्यात् ) पद्मासन अर्थात् कमलके आसनमें बैठे हुए पुरुषके जो तिर्यङ्मान हो ( जानुयुगलबाह्यपक्षांतराश्रितं सः अत्र परिणाहः ) जो दोनों जानु बाहरको और बगलकोभी रहें तो उस मानका नाम परिणाह है ॥ ३५ ॥

आसनतो भालान्तं शरीरमध्ये तथोपविष्टस्य ।
यन्मानं स्यादूर्ध्वं स चोच्छ्रयः कथ्यते सद्भिः ॥ ३६ ॥

अन्वयार्थौ-( तथोपविष्टस्य शरीरमध्ये आसनतः भालान्तम् ऊर्ध्वं यन्मानं स्यात् स सद्भिः उच्छ्रयः कथ्यते ) पूर्ववत् बैठा जो पुरुष उसके

शरीरके बीचमें आसनसे ललाटके अंततक जो ऊर्ध्वमान हैं उसीको पंडित उच्छ्रय कहते हैं ॥ ३६ ॥

यस्योच्छ्रयः समः स्यात्परिणाहेनोदितेन भाग्यवशात् ।
नियतं जगति प्रायः स पुमान् पुरुषोत्तमो भवति ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य उच्छ्रयः भाग्यवशात् उदितेन परिणाहेन समःस्यात् स पुमान् जगति प्रायः नियतं पुरुषोत्तमो भवति ) जिस पुरुषका उच्छ्रय-मान भाग्यके वशसे उदित जो परिणाह तिसके बराबर होय सो पुरुष जगत्में बहुधा निश्चय उत्तम पुरुष होता है ॥ ३७ ॥

अङ्गोपाङ्गानामिह विस्तारायामपरिधिभेदेन ।
मानं यथानुरूपं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि ॥ ३८ ॥

अन्वयार्थौ–( इह अंगोपाङ्गानां विस्तारायामपरिधिभेदेन यथानुरूपं मानं संक्षेपेण प्रवक्ष्यामि ) इस ग्रन्थमें अंग उपांगके विस्तार, आयाम, परिधि इन तीन भेदों करके जैसेका तैसा मान संक्षेपसे कहता हूं ॥ ३८ ॥

आपार्ष्णि ज्येष्ठान्तं तलमत्र चतुर्दशांगुलायामम् ।
विस्तारेण षडंगुलमंगुष्ठो द्व्यंगुलायामः ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ–( आपार्ष्णि ज्येष्ठान्तं तलम् अत्र चतुर्दशांगुलायामं स्यात् ) पाँवके तलुवेकी लम्बाई १४ अंगुलकी पार्ष्णिसे ज्येष्ठांगुलीतक होती है और ( विस्तारेण षडंगुलं, द्व्यंगुलायामः अंगुष्ठः स्यात ) चौडाई ६ अंगुलकी है और दो अंगुलकी अंगूठेकी होती है ॥ ३९ ॥

पञ्चांगुलपरिणाहः पादान्तं तन्नखांगुलं दैर्घ्यात् ।
अंगुष्ठसमा ज्येष्ठा मध्या तत्षोडशांशोना ॥ ४० ॥

अन्वयार्थौ–( दैर्घ्यात् पादांतं तन्नखांगुलं पंचांगुलपरिणाहः अंगुष्ठसमा ज्येष्ठा मध्या तत्षोडशांशोना स्यात् ) लंबाईसे पांवके अंततक नखोंके अंगुल ५ प्रमाणका होता है और प्रमाणसे अंगूठेके बराबर



ज्येष्ठा अंगुली होती है और बीचकी अंगुली उससे १६ वें भाग हीन होती है ॥ ४० ॥

अष्टांशोनाऽनामा कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना ।
सर्वासामप्यासां नखाः स्वपर्वत्रिभागमिताः ॥ ४१ ॥

अन्वयार्थौ–( अनामा अष्टांशोना कनिष्ठिका षष्ठभागपरिहीना सर्वासाम् अप्यासां नखाः स्वपर्वत्रिभागमिताः स्युः ) अनामिका अंगुली ८ वें भागहीन और कनिष्ठिका अंगुली ६ वें भागहीन होय और सब इन अंगुलियोंके नख अपने अपने पोरुवोंसे तीन भाग प्रमाण होते हैं ॥ ४१ ॥

सत्र्यंगुलपरिणाहा प्रथमांगुलविस्तृतांगुली भवति ।
अष्टाष्टभागहीनाः शेषाः क्रमशः परिज्ञेयाः ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थौ–( प्रथमांगुली सत्र्यंगुलपरिणाहा विस्तृतांगुली भवति शेषाः अंगुलयः क्रमशः अष्टाष्टभागहीनाः परिज्ञेयाः ) पहली अंगुलीको तीन अंगुलके प्रमाण करके लम्बाई होती है और जो बाकी अंगुलोंके क्रमसे हैं वे आठवें भाग हीन होती हैं ॥ ४२ ॥

जंघातः परिणाहो ध्रुवमष्टाधिकदशांगुलानि स्यात् ।
विंशतिरेकोपगतो जानुर्द्वात्रिंशदूरुरपि ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थौ–( जंघातः ध्रुवं परिणाहः अष्टाधिकदशांगुलानि स्यात् विंशतिः एकोपगतः जानुः स्यात् अपि द्वात्रिंशत् ऊरुः भवति ) जंघाका प्रमाण १८ अंगुलका है और २१ अंगुलका प्रमाण जानुका होता है और ३२ अंगुलका प्रमाण ऊरुका होता है ॥ ४३ ॥

अष्टादशांगुलमिता विस्ताराज्जायते कटिः पुंसाम् ।
नाभेरन्तःपरिधिः षट्चत्वारिंशदंगुलतः ॥ ४४ ॥

अन्वयार्थौ–( पुंसां कटिः अष्टादशांगुलमिता विस्तारात् जायते तथा नाभेः अंतःपरिधिः षट्चत्वारिंशदंगुलतः स्यात् ) पुरुषोंकी कमर प्रमाणसे

१८ अंगुलकी लंबी होती है और नाभिसे अंततक प्रमाण ४० अंगुलकी लंबाई होती है ॥ ४४ ॥

पुंसां द्वादश कुचयोरभ्यन्तरमंगुलानि दैर्घ्येण ।
उरसि च युगोपनिष्ठात्पडंगुलो भवति कक्षांतः ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थौ-( पुंसां दैर्घ्येण कुचयोः अभ्यन्तरं द्वादश अंगुलानि स्यात् च पुनः उरसि युगोपनिष्ठात् षडंगुलः कक्षान्तो भवति ) पुरुषोंके कुचोंकी लंबाई बीचमें १२ अंगुलके प्रमाणकी होतीहै और हृदयसे दोनों कुचोंकी जगहसे ६ अंगुल प्रमाण कक्षाका अंग होता है ॥ ४५ ॥

विंशत्युरःस्थलं स्याद्विस्तारादंगुलानि चतुरधिकम् ।
पृष्ठया सह परिणाहे षडधिकपंचाशदंगुलिकम् ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौ-( उरःस्थलं विस्तारात् अंगुलानि चतुरधिकं विंशतिः स्यात् पृष्ठया सह परिणाहे षडधिकपंचाशदंगुलिकं स्यात् ) हृदयके जगहकी लंबाईका प्रमाण २४ अंगुलका होता है और पीठकी लंबाईका प्रमाण ५६ अंगुलका होता है ॥ ४६ ॥

पर्व प्रथमं बाह्वोर्दैर्घ्येणाष्टादशांगुलानि स्यात् ।
षोडश पुनर्द्वितीयं सप्त तलं मध्यमांगुलिमा ॥ ४७ ॥

अन्वयार्थौ-( बाह्वोः प्रथमं पर्व दैर्घ्येण अष्टादशांगुलानि स्यात्-पुनः द्वितीयं षोडश स्यात्-आ मध्यमांगुलिं सप्त तलं स्यात्) भुजाके पहले खंडकी लंबाई १८ अंगुल प्रमाणकी होतीहै और दूसरे खंडकी लंबाई १६ अंगुलकी है, बीचकी अंगुलीतक हथेलीकी लंबाई ७ अंगुलकी होतीहै ॥ ४७ ॥

इति समुदायेन भुजः षट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात् ।
पञ्चांगुलविस्तारं पाणितलं शस्तरेखान्तम् ॥ ४८ ॥

अन्वयार्थौ-( इति समुदायेन भुजः षट्चत्वारिंशदंगुलानि स्यात् ) इस समुदाय करके भुजा ४६ अंगुलके प्रमाणकी होती है और ( पाणितलं रेखान्तं पंचांगुलविस्तारं शस्तं स्यात् ) हथेलीकी रेखाके अंततक लंबाई ५ अंगुलकी श्रेष्ठ होतीहै ॥ ४८ ॥



मध्यांगुलितो हीना प्रदेशिनी भवति पर्वणार्द्धेन ।
तत्सममानाऽनामा कनिष्ठिका पर्वपरिहीना ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थौ-( अर्द्धेन पर्वणा मध्यांगुलितः हीना प्रदेशिनी भवति )आधे पोरुवाके प्रमाण बीचकी अंगुलीसे हीन तर्जनी होती है और ( तत्सममानाऽनामा, कनिष्ठिका पर्वपरिहीना भवति ) तिसके समान है मान अर्थात् परिमाण जिसका ऐसी अनामिका और कनिष्ठिका १ पोरुवा उससे कमती होती है ॥ ४९ ॥

अंगुष्ठस्यायामोऽङ्गुलानि चत्वारि जायते पुंसाम् ।
निजपर्वार्द्धपरिमिता भवन्ति सर्वेऽपि पाणिनखाः ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ-( पुंसाम् अंगुष्ठस्य आयामः चत्वारि अंगुलानि जायते ) पुरुषके अँगूठेकी लम्बाई ४ अंगुलकी होती है और ( सर्वेऽपि पाणिनखाः निजपर्वार्द्धपरिमिताः भवंति ) सब हाथके नख अपने पोरुवेके आधे प्रमाणके होते हैं ॥ ५० ॥

ग्रीवायाः परिणाहोऽङ्गुलानि चतुरधिकविंशतिः शस्तः ।
नासापुटद्वयान्तर्विस्तारो द्व्यंगुलं मानम् ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थौ-( ग्रीवायाः परिणाहः अंगुलानि चतुरधिकविंशतिः शस्तः स्यात् ) गर्दनकी लंबाई चारों ओरसे २४ अंगुलकी श्रेष्ठ होती है और ( नासापुटद्वयान्तः द्व्यंगुलं मानं विस्तारो भवति ) नाकके नथुने दोनों अंततक २ अंगुल प्रमाणके लंबे होते हैं ॥ ५१ ॥

आचिबुकपश्चिमकचप्रान्तं द्वात्रिंशदंगुलो मूर्द्धा ।
कर्णद्वयस्य मध्ये पुनरष्टाधिकदशांगुलिकः ॥ ५२ ॥

अन्वयार्थौ-( स्पष्टान्वयः ) ठोढीसे लेकर पिछले बालोंतक ३२ अंगुल मूर्धा है और दोनों कानोंके बीच फिर १८ अंगुल प्रमाणसे मूर्द्धा है ॥ ५२ ॥

पुंसामंगे मानं स्पष्टं शिष्टैः पुरा विनिर्दिष्टम् ।
इह पुनरुपयोगाद्धै दिङ्मात्रमिदं मयाप्युक्तम् ॥ ५३ ॥

अन्वयार्थौ–( शिष्टैः पुंसाम् अंगे मानं पुरा स्पष्टं विनिर्दिष्टम् पुनः इह उपयोगात् वै दिङ्मात्रम् इदं मया उक्तम् ) श्रेष्ठ पुरुषोंके अङ्गमान तो सब शिष्टोंने स्पष्ट पहिलेही कहदिया और फिर इस स्थानमें कार्यवशसे निश्चय करके दिशाके दिखाने मात्र यह मैंने वही कहा है ॥ ५३ ॥

विंशतिवर्षा नारी सपंचविंशतिसमो नरो योग्यः ।
जीवति तुर्यांशो वा मानोन्मानप्रमाणानाम् ॥ ५४ ॥

अन्वयार्थौ–( विंशतिवर्षा नारी सपंचविंशतिसमः नरः योग्यः स्यात् मानोन्मानप्रमाणानां तुर्यांशः वा जीवति ) बीस बर्षकी स्त्री और पचीस वर्षका पुरुष मान उन्मान प्रमाण इनका योग्य होता है; उक्त प्रमाणसे अधिक वय होनेपर चौथा भाग समझना ॥ ५४ ॥

## अथ क्षेत्रकथनम् ।

वर्षाणां शतमायुस्तस्यैवं दश दशा विभागेन ।
क्षेत्राणि दश नराणां तदाश्रितं लक्षणं ज्ञेयम् ॥ ५५ ॥

अन्वयार्थौ–( वर्षाणां शतम् आयुः प्रमाणं तस्य एवं विभागेन दश दशाः नराणां दश क्षेत्राणि तदाश्रितं लक्षणं ज्ञेयम् ) सौ वर्षकी आयुका प्रमाण है तिसीमें दस भाग करके मनुष्योंकी दश दशा जानना, तिसके दश क्षेत्र हैं तिसीके आसरेसे लक्षण जानना चाहिए ॥ ५५ ॥

आद्यं सगुल्फपादौ सजानु जंघाद्वयं द्वितीयं स्यात् ।
ऊरू गुह्यं मुष्कद्वितयं क्षेत्रं तृतीयमिदम् ॥ ५६ ॥

अन्वयार्थौ–( सगुल्फपादौ आद्यं सजानु जंघाद्वयं द्वितीयं स्यात् ऊरू गुह्यं मुष्कद्वितयम् इदं तृतीयं क्षेत्रम् ) टकने सहित पांव पहला क्षेत्र है और जानुसहित दोनों जंघा दूसरा क्षेत्र है और ऊरू गुह्य मुष्क यह तीसरा क्षेत्र है ॥ ५६ ॥

नाभिः कटिश्चतुर्थं पंचममपि जायते पुनर्जठरम् ।
षष्ठं स्तनान्वितोरः सप्तममंसौ सजत्रुयुगौ ॥ ५७ ॥



अन्वयार्थौ–( नाभिः कटिश्चतुर्थं क्षेत्रम् पुनः जठरं क्षेत्रम् अपि पंचमं जायते स्तनान्वितम् उरः षष्ठं क्षेत्रम् सजत्रुयुगौ अंसौ सप्तमं क्षेत्रम् ) नाभिसे कटितक चौथा क्षेत्र है, फिर उदर पाँचवाँ क्षेत्र है, कुचोंसे छातीतक छठा क्षेत्र है, दोनों हँसली सहित कंधे सातवाँ क्षेत्र है ॥ ५७ ॥

ओष्ठौ ग्रीवाष्टममिह नवमं स्याद्भ्रूयुगं नयनयुगलम् ।
सललाटमुत्तमांगं दशमं लक्षणविदः प्राहुः ॥ ५८ ॥

अन्वयार्थौ–( ओष्ठौ ग्रीवा अष्टमं क्षेत्रम् ) होठ और गर्दन आठवाँ क्षेत्र है ( भ्रूयुगं नयनयुगलम् इह नवमं क्षेत्रं स्यात् ) दोनों भौंह और दोनों नेत्र नवाँ क्षेत्र है और ( लक्षणविदः सललाटम् उत्तमांगं दशमं क्षेत्रं प्राहुः ) लक्षणके जाननेवाले ललाट सहित शिरको दशवां क्षेत्र कहते हैं ॥ ५८ ॥

क्षेत्रवशाज्जायन्ते मनुजानां जगति दश दशाः क्रमशः ॥
क्षेत्रेष्वशुभेष्वशुभा दशाः शुभेषु च शुभाः प्रायः ॥ ५९ ॥

अन्वयार्थौ–( मनुजानां क्षेत्रवशात् जगति दश दशाः क्रमशः जायन्ते ) मनुष्योंके क्षेत्रके वशसे जगत्में १० दशा क्रमसे होती हैं और ( क्षेत्रेषु अशुभेषु अशुभाः दशा भवंति ) जो क्षेत्र अशुभ हैं वह दशाभी अशुभ होती हैं और ( क्षेत्रेषु च पुनः शुभेषु शुभाः प्रायः दशाः भवन्ति ) जो क्षेत्र शुभ हैं वह बहुधा दशाभी शुभ होती हैं ॥ ५९ ॥

बाल्यं वृद्धिरथ बलं धीत्वचाशुक्रविक्रमाः पुंसाम् ।
दशकेन निवर्त्तन्ते चेतः कर्मेंद्रियाणि तथा ॥ ६० ॥

अन्वयार्थौ–( बाल्यं वृद्धिः अथ बलं धीत्वचाशुक्रविक्रमाः तथा चेतः कर्मेंद्रियाणि पुंसां दशकेन निवर्तन्ते ) बाल्यावस्था १ और बृद्धि बढवारी २ और बल ३ बुद्धि ४ त्वचा ५ वीर्य ६ पराक्रम ७ चित्त ८ कर्म ९ इंद्रिय १० पुरुषोंकी १० दशा ही करके बरते हैं ॥ ६० ॥

## अथ प्रकृतिकथनम् ।

क्षितिजलशिखिपवनांबरसुरनररक्षःपिशाचतिर्यग्भिः ।
तुल्या प्रकृतिः पुंसां क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ॥ ६१ ॥

अन्वयार्थौ-( पुंसां क्षितिजलशिखिपवनांबरसुरवररक्षःपिशाचतिर्यग्भिः तुल्या प्रकृतिः क्रमेण तल्लक्षणं वयं ब्रूमः ) पुरुषोंके पृथ्वी १ जल २ अग्नि ३ पवन ४ आकाश ५ देवता ६ मनुष्य ७ राक्षस ८ प्रेत ९ चतुष्पद १० इनकेसे स्वभाव क्रम करके जो होयँ, तिनके लक्षण हम कहते हैं ॥ ६१ ॥

सुरभिः प्रसूनगन्धः सुखवान् भोगी स्थिरः क्षितिप्रकृतिः ।
प्रियवाग्घनाम्बुपायी नीरप्रकृतिर्नरो रसभुक् ॥ ६२ ॥

अन्वयार्थौ-( सुरभिः प्रसूनगंधः सुखवान् भोगी स्थिरः क्षितिप्रकृतिः भवति ) चन्दन और फूलोंकीसी गन्धवाला-सुखवाला-भोगनेवाला-स्थिरवाला जिसमें ये लक्षण पायेजाँय उसकी पृथ्वीकीसी प्रकृति होती है और ( प्रियवाक् घनाम्बुपायी रसभुक् नीरप्रकृतिः नरो भवति ) मीठी बोली बहुत जलका पीनेवाला रसोंका खानेवाला ऐसे मनुष्यकी जलकीसी प्रकृति होती है ॥ ६२ ॥

चपलः खण्डस्तीक्ष्णः क्षुद्वान् वनभोजनः शिखिप्रकृतिः ।
चटुलः क्षामः क्षिप्रः सकोपनः स्यान्मरुत्प्रकृतिः ॥ ६३ ॥

अन्वयार्थौ-( चपलः खंडः तीक्ष्णः क्षुद्वान् घनभोजनः शिखिप्रकृतिः भवति)चंचल मीठा-तेजबहुत-भूँखा-बहुत भोजन करनेवाला इनकी अग्निकीसी प्रकृति होती है और ( चटुलः क्षामः क्षिप्रःसकोपनः मरुत्प्रकृतिर्भवति ) चलायमान दुर्बल शीघ्र क्रोधसहित ये पवनप्रकृतिके होते हैं ॥ ६३ ॥

विद्वान् सुस्वरकुशलो विवृताक्षः शिक्षितोऽम्बरप्रकृतिः ।
त्यागरतिः सस्नेहः सुरस्वभावेन पृथुकोपः ॥ ६४ ॥

अन्वयार्थौ-( विद्वान् सुस्वरः कुशलः विवृताक्षः शिक्षितः अंबरप्रकृतिः भवति ) पंडित होय, अच्छी वाणी-कुशल, खुली आँखें, पढाहुआ जिसने



शिक्षा पाई, ये आकाशप्रकृतिवाले होते हैं ( सुरस्वभावेन त्यागरतिः सस्नेहः पृथुकोपः भवति ) देवताकीसी प्रकृतिवाला दानरति, प्रीतिसहित, बहुत क्रोध करनेवाला होता है ॥ ६४ ॥

भूषणगीतप्रवणो नरस्वभावेन संविभागी स्यात् ।
दुर्जनचेष्टः पापो रक्षःप्रकृतिः खरक्रोधः ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ-(नरस्वभावेन भूषणगीतप्रवणः संविभागी स्यात् ) मनुष्यकीसी प्रकृतिवाला भूषण पहरनेवाला, गानेमें कुशल, विभाग करनेवाला होता है और ( रक्षःप्रकृतिः नरः दुर्जनचेष्टः पापः खरक्रोधः स्यात् ) राक्षस प्रकृतिवाला मनुष्य खोटी चेष्टावाला, पाप करनेवाला, बडा क्रोध करनेवाला होता है ॥ ६५ ॥

भवति पिशाचप्रकृतिः स्थूलो मलिनश्चलः प्रलापी च ।
क्षुद्रानुगतस्तिर्यक्प्रकृतिर्बहुभुग्भवेन्मनुजः ॥ ६६ ॥

अन्वयार्थौ-( पिशाचप्रकृतिः स्थूलः मलिनः चलः च पुनः प्रलापी भवति ) प्रेतकी प्रकृतिवाला मोटा, मलीन, चलायमान और बकवादी होता है और (तिर्यक्प्रकृतिः क्षुद्रानुगतः बहुभुक् मनुजः भवेत् ) चैपायोंकीसी प्रकृतिवाला नीचोंकी संगतिवाला, बहुत खानेवाला पुरुष होता है ॥ ६६ ॥

इति दशविधा नराणां निर्दिष्टाः प्रकृतयो यथा दृष्टाः ।
किञ्चिन्मिश्रकलक्षणमधुना वक्ष्याम्यतो लोके ॥ ६७ ॥

अन्वयार्थौ-( नराणाम् इति दशविधाः प्रकृतयः यथा दृष्टा निर्दिष्टाः ) मनुष्योंकी यह १० प्रकारकी प्रकृति जैसी देखनेमें आई तैसी कही और ( अतःपरं लोके किंचित् मिश्रकलक्षणम् अधुना वक्ष्यामि ) इससे आगे लोकमें कुछ मिश्रक लक्षण अब कहूँगा ॥ ६७॥

## अथ मिश्रकलक्षणम् ।

विभवसमृद्धिपरत्वं व्यंजनलाभः प्रभुत्वमव्याजम् ।
वयसि भवन्ति प्रथमे प्रायः स्वल्पायुषां पुंसाम् ॥ ६८ ॥

अन्वयार्थौ–( स्वल्पायुषां पुंसां प्रथमे वयसि प्रायः एतानि भवन्ति ) थोडी आयुवाले पुरुषोंकी पहिली अवस्थामें बहुधा इतने कार्य होते हैं ( विभवसमृद्धिपरत्वं व्यञ्जनलाभः अव्याजं प्रभुत्वम् ) ऐश्वर्यता-ठाटबाटमें तत्पर अनेक प्रकारके भोजनोंका लाभ छलरहित मालिकपन होता है ॥ ६८ ॥

स्वङ्गानि धीपटुत्वं शक्तिर्दशनाः शनैर्विशीर्यंते ।
निखिलेन्द्रियाणि येषां चिरायुषस्ते नरा ज्ञेयाः ॥ ६९ ॥

अन्वयार्थौ–( येषाम् अंगानि सुन्दराणि धीपटुत्वं शक्तिः दशनाः शनैर्विशीर्यन्ते निखिलेन्द्रियाणि पूर्णानि ते मनुजाः चिरायुषो ज्ञेयाः ) जिनके अंग तो सुन्दर और बुद्धिकी चतुरता पराक्रम, दांत धीरे धीरे उखड जायँ सम्पूर्ण इंद्रिय पूरी होयँ वे मनुष्य बडी आयुवाले होते हैं ॥ ६९ ॥

शुभलक्षणमङ्गेभ्यः सौन्दर्येणाधिकं मुखं यस्य ।
स्वज्ञातिप्राधान्यं प्राप्नोति स धान्यधनवत्त्वम् ॥ ७० ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य अंगेभ्यः शुभलक्षणं सौंदर्येण अधिकं मुखं स्वज्ञातिप्राधान्यं सः पुरुषः धान्यधनवत्त्वं प्राप्नोति ) जिसके अंग शुभलक्षणयुक्त होंय और सुन्दरताके योग्य अधिक मुख होय अपनी जातिमें प्रधान होय सो पुरुष धनधान्यवान् होता है उसीको धन धान्य मिलता है ॥ ७० ॥

अतिकृष्णेष्वतिगौरेष्वतिपीनेष्वतिकृशेषु मनुजेषु ।
अतिदीर्घेष्वतिलघुषु प्रायेण न विद्यते सत्यम् ॥ ७१ ॥

अन्वयार्थौ–( अतिकृष्णेषु अतिगौरेषु अतिपीनेषु अतिकृशेषु अतिदीर्घेषु अतिलघुषु मनुजेषु प्रायेण सत्यं न विद्यते ) बहुत काले, बहुत गोरे, बहुत मोठे, बहुत दुबले, बहुत लंबे, बहुत छोटे ऐसे मनुष्य बहुधा सचे नहीं होते हैं ॥ ७१ ॥

चपलः स्थूलो रूक्षः पुरुषो घनमांसलः शिरोविचितः ।
स पुमान्वैतरणाख्यस्समुद्रमपि शोषयत्यखिलम् ॥ ७२ ॥

अन्वयार्थौ–( यः पुरुषः चपलः स्थूलः रूक्षः घनमांसलः शिरोविचितः सः पुमान् वैतरणाख्यः अखिलं समुद्रमपि शोषयति ) जो पुरुष चंचल, मोटा, रूखा, बहुत मांसवाला, दृढशिरका है वह वैतरण कहाता है सो सब समुद्रको भी सोखनेवाला होता है ॥ ७२ ॥



यस्य शरीरं पुष्टिं गृह्णात्यन्नेन येनकेनापि ।
स नरो दुंदुबकाख्यः कलयति कल्याणवैराग्यम् ॥ ७३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य शरीरं येनकेनापि अन्नेन पुष्टिम् गृह्णाति स नरः दुंदुबकाख्यः कल्याणवैराग्यं कलयति ) जिसका शरीर जिस किसी अन्न करके मोटापनको पकडे सो वह पुरुष दुंदुबक नामवाला है कल्याण और वैराग्यको करता है ॥ ७३ ॥

सत्त्वं रजस्तमश्चेत्यमी नराणां त्रयो भवन्ति गुणाः ।
क्वचिदेकः कुत्र द्वौ त्रयः समं क्वापि दृश्यन्ते ॥ ७४ ॥

अन्वयार्थौ–( सत्त्वं रजः तमः इति अमी नराणां त्रयो गुणाः भवंति ) सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण ये पुरुषोंके तीन गुण होते हैं और ( क्वचित् एकः कुत्र द्वौ त्रयः समं क्वापि दृश्यन्ते ) कहीं एक, कहीं दो और कहीं तीनों बराबर दीख पडते हैं ॥ ७४ ॥

यः सत्त्वगुणोपेतः स दयालुः सत्यवाक् स्थिरः सरलः ।
देवगुरुभक्तियुक्तो व्यसनेऽभ्युदये च कृतधैर्य्यः ॥ ७५ ॥

अन्वयार्थौ–( यः सत्त्वगुणोपेतः स दयालुः सत्यवाक् स्थिरः सरलः देवगुरुभक्तियुक्तः व्यसने अभ्युदये च कृतधैर्यो भवति ) जो सत्त्वगुणवाला पुरुष है दयावान् और सत्य बोलनेवाला स्थिरतायुक्त सीधा देवता और गुरुकी भक्तिवाला, दुःख और आनन्दमें धीरज धरनेवाला होता है ॥ ७५ ॥

काव्यकलासु प्रवणः कुलनारीकृतरतिस्सदा शूरः ।
प्रायेणैवं सततं रजोऽधिकः कथ्यते स पुमान् ॥ ७६ ॥

अन्वयार्थौ–( काव्यकलासु प्रवणः सदा कुलनारीकृतरतिःशूरःस पुमान् सततं रजोऽधिकः कथ्यते, प्रायेण एवं भवति ) जो काव्य बनानेमें चतुर

और कुलकी स्त्रीसे सदा रति करनेवाला, शूरवीर होता है बहुधा सो निरन्तर रजोगुणी कहाता है ॥ ७६ ॥

मूर्खस्तमोऽन्वितः स्यान्निद्रां कुर्वंश्च सालसः क्रोधी ।
एतैर्मिश्रैर्बहुशो भेदाश्चान्यैर्नृणां मिश्राः ॥ ७७ ॥

अन्वयार्थौ–( तमोऽन्वितः पुरुषः मूर्खः निद्रां कुर्वन् सालसः क्रोधी स्यात् ) तमोगुणयुक्त पुरुष मूर्ख और निद्रा करनेवाला और आलसी तथा क्रोधी होता है और ( नृणाम् एतैर्मिश्रैः बहुशः अन्येऽपि मिश्राः भेदा भवन्ति ) पुरुषोंके यही मिले हुए बहुधा और अनेक भेद होते हैं ॥ ७७ ॥

प्रायो रजोगुणः स्यात्प्रातोत्कर्पस्तमोगुणः कोपः ।
पुंसां विशेषतः पुनराख्यास्यामो ह्यग्रतः सत्त्वम् ॥ ७८ ॥

अन्वयार्थौ–( तमोगुणः प्रातोत्कर्षः रजोगुणः प्रायः कोपः स्यात् ) तमोगुणकी है अधिकता जिसमें ऐसा रजोगुण बहुधा कोपको प्राप्त होता है और ( पुंसां सत्त्वम् अग्रतः विशेषतः पुनराख्यास्यामः ) पुरुषोंके सत्त्वगुण आगे विशेषरूपसे कहेंगे ॥ ७८ ॥

देहस्थितेषु संततमशुभेषु शुभेषु लक्षणेषु नृणाम् ।
ज्ञात्वाऽनवरतभावं तत्फलमपि निर्दिशेत्प्राज्ञः ॥ ७९ ॥

अन्वयार्थौ–( नृणां देहस्थितेषु अशुभेषु वा शुभेषु लक्षणेषु संततम् अनवरतभावं ज्ञात्वा प्राज्ञः तत्फलम् अपि निर्दिशेत् ) मनुष्योंके देहमें स्थित जो है अशुभ वा शुभ लक्षण इनमेंसे निरंतर भाव जान कर पंडित उसका फल कहते हैं ॥ ७९ ॥

बुद्धियुतो यो दीर्घो ह्रस्वो यो जायते नरो मूर्खः ।
पिङ्गः शुचिः सुशीलः कालाक्षो यस्तदाश्चर्यम् ॥ ८० ॥

अन्वयार्थौ–( यः दीर्घः बुद्धियुतो भवति ) जो लंबा है सो बुद्धियुक्त होता है और ( यः ह्रस्वः नरः स मूर्खो जायते ) जो छोटा पुरुष है सो मूर्ख होता है और ( यः पिङ्गः कालाक्षः शुचिः सुशीलः तत् आश्चर्यम् ) जो पीली वा कालीआँखोंवाला पवित्र और शीलवान् होता है यह बडे आश्चर्यकी बात है ॥ ८० ॥



यद्दन्तुरोऽपि मूर्खो रोमयुतो जायते यदल्पायुः ।
यन्निष्ठुरः स दीर्घस्तदद्भुतं जृम्भते भुवने ॥ ८१ ॥

अन्वयार्थौ–( यत् दन्तुरः अपि मूर्खः ) जिसके बडे दाँत हैं वह मूर्ख होय और ( रोमयुतः यत् अल्पायुः जायते ) रोम युक्त है उसकी थोडी आयु होय और ( यत् दीर्घः स निष्ठुरः ) जो लंबा है सो निर्दय होय ( भुवने तत् अद्भुतं जृंभते ) जगत्में यह बडे अचरजकी बात है अर्थात् बडे दांतवाला तौ विद्यावान् होना चाहिये और रोमवाला बडी आयु-वाला होना चाहिये और जो लंबा है उसे दयावान् होना चाहिये और इससे विपरीत होय तो आश्चर्य करना चाहिये ॥ ८१ ॥

न च दुर्भगः सुनेत्रः सुग्रीवो भारवाहको न स्यात् ।
रूक्षो नास्ति सुभोगी परुषत्वङ् नास्ति सुखसहितः ॥ ८२ ॥

अन्वयार्थौ–( सुनेत्रः दुर्भगो न स्यात् ) सुन्दर नेत्रवाला कुरूप नहीं होता है और ( सुग्रीवः भारवाहकः न स्यात् ) सुन्दर गर्दनवाला बोझ ढोनेवाला नहीं होता है और ( रूक्षः सुभोगी नास्ति ) जो रूखा है सो सुन्दर भोगवाला नहीं होता है और ( परुषत्वक् सुखसहितो नास्ति ) कठोर त्वचावाला सुख पानेवाला नहीं होता ॥ ८२ ॥

पृथुपाणिः पृथुपादः पृथुकर्णः पृथुशिराः पृथुस्कन्धः ।
पृथुवक्षाः पृथुजठरः पृथुभालः पूजितः पुरुषः ॥ ८३ ॥

अन्वयार्थौ–( अस्मिन् श्लोके क्रमान्वयः ) बडे हाथ, बडे पांव, बडे कान, बडा मस्तक, बडे कंधे, बडी छाती, बडा पेट, बडा ललाटवाले से पुरुष पूजित अर्थात् पूजनेयोग्य होते हैं ॥ ८३ ॥

रक्ताक्षं भजति श्रीः प्रलम्बबाहुं भजत्यधीशत्वम् ।
पीनाङ्गं भजति कृषिर्मांसोपचितं च सौभाग्यम् ॥ ८४ ॥

अन्वयार्थौ-(रक्ताक्षं श्रीः भजति) लाल नेत्रवालेको श्री सेवन करती है और (अधीशत्वं प्रलंबबाहुं भजति) मालिकपना लंबी बाहूबालेको भजता है और (कृषिः पीनाङ्गं भजति) खेती मोटे शरीरवालेको भजतीहै और (सौभाग्यं मांसोपचितं भजति) अच्छा भाग्य मांसल पुरुषको भजै है ॥ ८४ ॥

सुश्लिष्टसंधिबन्धो यः कश्चिन्मांसलो मृदुः स्निग्धः ।
अतिसुन्दरः प्रकृत्या स सुखाढ्यो जायते प्रायः ॥ ८५ ॥

अन्वयार्थौ-( यः कश्चित् सुश्लिष्टसंधिबंधः मांसलः मृदुः स्निग्धः प्रकृत्या अतिसुन्दरः प्रायः सुखाढ्यो जायते ) जिस किसी पुरुषके अच्छे मिले हुए जोड मांससे भरे, कोमल, चिकने, रूप जिसका सुन्दर हो वह बहुधा सुखी होता है ॥ ८५ ॥

स्निग्धतिलो मशकं वा चिह्नं वा भवति किमपि चान्यच्चेत् ।
पुंसां दक्षिणभागे तच्छुभमित्याह भोजनृपः ॥ ८६ ॥

अन्वयार्थौ-( स्निग्धतिलः मशकं वा किमपि अन्यत् चिह्नं पुंसां दक्षिणभागे भवति चेत् ) अच्छा तिल मस्सा वा कोई और चिह्न पुरुषके दाहिने भागमें होय तो ( तत् शुभम् इति भोजनृपः आह ) वह शुभ है यह राजा भोजने कहा है ॥ ८६ ॥

नखशङ्खकेशरोम्णि जिह्वायां लोचनास्यरदने च ।
नास्ति स्नेहो येषामकारणं सत्त्वमिह तेषाम् ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां नखशंखकेशरोम्णि जिह्वायां लोचनास्यरदने च स्नेहः नास्ति ) जिसके नख शंख अर्थात् कनपटी बाल रोंगटे-जीभ-नेत्र-मुख दांत इनमें सचिक्कणता नहीं होय तो ( इह तेषाम् अकारणं सत्त्वम् ) इस लोकमें तिनके विना कारणका पराक्रम होता है ॥ ८७ ॥



इह भवति सप्तरक्तः षडुन्नतः पञ्चसूक्ष्मदीर्घो यः ।
त्रिविपुललघुगंभीरो द्वात्रिंशल्लक्षणः स पुमान् ॥ ८८ ॥

अन्वयार्थौ-( इह यः सप्तरक्तः षडुन्नतः पंचसूक्ष्मः पञ्चदीर्घः त्रिविपुल-लघुगंभीरः स पुमान् द्वात्रिंशल्लक्षणो भवति ) इस लोकमें ७ तो लाल, ६ ऊँचे, ५ पतले, ५ लंबे, ३ चौडे, ३ छोटे, ३ गहरे सो पुरुष ३२ लक्षणोंका होता है ॥ ८८ ॥

नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनान्तेषु ।
स्याद्यो रक्तः सप्तसु सप्ताङ्गां स लभते लक्ष्मीम् ॥ ८९ ॥

अन्वयार्थौ-( यः नखचरणपाणिरसनादशनच्छदतालुलोचनान्तेषु सप्तसु रक्तः स्यात् स सप्ताङ्गां लक्ष्मीं लभते ) जो नख-चरण-हाथ-जीभ-होठ, तालु-नेत्रोंके अंत इन सात अंगोंमें ललाई होय तो वह सात अंग-युक्त लक्ष्मीको प्राप्त होता है ॥ ८९ ॥

षट्कं कक्षावक्षःकृकाटिकानासिकानखास्यमिति ।
यस्येदमुन्नतं स्यादुन्नतयस्तस्य जायन्ते ॥ ९० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य इदं षट्कम् कक्षा वक्षः कृकाटिका नासिका नखाः आस्यम् इति उन्नतं भवति तस्य उन्नतयः जायन्ते ) जिस पुरुषकी बगल, छाती, गर्दनकी घेंटी, नाक, नख, मुख ये ६ अंग ऊंचे होंय तिसको उच्चपद अर्थात् बढवारी प्राप्त होती है ॥ ९० ॥

दन्तत्वक्केशाङ्गुलिपर्वनखं चेति पञ्च सूक्ष्माणि ।
धनलक्षणैरुपेता भवन्ति ते प्रायशः पुरुषाः ॥ ९१ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां पुरुषाणां दंतत्वक्केशांगुलिपर्वनखाः एतानि पंच सूक्ष्माणि ते पुरुषाः प्रायशः धनलक्षणैः उपेताः भवन्ति ) जिन पुरुषोंके दाँत-त्वचा-बाल-अंगुलियोंके पोरुवे और नख ये पाँच पतले होंय तो वे पुरुष बहुधा धनलक्षणयुक्त होते हैं अर्थात् धनवान् होते हैं ॥ ९१ ॥

नयने कुचौ च रसनाहनुभुजमिति यस्य पञ्चकं दीर्घम् ।
दीर्घायुर्वित्तकरः पराक्रमी जायते स नरः ॥ ९२ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य इति पंचकं दीर्घं नयने कुचौ रसना हनु भुजौ स नरः पराक्रमी वित्तकरः दीर्घायुर्जायते ) जिसके ये पाँच अंग बडे होंय नेत्र चूची जीभ कपोलोंके हाड और भुजा सो मनुष्य बलवान् धनवान् बडी आयुवाला होता है ॥९२ ॥

भालमुरो वदनमिति त्रितयं भूमीश्वरस्य विपुलं स्यात् ।
ग्रीवा जङ्घा मेहनमिति त्रिकं लघु महीशस्य ॥ ९३ ॥

अन्वयार्थौ-( भूमीश्वरस्य एतत्त्रितयं भालम् उरः वदनम् इति विपुलं स्यात् ) राजाके ये तीन ललाट १ छाती २ मुख ३ चौडे होते हैं और ( महीशस्य एतत् त्रयं ग्रीवा जंघा मेहनम् इति लघु स्यात् ) राजाकी ये तीन गर्दन जाँघ इंद्री आदि छोटी होती हैं ॥ ९३ ॥

यस्य स्वरोऽथ नाभिः सत्त्वमिदं च त्रयं गभीरं स्यात् ।
सप्तांबुधिकांच्या हि भूमेः स करग्रहं कुरुते ॥ ९४ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य स्वरः अथ नाभिः सत्त्वम् इदं त्रयं गभीरं स्यात् ) जिसका शब्द टूंडी पराक्रम ये तीन गहरे होंय तो ( स सप्ताम्बुधिकांच्याः भूमेः करग्रहं कुरुते ) सो ७ समुद्र हैं कांची क्षुद्रघंटिका अर्थात् कटिबंधिनी जिसके ऐसी पृथ्वीको व्याहता है अर्थात् पृथ्वीका मालिक होता है ॥ ९४ ॥

स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः शशो वृषो हय इति त्रयो भेदाः ॥
जायन्ते मनुजानां क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ॥ ९५ ॥

अन्वयार्थौ-( स्मरशास्त्रविनिर्दिष्टाः मनुजानां शशः वृषः हय इति त्रयो भेदाः जायन्ते ) कामशास्त्रके कहे हुए मनुष्योंके खरगोश, बैल, घोडा ये तीन भेद होते हैं और ( क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ) उनके क्रमसे लक्षण हम कहते हैं ॥ ९५ ॥

लिङ्गं षडङ्गुलानि स्यादष्टौ वा शशः स्फुटं स पुमान् ।
नव दश चैकादश वा तदपि पुनर्यस्य स वृषाख्यः ॥ ९६ ॥



अन्वयार्थौ-( यस्य लिंगं षट् वा अष्टौ अंगुलानि सः पुमान् स्फुटं शशः स्यात् ) जिसका लिंग ६ वा ८ अंगुलका प्रगट होय वह खरगोशकी संज्ञाका पुरुष होता है और ( यस्य नव वा एकादश अंगुलानि तदपि लिंगं स पुरुषः वृषाख्यः स्यात् ) जिसका ९-१०-११ अंगुलका लिंग होय तो पुरुष बैलकी संज्ञाका होता है ॥ ९६ ॥

द्वादश वा लिङ्गं स्यात्त्रयोदशादीनि चांगुलानि भवेत् ।
जातोद्भवस्य मानं हयाख्यया निगदितः सोऽपि ॥ ९७ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य जातोद्भवस्य लिंगं द्वादश वा त्रयोदशादीनि अंगुलानि मानं स्यात् ) जिस पुरुषका आदि समयसे ही लेकरके लिंग १२-१३ आदि अंगुलके प्रमाणका होय ( सः अपि हयाख्यया निगदितः ) उसको भी घोडेकी संज्ञाका कहा है ॥ ९७ ॥

रतिषु शशवृषहयानां सह भृत्यादिभिरकृत्रिमा प्रीतिः ।
मेहनवराङ्गयोश्चेत्परस्परेण प्रमाणैक्यम् ॥ ९८ ॥

अन्वयार्थौ-( शशवृषहयानां रतिषु मेहनवराङ्गयोः प्रमाणैक्यं चेत् ) खरगोश बैल घोडा पुरुषोंकी रतिमें इंद्री और योनिके एक समान प्रमाण होवे तो ( भृत्यादिभिः सह परस्परेण अकृत्रिमा प्रीतिर्भवति ) सेवक आदिके साथ अकृत्रिम प्रीति होती है ॥ ९८ ॥

अन्नं क्षुधि पानं तृषि पथिश्रमे वाहनं भवेद्रक्षा ।
इति भवति यस्य समये धन्यं प्रवदंति तं सन्तः ॥९९॥

अन्वयार्थौ-( यस्य क्षुधि समये अन्नं तृषि पानं पथिश्रमे वाहनं भवेत् ) जिसको भूखके समयमें तो अन्न और प्यासमें जल और थकावटमें सवारी होय तो ( इति रक्षा भवेत् ) ये बडी रक्षा होती है और ( सन्तः तं पुरुषं धन्यं प्रवदंति ) पंडित उस पुरुषको धन्य कहते हैं ॥ ९९ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकाऽपरनाम्नि श्रीनरलक्षणशास्त्रे शरीराधिकारो द्वितीयः ॥ २ ॥

अङ्गप्रत्यङ्गयुतं सकलं शारीरमिदमिति प्रोक्तम् ।
आवर्तप्रभृतीनामनुक्रमाल्लक्षणं ब्रूमः ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ–( इति अंगप्रत्यंगयुतं सकलम् इदं शरीरं प्रोक्तम् आवर्त्त-प्रभृतीनां लक्षणं ब्रूमः ) अब क्रमसे चक्र वा भौंरी आदिके लक्षण हम कहते हैं ॥ १ ॥

रोमत्वग्वालभवः स्यादावर्तः शुभस्त्रिधा वपुषि ।
शस्तो दक्षिणवलितः स्निग्धो व्यक्तः परो न शुभः ॥२॥

अन्वयार्थौ–(वपुषि रोमत्वग्वालभवः आवर्तः त्रिधा स्यात्) शरीरमें रोंगटे त्वचा बाल इनसे उत्पन्न हुई भौंरी तीन प्रकारकी होती है और ( दक्षिणा-वलितः स्निग्धः व्यक्तः शस्तः परो न शुभः ) जो दाहिनी ओरकी चिकनी अच्छी प्रकट होय तो शुभ है और जो बाईं ओर होय तो अशुभ है ॥ २ ॥

करतलपदश्रुतियुग्मे नाभौ वा त्वग्भवो य आवर्तः ।
स स्यादपरौ द्वावपि विद्भिर्ज्ञेयौ यथास्थानम् ॥ ३ ॥

अन्वयार्थौ)– करतलपदश्रुतियुग्मे वा नाभौ यः त्वग्भवः सः आवर्तः स्यात् ) मनुष्योंके दोनों हाथ, दोनों पाँव, दोनों कान और टूँडीमें जो है वह त्वचासे उत्पन्न भौंरी होती है और ( अपरौ द्वौ अपि विद्भिः यथास्थानं ज्ञेयौ ) जो और भी दो हैं उनके भी लक्षण विद्वानोंको यथास्थान जैसी जगह है वैसे जानने चाहिये ॥ ३ ॥

सव्यापसव्यभागे शिरसि स्याद्यस्य दक्षिणावर्तः ।
श्वेतातपत्रलक्ष्मा लक्ष्मीः करवर्तिनी तस्य ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य शिरसि सव्यापसव्यभागे दक्षिणावर्तः स्यात् ) जिसके मस्तकमें वा दहिने विभागमें जो दक्षिणावर्त चक्र वा भौंरी होय ( तस्य श्वेतातपत्रलक्ष्मा लक्ष्मीः करवर्तिनी भवति ) तिसके उज्ज्वल छत्रकी शोभायुक्त लक्ष्मी हाथमें आती है ॥ ४ ॥



रोमावर्तः स्निग्धो भ्रूयुगमध्ये प्रदक्षिणो व्यक्तः ।
यस्योर्णाख्यः पूर्णः सोऽम्बुधिकाञ्चेर्भुवो भर्ता ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ–(यस्य भ्रूयुगमध्ये व्यक्तः प्रदक्षिणः स्निग्धः रोमावर्तः पूर्णः ऊर्णाख्यः स्यात् ) जिस पुरुषकी दोनों भौंहके बीचमें प्रगट दाहिनी ओर झुकी हुई अच्छी भौंरी वा चक्र पूरा ऊर्णा नामका होय ( सः अम्बुधि-काञ्चेर्भुवः भर्ता भवति ) सो पुरुष समुद्र है कांची ( कटिबन्धिनी ) जिसकी ऐसी पृथ्वीका स्वामी अर्थात् संपूर्ण पृथ्वीका पालनेवाला होता है ॥ ५॥

भुजयुग्मे यस्य स्यादावर्तद्वितयमङ्गदप्रतिमम् ।
नियतं सोऽखिलभूमिं पुरुषो निजवाहनां वहति ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य भुजयुग्मे अंगदप्रतिमम् आवर्तद्वितयं स्यात् ) जिसकी दोनों भुजाओंके बीचमें बाजूकासा दो चक्र चिह्न वा भौंरी होंय तो ( सः पुरुषः नियतम् अखिलभूमिं निजवाहनां वहति ) सो पुरुष निश्चय करिके संपूर्ण पृथ्वीको अपनी भुजाओंसे धारण करे ॥ ६ ॥

यस्य कराम्भोजतले दक्षिणवलितो भवेदतिव्यक्तः ।
परिचितशौचाचारो धर्मपरः स्यात्स वित्ताढ्यः ॥ ७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्यः कराम्भोजतले दक्षिणवलितः अतिव्यक्तः भवेत् ) जिसके करकमल अर्थात् हथेलीमें दाहिनी ओर चिह्न वा सांथिया बहुत प्रकट होय तो ( सः परिचितशौचाचारः धर्मपरः वित्ताढ्यः स्यात् ) सो पुरुष जाना है पवित्रताका आचार जिसने ऐसा धर्ममें तत्पर और धनवान् होय ॥ ७ ॥

भाग्यवतां पंचांगुलिशिरस्सु सौख्याय दक्षिणावर्तः ।
प्रायः पुंसां वामावर्तो दुःखाय पुनरेषः ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ–( भाग्यवतां पुंसां पंचांगुलिशिरस्सु दक्षिणावर्तः सौख्याय भवति ) धनवान् पुरुषोंकी पांचों अंगुलियोंके अग्रभागमें दाहिनी ओरको झुकाहुवा चक्र वा चिह्न अर्थात् भौंरी सुखदायक होती है और ( पुनः एषः

वामावर्तः प्रायः दुःखाय भवति ) जो वही बाँई ओरको झुकी हुई भौंरी होय तो बहुधा दुःखदाई होती है ॥ ८ ॥

श्रुतियुगनाभ्यावर्ताः प्रदक्षिणाः श्रेयसे भवंति नृणाम् ।
चूडावर्तोऽप्येकः श्रेष्ठतरो दक्षिणः शिरसि ॥ ९ ॥

अन्वयार्थौ–( नृणां प्रदक्षिणाः श्रुतियुगनाभ्यावर्ताः श्रेयसे भवन्ति ) मनुष्योंके दाहिनी ओर झुके हुए दोनों कान और नाभिके चक्र शुभकारक होते हैं और ( नृणां शिरसि एकः अपि चूडावर्तः दक्षिणः श्रेष्ठतरो भवति ) मनुष्योंके शिरमें एक ही चूडावर्त्त नाम चक्र दाहिनी ओरका बहुत श्रेष्ठ होता है ॥ ९ ॥

शीर्षे वामे भागे वामावर्तो भवेत्स्फुटो यस्य ।
स क्षुत्क्षामो भिक्षां रूक्षां निर्लक्षणो लभते ॥ १० ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य शीर्षे वामे भागे वामावर्तः स्फुटः भवेत् ) जिसके शिरमें बाँई ओरकी चक्र अर्थात् भौंरी प्रकट होय तो ( क्षुत्क्षामः सः निर्लक्षणः रूक्षां भिक्षां लभते ) भूँखका मारा अभागा रूखी भीखको प्राप्त होता है ॥ १० ॥

वामो दक्षिणपार्श्वे प्रदक्षिणो वामपार्श्वके यस्य ।
न तु तस्य चरमकाले भोगो नास्त्यत्र सन्देहः ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य दक्षिणपार्श्वे वामः वामपार्श्वके प्रदक्षिणः भवति तस्य चरमकाले भोगो नास्ति अत्र सन्देहो न तु ) जिसकी दाहिनी ओर तो बाँई होय और बाँई ओर दाहिनी होय तिसको पिछली अवस्थामें भोग नहीं होय इसमें सन्देह नहीं ॥ ११ ॥

अन्तर्ललाटपट्टं व्यक्तावर्त्तो ललामवद्यस्य ।
वामोऽथ दक्षिणो वा स्वल्पायुर्दुःखितश्च स्यात् ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य ललाटपट्टम् अन्तःललामवत् व्यक्तावर्तःवामःअथवा दक्षिणः भवति ) जिसके लिलारके ऊपर प्रकट है भौंरी जिसमें ऐसा रत्नके



समान बाँयाँ अथवा दाहिने चक्र होय तो ( सः स्वल्पायुः दुःखितश्च स्यात् ) वह थोडी आयुवाला और दुःखी होय ॥ १२ ॥

यस्यावर्तद्वितयं सुव्यक्तं भवति पादतलमध्ये ।
नक्तंदिनमतिदीनो भूमिं स भ्रमति मतिहीनः ॥ १३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्य पादतलमध्ये आवर्तद्वितयं सुव्यक्तं भवति ) जिसके पांवके तलुवेमें दो चक्र प्रगट हों तो ( अतिदीनः मतिहीनः स नक्तंदिनं भूमिं भ्रमति ) सो अतिदीन अर्थात् बहुत गरीब मतिहीन मूर्खसा रात-दिन पृथ्वीमें घूमता रहे ॥ १३ ॥

## अथ गतिकथनम् ।

सुखसंचारितपादा मयूरमार्जारसिंहगतितुल्या ।
दीर्घक्रमा सुलीला भाग्यवतां स्याद्गतिः सुभगा ॥ १४ ॥

अन्वयार्थौ–( भाग्यवतां सुखसंचारितपादा मयूरमार्जारसिंहगतितुल्या दीर्घक्रमा सुलीला सुभगा गतिः भवति ) भाग्यवानोंका सुखसे है पैरोंका चलना जिसमें मोर-बिल्ली-सिंह इनकीसी चालके समान लम्बा है डँगका रखना जिसमें अच्छी लीलायुक्त सुन्दर चाल होती है ॥ १४ ॥

गतिभिर्भवन्ति तुल्या ये च नरा द्विरदनकुलहंसानाम् ।
वृषभस्यापि समास्ते सततं धर्मार्थकामपराः ॥ १५ ॥

अन्वयार्थौ–( ये गतिभिः द्विरदनकुलहंसानां वृषभस्यापि समाः भवन्ति ) जो मनुष्य चालसे हाथी-नौला-हंस-बैलकीसी समान होते हैं ( ते नराः सततं धर्मार्थकामपराः भवन्ति ) वे मनुष्य निरन्तर धर्म, अर्थ काममें तत्पर होते हैं ॥ १५ ॥

गोमायुकरभरासभकृकलासशशकभेकमृगैः ।
येषां गतिः समाना ते गतसुखराजसन्मानाः ॥ १६ ॥

अन्वयार्थौ-( येषां मतिः गोमायुकरभरासभककलासशशकभेकमृगैः समाना ते मतसुखराजसन्मानाः भवन्ति ) जिनकी चाल गीदड-ऊंट-गधा-गिरगिट-खरगोश-मेंढक-हिरण इनकी समान होय तो वे गया सुख और राजसन्मान जिनका ऐसे होते हैं ॥ १६ ॥

विषमा विकटा मन्दा लघुक्रमा चञ्चला द्रुता स्तब्धा ।
आभ्यन्तराऽथ बाह्या लग्नपदा वा गतिर्न शुभा ॥१७॥

अन्वयार्थौ-( यस्य विषमा विकटा मंदा लघुक्रमा चंचला द्रुता स्तब्धा आभ्यंतरा अथ बाह्या वा लग्नपदा ईदृशी गतिः शुभा न ) जिसकी ऊंची नीची, भयकारी, धीरजकी, छोटी डग, फुरतीकी, शीघ्र, रुकरुकके भीतर बाहर जिसमें पांव भिडते जायँ ऐसी चाल अशुभ अर्थात् बुरी होती है ॥ १७ ॥

धनिनां गमनं स्तिमितं समाहितं शब्दहीनमस्तब्धम् ।
ह्रस्वप्लुतानुविद्धं विलम्बितं स्याद्दरिद्राणाम् ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौ-( धनिनां गमनं स्तिमितं समाहितं शब्दहीनम् अस्तब्धं स्यात् ) धनवानोंकी चाल अच्छी एकसी-शब्द करिके हीन-रुकावटकी नहीं ऐसी होती है और ( ह्रस्वप्लुतानुविद्धं विलंबितं दरिद्राणां स्यात् ) छोटी छोटी डगयुक्त, धीरे धीरे ऐसी चाल दरिद्रियोंकी होती है ॥ १८ ॥

## अथ छायाकथनम्।

छादयति नरस्याङ्गे लक्षणमत्यन्ततो नरच्छाया ।
सा पार्थिवी तथाऽऽप्या ज्वलनभवा वायवी व्योम्नी ॥१९॥

अन्वयार्थौ-( नरच्छाया नरस्य अंगे लक्षणम् अत्यन्ततः छादयति सा छाया पार्थिवी तथा आप्या ज्वलनभवा वायवी व्योम्नी च भवति ) मनुष्यकी छाया अर्थात् तेज मनुष्यके अंगमें लक्षणको ढक देय सो छाया पृथिवीसे जलसे अग्निसे आकाशसे और पवनसे उत्पन्न हुई होती है ॥ १९ ॥



भवति शुभाशुभफलदा निजतेजस्तन्वती बहिर्देहात् ।
विमलस्फटिकघटान्तर्विलसति सा दीपकलिकेव ॥२०॥

अन्वयार्थौ-( छाया शुभाशुभफलदा भवति ) छाया शुभ और अशुभ फलकी देनेवाली होती है और ( देहात् बहिर्निजतेजस्तन्वती भवति ) देहसे बाहिर वही छाया अपने तेजको फैलाती है और ( सा विमलस्फटिक-घटान्तः दीपककलिका इव विलसति ) कैसे कि निर्मल स्फटिकके घडेमें दीपककी ज्योति जैसे प्रकाशवान् अर्थात् शोभित होती है ॥ २० ॥

स्निग्धद्विजनखलोमत्वक्केशा पार्थिवी स्थिरा रेखा ।
नयनहृदयाभिरामा दत्ते धनधर्मसुखभोगान् ॥२१॥

अन्वयार्थौ-( स्निग्धद्विजनखलोमत्वक्केशा रेखा स्थिरा नयनहृदयाभिरामा एतादृशी पार्थिवी छाया धनधर्मसुखभोगान् दत्ते ) अच्छे दांत, नख,रोम त्वचा, बाल और स्थिर रेखा जिसमें होते हैं और नेत्र-चित्तको सुन्दर ऐसी पार्थिवी छाया धन धर्म और सुख भोग इनको देनेवाली होती है ॥ २१ ॥

आप्याऽभिनवाम्भोदप्रच्छन्नजलसन्निभा छाया ।
सर्वार्थसिद्धिजननी जनयति सौभाग्यमिह पुंसाम् ॥२२॥

अन्वयार्थौ-( अभिनवाम्भोदप्रच्छन्नजलनिभा छाया आप्या ) नवीन जो मेघ जिससे गिरा जो जल-उसकी तुल्य जो छाया है तिसका नाम आप्या है ( सा छाया सर्वार्थसिद्धिजननी ) सो छाया सर्व अर्थकी सिद्धिको उत्पन्न करनेवाली है ( इह पुंसां सौभाग्यं जनयति ) वह इस लोकमें पुरुषको सुभग बनाती है ॥ २२ ॥

ज्वलनप्रभा च बालार्कप्रवालकनकाग्निपद्मरागनिभा ।
पौरुषपराक्रमैः सा जयमर्थं तनुभृतां तनुते ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौ-( या बालार्कप्रवालकनकाग्निपद्मरागनिभा भवति ) जो उदय हुआ सूर्य-मूंगा सोना-अग्नि-रत्न इनकी तुल्य होय ( सा छाया ज्वलन-प्रभा भवति ) सो छाया ज्वलनप्रभा नाम है ( सा ज्वलनप्रभा तनुभृतां

पौरुषपराक्रमैर्जयम् अर्थं तनुते ) वही ज्वलनप्रभा छाया मनुष्योंके पौरुष और पराक्रम करके जय और अर्थको फैलाती है ॥ २३ ॥

रूक्षा मलिना दीना चला खला मारुती भवेच्छाया ।
वधबन्धबन्धनपरा वित्तविनाशं नृणां कुरुते ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौ-( छाया रूक्षा मलिना दीना चला खला सा छाया मारुती भवति ) जो छाया मैली, हीन, चलायमान, बुरी इनकी तुल्य होय सो छाया मारुती नाम है ( सा छाया वधबन्धबन्धनपरा नृणां वित्त-विनाशं कुरुते ) सो छाया मारण और बंधनको करनेवाली और मनुष्योंके धनका नाश करनेवाली है ॥ २४ ॥

स्वच्छा स्फटिकमणिनिभा प्रोद्दामा देहिनामिह व्योम्नी ।
प्रायः श्रेयोनिधिसुखधनसुतसौभाग्यदा पुंसाम् ॥ २५ ॥

अन्वयार्थौ-( पुंसां या छाया स्वच्छा स्फटिकमणिनिभा प्रोद्दामा सा छाया व्योम्नी ) पुरुषोंकी जो छाया निर्मल स्फटिकमाणिनिभा तुल्य अत्यन्त सुंदर ऐसी होय सो व्योम्नी नाम छाया है ( सा छाया इह देहिनां प्रायः श्रेयोनिधिसुखधनसुतसौभाग्यदा भवति ) सो छाया मनुष्योंको बहुधा कल्याण, लक्ष्मी, सुख, धन, पुत्र, सौभाग्य इनके देनेवाली है ॥ २५ ॥

अर्काच्युतेन्द्रयमशशिसदृशाश्छायास्तु लक्षणैश्च फलैः ।
अन्याः पञ्च पुनस्ताः प्रवदंत्यपरे समा नैतत् ॥ २६ ॥

अन्वयार्थौ-( अर्काच्युतेन्द्रयमशशिसदृशाः अन्याः पंच छायाः सन्ति लक्षणैः फलैश्च पुनः अपरे ताः समा इति प्रवदन्ति एतत् न ) सूर्य, विष्णु, इंद्र, यम, चंद्रमा इनकी तुल्य ये और पांच छाया हैं वे लक्षणों और फलों-करिके दूसरे मतवाले इनको समान संपत्तिवाले कहते हैं परंतु यह बात नहीं किन्तु इनके पृथक् पृथक् फल हैं ॥ २६ ॥



## अथ स्वरः ।

स्निग्धः स्वरोऽनुमोदी निर्ह्रादी खण्डितः कलो मन्द्रः ।
तारः स्वरश्च विपुलः पुंसां संपत्करः सततम् ॥ २७ ॥

अन्वयार्थौ---( पुंसां स्निग्धः स्वरः अनुमोदी निर्ह्रादी खंडितः कलः मन्द्रः तारः स्वरः विपुलः सततं संपत्करो भवति ) पुरुषोंकी अच्छी जो बोली है सोई प्रसन्न करती है । सारसकीसी कुछ कही कुछ न कही मीठी अप्रकट मृदंगकीसी बहुत ऊंची बडी ये सब निरन्तर संपत्तिकी करनेवाली हैं ॥ २७ ॥

दुन्दुभिवृषभाम्भोधरमृदंगशिखिशबररथाङ्गैर्भवति ।
यस्य स्वरः समानः स भूपतिर्भवति भोगाढ्यः ॥ २८ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्य स्वरः दुन्दुभिवृषभाम्भोधरमृदंगशिखिशबररथाङ्गैः समानः भवति सः भूपतिः भोगाढ्यो भवति ) जिसकी बोली नगारा, बैल, मेघ, मृदंग, मोर, हिरण, चकवा इनकी तुल्य होय सो राजा और भोगी होता है ॥ २८ ॥

भिन्नः क्षीणः क्षामो विकुष्टो गद्गदस्वरो दीनः ।
रूक्षो जर्जरितोऽपि च निःस्वानां निस्वनः प्रायः ॥ २९ ॥

अन्वयार्थौ-( निःस्वानां स्वरः भिन्नः क्षीणः क्षामः विकुष्टः गद्गदः दीनः रूक्षः जर्जरितः प्रायः निस्वनः भवति ) दरिद्रियोंकी बोली फूटी, टूटी, कुछ कही नकही बहुत धीरेकी दुबले मनुष्यकीसी खैंची हुई बडे जोरसे, रुकरुकके, गरीबीसे रूखीसी, बूढोंकीसी ऐसी बोली बहुधा दरिद्रियोंकी होती है ॥ २९ ॥

यदि वृककाकोलूकप्लवगोष्ट्रक्रोष्टुरासभवराहैः ।
तुल्यः स्वरो न शस्तो विशेषतो हि स्वरो दुष्टः ॥ ३० ॥

अन्वयार्थौ-( यदि स्वरः वृककाकोलूकप्लवगोष्ट्रक्रोष्टुरासभवराहैः तुल्यो भवति स न शस्तः विशेषतः स्वरः दुष्टो भवति ) जिसका स्वर

भेडिया, कौवा, उलूक, बंदर, ऊंट, गीदड, गधा, सूअर इनकीसी तुल्य जो होय तो अच्छा नहीं है और इनसे अधिक स्वरवाला शुभ होता है ॥ ३० ॥

## अथ गन्धः ।

गन्धो भुवि मनुजानां प्रजायते नासिकेन्द्रियग्राह्यः ।
श्वासस्वेदादिभवो ज्ञेयः स शुभाशुभो द्विविधः ॥ ३१ ॥

अन्वयार्थौ-( भुवि मनुजानां नासिकेन्द्रियग्राह्यः गन्धः प्रजायते श्वासस्वेदादिभवः गन्धः स शुभाशुभो द्विविधो ज्ञेयः ) पृथ्वीमें मनुष्योंकी गन्ध नासिका इन्द्रियकरिके लीनी जाय ऐसी जो गन्ध होय सो श्वास और पसीना आदिसे जो उत्पन्न गन्ध सोई गन्ध शुभ और अशुभ दो प्रकारकी जानिये ॥ ३१ ॥

कर्पूरागुरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगन्धाः ।
द्विपमदगन्धा भूमौ पुरुषाः स्युर्भोगिनः प्रायः ॥ ३२ ॥

अन्वयार्थौ-( कर्पूरागुरुमलयजमृगमदजातीतमालदलगंधाः वा द्विपमदगन्धाः भूमौ प्रायः भोगिनः स्युः ) कर्पूर, अगर, चंदन, कस्तूरी, चमेली, तमाल अर्थात् आमनूसके पत्तेकीसी, वा हाथीके मदकीसी गंध जिन मनुष्योंकी पृथ्वीमें होय वे मनुष्य बहुधा भोगी होते हैं ॥ ३२ ॥

मत्स्याण्डपूतिशोणितनिम्बवसाकाकनीडबकगन्धाः ।
दुर्गन्धाश्च नरास्ते दुर्भगतानिःस्वताभाजः ॥ ३३ ॥

अन्वयार्थौ-( मत्स्याण्डपूतिशोणितनिम्बवसाकाकनीडबकगन्धाः ते नराः दुर्गन्धाः प्रायः दुर्भगतानिःस्वताभाजो भवन्ति ) जिनकी गंध मच्छीके अण्डे-सडे-रुधिर-नीम-चरबी-कौवेके अण्डे-बगुले इनके तुल्य होय वे मनुष्य बुरे गंधवाले हैं, बहुधा कुरूप और दरिद्रताके भोगनेवाले होते हैं ॥ ३३ ॥



## अथ वर्णः ।

गौरः श्यामः कृष्णो वर्णः संभवति देहिनां त्रेधा ।
आद्यौ द्वावपि शस्तौ शुभो न कृष्णो न सङ्कीर्णः ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौ-( देहिनां वर्णः त्रेधा संभवति ) मनुष्योंके शरीरका रंग तीन प्रकारका होता है जैसे-( गौरः श्यामः कृष्णः द्वौ अपि आद्यो शस्तौ ) गोरा, सांवरा, काला जो आदिके दोनों हैं सो अच्छे हैं और ( कृष्णः न शुभः वा संकीर्णः शुभो न ) काला अच्छा नहीं है और कुछ काला कुछ गोरा यह भी शुभ नहीं है ॥ ३४ ॥

पङ्कजकिञ्जल्कनिभो गौरः श्यामः प्रियंगुकुसुमसमः ।
कृष्णस्तु कज्जलाभः स्निग्धः शुद्धोऽपि नो शस्तः ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ-( पङ्कजकिंजल्कनिभः गौरः ) कमलके फूलके जीरेके तुल्य तौ गोरा और ( प्रियंगुकुसुमसमः श्यामः ) धायके फूलके तुल्य सांवरा और ( कज्जलाभः कृष्णः ) काजलके तुल्य है जो काला है और ( स्निग्धः शुद्धः अपि कृष्णः नो शस्तः ) चिकना चमकना जो काला है सो अच्छा नहीं है ॥ ३५ ॥

## अथ सत्त्वम् ।

व्यसने वाभ्युदये वा गतशङ्काशोकमुकुलितोत्साहम् ।
उन्मीलनधीरत्वं गंभीरमिह कीर्त्यते सत्त्वम् ॥ ३६ ॥

अन्वयार्थौ-( व्यसने वा अभ्युदये वा गतशंकाशोकमुकुलितोत्साहम् उन्मीलनधीरत्वम् इह सत्त्वं गंभीरं कीर्त्यते ) दुःखमें वा सुखमें वा गई है शंका-शोक रहित, उत्सवमें प्रसन्नता और धीरज होय तो इस लोकमें ऐसे सत्त्वको गंभीर कहते हैं ॥ ३६ ॥

एकमपि सत्त्वमेतैः सर्वैरप्यस्ति लक्षणैस्तुल्यम् ।
यस्मिन्नपि मनुजानां न कदाचन दुर्लभा लक्ष्मीः ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौ–( मनुजानां मध्ये यस्मिन् एतैः सर्वैरपि लक्षणैस्तुल्यमेकमपि सत्त्वमस्ति ) मनुष्योंके बीच जिसमें पूर्वोक्त इतने सब लक्षणोंसे तुल्य एकमात्र सत्त्व है ( तस्य कदाचन लक्ष्मीः दुर्लभा न ) उसे तो कभी लक्ष्मी दुर्लभ नहीं है ॥ ३७ ॥

त्वचि भोगा मांसे सुखमस्थिषु धनमीक्षणेषु सौभाग्यम् ।
यानं गतौ स्वरे स्यादाज्ञा सत्त्वे पुनः सर्वम् ॥ ३८॥

अन्वयार्थौ–( त्वचि भोगाः मांसे सुखम् अस्थिषु धनम् ईक्षणेषु सौभाग्यम् गतौ यानम् स्वरे आज्ञा पुनः सत्त्वे सर्वं स्यात् ) त्वचामें जो सत्त्व सो भोगोंको-मांसमें सुखोंको-हाडोंमें धनको-नेत्रोंमें सौभाग्यको-चलनेमें सवारीको शब्दमें आज्ञाको फिरभी जो कुछ है सो सब सत्त्वमें ही है ॥ ३८ ॥

सौभाग्यमिव स्त्रीणां पुरुषाणां भूषणं भवति सत्त्वम् ।
तेन विहीना भुवने भवन्ति परिभवपदं प्रायः ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ–( स्त्रीणां सौभाग्यमिव पुरुषाणां सत्त्वं भूषणं भवति भुवने तेन विहीनाः प्रायः परिभवपदं भवन्ति ) स्त्रियोंका सौभाग्य जैसे भूषण है ऐसे ही पुरुषोंको सत्त्व भूषण है, जगतमें जो सत्त्व करिके हीन हैं वे बहुधा निरादरका पद होते हैं ॥ ३९ ॥

वर्णः शुभो गतेः स्याद्वर्णादपि शुभतरः स्वरः पुंसाम् ।
अतिशुभतमं स्वरादपि सत्त्वं सत्त्वाधिका धन्याः ॥ ४० ॥

अन्वयार्थौ–( पुंसां गतेः वर्णः शुभः वर्णादपि स्वरः शुभतरः स्यात् स्वरात् अपि अतिशुभतमं सत्त्वम् तथा–सत्त्वाधिकाः पुरुषाः धन्याः ) पुरुषोंकी गतिसे तो वर्ण शुभ है, वर्णोंसे स्वर अत्यंत उत्तम ( अच्छा ) है स्वरसे भी उत्तम सत्त्व है और जिनमें सत्त्व अधिक है वेही पुरुष धन्य हैं ॥ ४० ॥



वक्त्रानुगतं रूपं रूपानुगतं नृणां भवति वित्तम् ।
वित्तानुगतं सत्त्वं सत्त्वानुगता गुणाः प्रायः ॥ ४१ ॥

अन्वयार्थौ–( नृणां वक्त्रानुगतं रूपम्-रूपानुगतं वित्तम्-वित्तानुगतं सत्त्वं-प्रायः सत्त्वानुगताः गुणाः भवंति ) मनुष्योंके मुखके तुल्य तो रूप है और रूपके तुल्य वित्त है और वित्तके तुल्य सत्त्व है और बहुधा सत्त्वके ही तुल्य गुण भी होते हैं ॥ ४१ ॥

इह सत्त्वमेव मुख्यं निखिलेष्वपि लक्षणेषु मनुजानाम् ।
सद्भावो भवति पुनश्चिन्ता शान्तिं समुपयाति ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थौ–( इह मनुजानां निखिलेषु लक्षणेषु अपि सत्त्वमेव मुख्यम् ) इस लोकमें मनुष्योंके इन सब लक्षणोंमें सत्त्व ही लक्षण मुख्य है और ( पुनः सद्भावो भवति ) इसमें सद्भाव अर्थात् अच्छा विचार होता है और ( चिंता शान्तिं समुपयाति ) चिंता शांत हो जाती है ॥ ४२ ॥

नापि तु येषां नमनं मनोविकारं कथंचनाभ्येति ।
आपद्यपि संपद्यपि ते सत्त्वविभूषिताः पुरुषाः ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थौ–( येषां नमनं न तु-आपद्यपि संपद्यपि मनोविकारं कथं च न अभ्येति ) जिनका झुकना नहीं है, आपत्तिमें और संपत्ति जिनके मनको कभी विकार नहीं होता है ( ते पुरुषाः सत्त्वविभूषिताः भवंति ) वे पुरुष सत्त्वविभूषित होते हैं अर्थात् सत्त्व ही जिनके भूषण हैं ॥ ४३ )

शुभलक्षणमप्येवं बाह्यं न विलोक्यते स्फुटं यस्य ।
अपि दृश्यते पुनः श्रीस्तस्य तदा न ध्रुवेति दृढम् ॥४४॥

अन्वयार्थौ–( यस्य एवं शुभलक्षणं बाह्यमपि स्फुटं न विलोक्यते ) जिसके ये शुभलक्षण बाहिरी प्रगट नहीं दीखे ( तस्य पुनः श्रीरपि न ध्रुवा दृश्यते इति दृढम् ) तिसके फिर लक्ष्मी चलायमान दीखती है अर्थात् उसके स्थिर नहीं रहे यह सत्य है ॥ ४४ ॥

स्थूलैस्तनुभिः परुषैर्मृदुभिः स्वल्पैरथायतैरङ्गैः ।
यः सत्त्ववान् स पूज्यस्तत्सकलगुणाधिकं सत्त्वम् ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थौ-( स्थूलैः तनुभिः परुषैः मृदुभिः स्वल्पैः अथ आयतैरङ्गैः ) मोटा, पतला, खरदरा, नरम, छोटा, लंबा शरीर होय तो इन करके कुछ फल नहीं ( यः सत्त्ववान् स पूज्यः ) जो सत्त्ववान् है सोई पूज्य है ( तत्सकलगुणाधिकं सत्त्वं भवति ) तिससे सब गुणोंमें अधिक सत्त्व ही है ॥ ४५ ॥

शुभलक्षणमङ्गं यदि स पूजितः स्यान्नरस्य सत्त्ववतः ।
तदुभयसंपर्कादिह सौभाग्ये मञ्जरीभेदः ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौ-( यदि अङ्गं शुभलक्षणं स पूजितः स्यात् ) यदि अंग शुभलक्षणयुक्त है सोई पूजित है और ( सत्त्ववतः नरस्य तदुभयसंपर्कात् इह सौभाग्ये मंजरीभेदः ) सत्त्ववाले मनुष्यका उन दोनोंके अर्थात् सत्त्व और अंगलक्षणके मिलापसे इस लोकमें भाग्यरूपवृक्षमें मंजरीका अर्थात् बालिकाका उदय हुआ समझना ॥ ४६ ॥

इति श्रीमहत्तम श्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रतिलकापरनाम्नि स्त्रीपुरुषलक्षणशास्त्रे आवर्ताद्यधिकारस्तृतीयः ॥ ३ ॥

---

संस्थानवर्णगन्धावर्ताः सत्त्वं स्वरो गतिश्छाया ।
तन्नरवन्नारीणामिति लक्षणमष्टधा भवति ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ-( संस्थानवर्णगन्धावर्ताः सत्त्वं स्वरः गतिः छाया नारीणामिति नरवत् लक्षणमष्टधा भवति )। आकार, रंग, सुगंध, चक्र, सत्त्व, बोली, चाल, कांति जैसे मनुष्योंके लक्षण हैं तैसे ही स्त्रियोंको भी लक्षण यह आठ प्रकारके होते हैं ॥ १ ॥

इह देहसंनिवेशः संस्थानं तस्य लक्षणमिदानीम् ।
आपादतलशिरोऽन्तं स्त्रियाः शुभाशुभफलं वक्ष्ये ॥ २ ॥

अन्वयार्थौ-( इह देहसंनिवेशः संस्थानम्, इदानीम् आपादतलशिरोन्तं स्त्रियाः शुभाशुभफलं लक्षणं वक्ष्ये ) इस लोकमें शरीरका



जो आकार है उसीका नाम संस्थान है-अब पुरुषकेसे पांवसे लेकर शिर-तक स्त्रियोंके शुभ वा अशुभ फल लक्षण कहता हूं ॥ २ ॥

प्रथमं पादस्य तले रेखाश्चक्रादयस्ततोऽङ्गुष्ठः ।
अंगुल्यस्तदनु नखाः पृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णिः ॥ ३ ॥

अन्वयार्थौ-( प्रथमं पादस्य तले रेखाः ततः चक्रादयः अंगुष्ठः तदनु नखा अंगुल्यः पादपृष्ठं गुल्फद्वयं पार्ष्णिः ) पहिले तो पांवके तलवेकी रेखा तिसके पीछे चक्र आदि अंगूठा तिसके पीछे नख फिर अंगुली तिस पीछे पांवकी पीठ और दो टकना और पार्ष्णि नाम पांवका फावा अर्थात् पंजा ॥ ३ ॥

जङ्घाद्वितयं रोम जानूरू चूचुकगण्डयुगलमथो ।
कटिरथ नितंबबिम्बः स्फिचौ भगं जघनमथ बस्तिः ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ-( जंघाद्वितयम् ) पिंडली दोनों ( रोम ) बाल ( जानु ) घुटनेके ऊपर ( ऊरु ) जंघा ( चूचुक ) चूचीकी नोकें ( गण्डयुगलम् ) कपोलकी दोनों हड्डियां ( अथो कटिः ) और कमर ( अथ नितंबबिंबः ) कूलेके मोटेपन ( स्फिचौ ) कमरके पिंड ( भगम् ) भग ( जघनम् ) कूलेका आगा ( अथ बस्तिः ) पेडू आदि ये अंग हैं ॥ ४ ॥

नाभिः कुक्षिद्वितयं ततश्च पार्श्वद्वयं तथा जठरम् ।
मध्यं त्रिवलीरोमावलिसहितं हृदयमथ वक्षः ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ-( नाभिः ढूंडी, ( कुक्षिद्वितयम् ) बगलें दोनों, ( ततः पार्श्वद्वयम् ) तिसकी पांसू दोनों, ( तथा जठरम् ) और पेट, ( मध्यम् त्रिवलीरोमावलिसहितम् ) बीचकी सलवटें और बालोंकी पंगतिसहित मध्य ( हृदयम् ) नाभिके ऊपर ( अथ वक्षः ) बगल आदि अंग हैं ॥ ५ ॥

उरसिजयुगलं जत्रुद्वंद्वं तदनु स्कन्धयोर्युग्मम् ।
अंसद्वयमथ कक्षाद्वितयं भुजयोस्तथा द्वन्द्वम् ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ-( उरसिजयुगलम् ) चूँची ( जत्रुद्वंद्वम् कंधोंकी हंसली, ( तदनु स्कंधयोर्युग्मम् ) तिस पीछे दोनों कंधे ( अंसद्वयम् ) कंधोंके भाग ( अथ कक्षाद्वितयम् ) ये दोनों काखें ( तथा भुजयोर्द्वन्द्वम् ) और दोनों भुजा जानिये ॥ ६ ॥

मणिबन्धपाणियुगलं तस्य च पृष्ठं तलं ततो रेखा ।
अंगुष्ठोऽङ्गुलयो नखलक्षणमथ चानुपूर्वतो वक्ष्ये ॥ ७ ॥

अन्वयार्थौ-( मणिबन्धः ) पहुंचा ( पाणियुगलम् ) दोनों हाथ ( तस्य पृष्ठम् ) तिस हथेलीकी पीठ ( तलम् ) हथेली (ततोरेखा) तिसके पीछे रेखा) ( अंगुष्ठः ) अंगूठा ( अंगुलय ) अंगुली ( नखलक्षणम् अनुपूर्वतश्च वक्ष्ये ) नख इत्यादि अंगके लक्षण क्रमपूर्वक आगे कहेंगे ॥ ७ ॥

कृकाटिकाऽथो कण्ठस्ततश्च चिबुकं कपोलयुगलं च ।
वक्त्रमधरोत्तरोष्ठौ दन्ता जिह्वा ततस्तालु ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ-(कृकाटिका ) गलेकी घंटी ( कंठः ) गला ( चिबुकम् ) ठोढी ( कपोलयुगलम् ) दोनों गाल ( वक्त्रम् ) मुख ( अधरोत्तरौष्ठौ ) ऊपर नीचेके होंठ ( दन्ताः ) दांत ( जिह्वा ) जीभ ( ततश्च तालु ) तिसके बाद तालु आदि अंग जानिये ॥ ८ ॥

घण्टी हसितं नासा क्षुतमक्षिद्वितयमथ च पक्ष्माणि ।
भ्रूकर्णयुगललाटं सीमन्तः शीर्षमथ केशाः ॥ ९ ॥

अन्वयार्थौ-( घंटी ) तलुवेके ऊपरका भाग ( हसितम् ) हँसना ( नासा ) नाक ( क्षुतम् ) छींक ( अक्षिद्वितयम् ) आंखें दोनों, ( पक्ष्माणि ) नेत्रोंकी बरानी तथा बाफणी ( भ्रुयुगम् ) भौंह, कर्णयुगम् ) दोनों कान, ( ललाटम् ) लिलार, ( सीमंतः ) बालोंकी मांग, ( शीर्षम् ) शीस, ( अथ केशाः ) बाल आदि अंग हैं ॥ ९ ॥



# अथ पादतलम् ।

पादतलमुष्णमरुणं समांसलं मृदु समं स्निग्धम् ।
सुप्रतिष्ठितं च यासां स्त्रीणां भोगप्रतिष्ठायै ॥ १० ॥

अन्वयार्थौ-( यासां स्त्रीणाम् पादतलम् उष्णमरुणं समांसलं मृदु समं स्निग्धं सुप्रतिष्ठितं च भवति तासां भोगप्रतिष्ठायै भवति ) जिन स्त्रियोंका पैरका तलुवा गरम, लाल, मांससे भरा, नरम, बराबर, चिकना, एकसा बैठा जाय ऐसा होवे तो उन स्त्रियोंके भोग और प्रतिष्ठा अर्थात् बडाईके लिये होता है ॥ १० ॥

रूक्षं खरं विवर्णं चरणतलं भवति भोगनाशाय ।
असितं दौर्भाग्याय श्वेतं दुःखाय योषाणाम् ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौ-( रूक्षं खरं विवर्णं चरणतलं भोगनाशाय भवति ) रूखा, खरदरा, बुरे रंगका ऐसा पाँवका तलुवा भोगोंके नाश करनेके लिये होता है और ( योषाणां पादतलमसितं दौर्भाग्याय भवति ) स्त्रियोंके पांवका तलुवा जो काला होय तो अभाग्यके लिये होता है और ( श्वेतं दुःखाय भवति ) जो सफेद होय तो दुःखके लिये होता है ॥ ११ ॥

शूर्पाकृतिभिः श्वेतैः कुटिलैः स्युर्दुर्भगाश्च चरणतलैः ।
शुष्कैर्निःस्वा विषमैः शोकजुषो दुःखिताऽमृदुभिः ॥ १२ ॥

अन्वयार्थौ-( शूर्पाकृतिभिः श्वेतैः कुटिलैश्च चरणतलैः नार्यो दुर्भगाः स्युः ) जो सूपके आकार और सफेद टेढा ऐसा पांवका तलुवा होय तो स्त्री कुरूपा और अभागिनी होती है और ( शुष्कैः निस्स्वाः भवंति ) जो सूखा होय तो दरिद्रिणी होय और ( विषमैः शोकजुषो भवन्ति ) जो टेढा और ऊंचा नीचा होय तो शोकका सेवन करनेवाली होय और ( अमृदुभिः दुःखिता भवंति ) जो कडा होय तो दुःखी होती हैं ॥ १२ ॥

चक्रस्वस्तिकशङ्खध्वजांकुशच्छत्रमीनमकराद्याः ।
जायन्ते पादतले यस्याः सा राजपत्नी स्यात् ॥ १३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः पादतले चक्र-स्वस्तिक-शंख-ध्वज-अंकुश-छत्र-मीन-मकराद्याः जायन्ते सा राजपत्नी स्यात् ) जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें चक्र, सांथियां, शंख, ध्वजा, अंकुश, छत्र, मछली, मगरको आदि ले करिके ये शुभ रेखा होंय सो शुभ स्त्री राजाकी रानी होती है ॥ १३ ॥

चक्रादिचिह्नमध्ये स्यादेकं द्वे बहूनि वा यासाम् ।
ऐश्वर्यसौख्यमपि वा तासां स्यात्तदनुमानेन ॥ १४ ॥

अन्वयार्थौ–(यासां चक्रादिचिह्नमध्ये एकं स्यात् द्वे वा बहूनि संति तदनुमानेन तासामैश्वर्यसौख्यमपि स्यात् ) जिन स्त्रियोंके चक्रादि चिह्नों-मेंसे एक होय वा दो वा बहुत होंय-तिनके अनुमान करिके तिन्हीं स्त्रियोंको ऐश्वर्य और सौख्य होता है ॥ १४ ॥

ऊर्ध्वा रेखांघ्रितले यावन्मध्यांगुलीगता यस्याः ।
सा लभते पतिमाढ्यं प्रिया पुनर्भवति तस्यापि ॥ १५ ॥

अन्वयार्थौ–यस्याः अंघ्रितले ऊर्ध्वा रेखा यावत् मध्यांगुलीगता भवति सा आढ्यं पतिं लभते पुनः तस्यापि प्रिया भवति ) जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें जो ऊर्ध्व रेखा जितनी बीचकी अंगुलीतक गई होय सो स्त्री धन-वान् पतिको पाती है और सोई तिसकी प्यारी होती है ॥ १५ ॥

श्वशृगालमहिषमूषककाकोलूकाहिकोककरभाद्याः ।
चरणतले जायन्ते यस्याः सा दुःखमाप्नोति ॥ १६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः चरणतले श्वशृगालमहिषमूषककाकोलूकाहि-कोककरभाद्या जायन्ते सा दुःखमाप्नोति ) जिस स्त्रीके पाँवके तलुवेमें कुत्ता, गीदडी, भैंसा, चूहा, कौवा, उल्लू, सर्प, भेडिया, ऊँट आदिके चिह्न होंय सो स्त्री दुःख पाती है ॥ १६ ॥



## अथांगुष्ठः ।

मांसोपचितोंऽगुष्ठः समुन्नतो वर्तुलः शुभो यः स्यात् ।
ह्रस्वश्चिपिटो वक्रः कुलक्षयाय ध्रुवं स्त्रीणाम् ॥ १७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्यः यः पादांगुष्ठः मांसोपचितः समुन्नतः वर्तुलः स शुभः तथा-ह्रस्वः चिपिटः वक्रः स्त्रीणां ध्रुवं कुलक्षयाय भवति ) जिस स्त्रीका जो पाँवका अंगूठा मांससे भरा ऊंचा गोल ऐसा होय सो शुभ है और छोटा चिपटा टेढा होय तो स्त्रियोंका ऐसा अंगूठा कुलका नाश करने-वाला होता है ॥ १७ ॥

वैधव्यं विपुलेन द्वेष्यत्वं स्वल्पवर्तुले स्त्रीणाम् ।
रमणेनाद्रियमाणा पुनरंगुष्ठेन दीर्घेण ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौ–( स्त्रीणां विपुलेन अंगुष्ठेन वैधव्यं स्यात् ) स्त्रियोंके चौडे अंगूठेसे विधवापन होता है और ( स्वल्पवर्तुले अंगुष्ठे द्वेष्यत्वं स्यात् ) थोडे गोलाइ अंगूठेमें हो तो वैरभाव होता है और ( दीर्घेण अंगुष्ठेन रमणेनाद्रियमाणा भवति ) बहुत लंबे अंगूठेसे स्त्री पतिसे आदर पावनेवाली होती है ॥ १८ ॥

## अथांगुल्यः ।

मृदवोंऽगुलयः शोणाः पदाम्बुजस्येव कोमलदलानि ।
सरला घनाः सुवृत्ताः समुन्नता भोगलाभाय ॥ १९ ॥

अन्वयार्थौ–( पादांबुजस्य अंगुलयः मृदवः शोणाः अम्बुजस्य कोमल-दलानि इव सरलाः घनाः सुवृत्ताः समुन्नताः भोगलाभाय भवंति ) पांवकी अंगुलियें नरम, लाल, कमलकी पत्तियोंकीसी नरम, सूधी, सघन, आस-पास गोल, उँचाई लिये ऐसी भोगके लाभके अर्थ होती हैं ॥ १९ ॥

वितरंति प्रौढभुग्ना दौर्भाग्यत्वं हि किङ्करीत्वं च ।
पृथवः स्थूला दुःखं विरला रूक्षाः पुनर्नैःस्व्यम् ॥ २० ॥

अन्वयार्थौ–( प्रौढभुग्नाः अंगुल्यः दौर्भाग्यत्वं वितरंति ) बहुत टेढी अंगुली कुरूपको देती हैं और ( पृथवः अंगुल्यः किंकरीत्वं वितरंति) फैली

हुई चौडी अंगुली दासीपनको देती हैं और ( स्थूलाः अंगुलयः दुःखं वित-रंति ) मोटी अंगुली दुःखको देती हैं और ( विरलाः रूक्षाः अंगुलयः पुनः नैःस्व्यं वितरंति ) छितरी और रूखी अंगुली फिर दरिद्रपनको देती है ॥२०॥

पूर्वं वृत्ता यस्यास्तनवोऽगुलयः परस्परारूढाः ।
हत्वा बहूनपि पतीन् सा दासी जायते नियतम् ॥ २१ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः अंगुलयः पूर्वं वृत्ताः तनवः परस्परारूढाः भवंति) जिस स्त्रीकी अंगुली पहले गोल फिर पतली एकके ऊपर एक चढी हुई हो ( सा बहून् अपि पतीन् हत्वा नियतं दासी जायते ) सो स्त्री बहुत पतिको मारिके निश्चय करके दासी होती है ॥ २१ ॥

यस्याः पथि प्रयांत्या रेणुगणः क्षितितलात्समुच्छलति ।
सा च कदापि न शस्ता कुरुते कुटिला विनाशं च ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौ–( पथि प्रयांत्या यस्याः क्षितितलात् रेणुगणः समुच्छलति ) जिसके मार्ग चलनेसे धरतीसे धूलके गण उछलें ( सा कदापि न शस्ता ) सो स्त्री कभी अच्छी नहीं और ( च पुनः सा कुटिला विनाशं कुरुते ) सो खोटी स्त्री नाश करती है ॥ २२ ॥

यांत्यां नियतं यस्या न स्पृशति कनिष्ठिकांगुली भूमिम् ।
सा हत्वा पतिमाद्यं रहो रमते द्वितीयेन ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौ–( यांत्याः यस्याः कनिष्ठिकांगुली नियतं भूमिं न स्पृशति) चलती हुई जिस स्त्रीकी कनिष्ठिका अंगुली निश्चय पृथ्वीको नहीं छुवे ( सा आद्यं पतिं हत्वा रहः द्वितीयेन रमते ) तो स्त्री पहिले पतिको मारिके एकान्तमें दूसरे पतिके साथ भोगविलास करती है ॥ २३ ॥

स्पृशति न यस्या भूतलमनामिका सा पतिद्वयं हन्ति ।
अतिहीनायां तस्यां नित्यं कलहप्रिया सा च ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः अनामिका भूतलं न स्पृशति ) जिस स्त्रीकी अनामिका अंगुली चलतेमें धरतीसे न लगे ( सा पतिद्वयं हन्ति ) सो दो



पतिको मारती है ( तस्यामतिहीनायां सत्यां सा नित्यं कलहप्रिया भवति ) तिसके अत्यंत छोटे होनेसे स्त्री नित्यही कलहकी प्यारी होती है ॥ २४ ॥

हीना मध्या यस्याः सा योषित्पौरुषं करोति सदा ।
अस्पृष्टायां तस्यां मारयति पुनः पतित्रितयम् ॥ २५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः मध्या हीना भवति सा योषित् सदा पौरुषं करोति ) जिस स्त्रीके पांवकी बीचकी अंगुली छोटी होय सो स्त्री निरं-तर पराक्रमको करती है ( पुनः तस्यामस्पृष्टायां सा योषित् पतित्रितयं मारयति ) और जो धरतीको बीचकी अंगुलि न छुए सो स्त्री तीन पतिको मारती है ॥ २५ ॥

अंगुष्ठादधिका स्यादस्याः पादप्रदेशिनी नियतम् ।
सा भवति दुश्चरित्रा कन्यैव च कोऽत्र संदेहः ॥ २६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः पादप्रदेशिनी नियतमंगुष्ठात् अधिका स्यात् ) जिस स्त्रीके पांवके अंगूठेके पासकी अंगुली अंगूठेसे निश्चय बडी होय ( सा कन्या एव दुश्चरित्रा भवति अत्र कः संदेहः ) सो कन्याहीपनमें व्यभिचारिणी होती है इसमें क्या सन्देह है ॥ २६ ॥

## अथ नखलक्षणम् ।

आताम्रकान्तयश्चेत् शस्ताः स्निग्धाः समुन्नता नखराः ।
वृत्ता मसृणाः स्त्रीणां न पुनः शस्ता विपर्यस्ताः ॥ २७ ॥

अन्वयार्थौ–( आताम्रकान्तयः स्निग्धाः समुन्नताः वृत्ताः मसृणाश्चेत् स्त्रीणां नखराः शस्ताः ) कुछ लाल है रंग जिनके अच्छे चमकदार ऊंचे गोल चिकने ऐसे हों तो स्त्रियोंके नख अच्छे हैं और ( पुनः विपर्यस्ताः न शस्ताः ) इससे विपरीत जो होयँ तो अच्छे नहीं हैं ॥ २७ ॥

## अथ पादपृष्ठलक्षणम् ।

कमठोन्नतेन मृदुना यदि च शिराविरहितेन पीनेन ।
राज्ञीत्वं पृष्ठेन स्त्रीणां स्यात्पादपीठेन ॥ २८ ॥

अन्वयार्थौ–( कमठोन्नतेन मृदुना यदि च शिराविरहितेन पीनेन एतादृशेन पादपीठेन पृष्ठेन स्त्रीणां राज्ञीत्वं स्यात् ) कछुवेकीसी ऊँची मुलायम और नसें नहीं निकल होयँ और मोटी ऐसी पाद पीठसे स्त्रियोंके बीचमें स्त्री रानी होती है ॥ २८ ॥

रोमान्वितेन दासी निर्मांसेनाधमा भवति नारी ।
मध्यनतेन दरिद्रा दौर्भाग्यवती शिरालेन ॥ २९ ॥

अन्वयार्थौ–( रोमान्वितेन पृष्ठेन दासी भवति ) जिसकी पीठपर रोम बहुत होय वह दासी होय और ( निर्मांसेन पृष्ठेन नारी अधमा भवति ) जो मांसरहित पीठ होय तो वह स्त्री नीच होती है और ( मध्यगतेन पृष्ठेन दरिद्रा भवति ) जो बीचमें नीची पीठ होय तो दरिद्रिणी हो और (शिरालेन पृष्ठेन नारी दौर्भाग्यवती भवति ) जिसमें नसें निकळी हुई चमकती होयँ ऐसी पीठवाली स्त्री अभागिनी होती है ॥ २९ ॥

## अथ गुल्फलक्षणम् ।

गूढौ सुखाय गुल्फौ वृत्तौ शिरारहितावशिथिलौ च ।
विषमौ विकटौ ख्यातौ गुल्फौ दौर्भाग्यकरौ नियतम् ॥ ३० ॥

अन्वयार्थौ–( गूढौ वृत्तौ शिरारहितौ अशिथिलौ च एतादृशौ गुल्फौ सुखाय भवतः ) मांससे दबेहुए गोलाई लिये नसें न प्रकट होयँ जिसमें और ढीले नहीं कडे होंय तो ऐसी टंखनेवाली स्त्री सुखी रहती है और ( विषमौ विकटौ ख्यातौ एतादृशौ गुल्फौ नियतं दौर्भाग्यकरौ भवतः ) जो ऊंचे नीचे कडे प्रकट होंय तो ऐसी टंखनेवाली स्त्री निश्चय अभागिनी रहती है ॥ ३० ॥

## अथ पार्ष्णिलक्षणम् ।

सौख्यवती समपार्ष्णिः पृथुपार्ष्णिर्दुर्भगा नारी ।
उन्नतपार्ष्णिः कुलटा दुःखवती दीर्घपार्ष्णिः स्यात् ॥ ३१ ॥



अन्वयार्थौ–( समपार्ष्णिः नारी सौख्यवती स्यात् ) बराबर पाँवके फाबेवाली स्त्री सुखी रहे और ( पृथुपार्ष्णिः नारी दुर्भगा स्यात् ) जो चौडे छितरें पाँवके फाबेवाली स्त्री होय वह कुरूपिणी होती है और ( उन्नतपार्ष्णिः नारी कुलटा स्यात् ) ऊंचे पाँवके फाबेवाली स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् घरघर फिरनेवाली होती है और ( दीर्घपार्ष्णिः नारी दुःखवती स्यात् ) लंबे पाँवके फाबेवाली स्त्री दुःखी रहती है ॥ ३१ ॥ इति प्रथदशी पूर्णा ॥

## अथ जंघालक्षणम् ।

स्निग्धे रोमविहीने यस्याः क्रमवर्तुले समे विशिरे ।
पादाम्बुजमाले इव जङ्घे सा भवति नृपपत्नी ॥ ३२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः जंघे स्निग्धे रोमविहीने क्रमवर्तुले समे विशिरे पादांबुजमाले इव सा नृपपत्नी भवति ) जिस स्त्रीकी पिंडली अच्छी चिकनी रोमरहित, क्रमसे गोल बराबर नसें न चमकती हों और चरणकमलकीसी माला होय सो राजाकी रानी होती है ॥ ३२ ॥

शुष्के पृथू विशाले शिरान्विते स्थूलपिण्डके यस्याः ।
जङ्घे मांसोपचिते श्लथजानू पांसुला सा स्यात् ॥ ३३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्या जंघे पृथू विशाले शिरान्विते शुष्के मांसोपचिते श्लथजानू स्थूलपिण्डके भवतः सा पांसुला स्यात् ) जिस स्त्रीकी पिंडली चौडी, बडी, नसें चमकती हुई सूखी थोडे मांसकी ढीले हैं घुटनेसे ऊपरके भाग जिनमें और मोटे पिण्ड होंय सो स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥ ३३ ॥

जङ्घे खररोमे वै वायसजंघोपमे तथा यस्याः ।
मारयति पतिं यदि वा प्रायः सा स्वैरिणी भवति ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्या जंघे खररोमे तथा वायसजंघोपमे वै भवतः सा पतिं मारयति ) जिस स्त्रीकी पिंडली खरदरे रोमवाली तथा कौवेकी पिंड-

लीके तुल्य जो निश्चय करके होयँ सो स्त्री पतिको मारती है और ( यदि वा प्रायः स्वैरिणी भवति ) जो बहुधा करके व्यभिचारिणी होती है ॥ ३४ ॥

एकैकमेव भूपतिपत्नीनां रोमकूपके रोम ।
सामान्यानां द्वित्र्यादीनि च तथैव विधवानाम् ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ–( भूपतिपत्नीनां रोमकूपके एकैकमेव रोम स्यात् ) राजाओंकी रानीके बालोंके छेदोंमें एकही एक रोम होता है और ( सामान्यानां विधवानां च रोमकूपके तथैव द्वित्र्यादीनि रोमाणि भवन्ति ) जो सामान्य और स्त्रियोंके अथवा विधवाओंके उन बालोंके छेदोंमें दो तीन आदि करके रोम होते हैं ॥ ३५ ॥

## अथ जानुकथनम् ।

यस्या जानुयुगं स्यादनुल्बणं पिशितमग्नमतिवृत्तम् ।
सा लक्ष्मीरिव नियतं सौभाग्यसमन्विता वनिता ॥ ३६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः जानुयुगम् अनुल्बणं पिशितमग्नमतिवृत्तं स्यात् ) जिस स्त्रीके दोनों घुटनोंके ऊपरसे भाग बडे और बुरे होयँ और मांसमें गडे और बहुत गोल होयँ ( सा वनिता नियतं सौभाग्यसमन्विता लक्ष्मीरिव भवति ) सो निश्चय करिके सौभाग्य युक्त लक्ष्मीकी भांति होती है ॥ ३६ ॥

निर्मांसैः स्वैरिण्यो विविधाभैः स्युः सदाध्वगा नार्यः ।
विश्लिष्टैर्धनहीना जायन्ते जानुभिः प्रायः ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौ–( निर्मांसै जानुभि नार्यः स्वैरिण्यो भवन्ति ) थोडे मांसवाली जानु करके स्त्री व्यभिचारिणी होती है और ( विविधाभैः नार्यः सदा अध्वगाःस्युः ) अनेक सुरतकी जानु करके स्त्री सदा मार्ग चलनेवाली होती हैं और ( विश्लिष्टैः जानुभिः नार्यः प्रायः धनहीनाः जायन्ते ) जो छितरीसी जानुवाली होयँ वे स्त्री बहुधा धनहीन होती हैं ॥ ३७



## अथोरुकथनम् ।

मदनगृहस्तंभौ यौ कदलीकाण्डद्वयोपमावूरू ।
यस्याः करिकरवृत्तावरोमशौ भूपपत्नी स्यात् ॥ ३८ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः यौ ऊरू मदनगृहस्तंभौ कदलीकाण्डद्वयोपमौ करिकरवृत्तौ अरोमशौ सा भूपपत्नी स्यात् ) जिस स्त्रीकी जो दोनों जाँघें कामदेवके घरके खंभे केलेके दो वृक्षके तुल्य और हाथीकी सूंडकी बराबर गोल और रोमरहित होयँ सो राजाकी स्त्री अर्थात् रानी होती है ॥ ३८ ॥

मांसोपचितैर्विशिरैः करिकरसदृशैररोमभिर्मृदुभिः ।
आसादयन्ति सततं मदनक्रीडासुखं नार्यः ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ–( नार्यः मांसोपचितैः विशिरैः अरोमभिः घनैः मृदुभिः करिकरसदृशैः ऊरुभिः सततं मदनक्रीडासुखम् आसादयन्ति ) जिन स्त्रियोंकी दोनों जाँघें मांससे भरीहुई नसें चमकती न होयँ रोमरहित होंय मोटी कोमल हाथीकी सूंडके तुल्य होयँ तो ऐसी जाँघोंसे स्त्री निरंतर कामदेवके सुखको भोगती है ॥ ३९ ॥

चलमांसैर्दौर्भाग्यं लोमशैः खरैर्नैःस्व्यम् ।
मध्यक्षुद्रैर्दुःखं तनुभिर्वधमूरुभिर्याति ॥ ४० ॥

अन्वयार्थौ–( चलमांसैः ऊरुभिः नारी दौर्भाग्यं याति ) मांससे ढीली दोनों जाँघें जो स्त्रीकी होयँ तो अभागिनी होती है और (लोमशैः खरैरूरुभिः नारी नैःस्व्यं वा याति) रोमों सहित खरदरी जाँघोंसे स्त्री दरिद्रिणी और विधवा होती है और (मध्यक्षुद्रैः तनुभिरूरुभिः नारी दुःखं तथा बधं याति ) बीचमें छोटी और पतली जाँघों करके स्त्री दुःख और मरणको पाती है ॥ ४० ॥ इति द्वितीयदशी पूर्णा ॥

## अथ कटिलक्षणकथनम् ।

यदि चतुरन्वितविंशत्यंगुलविनता कटिः समा कठिना ।
उन्नतनितम्बबिम्बा चतुरस्रा शोभना स्त्रीणाम् ॥ ४१ ॥

अन्वयार्थौ-( स्त्रीणां कटिः चतुरन्वितविंशत्यंगुलविनता समा कठिना उन्नतनितम्बबिम्बा चतुरस्रा यदि शोभना भवति ) स्त्रियोंकी कमर जो २४ अंगुलकी झुकी हुई बराबर कडी और ऊँचे हैं कूले जिसके और चौकोर ऐसी हो तो कमर शोभायमान होती है ॥ ४१ ॥

विनता दीर्घा चिपिटा निर्मांसा सङ्कटा कटिर्विकटा ।
ह्रस्वा रोमयुता या सा स्याद्दौर्भाग्यदुःखकरी ॥ ४२ ॥

अन्वयार्थौ-( स्त्रीणां या कटिः विनता दीर्घा चिपिटा निर्मांसा संकटा विकटा ह्रस्वा रोमयुता स्यात्, सा दौर्भाग्यदुःखकरी भवति ) स्त्रियोंकी कमर जो बहुत झुकी हुई और लंबी चपटी मांसरहित सूखी भयंकर बुरी छोटी रोमयुक्त होय सो कमर स्त्रियोंको अभाग्य और दुःखकी करनेवाली होती है ॥ ४२ ॥

## अथनितम्बबिम्बलक्षणम् ।

सुदृशां नितम्बबिम्बः समुन्नतो मांसलः पृथुः पीनः ।
स्मरभूपस्य सुवर्णक्रीडाचुलुक इव रतिहेतोः ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थौ-( सुदृशां नितम्बबिंबः समुन्नतः मांसलः पृथुः पीनः स्यात् रतिहेतोः स्मरभूपस्य सुवर्णक्रीडाचुलुक इव ( स्त्रियोंके कूले बराबर ऊंचे मांससे भरे चौडे मोटे होय तो रति करनेके निमित्त कामदेव राजाके खेलनेका मानों सुवर्णका बाजा है ॥ ४३ ॥

विकटश्चिपिटो नतिमान्निर्मांसो रोमशः खरः शुष्कः ।
कुरुते नितम्बफलको दरिद्रतां दुःखदौर्भाग्यम् ॥ ४४ ॥

अन्वयार्थौ-( विकटः चिपिटः नतिमान् निर्मांस रोमशः खरः शुष्कः नितम्बफलकः दरिद्रतां वा दुःखदौर्भाग्यं कुरुते ) भयानक चिपटे



झुके हुए नीचे थोडे मांसके रोमवाले खरदरे सूखे ऐसे जो कूले होंय तो दरिद्री वा दुःख वा अभाग्यको करते हैं ॥ ४४ ॥

## अथ स्फिक्कथनम् ।

वलिभिर्मुक्तौ पीनौ कपित्थफलवर्तुलौ स्फिचौ नार्याः ।
मृदुलौ घनमांसयुतौ रतिसौख्यं वितरतः सततम् ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थौ-( वलिभिर्मुक्तौ पीनौ कपित्थफलवर्तुलौ मृदुलौ घनमांसयुतौ नार्याः स्फिचौ सततं रतिसौख्यं वितरतः ) बिना सलवटके कड मांसके कैथके फलके तुल्य गोल कोमल बहुत मांसयुक्त जो स्त्रीकी कमरके दोनों ओरके मांसके पिण्ड होंय तो निरन्तर रतिके सुखको देते हैं ॥ ४५ ॥

परुषं रूक्षं चिपिटं स्फिग्युग्मं मांसविरहितं न शुभम् ।
तदपि च विलम्बमानं धत्ते वैधव्यमचिरेण ॥ ४६ ॥

अन्वयार्थौ-( परुषं रूक्षं चिपिटं मांसविरहितं स्फिग्युग्मं शुभं न ) खरदरे रूखे चिपटे मांसरहित जो कमरके दोनों ओरके पिंड होंय तो शुभ नहीं है और ( तदपि स्फिग्युग्मं विलम्बमानं भवति तर्हि अचिरेण वैधव्यं धत्ते ) जो वेही दोनों ओरके मांसके पिंड लम्बे और लटकते होवें हों तो शीघ्र ही विधवापनको करते हैं ॥ ४६ ॥

प्राक् सव्येन निषीदति पदेन या सा सुखं सदा लभते ।
या पुनरपसव्येन नियतं सा कष्टमेणाक्षी ॥ ४७ ॥

अन्वयार्थौ-( या एणाक्षी प्राक् सव्येन पदेन निषीदति सा सदा सुखं लभते ) जो स्त्री पहले बायें पगकरके बैठे सो सदा सुखको पाती है और ( या अपसव्येन निषीदति सा नियतं कष्टं लभते ) जो पहले दाहिनी पगसे बैठे सो निश्चयसे दुःखको पाती है ॥ ४७ ॥

## अथ भगलक्षणम् ।

अश्वत्थदलाकारः कुंभिस्कंधोपमो भगः पृथुलः ।
पूर्णेन्दुबिम्बतुल्यः कच्छपपृष्ठः शुभः सुदृशाम् ॥ ४८ ॥

अन्वयार्थौ-( अश्वत्थदलाकारः कुंभिस्कंधोपमः पृथुलः पूर्णेन्दुबिम्बतुल्यः कच्छपपृष्ठः एतादृशः सुदृशां भगः शुभः ) पीपलके पत्तेके आकार और हाथीके कंधेके तुल्य चौडी पूर्ण चन्द्रमाके बिम्बके तुल्य कछुवेकी पीठकीसी ऐसी स्त्रियोंकी योनि होय तो शुभ है ॥ ४८ ॥

स्निग्धो मृदुकृशरोमा मांसोपचितो भगो भवेद्यस्याः ।
सा पुत्रवती नियतं लभते रतिसौख्यसौभाग्यम् ॥ ४९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः भगः स्निग्धः मृदुकृशरोमा मांसोपचितः भवेत् ) जिस स्त्रीकी योनि अच्छी चिकनी नरम और थोडे हैं रोम जिसपर मांससे भरी हुई होय ( सा पुत्रवती नियतं वा रतिसौख्यसौभाग्यं लभते ) सो पुत्रवती निश्चय होय और रतिके सुख और सोभाग्यको पाती है ॥ ४९ ॥

नियतं भगोऽङ्गनायाः प्रसूयते दक्षिणोन्नतः पुत्रान् ।
वामोन्नतस्तु कन्या जगति समुद्रस्य वचनमिदम् ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः अङ्गनायाः भगः नियतं दक्षिणोन्नतः स्यात् सा पुत्रान् प्रसूयते ) जि स्त्रीकी योनि, दाहिनी ओरको ऊंची होय सो निश्चय पुत्रोंको उत्पन्न करे है और ( वामोन्नतः भगः कन्याः प्रसूयते ) जो बाँई ओरको योनि ऊंची हो तो कन्याओंको उत्पन्न करे ( जगति इदं समुद्रस्य वचनम् ) कोकमें यह समुद्रका वचन है ॥ ५० ॥

यस्याः स्याच्चतुरस्रा कच्छपपृष्ठोन्नता स्थिरा श्रोणी ।
सा वै प्रबलान्पुरुषान् रोहिणी भूरिव रमणी सूते ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः श्रोणी चतुरस्रा कच्छपपृष्ठोन्नता स्थिरा स्यात् ) जिस स्त्रीकी योनि चौकोन और कछुवेकी पीठके तुल्य उठी हुई कडी होय ( सा रमणी रोहिणी भूरिव वै प्रबलान् पुरुषान् सूते ) सो स्त्री रोहिणी और पृथ्वीकी भाँति प्रबल पुरुषोंको उत्पन्न करे है ॥ ५१ ॥



बहुलोर्द्ध्वकृष्णरोमा सुश्लिष्टः संहितो भगः शस्तः ।
गूढमणिश्चिंतामणिरिव भुवि विपुलं धनं तनुते ॥ ५२ ॥

अन्वयार्थौ-( बहुलोर्ध्वकृष्णरोमा सुश्लिष्टः संहितः गूढमणिः भगः शस्तः ) बहुत हैं ऊंचे काले रोम जिसपै और मिलीहुई अच्छी बनावटकी और छिपी है मणि कहिये टोटनी जिसकी ऐसी योनि अच्छी होती है ( सः भगः भुवि चिंतामणिरिव विपुलं धनं तनुते ) वही योनि पृथ्वीमें चिंतामणिकी भाँति बहुत धनको पैदा करती है ॥ ५२ ॥

विस्तीर्णोऽम्बुजवर्णो मृदुतनुरोमाल्पनासिकस्तुङ्गः ।
द्विरदस्कन्धसमः स्यात्स्त्रीणां षडमी भगाः सुभगाः ॥५३॥

अन्वयार्थौ-( विस्तीर्णः अम्बुजवर्णः मृदुतनुरोमा अल्पनासिकः तुङ्गः द्विरदस्कन्धसमः स्त्रीणाममी षट् भगाः सुभगाः ) चौडी, कमलके रंग, नरम और थोडे रोमवाली, छोटी नासिका जिसकी, ऊंची, हाथीके कंधेकी समान, स्त्रियोंकी ऐसी यह छः योनि अच्छी होती हैं ॥ ५३ ॥

रुचिरोऽत्युष्णः सुघनो गोजिह्वाकर्कशोऽथवा मृदुलः ।
अतिसंवृत्तसुगंधी सप्त भगा वर्द्धयंति रतिम् ॥ ५४ ॥

अन्वयार्थौ-(रुचिरः अत्युष्णः सुघनः गोजिह्वाकर्कशः मृदुलः अतिसंवृत्तः सुगंधिः एते सप्त भगा रतिं वर्द्धयंति ) अच्छी, बहुत गरम, कडी, गायकी जीभकीसी खरदरी, नरम, बहुत गोल, अच्छी गंधवाली-ये सात प्रकारकी योनि सुखभोगको बढाती हैं ॥ ५४ ॥

विस्पष्टस्थूलमणिः सङ्कीर्णः खर्पराकृतिः स्त्रीणाम् ।
खरकुटिलः खररोमा मांसविहीनो न शुभः ॥ ५५ ॥

अन्वयार्थौ-( विस्पष्टस्थूलमणिः संकीर्णः खर्पराकृतिः खरकुटिलः खररोमा मांसविहीनः स्त्रीणामीदृशो भगः न शुभः ) दीखे है मोटी मणि जिसमें, सँकडी, खपरेके आकार, खरदरी, टेढी, खरदरे मोटे बाल, मांसरहित सूखीसी ऐसी स्त्रियोंकी योनि शुभ नहीं है ॥ ५५ ॥

चुल्लीकोटरतुल्यस्तिलपुष्पनिभः कुरङ्गखुररूपः ।
विश्वप्रेष्यां निःस्वा त्रयो भगाः कुर्वते नूनम् ॥ ५६ ॥

अन्वयार्थौ-( चुल्लीकोटरतुल्यः तिलपुष्पनिभः कुरंगखुररूपः एते त्रयो भगाः नूनं विश्वप्रेष्यां निःस्वां प्रकुर्वते ) चुल्हेकी खोडरके तुल्य और तिलके फूलके तुल्य और हिरणकी खुरीके आकार ऐसी तीन प्रकारको योनि स्त्रीको निश्चय पूरी टहलनी चलनेवाली और दरिद्रिणी करती हैं ॥ ५६ ॥

विवृतमुखो नारीणामुलूखलाभो भगः सुदुर्गन्धः ।
कुञ्जररोमा सततं कुरुते दुःशैल्यदौर्भाग्यम् ॥ ५७ ॥

अन्वयार्थौ-( विवृतमुखः उलूखलाभः सुदुर्गन्धः कुञ्जररोमा एतादृशः नारीणां भगः सततं दुःशैल्यदौर्भाग्यं कुरुते ) खुले हुए मुखकी ओखलीसी बुरी गंधवाली हाथीकेसे रोम होंय तो ऐसी स्त्रियोंकी योनि निरंतर दुःख और अभाग्यको करै है ॥ ५७

श्रोणीबिम्बेनालं कीचकनवदलसमश्रिया नारी ।
सुखिता प्रायः प्रथमे पश्चात्सा दुःखिता भवति ॥ ५८ ॥

अन्वयार्थौ-( कीचकनवदलसमश्रिया श्रोणीबिम्बेन नारी प्रायः प्रथममलं सुखिता भवेत् सा पश्चाद्दुःखिता भवति ) बाँसके नवीन पत्तेकीसी है शोभा जिसकी ऐसी योनि करके स्त्री बहुधा पहले तो सुख पाती है और पीछे दुःखको प्राप्त होती है ॥ ५८ ॥

शंखावर्त्तसमाना श्रोणी प्रायः प्रजायते यस्याः ।
धारयति सा न गर्भं निषेव्यमाणा च दुःखकरा ॥ ५९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः श्रोणी शंखावर्त्तसमाना प्रायः प्रजायते सा गर्भं न धारयति ) जिस स्त्रीकी योनि शंखके आकार होय सो गर्भको नहीं धारण करै है और ( सा निषेव्यमाणा सती दुःखकरा भवेत् ) वह सेवन करी हुई भी दुःखको करनेवाली होती है ॥ ५९ ॥



वेतसपर्णसमानः सङ्कीर्णः श्रोणिबिम्ब इव यस्याः ।
असती सा न कदाचन कल्याणपरंपरा नियतम् ॥ ६० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः संकीर्णः श्रोणिबिम्बः वेतसपर्णसमान इवभवेत् ) जिस स्त्रीकी सँकडी योनि बेंतके पत्तेकी समान होय ( सा असती ) सो स्त्री अच्छी नहीं होगी और ( कदाचन नियतं कल्याणपरंपरा न ) कभी निश्चय करके भलाईकी करनेवाली नहीं है ॥ ६० ॥

तनुरेताः खररोमा संक्षिप्तो दीर्घनासिको विकटः ।
विवृतास्यो नारीणां जगति भगा दुर्भगा षडमी ॥ ६१ ॥

अन्वयार्थौ-( नारीणां जगति अमी षड् भगाः दुर्भगाः भवन्ति ) स्त्रियोंकी लोकमें ये छः प्रकारकी योनि बुरी होती हैं ( तनुरेताः खररोमा संक्षिप्तः दीर्घनासिकः विकटः विवृतास्यः न शस्तः ) थोडे वीर्यवाली खरदरे रोमवाली बहुत छोटी बडी नाकवाली और भयंकर खुलेमुखवाली ये अच्छी नहीं हैं ॥ ६१ ॥

वलिसहितोद्भवसहितौ प्रलम्बमानोऽथ शीतलः शिथिलः ।
नीचमुखोऽप्यथ पृथुलः सतामी रतिषु दुःखकृतः ॥ ६२ ॥

अन्वयार्थौ-( वलिसहितः उद्भवसहितः प्रलम्बमानः शीतलः शिथिलः नीचमुखः पृथुलः रतिषु अमी सप्त भगाः दुःखकृतो भवन्ति ) सलवटेंवाली कुछ दिनोंके गर्भवाली लंबी ठंडी पिलपिली लटकीहुई ढीली चौडी मोटी भोगमें ये ७ प्रकारकी योनि दुःखके करनेवाली हैं ॥ ६२ ॥

जघने भगस्य भालं विस्तीर्णं मांसलं समुत्तुङ्गम् ।
तनुकृष्णमृदुलरोम प्रदक्षिणावर्त्तमिह शस्तम् ॥ ६३ ॥

अन्वयार्थौ-( इह जघने भगस्य भालमेतादृशं शस्तम् । विस्तीर्णम् मांसलम् समुत्तुंगम् तनुकृष्णमृदुलरोम प्रदक्षिणावर्त्तम् ) इस लोकमें पेडूके ऊपरी भागकी जो भग है उसका जो भाल ऐसा होय तो अच्छा है लंबा,

चौडा, मांसका भरा गुदगुदा, ऊंचा थोडे काले नरम रोमोंसहित दाहिनी ओरको झुकाहुआ ऐसा भगका भाल अच्छा है ॥ ६३ ॥

विषमं वामावर्तं निर्मांसं सङ्कटं खरं विनतम् ।
भवति तदेव स्त्रीणां वैधव्यविधायकं प्रायः ॥ ६४ ॥

अन्वयार्थौ—( स्त्रीणां तदेव भगस्य भालं विषमं वामावर्त्तं निर्मांसं संकटं खरं विनतं चेत् प्रायः तत् वैधव्यविधायकं भवति ) स्त्रियोंका सोई भगका भाल ऊंचा नीचा बाईं ओरको झुका हुआ, मांसरहित सुकडाहुवा खरदरा झुकाहुवा होय तो बहुधा विधवापनको करनेवाला होता है ॥ ६४ ॥

## अथ बस्तिकथनम् ।

विपुला बस्तिः शस्ता युवतीनामीषदुन्नता मृद्वी ।
अभ्युन्नता शराभा लेखा यदि रोमशा न शुभा ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ—( युवतीनां बस्तिः विपुला ईषत् उन्नता मृद्वी शस्ता ) स्त्रियोंका पेड बडा चौडा थोडा ऊंचा नरम होय तो अच्छा है और ( यदि अभ्युन्नता शराभा रोमशा लेखा न शुभा ) जो बहुत ऊँचा, तीरके तुल्य बहुत रोमोंकी धारी होय तो शुभ नहीं है ॥ ६५ ॥

इति तृतीयदशी पूर्णा ॥

## अथ नाभिशुभाशुभलक्षणम् ।

नाभिः शुभा गभीरा सुदृशां वृत्ता प्रदक्षिणावर्ता ।
स्मरनृपमुद्रेवोपरि रतिमणिकोशस्य रमणस्य ॥ ६६ ॥

अन्वयार्थौ—(सुदृशां वृत्ता नाभिः गभीरा प्रदक्षिणावर्ता शुभा) स्त्रियोंकी गोल टूंडी गहरी दाहिनी ओर झुकीहुई शुभ है और ( रतिमणिकोशस्य रमणस्य उपरि स्मरनृपमुद्रा इव ) रतिके मणिके खजानेके ऊपर पतिकी कामदेव राजाने कीहुई मानो मुहर अर्थात् छाप है ॥ ६६ ॥



यस्या विस्तीर्णास्या नवपङ्कजकर्णिकाकृतिर्नाभिः ।
सा स्फुटसौभाग्यधनं लभते सुखसंपदां सपदि ॥ ६७ ॥

अन्वयार्थौ—( यस्याः नाभिः विस्तीर्णास्या स्फुटनवपङ्कजकर्णिकाकृतिः स्यात् ) जिस स्त्रीकी नाभि बहुत लम्बी चौडी है मुख जिसका प्रकट नये कमलकासा है भीतरी अंकडेदार ऐसा आकार जिसका होय ( सा स्त्री सपदि सुखसंपदां सौभाग्यधनं लभते ) सो स्त्री शीघ्रही संपूर्ण सुखसंपत्तियोंको धन सौभाग्यको पावे ॥ ६७ ॥

नाभिर्गभीरविवरा तरुणजनमनोहरा भवति यस्याः ।
सा जायते मृगाक्षी नियतं पुरुषप्रिया प्रायः ॥ ६८ ॥

अन्वयार्थौ—( यस्या नाभिः गभीरविवरा तरुणजनमनोहरा भवति ) जिस स्त्रीकी टूँडी गहरी अच्छी और तरुणजनोंके मनको हरनेवाली होय ( सा मृगाक्षी प्रायः नियतं पुरुषप्रिया जायते ) सो स्त्री बहुधा निश्चय करके पतिकी प्यारी होती है ॥ ६८ ॥

वामावर्ता यस्या व्यक्ता ग्रंथिर्भवेत् समुत्ताना ।
सा दुर्भगा पुरंध्री विगर्हिता स्यात्परप्रेष्या ॥ ६९ ॥

अन्वयार्थौ—( यस्याः वामावर्ता व्यक्ता ग्रंथिः समुत्ताना भवेत् ) जिस स्त्रीकी टूंडीकी गांठि अर्थात् टूंड बांई ओरको झुकीहुई प्रकट ऊँची गाँठि होय तो ( सा पुरंध्री विगर्हिता परप्रेष्या तथा दुर्भगा भवति ) सो स्त्री निंदा करने योग्य बुरी और दूसरोंकी टहलनी बुरी सूरतवाली होती है ॥ ६९ ॥

इति नाभिकटिचतुर्दशी पूर्णा ॥

## अथ कुक्षिः ।

घनतनया जायन्ते सुकुमारैः कुक्षिभिः पृथुभिः ।
मण्डूककुक्षिरबला धन्या नृपतिं सुतं सूते ॥ ७० ॥

अन्वयार्थौ -( सुकुमारैः पृथुभिः कुक्षिभिः घनतनया जायन्ते ) अच्छी

गुलगुली नरम लंबी चौडी कोखों करके बहुत पुत्र होते हैं और ( मंडूककुक्षिः अबला धन्या तथा नृपतिं सुतं सूते ) मेंढककीसी कोखसे स्त्री धन्य है और राजा पुत्रको उत्पन्न करती है ॥ ७० ॥

वन्ध्या भवन्ति वनिताः कुक्षिभिरत्युन्नतैर्वलिभिः ।
रोमावर्तयुतैस्ताः प्रव्रजिताः पांसुला दास्यः ॥ ७१ ॥

अन्वयार्थौ–( वलिभिर्युतैः अत्युन्नतैः कुक्षिभिः वनिताः वंध्या भवन्ति ) सलवटोंकरके युक्त और बहुत ऊँची कोखोंकरके स्त्रियां बांझ होती हैं और ( रोमावर्त्तयुतैः कुक्षिभिः ताः वनिताः प्रव्रजिताः पांसुलाः दास्यो भवंति ) रोमोंकी भौंरी अर्थात् चक्ककरिके युक्त कोखें होंय तो वेही स्त्रियां वरागिणी व्यभिचारिणी और दासी होती हैं ॥ ७१ ॥

## अथ पार्श्वलक्षणम् ।

मग्नास्थिभिः समांसैः पार्श्वैर्मृदुभिः समैर्मृजावद्भिः ।
या स्यादेभिः सहिता सुभगा सा जायते नियतम् ॥ ७२ ॥

अन्वयार्थौ–( मग्नास्थिभिः समांसैः मृदुभिः समैः मृजावद्भिः ) गडेहुए हैं हाड मांसमें जिसके मुलायम और बराबर, उजले ( या स्त्री एतादृशैः पार्श्वैः सहिता स्यात् सा नियतं सुभगा जायते ) जो स्त्री ऐसे पाँसुओंसहित होय सो निश्चय करके सौभाग्यवती होती है ॥ ७२ ॥

यस्याः सशिरे पार्श्वे समुन्नते रोमसंयुते परुषे ।
सा निरपत्या रमणी भवति प्रायेण दुःशीला ॥ ७३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः पार्श्वे सशिरे समुन्नते रोमसंयुते परुषे भवतः ) जिस स्त्रीकी पांसू नसोंसहित और ऊँची, रोमसहित खरदरी होंय ( सा रमणी निरपत्या प्रायेण दुःशीला भवति ) सो स्त्री संतानरहित बहुधा खोटे स्वभाववाली होती है ॥ ७३ ॥



## अथोदरलक्षणम् ।

उदरेण मार्दववता तनुत्वचा पीननाभिसहितेन ।
रोमरहितेन नारी नराधिपतिवल्लभा भवति ॥ ७४ ॥

अन्वयार्थौ–( मार्दववता तनुत्वचा पीननाभिसहितेन रोमरहितेन उदरेण नारी नराधिपतिवल्लभा भवति ) जिसके पेटमें मुलायमी और पतली खाल अच्छी टूँडीसहित, बिना रोमोंके ऐसे उदरकरके स्त्री राजाकी वल्लभा अर्थात् प्यारी होती है ॥ ७४ ॥

तुच्छं दुर्जनमानसमिव जठरं भवति भूपपत्नीनाम् ।
जनहर्षोत्कर्षकरं सज्जनचेष्टितमिव मनोज्ञम् ॥ ७५ ॥

अन्वयार्थौ–( भूपपत्नीनां जठरं दुर्जनमानसमिव तुच्छं भवति ) राजाकी रानीका पेट खोटे मनुष्योंके चित्तकी भाँति हलका होता है और ( जनहर्षोत्कर्षकरं सज्जनचेष्टितमिव मनोज्ञं भवति ) मनुष्योंको हर्ष करनेवाला और अच्छे पुरुषोंकी चेष्टाकी भाँति सुन्दर होता है ॥ ७५ ॥

कुम्भाकारं जठरं निर्मांसं वा शिरायुतं यस्याः ।
अतिदुःखिता क्षुधार्ता सा नारी जायते प्रायः ॥ ७६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः जठरं कुंभाकारं निर्मांसं वा शिरायुतं भवति ) जिस स्त्रीका उदर घडेके आकार बिना मांस वा नसोंकरके युक्त होय ( सा नारी प्रायः क्षुधार्ता अतिदुःखिता भवति ) सो स्त्री बहुधा भूँखी और अतिदुःखी होती है ॥ ७६ ॥

कूष्माण्डफलाकारैरुदरैः पणवोपमैर्मृदङ्गाभैः ।
यवतुल्यैर्दुःशीलाः क्लेशायासं स्त्रियो यान्ति ॥ ७७ ॥

अन्वयार्थौ–( स्त्रियः कूष्माण्डफलाकारैः पणवोपमैः मृदंगाभैः यवतुल्यै-रुदरैः दुःशीलाः भवंति तथा क्लेशायासं यान्ति ) स्त्री जे हैं ते कुम्हडाके फलके आकार, तबला और मृदंगके तुल्य और जौके समान उदर करके खोटे आचरणकी होती हैं और क्लेश वा परिश्रमको पाती हैं ॥ ७७ ॥

भवति प्रलम्बमुदरं यस्याः सा श्वशुरमाहन्ति ।
यस्याः पुनर्विशालं चिरतनया दुर्भगा सापि ॥ ७८ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः उदरं प्रलम्बं भवति सा श्वशुरम् आहंति ) जिस स्त्रीका उदर लम्बा होय तो श्वशुरको मारती है और ( यस्याः उदरं विशालं भवति सा चिरतनया भवति ) जिस स्त्रीका उदर लंबा चौड़ा होय सो बहुत देरमें संतानवाली होती है और ( सा दुर्भगा अपि भवति ) सोई खोटी बुरी होती है ॥ ७८ ॥

असमपयोधरभाराक्रान्तेव सुबन्धुरं मध्यम् ।
मुष्टिग्राह्यं यस्याः सा सौभाग्यश्रियं श्रयते ॥ ७९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः मध्यं मुष्टिग्राह्यं सुबंधुरं भवति, असमपयोधरभाराक्रांता इव सा सौभाग्यश्रियं श्रयते ) जिस स्त्रीका मध्यस्थल मुट्ठीमें आजाय ऐसा छोटा सुन्दर होय सो स्त्री भारी कुचोंके बोझसे मानों दबी हुई सौभाग्यकी शोभा लक्ष्मीको पाती है ॥७९ ॥

## अथ वलिरोमराजिकथनम् ।

सुभगानां वै वलयं वलित्रयेणान्वितं समग्रेण ।
नाभीलावण्याब्धेरुत्कलिकां भूमिकां वहते ॥ ८० ॥

अन्वयार्थौ-(वै इति निश्चये,सुभगानां वलयं समग्रेण वलित्रयेण अन्वितं भवति ) निश्चय करके सौभाग्यवती स्त्रियोंका मध्यस्थल संपूर्ण तीन सलवटों करके युक्त होय तो ( नाभीलावण्याब्धेः उत्कलिकां भूमिकां वहते ) नाभीकी शोभाके समुद्रकीसी है लहरी जिसमें ऐसी पृथ्वीको धारण करतीहै॥ ८० ॥

रोमलता तनुऋज्वी हृदयांतादुत्थिता शुभा श्यामा ।
विशतीव नाभिकुहरे मुखेन्दुभीता तिमिररेखा ॥ ८१ ॥

अन्वयार्थौ-( हृदयांतात् उत्थिता तनुऋज्वी रोमलता श्यामा शुभा ) छातीके अंतसे उत्पन्न हुई जो पतली सीधी रोमोंकी बेली काली शुभ है



( का इव ? मुखेन्दुभीता तिमिररेखा नाभिकुहरे विशति इव ) मुखचन्द्रमासे डरी जैसे अँधेरेकी रेखा मानों टूंडीके बुलेमें घुसी जाती है ॥ ८१ ॥

कुटिला स्थूला कपिला व्युच्छिन्ना रोमवल्लरी यस्याः ।
विधवात्वं दौर्भाग्यं लभते प्रायेण सा रमणी ॥ ८२ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः रोमवल्लरी कुटिला स्थूला कपिला विच्छिन्ना भवति ) जिस स्त्रीकी रोमोंकी बेली टेढी मोटी कुछ कबरी कई रंगकी, बीचमें टूटी होय तो (सा रमणी प्रायेण विधवात्वं दौर्भाग्यं च लभते ) सो स्त्री बहुधाकरके विधवापन और अभाग्यको पाती है ॥ ८२ ॥

## अथ हृदयम् ।

निर्लोम व्रणरहितं हृदयं यस्याः समं मनोहारि ।
ऐश्वर्यमवैधव्यं पतिप्रियत्वं भवति तस्याः ॥ ८३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः हृदयं निर्लोम व्रणरहितं समं मनोहारि स्यात् ) जिस स्त्रीका हृदय विना रोमोंके हो और किसी प्रकारका दाग अर्थात् फोडा फुन्सी नहीं होय और बराबर मनका हरनेवाला होय ( तस्याः ऐश्वर्यम् अवैधव्यं पतिप्रियत्वं भवति ) तिस स्त्रीका सब प्रकारके आनंदका ठाठ और सौभाग्यपन तथा पतिकी प्यारी होती है ॥ ८३ ॥

उद्भिन्नरोमकीर्णं विस्तीर्णं हृदयमिह भवेद्यस्याः ।
सा प्रथमं भर्तारं हत्वा वेश्यात्वमुपयाति ॥ ८४ ॥

अन्वयार्थौ-( इह यस्याः हृदयम् उद्भिन्नरोमकीर्णं विस्तीर्णं भवेत् ) इस लोकमें जिस स्त्रीका हृदय फटा टूटा बहुत रोमयुक्त और बहुत लंबा चौडा होय ( सा प्रथमं भर्तारं हत्वा वेश्यात्वम् उपयाति ) सो स्त्री पहले पतिको मारिके वेश्यापनको पाती है अर्थात् वेश्या होकर चली जाती है ॥ ८४ ॥

पिशितविवर्जितमुन्नतविनतं हृदयं व्रणान्वितं विषमम् ।
कर्मकरात्वं तनुते वनितानां तत्क्षणादेव ॥ ८५ ॥

अन्वयार्थौ-(यस्याः हृदयं पिशितविवर्जितम् उन्नतं विनतं व्रणा-

न्वितं विषमं भवेत् ) जिस स्त्रीका हृदय मांसरहित ऊंचा झुका हुवा और फोडा फुन्सी आदि चिह्नयुक्त ऊँचा नीचा होय तो ( वनितानां मध्ये तत् हृदयं कर्मकरात्वं तत्क्षणादेव तनुते ) स्त्रियोंके बीचमें वह हृदय दासीपनको शीघ्रही करे है ॥ ८५ ॥

## अथोरःस्थलम् ।

पीवरमुन्नतमायतमुरो यदि न मृदु न च कठिनं विशिरम् ॥
अष्टादशांगुलमितं रोमविहीनं शुभं स्त्रीणाम् ॥ ८६ ॥

अन्वयार्थौ–( स्त्रीणाम् उरः पीवरम् उन्नतम् आयतं न मृदु न च कठिनं विशिरम् अष्टादशांगुलमितं रोमविहीनं शुभं भवति ) स्त्रियोंकी छातीकी जगह मांससे भरी हुई, ऊँची, लम्बी, चौडी न नरम न कडी और नसें न दीखती होंय, अठारह अंगुलके प्रमाण विना रोमोंके शुभ होती है ॥८६॥

विषमेण भवति हिंस्रा निर्मांसेनोरसा भवति विधवा ।
अतिपृथुना प्रियकलहा दुःशीला रोमशेनापि ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौ–( विषमेण उरसा नारी हिंस्रा भवति ) ऊंची नीची छाती करिके स्त्री हिंसा करनेवाली होती है और ( निर्मांसेन उरसा नारी विधवा भवति ) विना मांसकी छातीसे स्त्री विधवा होती है और ( अतिपृथुना उरसा नारी प्रियकलहा भवति ) बहुत चौडी छातीसे स्त्री कलहकी प्यारी होती है और ( रोमशेन उरसा नारी अपि दुःशीला भवति ) रोमोंवाली छातीसे स्त्री खोटे स्वभाववाली होती है ॥ ८७ ॥

## अथ स्तनौ ।

शस्तौ वृत्तौ सुदृढौ पीनौ कठिनौ घनौ स्तनौ सुदृशाम् ।
स्नानाय स्मरनृपतेः काञ्चनकलशाविव प्रगुणौ ॥ ८८ ॥

अन्वयार्थौ–( सुदृशां स्तनौ वृत्तौ सुदृढौ पीनौ कठिनौ घनौ शस्तौ भवतः ) स्त्रियोंके कुच गोल अच्छे कडे मांसके भरे बहुत अच्छे होते हैं



कौ इव ? स्मरनृपतेः स्नानाय प्रगुणौ काञ्चनकलशौ इव ) कैसे कि मानो कामदेव राजाके स्नानके अर्थ सुन्दर सोनेके वे कलशे हैं ॥ ८८ ॥

सुखसौभाग्यनिधानं समुन्नतं स्तनयुगं समं कान्तम् ।
धत्ते सुवर्णवनिता कुम्भं रुचिरं स्मरेभस्य ॥ ८९ ॥

अन्वयार्थौ–( सुवर्णवनिता समुन्नतं समं कान्तं सुखसौभाग्यनिधानम् रुचिरं स्तनयुगं स्मरेभस्य कुम्भम् इव धत्ते ) जिस स्त्रीके दोनों कुच ऊंचे बराबर, सुन्दर सुखसौभाग्यके निधानकहिये स्थान हैं वह सुन्दर रंगकी स्त्री मानो कामदेव हाथीके कुम्भ ( गण्डस्थल ) को धारण करती है ॥८९॥

पुत्रः प्रथमे गर्भे पयोधरे दक्षिणोन्नते स्त्रीणाम् ।
वामोन्नतेन पुत्री निरपत्यं चैव विषमेण ॥ ९० ॥

अन्वयार्थौ–( स्त्रीणां दक्षिणोन्नते पयोधरे प्रथमे गर्भे पुत्रो भवति ) स्त्रियोंके दाहिनी ओरको झुकेहुए कुचोंसे पहिले गर्भसे पुत्र होता है और वामोन्नतेन पयोधरेण प्रथमं पुत्री भवति ) बांई ओरको झुके हुए कुचोंसे पहिले गर्भसे पुत्री होती है और ( विषमेण पयोधरेण एव निरपत्यं भवति ) ऊंचे नीचे कुचोंसे वह विना संतानकी होती है ॥ ९० ॥

शुष्के विहीनमध्ये स्थूलाग्रे स्तनयुगेऽङ्गना नैःस्व्यम् ।
लभते विरले तस्मिन्वैधव्यं पुत्रनाशं च ॥ ९१ ॥

अन्वयार्थौ–( अंगना शुष्के विहीनमध्ये स्थूलाग्रे स्तनयुगेसति नैःस्व्यं लभते ) स्त्रीके सूखे, बीचमें ऊंचे नीचे मोटे हैं आगेके भाग जिसके ऐसे दोनों कुचोंके होनेसे दरिद्रताको पावै है और ( तस्मिन् स्तनयुगे विरले सति वैधव्यं च पुनः पुत्रनाशं लभते ) वेही दोनों कुचोंके बहुत दूर होनेसे विधवापन और पुत्रके नाशको पावै है ॥ ९१ ॥

कुरुते वक्षोजद्वयमरघटघटीसदृशं पुरंध्रीणाम् ।
सततं पूर्वसुखं तत्पश्चादत्यर्थदुःखकरम् ॥ ९२ ॥

अन्वयार्थौ–( पुरंध्रीणां वक्षोजद्वयम् अरघटघटीसदृशं चेद् भवति ) स्त्रियोंके जो दोनों कुच रहँटके घडियेकी तुल्य होंय तो ( सततं पूर्वसुखं

कुरुते ) निरंतर पहले सुखको करते हैं और पश्चात् ( अतिदुःखकर भवति ) पीछे बहुत दुःखके करनेवाले होते हैं ॥ ९२ ॥

अतिनिविडं कुचयुगलं यद्योषायाः पथि प्रयांत्या हि ।
सौख्यं सारसवदना सौभाग्यं हन्ति शस्तकरम् ॥ ९३ ॥

अन्वयार्थौ-( पथि प्रयान्त्याः योषायाः यत् कुचयुगलम् अतिनिविडं स्यात् तत् सारसवदना सौख्यं शस्तकरं च पुनःसौभाग्यं हंति ) मार्गमें चलती हुई स्त्रीके दोनों कुच जो मिल जायँ तो कमलवदना जो स्त्री है उसका जो कल्याणकारी सुख और सौभाग्य है तिसको फिर नाश करे है ॥ ९३ ॥

सुदृशांचूचुकयुग्मं शस्तं श्यामं सुवृत्तमतिपीनम् ।
स्मरनृपतेर्मुद्रेयं रतिसुखनिधिकोशभवनस्य ॥ ९४ ॥

अन्वयार्थौ-( सुदृशां चूचुकयुग्मं श्यामं सुवृत्तम् अतिपीनं शस्तं स्मरनृपतेः रतिसुखनिधिकोशभवनस्य इयं मुद्रा ) स्त्रियोंके दोनों कुचोंकी टेटनी साँवरी, गोल और बहुत मोटी मांससे भरी हुई अच्छी होती हैं और कामदेव राजाके क्या हैं मानो रतिसुखनिधिकोषके घरकी यह मुहर अर्थात् छाप है ॥ ९४ ॥

दीर्घं चूचुकयुग्मं यस्याः सा प्रियरतिर्भवेन्नूनम् ।
धूर्ता चान्तर्मनसा तेनैव द्वेष्टि सा मनुजम् ॥ ९५ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः चुचुकयुग्मं दीर्घं भवति सा नूनं प्रियरतिर्भवेत् ) जिस स्त्रीके कुचोंकी दोनों नोकें बहुत लंबी होंय, सो स्त्री निश्चयसे रतिमें सुख वा प्यार करनेवाली होती है और ( पुनः अन्तर्मनसा धूर्त्ता सा तेनैव मनुजं द्वेष्टि ) फिर वेही कुचोंकी नोकोंसे भीतरे मनसे धूर्त्त और छलसे उसी मनुष्यसे वैर करती है ॥ ९५ ॥

बहिरवनतेन चूचुकयुगलेनातीव सूक्ष्मविषमेण ।
संप्राप्य महद्दुःखं दुःशीला जायते योषित् ॥ ९६ ॥

अन्वयार्थौ-( बहिरवनतेन अतीव सूक्ष्मविषमेण चूचुकयुगलेन योषित् महद् दुःखं संप्राप्य पुनः दुःशीला जायते ) बाहरकी ओर झुके हुए और बहुत छोटे पतले ऊंचे नीचे कुचोंकी दोनों नोंकोंसे स्त्री बडे दुःखको पाकर फिर व्यभिचारिणी होती है ॥ ९६ ॥

इति स्तनषष्ठदशी सम्पूर्णा ॥

## अथ जत्रुकथनम् ।

जत्रुभ्यां पीनाभ्यां धनधान्यसुतान्विता भवेद्वनिता ।
उन्नतिसंहतिमद्भ्यां पुनरेषा भूरिभोगाढ्या ॥ ९७ ॥

अन्वयार्थौ-( एषा वनिता पीनाभ्यां जत्रुभ्याम् उन्नतिसंहतिमद्भ्यां धनधान्यसुतान्विता पुनः भूरिभोगाढ्या भवति ) जो स्त्री ऊंचे मांसके भरे अच्छे बनावटके कंधोंके जोडोंसे युक्त हो वह धन धान्यवती और बहुत भोग करिके युक्त अर्थात् भोगवती होती है ॥ ९७ ॥

श्लथकीकससंधिमता निम्नेन द्रविणलेशपरिहीना ॥
जत्रुयुगलेन योषिद्विषमेण पुनर्भवति विषमा ॥ ९८ ॥

अन्वयार्थौ-( श्लथकीकससंधिमता निम्नेन जत्रुयुगलेन योषित् द्रविणलेशपरिहीना भवति ) ढीले हाडोंकी संधिवाले नीचे ऐसे कंधोंके जोडोंसे स्त्री थोडेसे धन करिके भी हीन होती है और ( पुनः विषमेण जत्रुयुगलेन योषित् विषमा भवति ) फिर ऊंचे नीचे कंधोंके जोडों करके स्त्री नटखट खोटी होती है ॥ ९८ ॥

वंध्या वनिता यस्याः स्कंधयुगं किंचिदुन्नतं मूले ।
नातिकृशपीनदीर्घं सुखसौभाग्यप्रदं सुदृशाम् ॥ ९९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः स्कंधयुगं मूले किंचित् उन्नतं सा वनिता वंध्या भवति ) जिस स्त्रीके दोनों कन्धे जडमें कुछ ऊंचे होंय सो स्त्री बांझ होती है और ( सुदृशां नातिकृशपीनदीर्घं स्कंधयुगं सुखसौभाग्यप्रदं भवति ) स्त्रियोंके न तो बहुत पतले, न मोटे, न लम्बे दोनों कंधे हों तो सुख सौभाग्यके देनेवाले होते हैं ॥ ९९ ॥

उर्द्धस्कंधा कुलटा स्थूलस्कंधापि भारवहनपरा ।
चक्रस्कंधा वंध्या दुःखवती रोमशस्कंधा ॥ १०० ॥

अन्वयार्थौ–( ऊर्ध्वस्कंधा वनिता कुलटा भवेत् ) ऊंचे कन्धोंवाली स्त्री खोटी होती है और ( स्थूलस्कन्धा वनिता भारवहनपरा अपि भवेत् ) मोटे स्कंधोंवाली स्त्री बोझ ढोनेवाली होती है और ( चक्रस्कंधा वनिता वंध्या भवेत् ) चक्रवाले कंधोंसे स्त्री बांझ होती है ( रोमशस्कंधा वनिता दुःखवती भवेत् ) बहुत रोमवाले कंधोंसे स्त्री दुःख पानेवाली होती है ॥ १०० ॥

## अथांसकथनम् ।

निर्गूढसंधिवन्धौ सुसंहतौ पिशितसंयुतौ शस्तौ ।
अंसौ स्यातां यस्याः सा नारी भूरिसौभाग्या ॥ १०१ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः अंसौ निर्गूढसंधिबंधौ सुसंहतौ पिशितसंयुतौ शस्तौ भवतः ) जिस स्त्रीके कंधे छिपे हैं जोडोंके बन्ध जिसके और खूब जोडोंसे बंधेहुए मांससे भरे हुए हों ( सा नारी भूरिसौभाग्या भवति ) सोई स्त्री बडी सौभाग्यवती अर्थात् पतिकी प्यारी होती है ॥ १०१ ॥

सुदृशां नीचौ स्कंधौ दौर्भाग्यसमन्वितौ च भवतो वै ।
अत्युच्चैर्वैधव्यं निर्मांसैर्दुःखदारिद्र्यम् । ॥ १०२ ॥

अन्वयार्थौ–( सुदृशां नीचौ स्कन्धौ वै इति निश्चयेन दौर्भाग्यसमन्वितौ भवतः ) स्त्रियोंके नीचे कंधे होंय तो निश्चय करके दौर्भाग्ययुक्त होते हैं और ( अत्युच्चैः स्कंधैः वैधव्यं स्यात् ) बहुत ऊंचे होंय तो विधवापन होय और ( निर्मांसैः स्कंधैः दुःखदारिद्र्यं भवति ) मांसरहित कंधोंसे स्त्री दुःखी और दरिद्रिणी होती है ॥ १०२ ॥

## अथ कक्षाकथनम् ।

कक्षायुगं सुगन्धि स्निग्धं च समुन्नतं पिशितपूर्णम् ।
तनुमृदुलरोमसहितं प्रशस्यते प्रायशः सुदृशाम् ॥ १०३ ॥



अन्वयार्थौ–( सुदृशां कक्षायुगं सुगन्धि स्निग्धं समुन्नतं पिशितपूर्णं तनुमृदुलरोमसहितं प्रायशः प्रशस्यते ) स्त्रियोंकी दोनों काँखें सुगंधित और अच्छी चिकनी ऊंची मांससे भरीहुई, पतले और मुलायम रोमोंकरिके युक्त बहुधा बडाईके योग्य होती हैं ॥ १०३ ॥

अतिनिम्ने निर्मांसे प्रस्वेदमलान्विते शिराकीर्णे ।
सोलूखलबहुरोमे कक्षे दौर्भाग्यमावहतः ॥ १०४ ॥

अन्वयार्थौ–( अतिनिम्नेनिर्मांसे प्रस्वेदमलान्विते शिराकीर्णे सोलूखलबहुरोमे कक्षे दौर्भाग्यम् आवहतः ) बहुत नीचे, विना मांसके, पसीने और मलकरके युक्त, नसें जिसमें चमकती हों सो ओखलीकी भाँति बहुत रोमवाली ऐसी कांखें अभाग्यको करती हैं ॥ १०४ ॥

इति सप्तदशीपूर्णा ॥

---

## अथ बाहुलक्षणम् ।

शस्तौ बाहू सुदृशां शिरीषतरुपुष्पकोमलौ दीर्घौ ।
मानुषकुरङ्गहेतोः पाशाविव पुष्पचापस्य ॥ १०५ ॥

अन्वयार्थौ–( सुदृशां बाहू शिरीषतरुपुष्पकोमलौ दीर्घौ शस्तौ भवतः ) स्त्रियोंकी दोनों भुजा शिरसके फूलकी समान कोमल और बडी लंबी होंय तो श्रेष्ठ होती हैं ( कौ इव ? मानुषकुरङ्गहेतोः पुष्पचापस्य पाशौ इव ) मानो क्या है कि मनुष्य हरिणके हेतु कामदेवकी यह फाँसी है ॥ १०५ ॥

निर्लोम बाहुयुगलं गूढास्थिग्रन्थि करिकराकारम् ।
विश्लिष्टशिरासन्धि स्त्रीणां सौभाग्यमधिशेते ॥ १०६ ॥

अन्वयार्थौ–( स्त्रीणां बाहुयुगलं निर्लोम गूढास्थिग्रंथि करिकराकारं विश्लिष्टशिरासंधि सौभाग्यम् अधिशेते ) स्त्रियोंकी दोनों भुजा विना रोमोंके और छिपी है हाडकी गाँठि जिनकी, हाथीकी सूंडके आकार नसोंके जोड जिनमें न दीखें ऐसी भुजाओंसे सौभाग्य होता है ॥ १०६ ॥

वैधव्यं वनितानां बाहुभ्यां स्थूलरोमशाभ्यां स्यात् ।
दौर्भाग्यं ह्रस्वाभ्यां शिरायुताभ्यां परिक्लेशः ॥ १०७ ॥

अन्वयार्थौ-( स्थूलरोमशाभ्यां बाहुभ्यां वनितानां वैधव्यं स्यात् ) मोटे रोमों करके युक्त भुजा स्त्रियोंकी होय तो विधवा होय और ( ह्रस्वाभ्यां बाहुभ्यां वनितानां दौर्भाग्यं स्यात् ) छोटी भुजाओंसे स्त्रियां खोटे भाग्यकी होती हैं और ( शिरायुताभ्यां बाहुभ्यां परिक्लेशः स्यात् ) नसों करके युक्त भुजाओंसे स्त्रियोंको दुःख होता है ॥ १०७ ॥

अम्भोजगर्भसुभगं मृदु नवसहकारकिसलयाकारम् ।
तनु विप्रकृष्टसर्वांगुलिकं पाणिद्वयं शस्तम् ॥ १०८ ॥

अन्वयार्थौ-( अंभोजगर्भसुभगं मृदु नवसहकारकिसलयाकारं तनु विप्रकृष्टसर्वांगुलिकम् एतादृशं पाणिद्वयं शस्तम् ) कमलके पुष्पके गर्भके समान सुन्दर मुलायम, नये आमकी कोंपलोंके तुल्य पतली जुदी जुदी सब अंगुली जिसमें ऐसे दोनों हाथ श्रेष्ठ अर्थात् अच्छे होते हैं ॥ १०८ ॥

रोमशिरापरिहीनं घनमांसं पाणितलयुगं स्निग्धम् ।
बहुशुभमुन्नतनिम्नं रूक्षं खरं क्लेशदं भवति ॥ १०९ ॥

अन्वयार्थौ-( रोमशिरापरिहीनं घनमांसं स्निग्धं पाणितलयुगं बहुशुभं भवति ) रोम और नसों करिके हीन बहुत मांसवाली चिकनी ऐसी दोनों हथेली बहुत शुभ होती हैं और ( उन्नतनिम्नं रूक्षं खरं पाणितलयुगं क्लेशदं भवति ) ऊंची नीची गहरी रूखी खरदरी होय तो ऐसी दोनों हथेली दुःखके देनेवाली होती हैं ॥ १०९ ॥

यस्याः पाणितलं स्याद्बहुरेखं सा निहन्ति भर्तारम् ।
दौर्भाग्यं चेन्नियतं रेखारहितं पुनस्तनुते ॥ ११० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः पाणितलं बहुरेखं स्यात् सा भर्तारं निहन्ति) जिस स्त्रीकी हथेलीपै बहुत रेखा होय सो स्त्री पतिको मारती है और ( पुनः रेखारहितं पाणितलं चेत् नियतं दौर्भाग्यं तनुते ) फिर विना रेखाकी हथेली नियतरूपसे खोटाभाग्य करै है ॥ ११० ॥



नरलक्षणाधिकारे नारीणामप्यशेषमेवोक्तम् ।
कररेखालक्ष्म पुनः किंचित्प्रस्तावतो वक्ष्ये ॥ १११ ॥

अन्वयार्थौ-(नरलक्षणाधिकारे नारीणाम् अपि अशेषं लक्षणम् उक्तं पुनः कररेखालक्ष्म किंचित् प्रस्तावतः वक्ष्ये ) पुरुषके अधिकारमें स्त्रियोंकेभी संपूर्ण हाथकी रेखाओंके लक्षण कहे फिर कुछ प्रसंगसे कहता हूं ॥ १११ ॥

रक्ताः व्यक्ताः स्निग्धा गम्भीरा वर्तुलाः समाः पूर्णाः ।
रेखास्तिस्रः स्त्रीणां पाणितले सौख्यलाभाय ॥ ११२ ॥

अन्वयार्थौ-( रक्ताः व्यक्ताः स्निग्धाः गंभीराः वर्तुलाः समाः पूर्णाः स्त्रीणां पाणितले तिस्रो रेखाः सौख्यलाभाय भवंति ) लाल, अच्छी प्रकट, चिकनी, गहरी, गोल बराबर, पूरी स्त्रियोंकी हथेलीसें तीन रेखा जो दीखती हों, तो सुखलाभके हेतु होती हैं ॥ ११२ ॥

मत्स्येन भवति सुभगा हस्तस्थस्वस्तिकेन वित्ताढ्या ।
श्रीवत्सेन पुनः स्त्री नृपपत्नी नृपतिमाता वा ॥ ११३ ॥

अन्वयार्थौ-( स्त्री हस्ततलस्थेन मत्स्येन सुभगा भवति ) स्त्रीकी हाथकी हथेलीमें जो मच्छीकी रेखा होय तो सौभाग्यवती होती है और ( हस्तस्थस्वस्तिकेन वित्ताढ्या भवति ) जो हेथेलीमें सांथियेका चिह्न होय तो धनवती होती है और ( हस्ततलस्थेन श्रीवत्सेन नृपपत्नी वा नृपतिमाता भवति ) जो हथेलीमें श्रीवत्स चिह्न होय तौ राजाकी रानी अथवा राजाकी माता होती है ॥ ११३ ॥

पाणितले यस्याः स्यान्नन्द्यावर्तः प्रदक्षिणो व्यक्तः ।
भुवि चक्रवर्तिनस्तत्स्त्रीरत्नं भवति भोगार्हम् ॥ ११४ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः पाणितले प्रदक्षिणः व्यक्तः नंद्यावर्तः स्यात् तत् स्त्रीरत्नं भुवि चक्रवर्तिनः भोगार्हं भवति ) जिस स्त्रीकी हथेलीमें दाहिनी

ओर प्रकट नंद्यावर्त साथियेका चिह्न होय तो वह स्त्रीरत्न- ( स्त्रियोंमें श्रेष्ठ ) पृथ्वीमें चक्रवर्ती राजाके भोगनेके योग्य होता है ॥ ११४ ॥

या करतले कनिष्ठां निर्गत्यांगुष्ठमूलतो याति ।
सा रेखा भर्तृघ्नी तद्युक्तां नोद्वहेत्कन्याम् ॥ ११५ ॥

अन्वयार्थौ-( करतले या रेखा अंगुष्ठमूलतः निर्गत्य कनिष्ठां याति ) हथेलीमें जो रेखा अँगूठेके मूलसे निकल कनिष्ठातक जाय तो ( सा रेखा भर्तृघ्नी भवेत् ) सो रेखा पतिको मारनेवाली होती है और ( तद्युक्तां कन्यां न उद्वहेत् ) ऐसी रेखायुक्त कन्याको न विवाहै ॥ ११५ ॥

कररेखाभिस्तुलया तुल्याभिर्जायते वणिग्जाया ।
भवति कृषीवलपत्नी युगसीरोलूखलाकृतिभिः ॥ ११६ ॥

अन्वयार्थौ-( तुलया तुल्याभिः कररेखाभिः वणिग्जाया जायते ) तराजूके तुल्य रेखाओंकरिके युक्त करतल हो सो वैश्यकी स्त्री होती है और ( युगसीरोलूखलाकृतिभिः रेखाभिः कृषीवलपत्नी भवति ) जुवा, हल, ओखलीके आकारकी रेखाओंसे किसानकी स्त्री होती है ॥ ११६ ॥

गजवाजिवृषभपद्माः प्रासादधनुर्भार्गैर्दुर्वर्ज्याः ।
यस्याः पाणितले स्युः सा तीर्थकरस्य भुवि जननी ॥११७॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः पाणितले गजवाजिवृषभपद्माः प्रासादधनुर्भागैर्दुर्वर्ज्याः या रेखाः स्युः ) जिस स्त्रीकी हथेलीमें हाथी, घोडा, बैल, कमल, महल, धनुष, इन करके रहित जो चिह्न हाेंय तो ( भुवि सा तीर्थकरस्य जननी भवति ) पृथ्वीमें सो स्त्री तीर्थकर अर्थात् धर्मके करनेवालेकी माता होती है ॥ ११७ ॥

शङ्खस्वस्तिकसागरनन्द्यावर्तातपत्रतिमिकूर्मैः ।
वामकरतलनिविष्टैः प्रजायते चक्रिणो माता ॥ ११८ ॥

अन्वयार्थौ-( वामकरतलनिविष्टैः शंखस्वस्तिकसागरनंद्यावर्तातपत्रतिमिकूर्मैः चक्रिणः माता प्रजायते ) बायें हाथकी हथेलीमें जो स्थित



शंख, चक्र, समुद्र, नंद्यावर्त चिह्न आतपत्र कहिये छत्र, मछली कछुवा ऐसे चिह्न करके चक्रवर्ती राजाकी माता होती है ॥ ११८ ॥

ध्वजतोरणभद्रासनचमरभृङ्गारशीर्षरेखाद्याः ।
यस्या भवन्ति पाणौ सा जननी वासुदेवस्य ॥ ११९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः पाणौ ध्वजतोरणभद्रासनचामरभृंगारशीर्षरेखाद्याः भवन्ति सा स्त्री वासुदेवस्य जननी भवति ) जिस स्त्रीके हाथमें ध्वजा, तोरण, राजाका आसन, चमर, जलकी झारी, मस्तकशरके आकार रेखा आदि होंय तो सो स्त्री वासुदेव अर्थात् कृष्णबलदेवकी माता होती है ॥ ११९ ॥

श्रीवत्सवर्धमानांकुशायुधगदात्रिशूलतुल्याभिः ।
रेखाभिर्जयशब्दो वनितानां जायते सपदि ॥ १२० ॥

अन्वयार्थौ-( श्रीवत्सवर्धमानांकुशायुधगदाशूलतुल्याभिः रेखाभिः वनितानां जयशब्दः सपदि जायते ) श्रीवत्स, वर्धमान, अंकुश, गदा, आदि त्रिशूल इनकेसे आकार रेखा होंय तो स्त्रियोंका जयजय बोलना शीघ्र ही होता है ॥ १२० ॥

मण्डूककङ्कजंबुकवृषकाकोलूकवृश्चिकाः सुदृशाम् ।
रासभसैरिभकरभाः करस्थिता दुःखमाददते ॥ १२१ ॥

अन्वयार्थौ-( सुदृशां करस्थिताः मंडूककंकजंबुकवृषकाकोलूकवृश्चिकाः रासभसैरिभकरभाः दुःखम् आददते ) स्त्रियोंके हाथमें स्थित मेंडक, कंकपक्षी, गीदड, बैल, कौवा, उल्लू, बिच्छू, गधा, भैंसा, ऊंट आदि जो ये चिह्न होयँ तो दुःखको देते हैं ॥ १२१ ॥

## अथांगुष्ठः ।

स्त्रीणां सरलोऽङ्गुष्ठः स्निग्धो वृत्तः शुभस्तथाऽङ्गुलयः ।
मृदुलत्वचः सुदीर्घाः क्रमशो वृत्ताः सुपर्वाणः ॥ १२२ ॥

अन्वयार्थौ-( स्त्रीणाम् अंगुष्ठः सरलः स्निग्धः वृत्तः शुभो भवति )

स्त्रियोंका अंगूठा सीधा, सुन्दर, चिकना, गोल होय तो शुभ है और ( अंगुलयः मृदुलत्वचः सुदीर्घाः क्रमशः वृत्ताः सुपर्वाणः शुभाः भवंति ) अंगुलियाँ मुलायम, पतली त्वचावाली; अच्छी, लम्बी, क्रमशः गोल अच्छे पोरुवोंकी शुभ होती हैं ॥ १२२ ॥

चिपिटाः स्फुटाश्च रूक्षाः पृष्ठे रोमान्विताः खरा वक्राः ।
अतिह्रस्वकृशा विरला विदधति दारिद्र्यमंगुलयः ॥ १२३ ॥

अन्वयार्थौ–( चिपिटाः स्फुटाः रूक्षाः पृष्ठे रोमान्विताः खराः वक्राः अतिह्रस्वाः कृशाः विरलाः स्त्रीणाम् एतादृशाः अंगुलयः दारिद्र्यं विदधति ) चपटी, प्रकट, रूखी, पीठपर रोमयुक्त, खरदरी, टेढी, बहुत छोटी, पतली, जुदी जुदी स्त्रियोंकी अंगुली होय तो दारिद्र्यको करनेवाली है ॥ १२३ ॥

## अथ नखाः ।

स्निग्धा बन्धूकरुचः सशिखास्तुंगाः शुभा नखाः सुदृशाम् ।
बिभ्रत्यंकुशलीलामनङ्गगन्धद्विपेन्द्रस्य ॥ १२४ ॥

अन्वयार्थौ–( सुदृशां नखाः स्निग्धाः बन्धूकरुचः सशिखाः तुङ्गाः शुभाः भवंति ) स्त्रियोंके नख चिकने, दुपहरियाके पुष्पकी तरह उजले, चोटीके जो ऊंचे होय तो शुभ होते हैं और ( अनंगगन्धद्विपेन्द्रस्य अंकुशलीलां बिभ्रति ) वेही नखकामदेवरूप मतवाले हाथीके अंकुशकी शोभाको धारण करते हैं ॥ १२४ ॥

रूक्षैर्वक्रैः पीनैः सितैर्विवर्णैर्नखैः शिखारहितैः ।
शुक्त्याकारैर्वनिता भवन्ति सौभाग्यधनहीनाः ॥ १२५ ॥

अन्वयार्थौ–( रूक्षैः वक्रैः पीनैः सितैः विवर्णैः शिखारहितैः शुक्त्याकारैः नखैः वनिताः सौभाग्यधनहीनाः भवंति ) रूखे, टेढे, मोटे, सफेद, बेरंगके, उजली चोटीके रहित, सीपीके आकारवाले नख होयँ तो स्त्री सौभाग्य और धनसे हीन होती हैं ॥ १२५ ॥



पाणिचरणयोर्यस्या जायन्ते बिन्दवो नखेषु सिताः ।
सा जगति सुसितनखा दुःखाय स्वैरिणी रमणी ॥ १२६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः पाणिचरणयोः नखेषु सिताः बिन्दवो जायंते जगति सुसितनखा सा रमणी स्वैरिणी तथा दुःखाय भवति ) जिस स्त्रीके हाथ पाँवके नखोंमें सफेद छींटे होय तो संसारमें ऐसे नखवाली स्त्री व्यभिचारिणी और दुःखके अर्थ होती है ॥ १२६ ॥

## अथ पृष्ठिः ।

सरला शुभसंस्थाना निर्लोमा मध्यमाग्रवंशास्थिः ।
पृष्ठिः पिशितोपचिता सुखसौभाग्यप्रदा स्त्रीणाम् ॥ १२७ ॥

अन्वयार्थौ–( स्त्रीणां पृष्ठिः सरला शुभसंस्थाना निर्लोमा मध्यमाग्रवंशास्थिः शुभा भवति ) स्त्रियोंकी पीठ सूधी, अच्छे आकारकी विना रोमोंकी बीचमेंसे आगेतककी हड्डीकी शुभ होती है और ( पिशितोपचिता पृष्ठिः सुखसौभाग्यप्रदा भवति ) मांससे खूब भरी पीठ सुख और सौभाग्यको देनेवाली होती है ॥ १२७ ॥

भुग्नवलितेन दासी भर्तृघ्नी भामिनी विशालेन ।
सशिरेण सदुःखा स्याद्विधवा पृष्ठेन रोमभृता ॥ १२८ ॥

अन्वयार्थौ–( भामिनी भुग्नवलितेन पृष्ठेन दासी स्यात् ) स्त्री टेढ़ी सलवटोंवाली पीठसे दासी होती है और ( विशालेन पृष्ठेन भर्तृघ्नी स्यात् ) बडी और लंबी पीठसे पतिको मारनेवाली होती है और ( सशिरेण पृष्ठेन सदुःखा स्यात् ) जिसमें नसें चमकती हों ऐसी पीठसे दुःख सहित होती है और ( रोमभृता पृष्ठेन विधवा स्यात् ) रोमोंवाली पीठसे विधवा होती है ॥ १२८ ॥

## अथ कृकाटिकालक्षणम् ।

ऋज्वी कृकाटिका स्यात्समांसपीना समुन्नता यस्याः ।
दीर्घायुर्विधवात्वं लभते सा सौख्यसौभाग्यम् ॥ १२९ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः कृकाटिका ऋज्वी स्यात् सा दीर्घायुर्लभते ) जिस स्त्रीका गलेका गट्टा अर्थात् गलेकी घेंटी सूधी होय सो स्त्री बडी आयु पावै और ( यस्याः समांसपीना कृकाटिका स्यात् सा विधवात्वं लभते ) जिसकी मांससे भरी मोटी घेंटी होय सो विधवापनको पावै और ( यस्याः कृकाटिका समुन्नता स्यात् सा स्त्री सौख्यसौभाग्यं लभते ) जिस स्त्रीकी गलेकी घेंटी उँचाई लिये होय सो स्त्री सुख सौभाग्यको पाती है॥ १२९ ॥

बहुपिशिता निष्पिशिता शिराचिता रोमशा विशाला च ।
कुटिला विकटा कुरुते दौर्भाग्यं प्रायशः सुदृशाम् ॥१३०॥

अन्वयार्थौ-( सुदृशः बहुपिशिता निष्पिशिता शिराचिता रोमशा कुटिला विकटा कृकाटिका प्रायशः दौर्भाग्यं कुरुते ) स्त्रियोंकी बहुत मांसवाली वा विनामांसकी नसें चमकती हों, रोमावलीसहित बडी लंबी बुरी भयंकर जो गलेकी घेंटी होय सो बहुधा अभाग्यको करती है ॥ १३० ॥

मांसोपचितः कण्ठो वृत्तश्चतुरंगुलः शुभो विशदः ।
उच्चविलासं कथयति वदनाम्भोजस्य वनितानाम् ॥१३१॥

अन्वयार्थौ-( वनितानां कण्ठः मांसोपचितः वृत्तः चतुरंगुलः विशदः शुभः ) स्त्रियोंका कंठ मांससे भरा, गोल चार अंगुलका, उज्ज्वल शुभ है और ( वदनाम्भोजस्य उच्चविलासं कथयति ) मुखकमलकी अत्यन्त सुन्दरताको कहता है ॥ १३१ ॥

यस्याः सुसंहिता स्फुटरेखात्रितयाङ्किता भवेद्ग्रीवा ।
साऽलंकारे कनके मुक्तारत्नानि धारयति ॥ १३२ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः ग्रीवा सुसंहिता स्फुटरेखात्रितयांकिता भवेत् सा कनकालंकारे मुक्तारत्नानि धारयति ) जिस स्त्रीकी नाड मिलीहुई प्रकट तीन रेखा चिह्नोंसे अंकित होय सो स्त्री सुवर्णका गहनामें मोती और रत्नोंको पहरती है ॥ १३२ ॥



व्यक्तास्थिर्निर्मांसा चिपिटा स्फुटिता कुरूपसंस्थाना ।
चेदुपदिशति ग्रीवा योषाणां दुःखदौर्भाग्यम् ॥ १३३ ॥

अन्वयार्थौ-( योषाणां ग्रीवा व्यक्तास्थिः निर्मांसा चिपिटा स्फुटिता कुरूपसंस्थाना स्यात् चेत्, सा ग्रीवा दुःखदौर्भाग्यम् उपदिशति ) स्त्रियोंकी नाड प्रकट हाडोंकी, विना मांसकी, चपटी, फटी, बुरे स्वरूपकी होय सो नाड दुःख और अभाग्यका उपदेश करती है ॥ १३३ ॥

ग्रीवा स्थूला विधवां चक्रावर्ता यदि स्त्रियं वंध्याम् ।
सशिरा ह्रस्वा निःस्वां कुरुते दीर्घा पुनः कुटिलाम् ॥ १३४॥

अन्वयार्थौ-( स्थूला ग्रीवा स्त्रियं विधवां कुरुते ) मोटी नाड स्त्रीको विधवा करती है और ( चक्रावर्ता यदि ग्रीवास्त्रियं वंध्यां कुरुते ) चक्रचिह्नवाली नाड स्त्रीको बाँझ करती है और ( ह्रस्वा सशिरा ग्रीवा स्त्रियं निःस्वां कुरुते ) छोटी और नसोंवाली नाड स्त्रीको दरिद्रिणी करती है और ( दीर्घा ग्रीवा स्त्रियं कुटिलां कुरुते ) बडी और लंबी नाड स्त्रीको खोटी करती है ॥ १३४ ॥ इति ग्रीवाष्टदशी संपूर्णा ॥

## अथ चिबुकम् ।

अंगुलमानं चिबुकं वृत्तं पीनं सुकोमलं शस्तम् ।
स्थूलं द्विधा विभक्तं रोमशमत्यायतं न शुभम् ॥ १३५ ॥

अन्वयार्थौ-( द्व्यंगुलमानं वृत्तं पीनं सुकोमलं चिबुकं शस्तम् ) दो अंगुल प्रमाण, गोल, मांसल मुलायम ऐसी ठोडी अच्छी है और ( स्थूलं द्विधा विभक्तं रोमशम् अत्यायतं चिबुकं न शुभं स्यात् ) मोटी, दुहरीसी, रोमवाली, बहुत लंबी, ठोडी अच्छी नहीं होती है ॥ १३५ ॥

## अथ हनुकथनम् ।

निर्लोम शुभं सुघनं हनुयुगलं चिबुकपार्श्वसंलग्नम् ।
अतिवक्रकृशं स्थूलं पुनरशुभं रोमशं दृश्यम् ॥ १३६ ॥

अन्वयार्थौ-( निर्लोम सुघनं चिबुकं पार्श्वसंलग्नं हनुयुगलं शुभम् ) विना रोमोंके, अच्छे, कडे ठोढीके पास ही लगेहुये ऐसे दोनों हनु शुभ हैं और ( पुनः अतिवक्रकृशं स्थूलं रोमशं दृश्यम् अशुभं भवति ) फिर बहुत टेढे, सखेसे, मोटे रोमवाले दीखें तो अशुभ होते हैं ॥ १३६ ॥

## अथ कपोललक्षणम् ।

शस्ते कपोलफलके पीने वृत्ते समुन्नते विमले ।
पुलिने इव गङ्गायाः कुसुमायुधयादसां स्त्रीणाम् ॥ १३७ ॥

अन्वयार्थौ-( पीने वृत्ते समुन्नते विमले स्त्रीणां कपोलफलके शस्ते ) मांससे भरे, गोल. बराबर ऊंचे, उजले, स्त्रियोंके कपोलफल अच्छे होते हैं ( के इव ) क्या हैं मानो ( कुसुमायुधयादसां स्त्रीणां गङ्गायाः पुलिने इव ) कामदेव जलजीवोंके गंगाके पुलिन अर्थात् रेतके गुदगुदे टीले हैं ॥ १३७ ॥

यस्याः कपोलयुगलं विच्छायं रोमसंयुतं परुषम् ।
रूक्षं स्वभावनिम्नमसितं सा दुःखिनी च स्यात् ॥ १३८ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः कपोलयुगलं विच्छायं रोमसंयुतं परुषं रूक्षं स्वभावनिम्नम् असितं च स्यात्, सा स्त्री दुःखिनी भवेत् ) जिस स्त्रीके दोनों कपोल विना रंग, रोमयुक्त, टेढे, रूखे स्वभावकरिके नीचे काले होंय तो सो स्त्री दुखिया होती है ॥ १३८ ॥

## अथ वदनम् ।

वर्तुलममलं स्निग्धं सुपूर्णशीतांशुमण्डलविडम्बि ।
सौम्यं समं समांसं परिमलितं शस्यते वदनम् ॥ १३९ ॥

अन्वयार्थौ-( वर्तुलम् अमलं स्निग्धं सुपूर्णशीतांशुमंडनविडंबि सौम्यं समं समांसं परिमलितं वदनं शस्यते ) गोल, निर्मल, सचिक्कण, पूरे चन्द्रमाके बिम्बकी तुल्य सुन्दर बराबर, मांससे भरा, सुगन्धित जो ऐसा मुख होय तो प्रशंसाके योग्य है ॥ १३९ ॥



जनकवदनानुरूपं यस्या मुखपङ्कजं सदाह्लादि ।
सा कल्याणी प्रायेणेति समुद्रः पुरा वदति ॥ १४० ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याःमुखपंकजं जनकवदनानुरूपंसदाह्लादि ) जिसस्त्रीका मुखकमल पिताके मुखके तुल्य होयतो सदा प्रसन्न करनेवाली है ( प्रायेण सा कल्याणी भवति इति समुद्रःपुरा वदति ) बहुधा सो स्त्री कल्याणकी करनेवाली होती है समुद्रने यह बात पहलेसे कही है ॥ १४० ॥

तुरगोष्ट्रखरबिडालव्याघ्रच्छागाननैः समं यदि चेत् ।
पृथुलं निम्नं स्फुटितं दुर्गन्धं शस्यते न मुखम् ॥ १४१ ॥

अन्वयार्थौ-( तुरगोष्ट्रखरबिडालव्याघ्रच्छागाननैः समं पृथुलं निम्नं स्फुटितं दुर्गन्धं मुखं यदि चेत् न शस्यते ) घोडा,ऊंट. गधा, बिलाव, सिंह, बकरा इनके तुल्य होय और चौडा, नीचा, फटासा, दुर्गंधवाला हो तो मुख निंदित है ॥ १४१ ॥

## अथौष्ठबिम्बम् ।

रेखाखण्डितमध्यो मसृणः परिपक्वबिम्बफलतुल्यः ।
अधरोष्ठः स्निग्धोऽसौ मनोहरो हरिणशावदृशाम् ॥ १४२ ॥

अन्वयार्थौ-( रेखाखंडितमध्यः मसृणः परिपक्वबिम्बफलतुल्यःस्निग्धः हरिणशावदृशाम् अधरोष्ठः मनोहरः भवति ) रेखा करके खंडित है बीच जिसका, चिकना, पके हुए कुँदरूके फलके तुल्य, अच्छे, चिकने हिरणके बच्चोंकेसे नेत्र जिनके ऐसी अंगनाओंके होठ मनके हरनेवाले होते हैं अर्थात् अच्छे हैं ॥ १४२ ॥

शस्तः सुधानिधानं सन्ततमधरोष्ठपल्लवो व्यक्तः ।
हृदयोत्थसदनुरागच्छटाभिरिव रंजितः स्त्रीणाम् ॥ १४३ ॥

अन्वयार्थौ-( सुधानिधानं व्यक्तः हृदयोत्थसदनुरागच्छटाभिःरंजितः

इव स्त्रीणाम् अधरोष्ठपल्लवःशस्तः ) अमृतका स्थान, प्रकट हृदयसे जो उठा है अच्छा अनुराग तिसकी कांतिसे रंगा हुआ ऐसा स्त्रियोंका होठ नवीन पत्तेके तुल्य निरन्तर अच्छा होता है ॥ १४३ ॥

विषमोऽलघुः प्रलम्बः प्रस्फुटितः खंडितः कृशो रूक्षः ।
दन्तच्छदोऽङ्गनानां दत्ते दौर्भाग्यदुःखित्वे ॥ १४४ ॥

अन्वयार्थौ–( विषमः अलघुः प्रलम्बः प्रस्फुटितः खंडितः कृशः रूक्षः अंगनानां दन्तच्छदः दौर्भाग्यदुःखित्वे दत्ते ) ऊंचा नीचा, बडा, लंबा, फटा; टूटा हुआ, कटा, पतला, रूखा स्त्रियोंका ऐसा होठ तो अभाग्य और दुःखको देता है ॥ १४४ ॥

श्यामेन भर्तृहीना स्थूलेन कलिप्रिया भवति नारी ।
अधरोष्ठेन प्रायो दौर्गत्ययुता विवर्णेन ॥ १४५ ॥

अन्वयार्थौ–( श्यामेन अधरोष्ठेन नारी भर्तृहीना भवति ) काले होठोंसे स्त्री पतिहीन होती है और ( स्थूलेन अधरोष्ठेन नारी कलिप्रिया भवति) मोटे होठों करिके स्त्री कलह करनेवाली होती है और (विवर्णेन अधरोष्ठेन प्रायः दौर्गत्ययुता भवति ) बुरे रंगके होठोंसे बहुधा दरिद्रिणी होती है ॥ १४५ ॥

सुदृशामिहोत्तरोष्ठः पर्यायनतः सुकोमलो मसृणः ।
स्निग्धो रोमविरहितः किंचिन्मध्योन्नतः शस्तः ॥ १४६ ॥

अन्वयार्थौ–( इह सुदृशाम् उत्तरोष्ठः पर्यायनतः सुकोमलः मसृणः स्निग्धः रोमविरहितः किंचिन्मध्योन्नतः शस्तः ) इस लोकमें स्त्रियोंके ऊपरका होठ क्रम करके झुका हुआ, मुलायम, चिकना, विना रोमका कुछ बीचमें ऊंचाई लिये होय तो अच्छा है ॥ १४६ ॥

भवति पृथुरुत्तरोष्ठः समुन्नतो लोमशो लघुर्यस्याः ।
स्थूलः सा रमणी स्याद्विधवा कलहप्रिया प्रायः ॥ १४७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः उत्तरोष्ठः पृथुः समुन्नतः लोमशः लघुः स्थूलः भवति, सा रमणी प्रायः विधवा वा कलहप्रिया स्यात् ) जिस स्त्रीका



ऊपरका होठ चौडा मोटा, ऊँचा, रोमवाला, छोटा होय सो बहुधा विधवा वा कलह करनेवाली होती है ॥ १४७ ॥

## अथ दशनलक्षणम् ।

स्निग्धैः समैः शिखरिभिः समुन्नतैर्विशदकुन्दसमशुभ्रैः ।
दशनैर्घनैस्तरुण्यः सौभाग्यैश्वर्यभोगिन्यः ॥ १४८ ॥

अन्वयार्थौ–( स्निग्धैः समैः शिखरिभिः समुन्नतैः विशदकुंदसमशुभ्रैः घनैः दशनैः तरुण्यः सौभाग्यैश्वर्यभोगिन्यो भवन्ति ) चिकने चमकने, बराबर नोंके निकली हों ऊंचे हों और उजले कुंदके फूलके तुल्य सफेद, एकसे एक भिड होंय तो ऐसे दाँतसे स्त्रियाँ सौभाग्य वा ऐश्वर्यको भोगनेवाली होती हैं ॥ १४८ ॥

शुचिरुचयो द्वात्रिंशद्दशना गोक्षीरसन्निभाः सर्वे ।
अधउपरि समा यस्याः सा क्षितिपतिवल्लभा बाला ॥१४९॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः सर्वे दशनाः शुचिरुचयः गोक्षीरसन्निभाः अधः उपरि समाः द्वात्रिंशत् भवंति, सा बाला क्षितिपतिवल्लभा भवति ) जिस स्त्रीके सब दांत उजले, रुचिकारी, गौके दूधके तुल्य, नीचे ऊपर बराबर बत्तीस होंय सो स्त्री पृथ्वीपति ( राजा )की प्यारी होती है ॥ १४९ ॥

अतिह्रस्वदीर्घसूक्ष्मा नार्याः स्थूला द्विपङ्क्त्यो दशनाः ।
विषमाः शुक्त्याकाराः श्यामास्तन्वन्ति दौर्गत्यम् ॥१५०॥

अन्वयार्थौ–( अतिह्रस्वदीर्घसूक्ष्माः स्थूलाः द्विपंक्तयः विषमाः शुक्त्याकाराः श्यामाः ईदृशाःदशना दौर्गत्यं तन्वंति ) बहुत छोटे लम्बे पतले मोटे, दुहरा पंक्तिके ऊंचे नीचे सीपिके आकार, काले होंय तो ऐसे दाँतोंसे स्त्री दरिद्रिणी वा दुखिया होती है ॥ १५० ॥

विरतं रदैरधस्तादधिकैर्निजमातृभक्षिणी रमणी ।
अध उपरि पुनर्विरलैःकुटिला विकटैश्च पतिरहिता ॥१५१॥

अन्वयार्थौ–( अधस्तात् रदैः अधिकैः नियतं रमणी निजमातृभक्षिणी भवति ) नीचेके दाँत बहुत होनेसे निश्चय स्त्री अपनी माताको मारनेवाली होती है और ( पुनः अधः उपरि विरलैः रदैः कुटिला भवति ) जो नीचे ऊपर जुदे जुदे दाँत होंय तो खोटी होती है और ( वा विकटैः रदैः पतिरहिता भवति ) जो भयंकर दाँत होंय तो विना पतिकी अर्थात् विधवा होती है ॥ १५१ ॥

सितपीठिकास्थिरदना सक्लेशा दन्तुरा पुनः कुटिला ।
चलितरदा पतिरहिता निरपत्या घनमतिर्युवतिः ॥ १५२ ॥

अन्वयार्थौ–( सितपीठिकास्थिरदना नारी सक्लेशा भवति ) सफेद मसूढे नीचेके हाडके दाँतसे स्त्री क्लेशसहित रहती है और ( पुनः दंतुरा नारी कुटिला भवति ) फिर खूब बड़े दाँतवाली स्त्री खोटी होती है और (चलितरदा नारी पतिरहिता वा निरपत्या घनमतिर्युवतिः भवति ) चलायमान है दाँत जिसके ऐसी स्त्री पति पुत्र रहित और कठोर बुद्धिवाली होती है॥१५२

## अथ जिह्वालक्षणम् ।

जिह्वा स्निग्धा मृद्वी शोणा समृणा तनुर्भवति यस्याः ।
मिष्टान्नभोजना स्यात्सौभाग्ययुता सदा रमणी ॥ १५३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः जिह्वा स्निग्धा मृद्वी शोणा मसृणा तनुर्भवति ) जिस स्त्रीकी जीभ अच्छी,मुलायम, लाल, चिकनी; पतली होय (सा रमणी सौभाग्ययुता सदा मिष्टान्नभोजना स्यात ) सो स्त्री भाग्ययुक्त और सदा मीठे भोजनके पानेवाली होती है ॥ १५३ ॥

स्यादन्ते सङ्कीर्णा कुशस्येवाग्रविस्तीर्णा वा ॥
श्वेतापि न प्रशस्ता कृष्णा प्रायेण रमणीनाम् ॥ १५४ ॥

अन्वयार्थौ–( जिह्वा अंते कुशस्येव संकीर्णा वा अग्रविस्तीर्णा श्वेता कृष्णा जिह्वा प्रायेण रमणीनाम् अपि न प्रशस्ता ) जीभ अंतमें सकडी और डाभकी भाँति आगेको चौडी, सफेद और काली जीभ बहुधा स्त्रियोंकी अच्छी नहीं है ॥ १५४ ॥



खरया तोये मरणं प्राप्नोति विवाहमेति पाटलया ।
वर्णच्छेदं कलहं श्यामलया जिह्वया युवती ॥ १५५ ॥

अन्वयार्थौ–( युवती खरया जिह्वया तोये मरणं प्राप्नोति ) स्त्री खरदारी जीभकरके पानीमें डूबके मरे और ( पाटलया जिह्वया विवाहम् एति ) कुछ श्वेत कुछ लाल जीभ करके विवाहको पाती है और ( श्यामलया जिह्वया वर्णच्छेदं तथा कलहं प्राप्नोति ) काली जीभ करके अपनी जातिसे दूसरी जाति होय और कलहको पाती है ॥ १५५ ॥

## अथ तालुलक्षणम् ।

दारिद्र्यं मांसलया विशालया रसनया पुनः शोकम् ।
अतिलम्बयापि सततमभक्ष्यभक्षणरतिः स्त्रीणाम् ॥ १५६ ॥

अन्वयार्थौ–( मांसलया रसनया दारिद्र्यं पुनः विशालया रसनया शोकं प्राप्नोति ) मोटी जीभसे दरिद्रताको पावे और फिर बडी लंबी जीभसे शोकको पाती है और ( अतिलंबया अपि सततं स्त्रीणाम् अभक्ष्यभक्षणरतिर्भवति ) बहुत लंबी जीभसे निरन्तर स्त्रियोंकी जो खाने योग्य वस्तु नहीं उसे खानेमें चाहना अर्थात् प्रीति होती है ॥ १५६ ॥

स्निग्धं कोकनदच्छवि प्रशस्यते तालु कोमलं विमलम् ।
श्यामं पीनं च पुनः सुदृशां दुःखावहं बहुशः ॥ १५७ ॥

अन्वयार्थौ–( सुदृशां स्निग्धं कोकनदच्छवि कोमलं विमलं तालु प्रशस्यते ) स्त्रियोंका सुन्दर, चिकना, लाल कमलकीसी कांतिवाला, मुलायम उज्ज्वल तालु प्रशंसाके योग्य अर्थात् अच्छा है और ( पुनः श्यामं तालु बहुशः दुःखावहम् ) फिर बडी काला मोटा तालु होय तो बहुत दुःखको करनेवाला है ॥ १५७ ॥

तालुनि सिते दरिद्रा पतिहीना दुःखिता भवति कृष्णे ।
प्रव्रज्यासंयुक्ता रूक्षे समले पुननारी ॥ १५८ ॥

अन्वयार्थौ–( तालुनि सिते भवि नारी दरिद्रा ) सफेद तालु होनेसे

स्त्री दरिद्रिणी और ( तालुनि कृष्णे सति पतिहीना दुःखिता भवति ) काले तालु होनेसे पतिरहित दुःखी होती है ( पुनः रूक्षे समले सति प्रव्रज्यासंयुक्ता जायते ) रूखा मलिन तालु हुए वैरागिणी या पतिसंयोगरहित होती है ॥ १५८ ॥

## अथ घण्टीलक्षणम् ।

कन्दस्थूला वृत्ता क्रमशस्तीक्ष्णलोहिता शुभा घण्टी ।
स्थूला सूक्ष्मा लम्बा कृष्णा श्वेता शुभा नैव ॥ १५९ ॥

अन्वयार्थौ–( कन्दस्थूला वृत्ता क्रमशः तीक्ष्णलोहिता घण्टी शुभा ) जमीकंदकी भांति मोटी, गोल, क्रमसे पैनी, लाल रंगकी घेंटी शुभ है और ( स्थूला सूक्ष्मा लम्बा कृष्णा श्वेता घंटी नैव शुभा ) मोटी, पतली, लंबी, काली; सफेद घेंटी शुभ नहीं है ॥ १५९ ॥

## अथ हास्यलक्षणम् ।

ईषद्विकसितगण्डं हसितमलक्ष्यद्विजं कलं शस्तम् ।
प्रान्ते मुहुः सकम्पं संमीलितलोचनं निन्द्यम् ॥ १६० ॥

अन्वयार्थौ–( ईषद्विकसितगंडम् अलक्ष्यद्विजं कलं हसितं शस्तम् ) थोडे खुले हैं गंडस्थल जिसमें, नहीं दीखपडें दांत जिसमें ऐसा सुन्दर हँसना अच्छा है और ( प्रान्ते मुहुः सकंपं संमीलितलोचनं हसितं निंद्यं भवति ) अंतमें बरंबार हाथ पांव कँपै हिलें जिसमें और मुँदगये हैं नेत्र जिसमें ऐसा हँसना निंदित अर्थात् बुरा होता है ॥ १६० ॥

## अथ नासालक्षणम् ।

निःस्वां द्विधाग्रभागा कर्मकरां नासिका स्त्रियं लघ्वी ।
भर्तृविहीनां चिपिटा दीर्घा बहुकोपनां कुरुते ॥ १६१ ॥

अन्वयार्थौ–( द्विधाग्रभागा नासिका स्त्रियं निःस्वाम् ) दोसी दीखैं हैं नोक आगेके भागमें जिसकी ऐसी नाक स्त्रीको दरिद्रिणी करे और ( लघ्वी नासा स्त्रियं कर्मकराम् ) छोटी नाक स्त्रीको गुलामिनी करे और ( चिपिटा दीर्घा नासिका स्त्रियं भर्तृविहीनां तथा बहुकोपनां कुरुते ) चिपटी लंबी नाक स्त्रीको पतिरहित और बहुत क्रोधशाली करे ॥ १६१ ॥



## अथ क्षुतलक्षणम् ।

दीर्घं दीर्घायुक्तं क्षुतं कृतं पिण्डितं ह्लादि ।
अनुनादयुतं शस्तं ततोऽन्यथा भवति विपरीतम् ॥ १६२ ॥

अन्वयार्थौ–( दीर्घं क्षुतं दीर्घायुक्तं कृतं पिंडितं ह्लादि ) बडी छींक भारी बडी न छोटी गोलाकार हुई ऐसी आनंदकारी है और ( अनुनादयुतं क्षुतं शस्तम् ) शब्दसहित अथवा पिछला शब्दयुक्त छींक अच्छी है और ( ततः अन्यथा विपरीतं भवति ) इनसे और लक्षणकी छींक बुरी होती है॥ १६२॥

## अथाक्षियुगलक्षणम् ।

गोक्षीरचारुलसिते रक्तान्ते कृष्णतारके तीक्ष्णे ।
प्रच्छन्नं कथयितुमिव कर्णविलग्ने शुभे नयने ॥ १६३ ॥

अन्वयार्थौ–( गोक्षीरचारुलसिते रक्तान्ते कृष्णतारके तीक्ष्णे शुभे नयने प्रच्छन्नं कथयितुम् इव कर्णविलग्ने भवतः ) गौके दूधके समान श्वेत रंग शोभायमान लाल हैं अंत जिनके काले हैं तारे जिनमें गुप्त करनेको मानो कानके पास आयके लगे हैं ऐसे नेत्र शुभ होते हैं ॥ १६३ ॥

नीलोत्पलदलतुल्यैरतिविमलैः सूक्ष्मपक्ष्मभिः स्निग्धैः ॥
नयनैरिवार्ककमलैर्भवन्ति सौभाग्यभोगिन्यः ॥ १६४ ॥

अन्वयार्थौ–( नीलोत्पलदलतुल्यैः अतिविमलैः सूक्ष्मपक्ष्मभिः स्निग्धैः अर्ककमलैः इव नयनैः नार्यः सौभाग्यभोगिन्यो भवंति ) नीलकमलकी पंखुरीके तुल्य निर्मल, पतली हैं बरोनी जिनकी अच्छे चिकने, जैसे सूर्यसे कमल खिले हुए ऐसे नेत्रों करिके स्त्री सौभाग्यके भोग करनेवाली होती है ॥ १६४ ॥

मृगनेत्रा शशनेत्रा वराहनेत्रा मयूरनेत्रा च ।
पृथुनेत्राम्बुजनेत्रा निर्मलनेत्रा शुभा नारी ॥ १६५ ॥

अन्वयार्थौ–( मृगनेत्रा शशनेत्रा वराहनेत्रा मयूरनेत्रा पृथुनेत्रा अम्बुजनेत्रा निर्मलनेत्रा नारी शुभा भवति ) हरिणकेसे नेत्रवाली, खरगोशकेसे नेत्रवाली, सूकरकेसे नेत्रवाली, मोरकेसे नेत्रवाली, बडे लम्बे चौडे नेत्रवाली, कमलकेसे नेत्रवाली और उजले नेत्रवाली स्त्री अच्छी होती है ॥ १६५॥

उद्भ्रान्तमनाः केकरविषमाक्षी निन्दिता भवेद्युवतिः ।
मेषाक्षी बिडालाक्षी वृत्ताक्षी समुन्नताक्षी न दीर्घायुः ॥ १६६॥

अन्वयार्थौ–( केकरविषमाक्षी निन्दिता उद्भ्रान्तमना युवतिर्भवेत् ) काणी, ऊँचे नीचे नेत्रवाली निन्दित उडेसे चित्तवाली होती है और ( मेषाक्षी बिडालाक्षी वृत्ताक्षी समुन्नताक्षी नारी दीर्घायुः न ) मेढेकीसी नेत्रवाली बिलावकीसी नेत्रवाली बडी नेत्रवाली स्त्री आयुवाली नहीं होती है॥१६६॥

यस्याः पिङ्गलनेत्रद्वितयं सा सुरतकौशलं लभते ।
दुःशीलत्वेन समं वैधव्यं वा ध्रुवं रमणी ॥ १६७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः पिंगलनेत्रद्वितयं भवति सा रमणी सुरतकौशलं लभते ) जिस स्त्रीके पीले रंगकेसे दोनों नेत्र होंय सो स्त्री भोगके सुखको पाती है अथवा ( दुःशीलत्वेन समं ध्रुवं वैधव्यं लभते ) वह खोटे स्वभावके साथ निश्चय करके विधवापनको पाती है ॥ १६७ ॥

गोपिङ्गलनेत्रयुता पितरं श्वशुरं च मातुलं च पुत्रम् ।
भ्रातरमप्यधिगच्छति कामग्रथिला च मोहपरा ॥ १६८ ॥

अन्वयार्थौ–( या नारी गोपिङ्गलनेत्रयुता भवति सा कामग्रथिला च पुनः मोहपरा वै पितरं श्वशुरं मातुलं पुत्रं भ्रातरम् अपि अधिगच्छति )



जो गौकेसे रंग बराबर पीले नेत्रवाली होय सो स्त्री कामकी अधिकताके कारण और मोहके मदमें तत्पर होनेसे निश्चय पिता, श्वशुर, मामा, पुत्र और भाईसे अधिक कामकी चाहना करती है अर्थात् इनसे भोग चाहती है ॥ १६८ ॥

कोकनदच्छदरक्तच्छायं नयनद्वयं भवति यस्याः ।
सा परपुरुषाकांक्षायुक्ता रमणी च नित्यं स्यात् ॥ १६९ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः कोकनदच्छदरक्तच्छायं नयनद्वयं स्यात्, सा रमणी परपुरुषाकांक्षायुक्ता नित्यं स्यात् ) जिस स्त्रीके लाल कमलकी पँखुरीके रंगके तुल्य दोनों नेत्र होयँ उस स्त्रीको दूसरे पुरुषकी चाहना नित्य होती है ॥ १६९ ॥

सजलनयना न शस्ता स्फारितनयना विहीनतरनयना ।
नरनयना कोटरनयना चञ्चलनयना गभीरनयनापि ॥१७०॥

अन्वयार्थौ–(सजलनयना नारी न शस्ता)जलसे भरे नेत्रवाली स्त्री अच्छी नहीं है और ( स्फारितयना नारी विहीनतरनयना ) फटेसे नेत्रवाली स्त्री बहुत खोटी होती है और ( नरनयना कोटरनयना गभीरनयना चंचलनयना अपि नारी अशुभा भवति)मनुष्यकेसे नेत्रवाली, चलायमान नेत्रवाली, वृक्षकोटरके तुल्यनेत्रवाली, गहरे गढेसे नेत्रवाली स्त्री अशुभ होती है ॥ १७० ॥

या सव्यकाणचक्षुः सा परपुरुषाभिचारिणी रमणी ।
अपसव्यकाणचक्षुः स जन्मन्येव निरपत्या ॥ १७१ ॥

अन्वयार्थौ–( या नारी सव्यकाणचक्षुःस्यात्,सा रमणी परपुरुषाभिचारिणी भवति ) जो स्त्री बाईं आँखसे काणी होय सो स्त्री दूसरे पुरुषके भोगनेकी चाहसे व्यभिचारिणी होती है और ( या नारी जन्मन्येव अपसव्यकाणचक्षुः भवति सा रमणी निरपत्या स्यात् )जो स्त्री जन्मसे दाहिनी आँखसे काणी होय सो स्त्री विना सन्तानके होती है अर्थात् बांझ होती है ॥ १७१ ॥

## अथ पक्ष्मलक्षणम् ।

सुदृढैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मैः स्यात्पक्ष्मभिर्घनैः सुभगा ।
सूक्ष्मैर्विरलैः कपिलैः स्थूलैर्निन्द्या ध्रुवमजाभैः ॥ १७२ ॥

अन्वयार्थौ–( सुदृढैः स्निग्धैः कृष्णैः सूक्ष्मभिः नारी सुभगा स्यात् ) कड़ी चिकनी, काली, पतली, बहुत पास लगी हुई बरोनियोंसे स्त्री अच्छी सुन्दर सौभाग्यवती होती है और ( सूक्ष्मैः विरलैः कपिलैः स्थूलैः अजाभैः ध्रुवं पक्ष्मभिः नारी निंद्या स्यात् ) पतलीः जुदी जुदी, पीली, मोटी बकरीकीसी कांतिवाली निश्चय ऐसी बरोनियोंसे स्त्री निंद्य अयोग्य अर्थात् अशुभ होती है ॥ १७२ ॥

रुदनमनिमेषलक्षणमासामपि पुरुषवत्परिज्ञेयम् ।
ग्रन्थप्रपञ्चभयतः पुनरिह दिङ्मात्रमपि नोक्तम् ॥ १७३ ॥

अन्वयार्थौ–( रुदनम् अनिमेषलक्षणम् आसाम् अपि पुरुषवत् परिज्ञेयम् ) रोना और पलकोंके न लगनेके लक्षण पुरुषकी भाँति इनके भी जानने चाहिये और ( पुनः इह ग्रंथप्रपंचभयतः दिङ्मात्रम् अपि न उक्तम् ) फिर यहां ग्रंथके बढनेके भयसे दिशामात्रके भी लक्षण नहीं कहे ॥ १७३ ॥

## अथ भ्रूलक्षणम् ।

शस्ता वृत्ता तन्वी भ्रूयुगली कज्जलच्छाया ।
नयनांभोरुहवलयितरूपा नालं समाश्रयति ॥ १७४ ॥

अन्वयार्थौ–( वृत्ता तन्वी कज्जलच्छाया भ्रूयुगली शस्ता ) गोलरूप काली कांतिकी दोनों भौंहें अच्छी हैं और ( नयनांभोरुहवलयितरूपा भ्रूयुगली अलं न समाश्रयति ) नेत्रोंके कमलोंको घेरनेवाली दोनों भौंहें अच्छी नहीं होती हैं ॥ १७४ ॥

लघुमृदुरोममयी भ्रूरधिज्यधनुरिव शुभा सुदृशाम् ।
कीर्णा पिङ्गलवृत्ता पृथुला खररोमशा न शुभा ॥ १७५ ॥

अन्वयार्थौ–(सुदृशां लघुमृदुरोममयी अधिज्यधनुरिव भ्रूः शुभा स्यात्)

१ अस्य स्थाने बकवाक्य कुत्रचित्पाठः उन्नदृशां ब्रातिकुचे कविविति प्रसिध्यति ।



स्त्रियोंकी छोटी, नरम रोमवाली और चढीहुई कमानके रूप भौंहें शुभ हैं और ( कीर्णा पिंगलवृत्ता पृथुला खररोमशा भ्रूः न शुभा भवति ) जुदे जुदे बिखरेसे बालवाली पीले रंगवाली गोल चौडी करडे रोमवाली भौंहें नहीं शुभ हैं ॥ १७५ ॥

वित्तविहीनां ह्रस्वा मिलिता स्थूला सदैव दुःशीलाम् ।
वन्ध्यां सुदीर्घरोमा रमणीं भ्रूवल्लरी कुरुते ॥ १७६ ॥

अन्वयार्थौ–( ह्रस्वा भ्रूवल्लरी रमणीं वित्तविहीनाम् ) छोटे भौंहें स्त्रीको धनरहित करें और ( मिलिता स्थूला भ्रूवल्लरी रमणीं सदैव दुःशीलाम् ) मिलीहुई मोटी भौंहरूप बेली स्त्रीको सदा खोटे चलनवाली करे और ( सुदीर्घरोमा भ्रूवल्लरी रमणीं वंध्यां कुरुते ) बडे लंबे रोमवाली भौंह रूपवाली स्त्रीको बांझ करे है ॥ १७६ ॥

## अथ कर्णलक्षणम् ।

लम्बा विपुला कर्णद्वितयी मिलिता शुभा सुखाऽऽवर्तैः ।
दोलायुगलाविरतिप्रीतिं दंपतिकृते युगपत् ॥ १७७ ॥

अन्वयार्थौ–( कर्णद्वितयी लम्बा विपुला मिलिता आवर्तैर्युता शुभा ) दोनों कान लंबे बडे मिले हुए चक्रयुक्त होंय तो शुभ हैं और ( दोलायुगलाविरतिप्रीतिं दंपतिकृते युगपत् कुरुते ) दो झूलोंके चक्करसे स्त्री पुरुषके लिये आपसमें प्रीति करे है ॥ १७७ ॥

रोमोपगता यस्याः शष्कुलिरहिता च नो शस्ता ।
कुटिला कृशा शिराला नारी सा जायते निन्द्या ॥ १७८ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः कर्णद्वयी रोमोपगता शष्कुलिरहिता नो शस्ता ) जिस स्त्रीके दोनों कान रोमयुक्त विना प्यालीके होंय तो अच्छे नहीं और ( कुटिला कृशा शिराला कर्णद्वयी यस्याः सा नारी निंद्या जायते ) टेढ़, पतले, नसोंवाले दोनों कानोंसे स्त्री बुराईके योग्य होती है ॥ १७८ ॥

इति आचिबुककर्णान्तः संपूर्णा मन्ददशी ॥

## अथ ललाटलक्षणम् ।

निर्लोम शिराविरहितमर्द्धेन्दुसमं शुभं ललाटतलम् ।
त्र्यंगुलमानमनिम्नं स्त्रीणां सौभाग्यमावहति ॥ १७९ ॥

अन्वयार्थौ-( निर्लोम शिराविरहितम् अर्द्धेन्दुसमं शुभं त्र्यंगुलमानम् अनिम्नं ललाटतलं स्त्रीणां सौभाग्यम् आवहति ) रोमरहित, नसों विना, आधे चन्द्रमाके समान, तीन अंगुल प्रमाण, ऊंचा ऐसा ललाट स्त्रियोंके सौभाग्य हो करता है ॥ १७९ ॥

रेखारहितं व्यक्तं स्वस्तिकसमलंकृतं शुभं भालम् ।
प्रगुणं पट्टमिव स्मरनृपस्य राज्याभिषेकाय ॥१८० ॥

अन्वयार्थौ-( व्यक्तं रेखारहितं स्वस्तिकसमलंकृतं भालं शुभम् ) प्रकट और ( स्मरनृपस्य राज्याभिषेकाय प्रगुणं पट्टम् इव ) कामदेव राजाके राज्याभिषेकके अर्थ मानो यह दृढ वस्त्र है ॥ १८० ॥

यस्याः प्रलम्बमलिकं सा नारी देवरं निजं हन्ति ।
तदपि शिरारोमयुतं सा तु भवेत्पांसुला बाला ॥ १८१ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः अलिकं प्रलम्बं सा नारी निजं देवरं हन्ति ) जिस स्त्रीका ललाट लम्बा होय सो स्त्री अपने देवरको मारती है और ( तदपि भालं शिरारोमयुतं भवेत् सा बाला तु पांसुला भवति ) जो वही लंबा ललाट नसें और रोमयुक्त होय तो सो स्त्री व्यभिचारिणी होती है ॥ १८१ ॥

## अथ सीमंतलक्षणम् ।

सीमन्तो ललनानां ललाटपट्टाश्रितः शुभः सरलः ।
प्रगुणित इवार्द्धचन्द्राकृतिः कृतः पुष्पचापेन ॥ १८२ ॥

अन्वयार्थौ ( ललनानां ललाटपट्टाश्रितः सरलः सीमन्तः शुभ ) स्त्रियोंके ललाटपट्टके आश्रित सीधी सीमंत अर्थात् माँग शुभ है और ( पुष्पचापेन अर्द्धचन्द्राकृतिः प्रगुणितः कृतः इव ) कामदेवने आधे चन्द्रमाके आकार मानो यह दृढ किया है ॥ १८२ ॥



## अथ शीर्षलक्षणम्

कुञ्जरकुम्भनिभं स्याद्वृत्तं शीर्षं समुन्नतं यस्याः ।
सा भवति भूपपत्नी सौभाग्यैश्वर्यसुखसहिता ॥ १८३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः शीर्षं समुन्नतं वृत्तं कुंजरकुंभनिभं स्यात् सा भूपपत्नी सौभाग्यैश्वर्यसुखसहिता भवति ) जिस स्त्रीका मस्तक ऊँचाई लिये गोल हाथीके शिरकी तुल्य होय सो राजाकी स्त्री सुख सौभाग्य सब सुहागवती होती है ॥ १८३ ॥

स्थूलेन भवति शिरसा विधवा दीर्घेण बन्धकी युवतिः ।
विषमेण विषमदुःखा दौर्भाग्यवती विशालेन ॥ १८४ ॥

अन्वयार्थौ-( स्थूलेन शिरसा विधवा स्यात् ) बडे मोटे मस्तकवाली विधवा होय और ( दीर्घेण शिरसा युवतिः बन्धकी भवति ) लम्बे चौडे मस्तकसे स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् खोटी होती है और ( विषमेण शिरसा विषमदुःखा भवति ) ऊँचे नीचे मस्तक करिके अत्यन्त दुःखी होतीहै और ( विशालेन शिरसा दौर्भाग्यवती भवति ) बहुत बडे मस्तकवाली स्त्री अभागिनी होती है ॥ १८४ ॥

## अथ केशलक्षणम् ।

रोलम्बसमच्छायाः सूक्ष्माः शीर्षे समुन्नताः स्निग्धाः ।
केशा एकैकभवा जायन्ते भूपपत्नीनाम् ॥ १८५ ॥

अन्वयार्थौ-( रोलम्बसमच्छायाः सूक्ष्माः समुन्नताः स्निग्धाः एकैकभवाः भूपपत्नीनां शीर्षे ईदृशाः केशाः जायन्ते ) भौंरेकी समान काले पतले और ऊँचे चमकदार, चिकने, सुन्दर इकहरे होय तो राजाकी स्त्रियोंके शिरमें ऐसे बाल होते हैं ॥ १८५ ॥

आकुञ्चिताग्रभागाः स्निग्धांबुजकालकान्तयः सुभगाः ।
चिकुरा हरन्ति यमुनातरङ्गभङ्गीं वरस्त्रीणाम् ॥ १८६ ॥

अन्वयार्थौ–( आकुंचिताग्रभागाः स्निग्धाम्बुजकालकान्तयः सुभगाः वरस्त्रीणां चिकुराः यमुनातरंगभंगीं हरन्ति ) सिकुड रहे हैं आगेके भाग जिनके अर्थात् घुँगरारे ऐसे सचिक्कण कालेकमलके रंग चमकदार, सुंदर अच्छे स्त्रियोंके ऐसे बाल मानो यमुनाकी तरंगकी रचनाको हरलेतेहैं॥१८६॥

यस्याः प्रस्फुटिताग्राः सूक्ष्माः परुषाः शिरोरुहा लघवः ।
उच्चा विरला जटिला विषमाः सा दुःखिनी युवतिः ॥१८७॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः शिरोरुहाः प्रस्फुटिताग्राः सूक्ष्माः परुषाः लघवः उच्चाः विरलाः जटिलाः विषमाः भवंति सा युवतिः दुःखिनी स्यात् ) जिस स्त्रीके बाल फटेहुए हैं आगेके भाग जिसके ऐसे और पतले, रूखे, खरदरे, छोटे, ऊंचे, बिखरेहुए, लिपटे, ऊँचे नीचे होंय सो स्त्री दुखिया होती है ॥ १८७ ॥

अतिशयदीर्घस्थूलैर्भर्तृघ्नी कामिनी भवति केशैः ।
कपिलैरमनस्कारस्कंधप्रभवैः पुनर्निन्द्या ॥ १८८ ॥

अन्वयार्थौ–( अतिशयदीर्घस्थूलैः केशैः कामिनी भर्तृघ्नी भवति ) बहुत बडे,लम्बे,मोटेबालोंसे स्त्री पतिको मारनेवाली होती है और ( पुनः कपिलैः अमनस्कारस्कन्धप्रभवैः केशैः नारी निंद्या भवति ) फिर भूरे बुरे कंधोंतक छिटके हुए बालोंसे स्त्री बुराईके योग्य अर्थात् बुरी होती है ॥ १८८ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनृसिंहात्मजदुर्लभराजविरचिते सामुद्रिकतिलकापरनाम्नि नरस्त्रीलक्षणशास्त्रे संस्थानाधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

---



## अथ व्यञ्जनलक्षणम् ।

व्यञ्जनमथ प्रकृतयो मिश्रकमेतदपि भवति संख्यानम् ।
संक्षेपाल्लक्षणमथ ह्यनुक्रमेणैव वक्ष्यामि ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ–( अथ व्यंजनं प्रकृतयः मिश्रकम् एतत् अपि संक्षेपात् लक्षणम् अनुक्रमेण एव संख्यानं वक्ष्यामि ) आगे व्यंजन और प्रकृति और मिश्रक इनके संक्षेप लक्षण क्रम करके इसी संख्यासे में कहूँगा ॥ १ ॥

व्यञ्जनमिह जन्मान्तरशुभाशुभं व्यज्यते ध्रुवं येन ।
तनुमयमहत्त्वगादि व्यञ्जनमाख्यायते सद्भिः ॥ २ ॥

अन्वयार्थौ-( इह येन जन्मान्तरशुभाशुभं ध्रुवं व्यज्यते तत् व्यञ्जनम् ) इस ग्रन्थमें जिसकरके पहिले जन्मका शुभ अशुभ लक्षण निश्चय करके प्रगट किया होय तिसका नाम व्यञ्जन है और ( तनुमयमहत्त्वगादि सद्भिः व्यञ्जनम् आख्यायते ) शरीरसंबंधी बडी चर्म आदिकको पंडित व्यंजन कहते हैं ॥ २ ॥

## अथ मशकलक्षणम् ।

रक्तः कृष्णो धूम्रो बिन्दुसमो मशक एव विज्ञेयः ।
तिलकं तिलकाकारं ततोऽन्यदपि लांछनं स्त्रीणाम् ॥३॥

अन्वयार्थौ–(रक्तःकृष्णःधूम्रःबिंदुसमः मशक एव विज्ञेयः) लाल,काला, धूएँकासा बूँद समान होय उसीका नाम मशक जानिये और ( तिलकं तिलकाकारं ततः स्त्रीणाम् अन्यदपि लांछनं भवति ) तिलके आकार तिल तिसके पीछे कोई और चिह्न स्त्रियोंके होय उसका नाम लांछन होता है ॥ ३ ॥

अन्तर्भ्रूयुग्मे वा ललाटमध्ये विलोक्यते यस्याः ।
सुस्निग्धाभो मशकः सा भवति महीपतेः पत्नी ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः अन्तर्भ्रूयुग्मे वा ललाटमध्ये सुस्निग्धाभः मशकः विलोक्यते सा स्त्री महीपतेः पत्नी भवति ) जिस स्त्रीकी दोनों भौंहोंके

बीचमें वा ललाटके बीचमें सुन्दर मशक देख पडे सो स्त्री राजाकी रानी होती है ॥ ४ ॥

अन्तर्वामकपोले स्फुटता मशकेन लोहिता भवति ।
मिष्टान्नभोज्यमत्ति प्रायेणासौ नितम्बिनी लोके ॥ ५ ॥

अन्वयार्थौ–( या अंतर्वामकपोले मशकेनस्फुटता लोहिता भवति)जोस्त्री बांयें कपोलमें प्रकट मसासे लाल होय ( असौ नितंबिनी लोके प्रायेण मिष्टान्न-भोज्यम् अत्ति ) सो स्त्री लोकमें बहुधा मीठे भोजनको खाती है ॥ ५ ॥

## अथ तिलकलक्षणम् ।

तिलकं छांछनमथवा हृदि रक्ताभं विलोक्यते यस्याः ।
सा धनधान्योपेता पतिप्रिया जायते पत्नी ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः हृदि रक्ताभं तिलकम् अथवा लांछनं बिलो-क्यते सा पत्नो धनधान्योपेता पतिप्रिया जायते ) जिस स्त्रीके हृदयमें लाल तिल वा और कोई चिह्न दीखे सो स्त्री धन धान्यसे युक्त और पतिकी प्यारी होती है ॥ ६ ॥

रक्तं तिलकं लांछनमपसव्यपयोधरे भवति यस्याः ।
पुत्रीचतुष्टयं सा सुतत्रयं चाङ्गना सूते ॥ ७ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः अपसव्यपयोधरे रक्तं तिलकं लांछनं भवति, सा अंगना पुत्रीचतुष्टयं च पुनः सुतत्रयं सूते ) जिस स्त्रीके दाहिने कुचमें लाल तिल अथवा कोई और चिह्न होय सो पुत्री और तीन पुत्रको उत्पन्न करै है ॥ ७ ॥

वामकुचे शुभतिलके विलासवती तदा स्वनालेन ।
स्फुटमेकपुत्रजननी सा विधवा दुःखिनी भवति ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ–( वामकुचे शुभतिलके सति विलासवती स्वनालेन स्फुटम् एकपुत्रजननी पश्चात् विधवा तथा दुःखिनी भवति ) जो बायें कुचमें



सुन्दर तिल होय तो अपने नाल करिके प्रकट एक पुत्रको जननेवाली होके पीछे विधवा और दुखिया होती है ॥ ८ ॥

गुह्यस्य कुंकुमाभस्तिलकः प्रान्तेऽथ दक्षिणे भागे ।
सा भवति भूपपत्नी नृपजननी जायते वापि ॥ ९ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः गुह्यस्य प्रान्ते अथ दक्षिणे भागे कुंकुमाभः तिलको भवति सा भूपपत्नी वा नृपजननी अपि भवति )जिस स्त्रीकीयोनिके पास दाहिने ओर तिल हो वह राजाकी पत्नी या माता होती है ॥ ९ ॥

मशको लोहितवर्णो नासाग्रे दृश्यते स्फुटो यस्याः ।
सा भूपपट्टराज्ञी राजानं सूयते सूनुम् ॥ १० ॥

अन्वयार्थौ–(यस्याः नासाग्रे लोहितवर्णः मशकः स्फुटः दृश्यते सा भूपपट्टराज्ञी वा राजानं सूनुं सूयते ) जिस स्त्रीकी नाकके आगेके भागमें लालरंगका तिल वा मस्सा प्रकट दीख पडे सो राजाकी पटरानी वा राजा पुत्रको उत्पन्न करे ॥ १० ॥

विस्फुरति नासिकाग्रे यस्यास्तिलकः सकज्जलच्छायः ।
भर्तृघ्नी सा नारी विशेषतः पांसुला भवति ॥ ११ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः नासिकाग्रे सकज्जलच्छायः तिलकः विस्फुरति सा नारी भर्तृघ्नी वा विशेषतः पांसुला भवति ) जिस स्त्रीके नाकके आगेके भागमें काला तिल प्रकट होय सो स्त्री पतिको मारे और विशेष करके वह व्यभिचारिणी होती है और खोटी होती है ॥ ११ ॥

नाभेरधोविभागे मशको वा तिलकलांछने नार्याः ।
यस्या भवतः स्निग्धे सा रमणी वहति कल्याणम् ॥१२॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः नार्याः नाभेरधोविभागे मशकः वा तिलकलांछने स्निग्धे भवतः सा रमणी कल्याणं वहति ) जिस स्त्रीकी टूंडीके नीचेके भागमें मस्सा अथवा तिलक वा और कोई चिह्न चमकता होय तो सो स्त्री कल्याणको प्राप्त करनेवाली होती है ॥ १२ ॥

स्यातां गुल्फौ यस्याः स्फुटलांछनमशकतिलकसंयुक्तौ ।
सा धनधान्यविहीना दुःखवती जीवति प्रायः ॥ १३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः गुल्फौ स्फुटलांछनमशकतिलकसंयुक्तौ स्यातां सा धनधान्यविहीना प्रायः दुःखवती जीवति ) जिस स्त्रीके टकनेमें प्रकट चिह्न मस्सा वा तिल युक्त होय सो धनधान्यसे रहित बहुधा दुःखिया होकर जीवती है ॥ १३ ॥

वामे हस्ते कंठे वा काये जायते ध्रुवं यस्याः ।
मशको यदि वा तिलकः प्राग्गर्भे सा सुतं सूते ॥१४॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः काये वामे हस्ते वा कण्ठे मशकः यदि वा तिलकः ध्रुवं जायते, सा प्राक् गर्भे सुतं सूते ) जिस स्त्रीके शरीरमें बायें हाथमें वा कंठमें मस्सा वा तिलक निश्चय होय सो स्त्री पहलेही गर्भमें पुत्रको उत्पन्न करती है ॥ १४ ॥

मशकं तिलकं लांछनमुक्तस्थाने कृताशुभं यासाम् ॥
अङ्गे पुनरपसव्ये सुदृशां क्लेशावहं बहुशः ॥ १५ ॥

अन्वयार्थौ-( यासां सुदृशाम् उक्तस्थाने मशकं तिलकं लांछनम् अशुभं कृतम् ) जिन स्त्रियोंके कहेहुए स्थानोंमें मस्सा तिल और कोई चिह्न होय तो अशुभ है और ( पुनः अपसव्ये अङ्गे बहुशः क्लेशावहं भवति ) फिर जो दाहिने अगमें चिह्न होय तो अतिदुःखके करनेवाले होते हैं ॥ १५ ॥

## अथ प्रकृतिलक्षणम् ।

प्रकृतिर्द्विविधा गदिता स्त्रीणां श्लेष्मादिका स्वभावाख्या ।
प्रथमा सापि त्रेधा द्वादशधा भवति पुनरन्या ॥ १६ ॥

अन्वयार्थौ-( स्त्रीणां प्रकृतिर्द्विविधा गदिता श्लेष्मादिका च पुनः स्वभावाख्या, सापि प्रथमा त्रेधा पुनः अन्या द्वादशधा भवति ) स्त्रियोंकी प्रकृति दो प्रकारकी कही है श्लेष्मादिक और स्वभाव, सो पहली तीन प्रकारकी है फिर दूसरी १२ प्रकारकी होती है ॥ १६ ॥



नारीमतेऽस्ति प्रकृतिः सत्यप्रियभाषिणी स्थिरस्नेहा ।
बहुप्रसूतिं लभते उत्पलदूर्वाङ्कुरश्यामा ॥ १७ ॥

अन्वयार्थौ-( नारीमते प्रकृतिः अस्ति, सा नारी स्थिरस्नेहा भवति ) स्त्रीके मतमें स्वभाव है स्त्री स्थिर स्नेह अर्थात् स्थिरप्रीतिवाली होती है और ( सत्यप्रियभाषिणी भवति ) सची और मीठा बोलनेवाली होती है और तथा ( उत्पलदूर्वाकुरश्यामा बहुप्रसूतिं लभते ) नील कमल और दूबके अंकुरके समान श्यामरंग, बहुत जननेवाली होती है ॥ १७ ॥

स्निग्धनखररोमत्वङ्नारी सुविलोचना क्षमायुक्ता ।
सुविभक्तसमावयवा बहुसत्यापत्यवीर्ययुता ॥ १८ ॥

अन्वयार्थौ-( स्निग्धनखररोमत्वक् सुविलोचना नारी क्षमायुक्ताभवति ) चिकने हैं नख, रोम और त्वचा जिसके और सुन्दर नेत्रोंकरके युक्त ऐसी स्त्री क्षमावाली होती है और ( सुविभक्तसमावयवा बहुसत्यापत्यवीर्ययुता भवति ) जुदे जुदे हैं बराबर हाथ पाँव आदि अंग जिसके ऐसी स्त्री बहुत सत्य, संतान और पराक्रमयुक्त होती है ॥ १८ ॥

अस्थूला सरसत्वक्प्रसूनतुल्यानुलेपना सुभगा ।
धर्मार्थिनी कृतज्ञा दयान्विता कमलपदा सुमुखी ॥१९॥

अन्वयार्थौ-मोटी न होय, रसदार होय त्वचा जिसकी, फूलकासा है अनुलेपन जिसमें और धर्मसेही है प्रयोजन जिसमें, कहेको माननेवाली और दयावती, कमलकेसे हैं पाँव जिसके और सुन्दर है मुख जिसका ऐसी स्त्री अच्छी होती है इस श्लोकका अन्वय यथाक्रम है ॥ १९ ॥

प्रच्छन्ने धृतवेषा क्षुत्तृष्णाक्षमात्रपोपेता ।
मितवचनपानभोजनसमया क्ष्मातले पृथुलनयना ॥२०॥

अन्वयार्थौ-( क्ष्मातले पृथुलनयना नारी प्रच्छन्नधृतवेषा, क्षुत्तृष्णाक्षमात्रपोपेता मितवचना पानभोजनसमया स्यात् ) पृथ्वीमें बडे नेत्रवाली स्त्री

गुप्त धरे हैं अनेक वेष जिसने, भूख प्यास सहनशीलता और लज्जा इन चारों करिके युक्त, प्रमाणके वचन अन्न जल समयपर है जिसके ऐसी होती है ॥ २० ॥

साधारणसुरतेच्छा निद्रालुः शीतमांसलश्रोणिः ।
जलदजलाशयजलजकृतवांछा या भवेत्स्वप्ने ॥ २१ ॥

अन्वयार्थौ –साधारण है सुरतकी इच्छा जिसकी, निद्रावती अर्थात जिसको निद्रा अधिक होय, टंढी है मांससे भरी योनि जिसकी और स्वप्नेमें ( सोनेमें ) मेघ और पानीके स्थान और पदार्थ बांछा करनेवाली होती है । इस श्लोकका अन्वय यथाक्रम है ॥ २१ ॥

योषित् पित्तप्रकृतिर्गौरी कृष्णाथवा हृष्टा ।
आताम्रनयनकररुहरसनापाणितलतालुतला ॥ २२ ॥

अन्वयार्थौ–( पित्तप्रकृतिः योषित् गौरी कृष्णा अथवा हृष्टा ) पित्तके सुभाववाली स्त्री गोरेरंग वा काली प्रसन्न रहती है और ( आताम्रनयनकररुहरसनापाणितलतालुतला भवति ) नेत्र, नख, जीभ, हाथकी हथेली तालु, पाँवका तलुवा ये जिसके लाल होते हैं वह अच्छी है ॥ २२ ॥

क्षणक्षणविकसच्चेष्टा अभिलषितशीतलमधुरसा मृद्वी ।
अथ विरलकपिलमूर्द्धजरोमा मेधावती प्रायः ॥ २३ ॥

अन्वयार्थौ–( क्षणक्षणविकसच्चेष्टा ) छिनछिनमें खिले आते हैं देह-व्यापार जिसके और ( अभिलषितशीतलमधुरसा ) प्यारा है शीत और मीठे रस जिसका ( मृद्वी ) मुलायम है शरीर जिसका ( प्रायः विरलकपिल-मूर्द्धजरोमा मेधावती भवति ) बहुधा जुदे जुदे भूरे रंगके वाल और रोम जिसके सो बुद्धिमती होती है ॥ २३ ॥

प्रियशुचिवासोमाल्या उपनाड्युष्णशिथिलमृदुगुह्या ।
अभिमानिनी शुचिरता विशदस्मितवल्लभा शूरा ॥ २४ ॥

अन्वयार्थौ–(अस्मिन् श्लोके क्रमान्वयः ) प्यारे हैं पवित्र कपडे और माला जिसके फिर कैसी है वह उपनाडी ( छोटीनसें ) युक्त और गरम है गुदगुदी ढीली नरम योनि जिसकी गर्भवती और पवित्र वार्तोंकी चाहनेवाली निर्मल है हँसना प्यारा जिसका और जो शूरा है वह शुभ है ॥ २४ ॥

धृतवलिपलितक्षुत्तृट् तनुवीर्या मृदुलमोहनक्रीडा ।
किंशुकदिग्दाहतडिद्दहनादीन्पश्यति स्वप्ने ॥२५॥

अन्वयार्थौ–धारण करी हैं सलवट और छींक, भूँख, प्यास जिसने थोडा है साहस जिसका मुलायम भोग जिसका वह टेसूके फूल और दिशा-ओंका जलना और बिजली आग आदिको देखती है ॥ २५ ॥

वनिता वातप्रकृतिः स्फुटितकचा भग्नपादतला ।
रूक्षा वै नखदशनाश्चलवृत्ता चञ्चलप्रकृतिः ॥२६॥

अन्वयार्थौ–( स्फुटितकचा भग्नपादतला ) फटे टूटे हैं बाल और पांवके तलुवे जिसके और ( वै इति निश्चयेन नखदशनाः रूक्षाः ) रूखे हैं नख और दांत जिसके और ( चलवृत्ता चञ्चलप्रकृतिः ) चलायमान है आचरण और चञ्चल स्वभाव जिसका ( वातप्रकृतिः वनिता ईदृशी भवति ) वातप्रकृतिवाली स्त्री ऐसी होती है ॥ २६ ॥

अजितेन्द्रिया खराङ्गी गन्धर्वविलासहासकलहरतिः ।
बहुभोजनाऽल्पनिद्रा बहुलालापभ्रमणशीला ॥ २७ ॥

अन्वयार्थौ–( नहीं वशमें हैं इंद्रिय जिसके और खरदरा है अंग जिसका गाने और भोग हँसी कलह करनेमें है प्रीति जिसकी और बहुत भोजन और थोडा सोनेवाली बहुत बोलने और फिरनेका है स्वभाव जिसका ॥ २७ ॥

धूसरशरीरवर्णा छायाविद्वेषमधुरसा शिशिरा ।
किंचिद्विवृताक्षमुखी शेते विलपति निशि त्रसति ॥ २८ ॥

अन्वयार्थौ–( धूलके रंगके तुल्य है शरीरका रंग जिसका और छायासे वैर और मीठे रस ठंडेको चाहनेवाली और थोडी खुली हुई आंख और मुख है जिसका रातमें सोनेमें रोती डरती हुई विलाप करती है ॥ २८ ॥

बह्वम्ललवणतिक्तस्निग्धकषायप्रिया सुरतिकठिना ।
गोजिह्वाकर्कशतनुरोमा सुश्रोणिबिम्बयुना ॥२९॥

अन्वयार्थौ–बहुत खट्टा, नमकीन, चरपरा, चिकना, कसैला ऐसे हैं स्वाद प्यारे जिसको और कमरके बिम्बयुक्त रतिमें कड़ी होती है ॥२९॥

उद्यानवनक्रीडारतिरत्युष्णप्रिया स्थिरक्रोधा ।
तरुपर्वताधिरोहं स्वप्ने कुरुते न भोगमनाः ॥ ३० ॥

अन्वयार्थौ–बाग बगीचे और वनमें खेलने वा जानेकी है प्रीति जिसकी और बहुत गरम है प्रिय जिसके और स्थिर क्रोध है जिसका वह वृक्ष और पर्वतोंपर चढनेका स्वप्न देखनेवाली और भोगमें मन नहीं करै है ॥ ३० ॥

प्रायेणैषा प्रकृतिः शुद्धैव विलोक्यते स्फुटं क्वापि ।
भेदाः पुनरेतासां बहवोऽपि भवंति मनुजानाम् ॥ ३१ ॥

अन्वयार्थौ–( प्रायेण एषा प्रकृतिः शुद्धैव स्फुटं क्वापि विलोक्यते ) बहुधा करके यह शुद्ध प्रकृति प्रकट कहीं देखी जाती है, और ( पुनः मनुजानाम् एतासां अपि बहवः भवंति ) फिर मनुष्योंकी इन्हीं प्रकृतियोंके बहुतसे भेद होते हैं ॥ ३१ ॥

सुरविद्याधरगन्धर्वयक्षराक्षसपिशाचनरकपिभिः ।
अहिखरविडालसिंहैस्तुल्याऽन्यप्रकृतिरत्रैषा ॥ ३२ ॥

अन्वयार्थौ–सुर, विद्याधर, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, पिशाच, नर, कपि, अहि, खर,बिडाल, सिंह आदिकी समान और भी प्रकृति है ॥ ३२ ॥

अल्पाशिनी सुगन्धा समुज्ज्वला चारुमानसा शुद्धा ।
प्रियवसना तनुनिद्रा निर्दिष्टा सा सुरप्रकृतिः ॥ ३३ ॥

अन्वयार्थौ–( अल्पाशिनी सुगंधा ) थोडा भोजन करनेवाली और अच्छी है गंध जिसमें और ( समुज्ज्वला चारुमानसा शुद्धा ) निर्मलकान्तियुक्त सुन्दर चित्त शुद्ध स्वभाववाली और ( प्रियवसना तनुनिद्रा ) प्यारे हैं वस्त्र और थोडी है नींद जिसको ( सा नारी सुरप्रकृतिः ) निर्दिष्टा ) सो स्त्री देवताकी प्रकृतिवाली कही है ॥ ३३ ॥



विद्याधरस्वभावा भवति कलागुणविचक्षणा शान्ता ।
चन्द्रानना सुभोगा मनोहरस्थानबद्धरतिः ॥ ३४ ॥

अन्वयार्थौ–( कलागुणविचक्षणा शांता ) कला और गुण इनमें चतुर शान्त है चित्त जिसका और ( चन्द्रानना सुभोगा ) चन्द्रमाकासा है मुख जिसका, सुन्दर भोगवाली ( मनोहरस्थानबद्धरतिः ) सुन्दर स्थानमें बांधी है प्रीति जिसने ( ईदृशी नारी विद्याधरस्वभावा भवति ) ऐसी स्त्री विद्याधरस्वभाववाली होती है ॥ ३४ ॥

उद्यानवनासक्ता कलस्वरा गीतनृत्यरक्तमनाः ।
परिचितसुगन्धमाल्या गन्धर्वप्रकृतिरबला सा ॥ ३५ ॥

अन्वयार्थौ–( उद्यानवनासक्ता ) बाग बगीचे और वनमें है चित्त जिसका और ( कलस्वरा गीतनृत्यरक्तमनाः ) सुन्दर है शब्द, गीत और नृत्यमें है मन जिसका ( परिचितसुगंधमाल्या ) सुगंध और मालासे पहिचान करनेवाली ( सा अबला गंधर्वप्रकृतिः ज्ञेया ) सो स्त्री गन्धर्वस्वभाववाली जानिये ॥ ३५ ॥

आरामजलक्रीडारता विभूषणपरायणा कान्ता ।
प्रायो यक्षप्रकृतिर्धनरक्षणकांक्षिणी रमणी ॥ ३६ ॥

अन्वयार्थौ–( आराम जलक्रीडारता ) बाग बगीचेकी सैरमें तत्पर ( विभूषणपरायणा ) भूषण पहरनेमें तत्पर रहै ( धनरक्षणकांक्षिणी रमणी ) धनकी रक्षा करने और चाहने और भोग करनेवाली ( सा कान्ता प्रायः यक्षप्रकृतिर्भवति ) सो बहुधा यक्षस्वभाववाली होती है ॥३६॥

बह्वशना क्रुद्धमना हंति पतिं प्राणलग्नमप्युग्रा ।
सा राक्षसस्वभावा कटुकालापा दुराचारा ॥ ३७ ॥

अन्वयार्थौ–( बह्वशना ) बहुत खानेवाली ( क्रुद्धमनाः )लडनेमें है मन जिसका(प्राणलग्नम् अपि पतिं हंति ) प्राणसे लगे भी पतिको मारनेवाली ( उग्रा कटुकालापा दुराचारा ) भयंकर और कडुवा बोलने और बुरे आचरणवाली ( सा नारी राक्षसस्वभावा भवति)सो स्त्री राक्षसस्वभाववाली होती है ॥३७॥

शौचाचारभ्रष्टा रूपविहीना भयंकरा सततम् ।
प्रस्वेदमलोपेता भवति पिशाचप्रकृतिरशुभा ॥ ३८ ॥

अन्वयार्थौ–( शौचाचारभ्रष्टा ) पवित्र आचरणसे रहित ( रूपविहीना ) सूरतसे बुरी ( सततं भयंकरा ) निरंतर डर करनेवाली ( प्रस्वेदमलोपेता ) पसीना और मलकरिके युक्त ( सा नारी अशुभा पिशाचप्रकृतिर्भवति ) सो स्त्री अशुभ पिशाचिनी स्वभावकी होती है ॥ ३८ ॥

दानदयानियमरतिः पतिव्रता देवगुरुकृताज्ञा च ।
कार्याकार्यविविक्ता नरस्वभावा भवति नारी ॥ ३९ ॥

अन्वयार्थौ–( दानदयानियमरतिः ) दान दया और नियममें है प्रीति जिसकी(पतिव्रता देवगुरुकृताज्ञा च ) पतिके मानने और देव, गुरुकी करी है आज्ञा जिसने(कार्याकार्यविविक्ता ) भले बुरे कामका विचार करनेवाली ( सा नारी नरस्वभावा भवति ) सो स्त्री मनुष्यस्वभावकी होती है ॥ ३९ ॥

स्थैर्यं क्वापि न कुरुते समस्तदिग्वीक्षणेक्षणासक्ता ।
उत्फालगतिर्लुब्धा दुर्वेषा सा कपिप्रकृतिः ॥ ४० ॥

अन्वयार्थौ–(क्वापि स्थैर्यं न कुरुते ) कहीं ठहर न सके ( समस्तदिग्वीक्षणेक्षणासक्ता )सब दिशाओंके देखनेमें नेत्रोंको फेरनेवाली ( उत्फालगतिः ) उछलके चलनेवाली (लुब्धा) लोभवाली(दुर्वेषा) बुरे वेषकी,खोटेरूपवाली(सा नारी कपिप्रकृतिर्भवति ) सो स्त्री बंदरके स्वभाववाली होती है ॥ ४० ॥

अन्यच्छिद्रान्वेषणपरायणा कुटिलगामिनी रौद्रा ।
धृतवैरा क्रोधरुचिरहिस्वभावा च वनिता स्यात् ॥ ४१ ॥

अन्वयार्थौ–( अन्यच्छिद्रान्वेषणपरायणा )औरोंके दोष ढूँढनेमें तत्पर ( कुटिलगामिनी रौद्रा) टेढी चाल और खोटे भयंकर स्वभाववाली (धृतवैरा) वैरको करनेवाली ( क्रोधरुचिः) क्रोधमें है रुचि ( चाह ) जिसकी ( सा वनिता अहिस्वभावा स्यात् ) सो स्त्री सांपके स्वभाववाली होती है॥४१॥

सहते परां विभूतिं खरमैथुनसेविनी मुसलनादा ।
अन्नेन येन केनचिदुपचितगात्रा खरप्रकृतिः ॥ ४२ ॥



अन्वयार्थौ–( परां विभूतिं सहते ) दूसरेके ठाटको सहनेवाली ( खरमैथुनसेवनी ) बहुत जोरसे भोगके चाहनेवाली अर्थात् गधेकेसे रमनेवाली ( मुसलनादा ) भयंकर बोलनेवाली (येन केनचित् अन्नेन उपचितगात्रा ) किसी अन्नकरके मोटा हो गया है शरीर जिसका ( सा नारी खरप्रकृतिर्भवति ) सो स्त्री गधेके स्वभाववाली होती है ॥ ४२ ॥

छन्नं कुरुते पापं परपीडान्यस्तमानसा सततम् ।
स्त्री सापवादरक्षणपरा बिडालस्वभावा च ॥ ४३ ॥

अन्वयार्थौ–(या स्त्री छन्नं पापं कुरुते) जो स्त्री छिपके पाप करे ( या स्त्री सततं परपीडान्यस्तमानसा ) जो स्त्री दूसरेके मनको दुःख देनेवाली ( या स्त्री अपवादरक्षणपरा ) जो स्त्री बुराईके साथ रक्षामें तत्पर ( सा स्त्री बिडालस्वभावा भवति ) सो स्त्री बिलावके स्वभाववाली होती है ॥ ४३ ॥

एकान्तस्थानरतिश्चिरेण मैथुननिषेवणस्था च ।
निद्रालसा गतभया सिंहप्रकृतिर्भवति युवतिः ॥४४ ॥

अन्वयार्थौ–( या स्त्री एकान्तस्थानरतिः )जो स्त्री एकान्त स्थानमें रहनेकी इच्छावाली है ( या स्त्री चिरेण मैथुननिषेवणस्था ) जो स्त्री बहुत भोग करनेवाली ( निद्रालसा ) नींद और आलसवाली ( गतभया) गया है भय जिसका(सा युवतिःसिंहप्रकृतिर्भवति)सो स्त्रीसिंहके स्वभाववाली होतीहै४४

## अथ मिश्रलक्षणम् ।

मण्डूकतुल्यकुक्षिर्भवति न्यग्रोधमण्डला युवतिः ।
सा सूते सुतमेकं सोऽपि पुनश्चक्रवर्ती स्यात् ॥ ४५ ॥

अन्वयार्थौ–( या युवतिः मंडूकतुल्यकुक्षिः तथा न्यग्रोधमंडला भवति ) जो स्त्रीके मेंडककीसी कोख और नीचेसे हलकी ऊपरसे भारी बडवृक्षका सा आकार होय (सा एकं सुतं सूते) सो एक पुत्रको उत्पन्न करती है (पुनः सोपि सुतः चक्रवर्ती स्यात) फिर वही पुत्र चक्रवर्ती राजा होता है ॥४५॥

भालस्थले त्रिशूलं विलोक्यते दैवनिर्मितं यस्याः ।
तस्याः स्वामित्वं स्याद्भुवने वनितासहस्राणाम् ॥४६॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः भालस्थले दैवनिर्मितं त्रिशूलं विलोक्यते ) जिस स्त्रीके ललाटमें दैवका बनाया हुवा त्रिशूल दीखे तो ( तस्या भुवने सहस्राणां वनितानां स्वामित्वं स्यात् ) तिस स्त्रीको लोकमें हजार स्त्रियोंका मालिकपना होता है ॥ ४६ ॥

या हरिणाक्षी हरिणग्रीवा हरिणोदरी हरिणजङ्घा ।
जातापि दासवंशे सा युवतिर्भवति नृपपत्नी ॥४७॥

अन्वयार्थौ–( या युवतिः हरिणाक्षी, हरिणग्रीवा, हरिणोदरी हरिणजंघा स्यात् ) जिस स्त्रीकी हिरणकीसी आँख और हिरणकीसी नाड और हिरणकासा पेट और हिरणकीसी पिंडली होय तो ( दासवंशे जातापि सा युवतिः नृपपत्नी भवति ) वह टहलनीके भी वंशमें उत्पन्न हुई होय सोभी स्त्री राजाकी रानी होती है ॥ ४७ ॥

मधुपिङ्गाक्षी स्निग्धा श्यामाङ्गी राजहंसगतिनादा ।
अष्टौ जनयति पुत्रान्धनधान्यविवर्धिनी तन्वी ॥४८॥

अन्वयार्थौ–( मधुपिंगाक्षी ) शहदकेसे हैं नेत्र जिसके और ( स्निग्धा श्यामांगी ) चिकना सुन्दर है साँवला अंग जिसका और ( राजहंसगतिनादा ) राजहंसकीसी है चाल और बोल जिसका ( ईदृशी तन्वी धनधान्यविवर्द्धिनी ) ऐसी स्त्री धन धान्यको बढानेवाली ( तथा अष्टौ पुत्रान् जनयति ) वह आठ पुत्रोंको उत्पन्न करै है ॥ ४८ ॥

पीवरनितम्बबिम्बा पीवरवक्षोजमण्डका बाला ।
पीवरकपोलपाली सा सौभाग्यान्विता युवतिः ॥४९॥

अन्वयार्थौ–( या बाला पीवरनितम्बबिम्बा ) खूब भरे हुए मोटे फूले हैं कूले जिसके और ( पीवरवक्षोजमण्डला ) भरे हुए हैं कुचोंके मंडल जिसके आर ( पीवरकपोलपाली ) फूले हुए हैं कपोलोंके हड्डे जिसके ( सा युवतिः सौभाग्यान्विता भवति ) सो स्त्री सौभाग्ययुक्त अर्थात् सर्व सुहागिनी होती है ॥ ४९ ॥



रक्तनखतालुरसना रक्तोष्ठी रक्तपाणिपादतला ।
रक्तनयनान्तगुह्या धनधान्यसमन्विता वनिता ॥ ५० ॥

अन्वयार्थौ–( रक्तनखतालुरसना रक्तोष्ठी रक्तपाणिपादतला रक्तनयनान्तगुह्या स्यात् ) लाल नख और तालु, जीभ, लाल होठ, लाल हाथ, पाँवके तलुवा लाल, नेत्रोंके अंत और योनि जिसकी लाल है ( सा वनिता धनधान्यसमन्विता भवति ) सो स्त्री धनधान्ययुक्त होती है ॥ ५० ॥

पृथुनयना पृथुजघना पृथुवक्षाः पृथुकटिः पृथुश्रोणिः ।
पृथुशीला च पुरंध्री सुपूजिता जायते जगति ॥ ५१ ॥

अन्वयार्थौ–( पृथुनयना पृथुजघना पृथुवक्षाः पृथुकटिः पृथुश्रोणिः पृथुशीला पुरंध्री जगति सुपूजिता जायते ) लंबे चौड नेत्र और लंबा चौडा कूलेका आगा, बडी चौडी छाती, बडी चौडी कमर, बडी चौडी योनि, बडी उदारता दीखे ऐसी स्त्री लोकमें माननीय अर्थात् पूजने योग्य होती है ॥५१॥

मृदुरोमा मृदुगात्री मृदुकोपा मृदुशिरोरुहा रमणी ।
मृदुभाषिणी अगण्यैः पुण्यैरासाद्यते सद्यः ॥ ५२ ॥

अन्वयार्थौ–( मृदुरोमा मृदुगात्री मृदुकोपा मृदुशिरोरुहा मृदुभाषिणी ईदृशी रमणी अगण्यैः पुण्यैः सद्यः आसाद्यते ) नरम रोम, कोमल शरीर, थोड कोपवाली , कोमल बाल, मीठे बोलनेवाली ऐसी स्त्री बडे पुण्योंसे शीघ्रही मिलती है ॥ ५२ ॥

जानुयुगं जंघाद्वयमपि लग्नं स्यात् परस्परं यस्याः ।
उत्कृष्टकामिनी या सा सौभाग्यान्विता रमणी ॥ ५३ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः जानुयुगं जंघाद्वयम् अपि परस्परेण लग्नं स्यात् या उत्कृष्टकामिनी सा रमणी सौभाग्यान्विता भवति ) जिस स्त्रीके दोनों घोटुओंके ऊपरके भाग जानु संज्ञक तथा आपसमें दोनों जंघा लगी हों और जो श्रेष्ठ कामकी चाह करनेवाली है सो स्त्री सौभाग्यवती अर्थात् अच्छे भाग्ययुक्त होती है ॥ ५३ ॥

दीर्घमुखी दीर्घाक्षी दीर्घभुजा दीर्घमूर्द्धजा तन्वी ।
दीर्घांगुलिका प्राप्नोत्यायुर्दीर्घं सुखोपेतम् ॥ ५४ ॥

अन्वयार्थौ–( दीर्घमुखी दीर्घाक्षी दीर्घभुजा दीर्घमूर्द्धजा दीर्घांगुलिका तन्वी सुखोपेतं दीर्घम् आयुः प्राप्नोति ) बडा लंबा मुख, बडे लंबे नेत्र। बडी लंबी बाहें, बडे लंबे बाल, बडी लंबी अंगुली हैं जिसकी ऐसी स्त्री सुख करके युक्त, बडी आयु पाती है ॥ ५४ ॥

वृत्तमुखी वृत्तकुचा वृत्तप्रसृतोरुजानुगुल्फयुगा ।
वृत्तग्रीवानाभिवृत्तशिरा जायते धन्या ॥ ५५ ॥

अन्वयार्थौ–( वृत्तमुखी वृत्तकुचा वृत्तप्रसृतोरुजानुगुल्फयुगा वृत्तग्रीवानाभिः वृत्तशिरा नारी धन्या जायते ) गोल मुख, गोल चूंची, गोल पसरे ऊरु, जानु और दोनों टकने, गोल नाड, टूंडी और गोल मस्तक है जिसका ऐसी स्त्री धन्य अर्थात् अच्छी होती है ॥ ५५ ॥

व्यक्ता भवंति रेखा मणिबन्धे कण्ठदेशके नूनम् ।
पूर्णास्तिस्रो यस्या नृपस्य सा जायते जाया ॥ ५६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः मणिबन्धे कंठदेशके व्यक्ताः पूर्णाः तिस्रो रेखा भवंति सा नूनं नृपस्य जाया जायते ) जिस स्त्रीके पहुँचेमें और कंठमें प्रकट तीन रेखा पूरी होयँ सो निश्चय करके राजाकी रानी होती है ॥ ५६ ॥

उत्तप्तकनकरुचिरा तनुत्वचा सकलकोमलावयवा ।
लब्धसमुदायशोभा प्रायः श्रीभाजनं सुदृशी ॥ ५७ ॥

अन्वयार्थौ–( या उत्तप्तकनकरुचिरा तनुत्वचा सकलकोमलावयवा लब्धसमुदायशोभा सा सुदृशी प्रायः श्रीभाजनं भवति ) जो स्त्री तपे हुए सोनेके रंग और पतली खाल और संपूर्ण कोमल हैं हाथ, पाँव जिसके और पाई इकट्ठी शोभा जिसने सो स्त्री बहुधा लक्ष्मीका पात्र अर्थात् भोगनेवाली होती है ॥ ५७ ॥

पद्मिन्यथ हस्तिन्यथ शंखिन्यथ चित्रिणीति भेदेन ।
वनिता चतुष्प्रकारा क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ॥ ५८ ॥

अन्वयार्थौ–( वनिता चतुष्प्रकारा पद्मिनी हस्तिनी शंखिनी चित्रिणी इति भेदेन, क्रमेण तल्लक्षणं ब्रूमः ) स्त्रियोंके चार प्रकारके भेद हैं–पद्मिनी १ हस्तिनी २, शंखिनी ३, चित्रिणी ४, तिनके क्रमसे लक्षण हम कहते हैं ॥ ५८ ॥



स्निग्धश्यामलकान्तिस्तिलकुसुमाकारसुभगनासा च ।
त्रिवलीतरङ्गमध्या वृत्तकुचा स्निग्धकृष्णकचा ॥ ५९ ॥
पद्ममुखी मधुगन्धा पद्मायतलोचना प्रियालापा ।
बिम्बोष्ठी हंसगतिर्द्धर्मरतिः पद्मिनी भवति ॥ ६० ॥

अन्वयार्थौ–( स्निग्धश्यामलकान्तिः तिलकुसुमाकारसुभगनासा त्रिवलीतरंगमध्या वृत्तकुचा स्निग्धकृष्णकचा पद्ममुखी मधुगंधा पद्मायतलोचना प्रियालापा बिंबोष्ठी हंसगतिः धर्मगतिः सा नारी पद्मिनी भवति ) सुन्दर चिकना साँवला है रंग जिसका और तिलके फूलके आकार सुन्दर है नाक जिसकी, त्रिवलीकी तरंग है बीचमें जिसके गोल हैं कुच जिसके और सुन्दर काले बाल, कमलकासा है मुख जिसका, सुन्दर मीठी है सुगंध जिसमें; कमलकेसे हैं बडे नेत्र जिसके, मीठा बोलनेवाली, कुँदरूकेसे हैं लाल होठ जिसके, हंसकीसी है चाल जिसकी, धर्ममें है प्रीति जिसकी सो नारी पद्मिनी नामकी होती है ॥ ५९ ॥ ६० ॥

स्थूलदशना सुमध्या गद्गदनादा मदोत्कटा चपला ।
ह्रस्वोरुभुजग्रीवाजङ्घा वादित्रगीतरतिः ॥ ६१ ॥
स्निग्धतररङ्गकेशी पीनोन्नतविपुलवृत्तकुचकलशा ।
मत्तमतङ्गजगमना मदगन्धा हस्तिनी भवति ॥ ६२ ॥

अन्वयार्थौ–( स्थूलदशना ) बडे मोटे हैं दांत जिसके (सुमध्या) सुन्दर है कमर जिसकी, (गद्गदनादा) गद्गद बोलवाली, ( मदोत्कटा चपला ) मदा मतवाली, चंचल ( ह्रस्वोरुभुजग्रीवाजंघा ) छोटे हैं ऊरु और भुजा, गला, जंघा जिसके (वादित्रगीतरतिः) बाजे और गीतमें है प्रीति जिसकी ( स्निग्धतररंगकेशी) सुन्दर रंगकेसे हैं बाल जिसके ( पीनोन्नतविपुलवृत्तकुचकलशा ) मांसीले ऊंचे और बडे गोल हैं कुचकलश जाके ( मत्तमतङ्गजगमना ) मतवाले हाथीकीसी है चाल जिसकी, ( मदगंधा सा हस्तिनी भवति ) मदकीसी सुगंध है जिसमें सो हस्तिनी होती है ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

विषमकुचा बिसगन्धा दीर्घप्रसृतोरुनासिकानयना ।
तनुकेशी खरचित्ता शंखरदा शंखिनी योषित् ॥ ६३ ॥

अन्वयार्थौ–( विषमकुचा बिसगंधा दीर्घप्रसृतोरुनासिकानयनातनुकेशी खरचित्ता शंखरदा सा योषित् शंखिनी भवति ) ऊँचे नीचे हैं कुच जिसके और कमलके तंतुकीसी है गंध जिसमें, लंबे हैं हाथके पंजे और ऊरु, नाक नेत्र जिसके, छोटे और थोडे पतले हैं बाल जिसके, तेज स्वभाव जिसका, शंखकेसे हैं दांत जिसके ऐसी स्त्री शंखिनी होती है ॥ ६३ ॥

तुङ्गपयोधरभारा विचित्रवस्त्रप्रिया चलालापा ।
सुक्षारगन्धनिचिता चित्राक्षी चित्रिणी गदिता ॥ ६४ ॥

अन्वयार्थौ–( ऊँचे बडे कुचोंके भारवाली, अनेक प्रकारके जो वस्त्र वह हैं प्रिय जिसको और चञ्चल है बोल जिसका, खारी गंध करके व्याप्त जिसमें, विचित्र है आंखें जिसकी सो स्त्री चित्रिणी कही है ॥ ६४ ॥

कपिलविलोचनललनां कपिलकचां कपिलरोमराजिचिताम् ।
कपिलावयवां बालां सन्तः शंसन्ति न प्रायः ॥ ६५ ॥

अन्वयार्थौ–भूरे हैं पिलाई लिये नेत्र और बाल जिसके, भूरा है रोमयुक्त शरीर जिसका, भूरे हैं हाथ पांव अंग जिसके ऐसी स्त्रीकी पंडित बहुधा प्रशंसा नहीं करते हैं अर्थात् अशुभ है । श्लोकान्वय यथाक्रम है ॥ ६५ ॥

विपुलमुखी विपुलकचा विपुलाक्षी विपुलकर्णपदपृष्ठा ।
विपुलांगुलिका प्रायो भर्तृघ्नी जायते योषित् ॥ ६६ ॥

अन्वयार्थौ–(श्लोकान्वय यथाक्रम है ) । चौडा बडा है मुख जिसका, बडे मोटे हैं बहुत बाल जिसके, बडे चौडे हैं भयंकर नेत्र जाके और बडे चौडे हैं कान और पांवके पंजे जिसके, बडी हैं अंगुली जिसकी ऐसी स्त्री बहुधा पतिको मारनेवाली होती है ॥ ६६ ॥

कृष्णाक्षी कृष्णाङ्गी कृष्णनखा कृष्णरोमराजिकचा ।
कृष्णौष्ठतालुरसना सा नियतं कृष्णचारित्रा ॥ ६७ ॥

अन्वयार्थौ–( काली आंख, काला अंग, काले रोम और काले बाल बहुत जाके और काले होठ और तालु, जीभ जिसकी सो निश्चय करके खोटे चलनकी होती है ॥ ६७ ॥



लम्बललाटी लम्बग्रीवा लम्बोष्ठनासिका न शुभा ।
लम्बपयोधरबाला लंबस्फिग् लम्बरमणमणिः ॥ ६८ ॥

अन्वयार्थौ–( लंबललाटी लंबग्रीवा लंबोष्ठनासिका न शुभा, तथा लंबपयोधरबाला लंबस्फिक् लंबरमणमणिः ईदृशी बाला न शुभा) लंबा ललाट, लंबी नाड,लंबेहोंठ और नाक ये अच्छे नहीं हैं और लंबे कुच, लंबेकोख, लंबी है योनिमें कली जिसके ऐसी स्त्री अच्छी नहीं है ॥ ६८ ॥

निःसरति वदनकुहराल्लाला यस्याः सदा शयानायाः ।
स्मेरे किंचिन्नेत्रे सा बाला कथ्यते कुलटा ॥ ६९ ॥

अन्वयार्थौ–( शयानायाः यस्याः वदनकुहरात् लाला सदा निःसरति तथा किंचित् नेत्रे स्मेरे भवतः सा बाला सदा कुलटा कथ्यते ) सोते हुए जिसके मुखसे लार सदा निकले और थोडे नेत्र जिसके खुले होयँ सो स्त्री व्यभिचारिणी अर्थात् खोटी कही जाती है ॥ ६९ ॥

यदि नाभ्यावर्त्तवले रेखाहीनं पृथूदरं यस्याः ।
दुःखाद्व्याकुलचित्ता सा युवतिर्जायते सततम् ॥ ७० ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः नाभ्यावर्तवलेः पृथूदरं यदि रेखाहीनं स्यात् सा युवतिः सततं दुःखात् व्याकुलचित्ता जायते ) जिस स्त्रीकी टूंडीके चक्रसे ऊपर चौडा पेट जो रेखाहीन होय सो स्त्री निरन्तर दुःखसे व्याकुल चित्तवाली होती है ॥ ७० ॥

प्रसभं प्रसरति बाष्पं प्रहसंत्या नेत्रकोणयोर्यस्याः ।
लाला च मुखात्तस्याः कौतस्त्या शीलरक्षा स्यात् ॥ ७१॥

अन्वयार्थौ–( प्रहसंत्याः यस्याः नेत्रकोणयोः प्रसभं बाष्पं प्रसरति तथा मुखात् लालापि निःसरति तस्याः शीलरक्षा कौतस्त्या स्यात् ) हँसते हुए जिसके नेत्रोंके कोनेसे बहुत जोरसे आँसू गिरे और मुखसे लार भी गिरे तिसके शीलकी रक्षा कहांसेहोय! अर्थात् उसकी चाल चलन अच्छा नहीं होय॥७१॥

युगपद्भवन्ति यस्या दुर्गन्धाः श्वासमूत्रवपुर्ऋतवः ।
साक्षादेव कुठारी सा वंशविकर्तिनी वनिता ॥ ७२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः श्वासमूत्रवपुर्ऋतवः युगपद् दुर्गन्धा भवंति, सा वनिता साक्षात् एव वंशविकर्तिनी कुठारी भवति ) जिस स्त्रीके श्वास, मूत्र, शरीर और रज आदि सबमें बुरी बास हो तो वह साक्षात् वंश अर्थात् कुलको काटनेवाली कुल्हाडी है ॥ ७२ ॥

यस्याः स्फुटं हसंत्याः कपोलयोः कूपकौ स्याताम् ।
नयने नितान्तचपले सा भर्तृघ्नी भवत्यसती ॥ ७३ ॥

अन्वयार्थौ–( हसंत्याः यस्याः कपोलयोः स्फुटं कूपकौ स्याताम् तथा नयने नितांतचपले स्याताम् सा असती भर्तृघ्नी भवति ) हँसते हुए जिसके कपोलोंमें प्रगट गढेले होयँ और जिसके नेत्र चलते वा फडकते होयँ सो स्त्री कुलटा भर्त्ताको मारनेवाली होती है ॥ ७३ ॥

यान्त्याः स्वैरं यस्या दैववशात्पटपटायते वसनम् ।
सा सततमेव कलयति रमणी कल्याणवैकल्यम् ॥ ७४ ॥

अन्वयार्थौ–( यांत्याः यस्याः स्वैरं दैववशात् वसनं पटपटायते सा रमणी सततं कल्याणवैकल्यं कलयत्येव ) चलती हुई जिस स्त्रीके आपसे आप दैवयोगसे कपडे फटफट करें सो स्त्री निरन्तर कल्याणको बिगाडती है ॥७४॥

सर्वेऽस्थिसंधिबन्धा यस्या गमनेन विकटिकायन्ते ।
सुतमपि पतिं चिकीर्षति सा सङ्गतयौवनं युवतिः ॥ ७५ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः गमनेन सर्वेऽस्थिसंधिबन्धाः विकटिकायन्ते सा युवतिः संगतयौवनं सुतमपि पतिं चिकीर्षति ) जिस स्त्रीके चलनेमें आपसमें हाडोंके जोड बन्ध चटकें सो स्त्री तरुण बेटेको भी पति चाहती है ॥७५॥

अपराङ्गं रोमयुतं पूर्वाङ्गं रोमविरहितं यस्याः ।
भवति विपरीतमथवा भयंकरा सा पिशाची च ॥ ७६ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याःपूर्वाङ्गं रोमविरहितं तथा अपरांगं रोमयुतम् अथवा विपरीतं भवति सा नारी भयंकरा च पुनः पिशाची ज्ञेया ) जिस स्त्रीके



ऊपरका आधा अंग रोमयुक्त न होय और नीचेका अंग रोमयुक्त होय अथवा इधर होय उधर न होय सो स्त्री डरावनी और पिशाचिनी जानिये ॥ ७६ ॥

फल्गुप्रचारशीला निष्कारणदृङ्निरीक्षणप्रगुणा ।
निष्फलबहुलालापा सा नारी दूरतस्त्याज्या ॥७७॥

अन्वयार्थौ–विना काम घूमनेका है स्वभाव जिसका और विना काम आंख चलानेवाली और विना काम व्यर्थ बहुत बात करनेवाली सो स्त्री दूरसेही छोड देने योग्य है ॥ ७० ॥

अतिह्रस्वमुखा धूर्ता दीर्घमुखा दुःखभागिनी वनिता ।
शुष्कमुखी वक्रमुखी सौभाग्यैश्वर्यसुखहीना ॥ ७८ ॥

अन्वयार्थौ–बहुत छोटे मुखवाली स्त्री धोखा देनेवाली होती है और बडे लंबे मुखवाली स्त्री दुःख भोगनेवाली होती हैं, सूखे और टेढे मुखवाली स्त्री सुहागपन तथा धन और सुखसे हीन होती है, ॥ ७८ ॥

यस्याः कपिला वृत्ता निरंतरा वपुषि रोमराजिः स्यात् ।
जाता पितृपतिगोत्रे सा भुवि भजते भुजिष्यात्वम् ॥ ७९ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः वपुषि रोमराजिः निरंतरा कपिला वृत्ता जाता स्यात् भुवि पितृपतिगोत्रे सा भुजिष्यात्वं भजते ) जिस स्त्रीके शरीरमेंरोमयुक्त पंक्ति बराबर, भूरे रंगकी भौंरी वा चक्रयुक्त उत्पन्न हुई होय सोपृथ्वीमें पिताके या पतिके कुलमें सो वह टहलनीका काम करती है ॥ ७९ ॥

सततं मानविशिष्टा खरोच्चकटुकस्वरा स्फुरद्भ्रुकुटिः ।
स्वच्छन्दाचारगतिः सास्याद्रहिता निरंतरं लक्ष्म्या ॥ ८० ॥

अन्वयार्थौ–( सततं मानविशिष्टा खरोच्चकटुस्वरा स्फुरद्भ्रुकुटिः या स्वच्छन्दाचारगतिः सा निरन्तरं लक्ष्म्या रहिता स्यात् ) निरन्तरही प्रकट तीक्ष्ण ऊंचा और कडुवा बोल जिसका और भौंह जिसकी फरका करें और अपनी इच्छाके अनुकूल आचारमें चलना सो स्त्री सदा लक्ष्मी करिके रहित अर्थात् दरिद्रिणी होय ॥ ८० ॥

सोत्कण्टकांगुलीकं पाणितलपादतलद्वयं यस्याः ।
राजान्वयजातापि त्याज्या दूरादपि प्रमदा ॥८१॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः पाणितलं तथा पादतलद्वयम् सोत्कंटकांगुलीकं स्यात् ) जिस स्त्रीकी हाथकी हथेली और पांवके तलुवे दोनों कांटिकी भांति फटी खरदरी अंगुलियोंसहित होय तो ( राजान्वयजातापि ) राजाके कुलमें भी उत्पन्न हुई ( सा प्रमदा दूरादपि त्याज्या ) वह स्त्री दूरसेही छोडदेने योग्य है ॥ ८१ ॥

अतिह्रस्वा द्राघिष्ठाऽथवा तनिष्ठाऽङ्गना स्थविष्ठा वा ।
रूपिण्यपि विश्वस्मिन् सा स्पष्टमनिष्टदा भवति ॥८२॥

अन्वयार्थौ-( या अंगना अतिह्रस्वा द्राघिष्ठा अथवा तनिष्ठा वा स्थविष्ठा भवति विश्वस्मिन् रूपिणी अपि सा स्पष्टम् अनिष्टदा भवति ) जो स्त्री बहुत छोटी, लम्बी और बहुत पतली वा बहुत मोटी होय तो संसारमें ऐसीरूपवती होय सो प्रकट विघ्नकी देनेवाली होती है ॥ ८२ ॥

पादौ यस्याः स्फुटितौ रोमशचिपिटांगुली सुगूढनखौ ।
कच्छपपृष्टनखौ वा सा दुःखदरिद्रताहेतुः ॥ ८३ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः पादौ स्फुटितौ रोमशचिपिटांगुली सुगूढनखौ वा कच्छपपृष्टनखौ स्याताम् सा दुःखदरिद्रताहेतुर्भवति ) पांवकी फटी टूटी रोमयुक्त चिपटी है अंगुली जिसकी और दबे हुए हैं गहरे नख जिसके या कछुवेकी पीठकेसे नख होंय तो वह स्त्री दुःख और दरिद्रताका कारण होती है ॥ ८३ ॥

विकलाङ्गी व्याधियुता शुष्काङ्गी वामना तथा कुब्जा ।
नीचान्वयजा रमणी परिहरणीया सुरूपाऽपि ॥ ८४ ॥

अन्वयार्थौ-( विकलांगी ) कुरूपा ( व्याधियुता ) रोगिणी (शुष्काङ्गी) सूखे अंगवाली ( वामना ) बौनी ( कुब्जा ) कुबडी ( नीचान्वयजा ) नीच कुलमें उत्पन्न हुई ( ईदृशी सुरूपाऽपि रमणी परिहरणीया ) ऐसी सुन्दर रूपवती भी छोडने योग्य है ॥ ८४ ॥

निशि सुप्ता या सततं पिनष्टि दशनान् परस्परं नारी ।
यत्किञ्चिदपि प्रलपति सा न च शस्ता सुलक्षणापि ॥८५॥



अन्वयार्थौ-( या नारी निशि सुप्ता दशनान् सततं परस्परं पिनष्टि यत् किंचित् अपि प्रलपति सा नारी सुलक्षणा अपि न शस्ता ) जो स्त्री रातमें सोतेहुए निरंतर आपसमें दांतोंको पीसे और कुछ कुछ बोल उठै सो स्त्री सुलक्षणा अर्थात् अच्छे लक्षणवाली भी अच्छी नहीं हैं ॥ ८५॥

काकमुखी काकाक्षी काकरवा काकजङ्घिका नारी ।
काकगतिस्तच्चेष्टा नूनं दारिद्र्यदुःखवती ॥ ८६ ॥

अन्वयार्थौ-( कौवेकासा मुख, कौवेकीसी आंख कौवेकासा बोल, कौवेकीसी जांघ, कौवेकीसी चाल और चेष्टा जिसकीहै ऐसी स्त्री निश्चय करके दारिद्र्य करके दुःखवती होती है ॥ ८६ ॥

सततं कोपाविष्टा स्तब्धाङ्गी चंचला महाबाहुः ।
अतिकृशकरपादयुगा न कदाचन मङ्गला प्रमदा ॥ ८७ ॥

अन्वयार्थौ-( निरंतरक्रोधवाली, कडा है अंग जिसका वह और चपल, लंबी भुजावाली बहुत सूखेसे दुबले है हाथ पांव दोनों जिसके; ऐसी स्त्री कभी भी मंगल अर्थात् शुभको करनेवाली नहीं है ॥ ८७ ॥

अंगुष्ठेन विरहिता यस्या करपदांगुल्यो मिलिताः ।
सा दारिद्र्यवती स्याद्युवतिर्यदि वा न दीर्घायुः ॥ ८८ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः अंगुष्ठेन विरहिताः करपादांगुल्यो मिलताः स्युः सा युवतिः दारिद्र्यवती-यदि वा दीर्घायुः न भवति ) जिस स्त्रीके अंगूठेके विना हाथ पांवकी सब अंगुली मिलजांय सो स्त्री दरिद्रिणी होवे और वह बडी आयुवाली नहीं अर्थात् थोडी आयुकी होती है ॥ ८८ ॥

कपिवक्त्रा कपिनेत्रा कपिनासा कपिकटिर्या च ।
कपिकर्णा रोमशापि प्रतीपकृज्जायते प्रायः ॥ ८९ ॥

अन्वयार्थौ-बंदरकासा मुख, बंदरकेसे नेत्र, बंदरकीसी नाक, बंदरकीसी कमर, बंदरकेसे कान और बंदरकेसे बाल होंय जिसके वह स्त्री बहुधा उलटे काम करनेवाली होती है ॥ ८९ ॥

नगविहगनदीनाम्नी वृक्षलतागुल्मनामिका नारी ।
नक्षत्रग्रहनाम्नी न रज्यते स्वैरिणी पत्या ॥ ९० ॥

अन्वयार्थौ–पर्वत, पक्षी नदी इनके नामपर स्त्रीका नाम होयअथवा वृक्ष और बेलिके वा घास फूलके और नक्षत्र और ग्रह नामवाली होय तो ( ईदृशी स्वैरिणी नारी पत्या न रज्यते ) ऐसी खोटी स्त्री पतिके साथ प्रसन्न नहीं रहती, अर्थात् पतिको नहीं चाहती है ॥ ९० ॥

शक्रसुरासुरनाम्नी पुंनाम्नी गगननामिका नियतम् ।
भीषणनाम्नी रमणी स्वच्छन्दा जायते प्रायः ॥ ९१ ॥

अन्वयार्थौ–इंद्र, देवता, दैत्य इनके नामपर तथा पुरुषके नामकी अथवा आकाशके नामकी वा भयंकर नामकी होय तो ( नियतं प्रायः स्वच्छन्दा जायते ) निश्चय करिके बहुधा वह वेश्याके तुल्य होजाती है ॥ ९१ ॥

इह भवति मृगीवडवाकरिणीभेदेन कामिनी त्रेधा ।
तासां लक्षणमधुना दिङ्मात्रमनूद्यते क्रमशः ॥९२॥

अन्वयार्थौ–(इह मृगीवडवाकरिणीभेदेन कामिनीत्रेधा भवति अधुना तासाम् लक्षणं क्रमशः दिङ्मात्रम् अनूद्यते ) इस ग्रंथमें हरिणी, घोडी और हथिनी इन तीन भेदों करके स्त्रियें तीन प्रकारकी होती है और तिनके लक्षण क्रमसे दिशामात्र अर्थात् संक्षेपसे कहे जाते हैं ॥ ९२ ॥

यस्याः षडंगुलं स्यादष्टांगुलं वा सरोजमुकुलाभम् ।
नार्या वराङ्गमध्यं निगद्यते सा मृगी युवतिः ॥९३॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः नार्याः वराङ्गमध्यं षडंगुलं वा अष्टांगुलं सरोजमुकुलाभम् स्यात् सा युवतिः मृगी निगद्यते ) जिस स्त्रीका भग छः अंगुलका अथवा आठ अंगुका गहिरा कमलकी कली सरीखा होय सो स्त्री मृगी तथा हरिणी कहाती हैं ॥ ९३ ॥

१--पार्वतीगिरिजादिनामभाक् । २ । हंसी--लक्ष्मणादिनामभाक् अथवा विनतादि नामभाक् । ३ गङ्गा--यमुना-नर्मदेत्यादिनामभाक् ।



यस्या नवदशकांगुलमेकादशांगुलं वा सा वडवा ।
यस्या द्वादशत्रिदशांगुलं यदि वा करिणी कथिता ॥ ९४ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः वराङ्गं नवांगुलं वा एकादशांगुलं स्यात्, सा नारी वडवा भवति यदि वा द्वादशत्रिदशांगुलं तदा करिणी सा कथिता ) जिस स्त्रीकी योनि नव, दश, एकादश अंगुलकी हो वह वडवा ( घोडी ) कहलाती है और जिसकी बारह वा तेरह अंगुलकी योनि हो वह करिणी ( हस्तिनी ) बोली जाती है ॥ ९४ ॥

प्रायेण मृगीवडवाकरिणीनां जायते सह मृगाद्यैः ।
प्रीतिस्सहजा मनुजैर्यथाक्रमं संप्रयुक्तानाम् ॥ ९५ ॥

अन्वयार्थौ–( यथाक्रमं संप्रयुक्तानां मृगीवडवाकरिणीनां सहजा प्रीतिः प्रायेण मृगाद्यैः मनुजैः सह जायते ) जैसे क्रमसे कही जो हैं हरिणी, घोडी, हथिनी, इनकी स्वाभाविक अच्छी प्रीति बहुधा करके मृग, घोडा, हाथी ऐसेही मनुष्योंके साथ होती है अर्थात् जैसेको तैसा मिलनेसे उनकी प्रीति अच्छी होती है ॥ ९५ ॥

कामस्य सततवसतिस्ततो जगति कामिनीति विदिता स्त्री ।
द्वादशवर्षादूर्ध्वं कामो विस्फुरति पुनरधिकः ॥ ९६ ॥

अन्वयार्थौ–( कामस्य सततवसतिः ततः जगति स्त्री कामिनी इति विदिता द्वादशवर्षात् ऊर्ध्वं पुनः अधिकः कामः विस्फुरति ) स्त्री कामका निरंतर स्थान है, तिससे लोकमें कामिनी इस नामसे प्रसिद्ध है बारहवर्षसे ऊपर फिर अधिक काम जगता है ॥ ९६ ॥

तत्कारणं तु यौवनमनन्तरं सुभ्रुवो भवन्त्येते ।
छेकोक्तिनयनलीलानितम्बबिम्बस्तनोद्भेदाः ॥ ९७ ॥

अन्वयार्थौ–( तत्कारणं तु सुभ्रुवः अनंतरम् यौवनम् एते छेकोक्तिनयनलीलानितम्बबिम्बस्तनोद्भेदाः भवंति ) तिसका कारण स्त्रीका यौवन है ताके पीछे स्त्रियोंको हाव भाव नेत्रोंकी अवस्था औरही हो जाती है तथा नितम्बबिंब और कुचोंमें औरही भेद हो जाते हैं ॥ ९७ ॥

गर्भाधाने रजसः शुक्राधिक्येन योषितां तनया ।
हीनेन पुनस्तनयो भवति समत्वयोर्युगलम् ॥ ९८ ॥

अन्वयार्थौ-( योषितां गर्भाधाने अधिकेन रजसा हीनेन शुक्रेण तनया भवति तथा अधिकेन शुक्रेण हीनेन रजसा तनयः । यदि समत्वयोर्युगलं भवति ) स्त्रियोंके गर्भाधान समयमें रज तो अधिक होय और शुक्र न्यून होय तो पुत्री उत्पन्न होती है और शुक्र अधिक होय रज न्यन होय तो पुत्र उत्पन्न जानिये अथवा शुक्र और रज बराबर होंय तो नपुंसक होता है॥ ९८॥

नारीणामपि तद्वत्स्नेहः क्षेत्राणि संहतिर्ज्ञेया ।
तेषां यतो विशेषो वितर्कितः कोऽपि नास्माभिः॥ ९९ ॥

अन्वयार्थौ-( नारीणाम् अपि स्नेहः क्षेत्राणि संहतिः तद्वत् पुरुषवत् ज्ञेया तेषां पुरुषाणां यथा कथितः तद्वत् ज्ञेया, यतः अस्माभिः विशेषः न कोऽपि वितर्कितः ) स्त्रियोंका स्नेह और क्षेत्र संहति पुरुषोंकीसी जानिये जैसे पुरुषोंका कहा तैसेही स्त्रियोंका जानिये । यह हमने और विशेष करके नहीं कहा ॥ ९९ ॥

शुभलक्षणाधिरूपाधिकापि विख्यातगोत्रजातापि ।
सौभाग्यभाग्यभागपि न शुभा दुश्चारिणी रमणी ॥ १०० ॥

अन्वयार्थौ-( शुभलक्षणाधिरूपाधिका अपि विख्यातगोत्रजातापि नारी सौभाग्यभाग्यभागपि दुश्चारिणी शुभा न ) शुभलक्षणवाली रूपवती, प्रसिद्ध कुलमें उत्पन्न हुई ऐसी नारी सुहागपन और भाग्य इनकी भोगनेवाली भी यदि व्यभिचारिणी होय तो शुभ नहीं है ॥ १०० ॥

वृत्तं च लक्ष्म वृत्तं रूपं वृत्तं समग्रसौभाग्यम् ।
वृत्तं गुणादिकं यत्तद् वृत्तं शस्यते सुदृशाम् ॥ १०१ ॥

अन्वयार्थौ-( सुदृशां वृत्तं च लक्ष्म रूपं वृत्तं समग्रसौभाग्यं वृत्तं यत् गुणाधिकं वृत्तं तत् शस्यते ) स्त्रियोंके अच्छे लक्षण, अच्छे रूप, अच्छे समस्त सौभाग्योंमें जो उत्तम गुणादिक हैं, वेही इनमें अच्छे समझे जाते हैं ॥ १०१ ॥



अपि दुर्लक्षणलक्ष्मा महार्थता शीलसंयुता जातिः ।
शीलेन विना वनिता न शुभा शुभलक्षणवृतापि ॥ १०२ ॥

अन्वयार्थौ-( दुर्लक्षणलक्ष्मा अपि शीलसंयुता जातिः महार्थता तथा शुभलक्षणवृतापि वनिता शीलेन विना न शुभा ) खोटे लक्षण करके भी और कुलक्षण करके युक्त भी शीलसंयुक्त जाति बडे अर्थकी करनेवाली होती है और शुभलक्षण करके भी स्त्री विना शीलके शुभ नहीं है ॥ १०२॥

सत्यपि यत्राकृतयस्तत्र गुणाः सततमेव निवसंति ।
रूपाधिका पुरंध्री वृत्तादिगुणान्विता प्रायः ॥ १०३ ॥

अन्वयार्थौ-( यत्र आकृतयः संति तत्रैव गुणाः सततं निवसंति तथा वृत्तादिगुणान्विता अपि पुरंध्री प्रायः रूपाधिका शुभा भवति ) जहां स्वरूप है वहां निरंतर गुण वसते हैं और ( रूपाधिका ) बहुत सुंदर रूपवाली ही बहुधावृत्तादि गुणयुक्त होती है ॥ १०३ ॥ इति संस्थानाधिकारो द्वितीयः ॥ २ ॥

शुभसंस्थानवृतादपि सुदृशां प्रायः प्रशस्यते वर्णः ।
येनैता वर्णिन्यस्तस्मात्तल्लक्षणं वक्ष्ये ॥ १०४ ॥

अन्वयार्थौ-( शुभसंस्थानवृतात् अपि प्रायः सुदृशां वर्णः प्रशस्यते येन एताः वर्णिन्यो भवन्ति तस्मात् तल्लक्षणम् अहं वक्ष्ये ) शुभआकारसे भी बहुधा स्त्रियोंका रंग प्रशंसाके योग्य है और जिस कारणसे वेही स्त्री उत्तम वर्णनीय होती हैं इस कारण इनके लक्षण मैं आगे कहता हूं ॥ १०४ ॥

पङ्कजकिञ्जल्काभः स्त्रीणां नवतप्तकनकभङ्गनिभः ।
चंपककुसुमसमानः स्निग्धो गौरः शुभो वर्णः ॥ १०५ ॥

अन्वयार्थौ-( पंकजकिञ्जल्काभः नवतप्तकनकभंगनिभः चंपककुसुमसमानः स्निग्धः गौरः स्त्रीणां वर्णः शुभो भवति ) कमलके फूलकी केसरकासा रंग; नये तपेहुए सोनेके पत्रके समान सुन्दर गोरा रंग स्त्रियोंका शुभ अर्थात् अच्छा होता है ॥ १०५ ॥

नवदूर्वाङ्कुरतुल्यः स्मेरश्यामोऽर्जुनप्रसूनाभः ।
कान्तः श्यामो वर्णः सौभाग्यं सुध्रुवां तनुते ॥ १०६ ॥

अन्वयार्थौ–( सुभ्रुवां नवदूर्वांकुरतुल्यः वर्णः स्मेरश्यामः अर्जुनप्रसूनाभः कान्तः श्यामः सौभाग्यं तनुते ) स्त्रियोंके नये दूबके अंकुरके तुल्य रंग और खिला हुआ श्याम, अर्जुनवृक्षके फूलके तुल्य सुन्दर सांवला रंग सौभाग्यको फैलाता है अर्थात् बढाता है ॥ १०६ ॥

शुद्धोऽपि मध्यमः स्यात्कृष्णः सुस्निग्धगजजलच्छायः ।
वायसतुण्डविडंबी पुनर्जघन्यो घनविरूक्षः ॥ १०७ ॥

अन्वयार्थौ–( शुद्धोऽपि कृष्णः सुस्निग्धगजजलच्छायः वर्णः मध्यमः वायसतुंडविडंबी पुनः घनविरूक्षः जघन्यो भवति ) निर्मलभी सांवला रंग सुन्दर चिकना, हाथी और जलकीसी कांतिवाला मध्यम है- और कौवेकी चोंचके आकार कडा रूखा रंग जघन्य अर्थात् नीच होता है ॥ १०७ ॥

द्युतिमान् यो हरिबालस्तामिस्रनिभो नीलः स विवर्णः ।
श्यामासंनिभवर्णो लावण्यगुणाधिकं स्त्रीणाम् ॥ १०८ ॥

अन्वयार्थौ–( यः द्युतिमान् हरिबालः तामिस्रनिभः नीलः वर्णः स विवर्णः भवेत् श्यामासन्निभवर्णः स्त्रीणां लावण्यगुणाधिकं तनुते ) जो चमकदार सिंहके बालके वा अंधेरी रातकासा नीला रंग बेरंग होता है और जो श्यामा चिडियाके तुल्य रंग है सो स्त्रियोंकी शोभा और गुणोंकी अधिकताको फैलाता अर्थात् बढाता है ॥ १०८ ॥

प्रव्रजितापि प्रायो न पाण्डुराका भवेच्छुभाचारा ।
कपिलातिगौरवर्णा न शस्यते मिश्रवर्णापि ॥ १०९ ॥

अन्वयार्थौ–( पांडुराका शुभाचारा न भवेत्, प्रायः प्रव्रजितापि स्यात्, कपिलातिगौरवर्णा मिश्रवर्णापि न शस्यते) सफेद चाँदनीकेसे रंगवाली अच्छी चलनवाली नहीं होती है, बहुधा वह वैरागिणी होजाती है और कबरे चित्र विचित्रवर्णत गोरे रंगके मिलेहुए रंगवाली स्त्री अच्छी नहीं होतीहै॥१०९॥

इति वर्णाधिकारस्तृतीयः ॥ ३ ॥



## अथ गन्धलक्षणम् ।

वरवर्णिन्यपि न शुभा गतगन्धा कर्णिकारकलिकेव ।
तस्या गन्धांस्तद्वत्तल्लक्षणं ब्रूमहे तस्मात् ॥ ११० ॥

अन्वयार्थौ–( गतगन्धा कर्णिकारकलिका इव वरवर्णिन्यपि न शुभा तस्मात् तस्याः गंधान् तल्लक्षणं च वयं ब्रूमहे ) गई है गंध जिसका अर्थात् विना सुगंध कनेरकीसी कलीजैसी ऐसी उजले रंगवाली भी स्त्री शुभ नहीं है तिस कारणसे तिसका गन्ध और लक्षण हम कहते हैं ॥ ११० ॥

जातीचंपकविचिकिलशतपत्रीबकुलकेतकीतुल्यः ।
स्वेदश्वासादिभवः प्रशस्यते योषितां गन्धः ॥ १११ ॥

अन्वयार्थौ–( जातीचंपकविचिकिलशतपत्रीबकुलकेतकीतुल्यः योषितां स्वेदश्वासादिभवः गन्धः प्रशस्यते ) चमेली, चंपा, विचिकिल, सेवती, मौलशिरी और केतकीके फूलके तुल्य ( इनकी भांति ) स्त्रियोंके पसीने और श्वासमें सुगंध होय सो प्रशंसाके योग्य है ॥ १११ ॥

गन्धः सर्वाङ्गीणो मृगनाभीसन्निभो भवति यस्याः ।
सा योषिदग्रमहिषी विहीनरूपापि भूमिपतेः ॥ ११२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः सर्वांगीणः गंधः मृगनाभीसन्निभो भवति विहीनरूपापि सा योषित् भूमिपतेःअग्रमहिषी स्यात्)जिस स्त्रीके सब अंगकी गंध कस्तुरीकीसी होय वह कुरूपाभी स्त्री राजाकी मुख्य पटरानी होती है ॥११२॥

ऋतुमत्या अपि यस्या विलसति गंधस्तिलप्रसूनाभः ।
सुरभिद्रव्यसमानः सा सुभगत्वान्विता वनिता ॥ ११३ ॥

अन्वयार्थौ–( ऋतुमत्या अपि यस्याः सुरभिद्रव्यसमानः गन्धः तिलप्रसूनाभः विलसति, सा वनिता सुभगत्वान्विता भवति ) रजोधर्म युक्त स्त्रीकी कोई भी सुगंधित पदार्थके तुल्य वा तिलके फूलके तुल्य गंध होय सो स्त्री सुन्दर सुहागवती होती है ॥ ११३ ॥

तुंबीकुसुमसुगन्धा कटुगन्धा या रसोनगन्धा या ।
सा न कदाचन गर्भं सुदुर्भगा कामिनी धत्ते ॥ ११४ ॥

अन्वयार्थौ–( या नारी तुंबीकुसुमसुगन्धा वा कटुगन्धा वा या रसोनगंधा भवेत् सा कामिनी सुदुर्भगा कदाचन गर्भं न धत्ते ) जो स्त्री तूँबीके फूलकीसी गंधवाली अथवा कडवी गंधवाली लहसुनकीसी गंधवाली होय सो स्त्री कुलक्षणी कभी गर्भको धारण न करे अर्थात् वह गर्भवती न होय ॥ ११४ ॥

या हरितालीगन्धा मिश्रवसामांसपूतिसमगन्धा ।
अत्युग्रदुष्टगन्धाः सुभगा न सुरूपवत्योऽपि ॥ ११५ ॥

अन्वयार्थौ–( याः नार्यः हरितालीगंधाः वा मिश्रवसामांसपूतिसमगंधाः वा अत्युग्रदुष्टगंधाः ताः सुरूपवत्योऽपिसुभागाः न )जो स्त्री हरितालकीसी गंधवाली वा हाथीकी चर्बी और दुर्गंधित मांसके समान गंध वा बहुत बुरी सडीसी गंध जिसकी होय वे स्त्रियाँ स्वरूपवती भी सौभाग्यवती नहीं होती हैं॥ ११५

## अथ आवर्तलक्षणम् ।

आवर्तो नारीणां प्रदक्षिणः पाणिपल्लवे व्यक्तः ।
धर्मधनधान्यकारी न जातु शस्तः पुनर्वामः ॥ ११६ ॥

अन्वयार्थौ–( नारीणां पाणिपल्लवे प्रदक्षिणः व्यक्तः आवर्तःधर्मधनधान्यकारी भवेत् पुनः वामः जातु न शस्तः) स्त्रियोंकी दाहिनी हथेलीमें प्रकट चक्र वा भौरी होय तो वह धर्म,धन, धान्यकी करनेवाली होय और फिर वोही चक्र वा भौंरी बाई हथेलीमें होय तो वह कभी अच्छी नहीं है ॥ ११६ ॥

नाभ्यां श्रुतियुगले वा दक्षिणवलिताः शुभास्त्वगावर्ताः ।
चूडावर्तोऽपि पुनः प्रशस्यते दक्षिणः शिरसि ॥ ११७ ॥

अन्वयार्थौ–( नाभ्यां वा श्रुतियुगले त्वगावर्ताः दक्षिणवलिताः शुभाः पुनः शिरसि दक्षिणः चूडावर्तः अपि प्रशस्यते ) टूँडीमें वा दोनों कानोंमें चक्र वा भौरी दाहिनी ओर झुकी हुई शुभ होती है फिर शिरमें दाहिनी ओर झुका हुवा चक्र वा भौंरी प्रशंसाके योग्य है ॥ ११७ ॥

दक्षिणभागे स्त्रीणामावर्त्तो भवति पृष्ठवंशस्य ।
सौभाग्यकरो व्यक्तो वामविभागे पुनर्न शुभः ॥ ११८ ॥

अन्वयार्थौ–( स्त्रीणां पृष्ठवंशस्यः दक्षिणभागे व्यक्तः यदि आवर्त्तः भाग्यकरो भवति पुनः वामविभागे न शुभः ) स्त्रियोंके शरीरके दाहिने,



भागमें जो प्रकट भौंरी होय तौ सौभाग्यकी करनेवाली होती है और फिर वोही भौंरी बाई ओरके भागमें होय तो अच्छी नहीं है ॥ ११८ ॥

अन्तःपृष्ठं यस्या नाभिसमो भवति दक्षिणावर्तः ।
चिरजीविन्यास्तस्या बहून्यपत्यानि जायन्ते ॥ ११९ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः अन्तःपृष्ठं नाभिसमो दक्षिणावर्तो भवति, चिरजीविन्याः तस्याः बहून्यपत्यानि जायन्ते ) जिस स्त्रीके पीठके मध्यमें जो टूँडीकी भांति दाहिनी ओर भौंरी होय तो बहुत जीनेवाली होय और उस स्त्रीके बहुत लडका लडकी होती हैं ॥ ११९ ॥

शकटाभो भगमूले यस्याः स्निग्धः प्रदक्षिणावर्तः ।
सा भवति नृपतिपत्नी पुत्रवती सुरभिसौभाग्या ॥ १२० ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः भगमूले शकटाभः स्निग्धः प्रदक्षिणावर्तः भवति, सा सुरभिसौभाग्या पुत्रवती नृपतिपत्नी भवति) जिस स्त्रीकी योनिके बीच मूलमें छकडेके समान सुन्दर दाहिनी ओर भौंरी होय सो प्रसिद्ध है सुहागपन जिसका सो पुत्रवती अर्थात् पुत्रवाली राजाकी स्त्री होती है ॥ १२० ॥

आवर्तः कटिमध्ये यस्याः संभवति गुह्यमध्ये च ।
पत्युरपत्यानामपि विपातनं वितनुते सापि ॥ १२१ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः कटिमध्ये च पुनः गुह्यमध्ये आवर्तः संभवति, सा स्त्री पत्युः तथा अपत्यानां विपातनं वितनुते ) जिस स्त्रीकी कमरके और योनिके बीचमें भौंरी दाहिनी होय सो स्त्री पतिका और पुत्रपुत्रियोंका नाश करै है ॥ १२१ ॥

पृष्ठावर्तद्वितयं यस्याः सुव्यक्तमुदरवेधेन ।
सा हत्वा भर्तारं दुःशीला जायते प्रायः ॥ १२२ ॥

अन्वयार्थौ–( यस्याः उदरवेधेन सुव्यक्तं पृष्ठावर्तद्वितयं भवति सा नारी भर्तारं हत्वा प्रायः दुःशीला जायते ) जिस स्त्रीके उदरपर और पीठपर दो भौंरी प्रकट होयँ सो स्त्री पतिको मारके बहुधा खानगी ( कसबी ) अर्थात् व्यभिचारिणी होती है ॥ १२२ ॥

दक्षिणवलितः स्त्रीणामावर्तः कण्ठकन्दले व्यक्तः ।
वैधव्यदुःखदौर्भाग्यदायको न प्रशस्यः स्यात् ॥ १२३ ॥

अन्वयार्थौ-( स्त्रीणाम् आवर्तः दक्षिणवलितः कण्ठकंदले व्यक्तो भवति स वैधव्यदुःखदौर्भाग्यदायकः न प्रशस्यः स्यात् ) स्त्रियोंकी भौंरी दाहिनी ओर झुकी हुई कंठदेशमें प्रकट होय तो विधवापन और दुःख और बुरे भाग्यके देनेवाली है, प्रशंसाके योग्य नहीं है ॥ १२३ ॥

सीमन्तपथप्रान्ते ललाटमध्ये च जायते यस्याः ।
अवर्तः सुव्यक्तः सा दुःशीलाऽथवा विधवा ॥ १२४ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः सीमंतपथप्रांते ललाटमध्ये च आवर्तः सुव्यक्तः जायते, सा नारी दुःशीला अथवा विधवा भवेत् ) जिस स्त्रीकी मांगके अंतमें संमुख ललाटमे भौंरी प्रकट होय सो स्त्री खोटे चलनकी विधवा होय॥१२४

मध्ये कृकाटिकाया वक्रावर्तः प्रदक्षिणो यस्याः ।
वर्षेणैकेन पतिं हत्वा सान्यं समाश्रयते ॥ १२५ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः कृकाटिकायाः मध्ये प्रदक्षिणः वक्रावर्तः स्यात् सा नारी एकेन वर्षेण पतिं हत्वा अन्यं समाश्रयते ) जिस स्त्रीकी घेंटीके बीचमें दाहिनी ओर झुकीहुई टेढी भौंरी होय सो स्त्री एकही वर्षमें पतिको मारके दूसरेका आसरा पकडे अर्थात् औरके पास जाय ॥ १२५ ॥

एको द्वौ वा मस्तकमध्ये यस्याः प्रदक्षिणौ नियतम् ।
सा हन्ति पतिं पापा दशदिवसाभ्यन्तरेणैव ॥ १२६ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः मस्तकमध्ये एकः वा द्वौ नियतं प्रदक्षिणावर्तौ स्यावाम् सा पापा स्त्री दशदिवसाभ्यन्तरेणैव पतिं हन्ति ) जिस स्त्रीके मस्तकके बीचमें एक वा दो निश्चय करके दाहिनी ओर भौंरी होय सो पापिनी स्त्री दश दिनके भीतर पतिको मारती है ॥ १२६ ॥

कट्यावर्ता कुटिला नाभ्यावर्ता पतिव्रता सततम् ।
पृष्ठावर्ता निन्द्या भर्तृघ्नी जायते योषित् ॥ १२७ ॥

अन्वयार्थौ-( या नारी कट्यावर्ता सा कुटिला, या नारी नाभ्यावर्ता सततं पतिव्रता, या योषित् पृष्ठावर्ता सा निन्द्या वा भर्तृघ्नी जायते ) जो स्त्रीकी कमरमें भौंरी होय सो खोटे चलनकी होय और जिस स्त्रीकी टूँडीमें भौंरी होय सो निरंतर पतिव्रता और जिस स्त्रीकी पीठमें भौंरी होय सो स्त्री बुरी वा पतिके मारनेवाली होती है ॥ १२७ ॥

## अथ सत्त्वलक्षणम् ।

आपद्यपि संपद्यपि मुक्तमना दुःखमनोत्सुकेयम् ।
अपगतविषादहर्षा हतशोकोत्साहनिःसत्त्वा ॥ १२८ ॥

अन्वयार्थौ-(इयम् आपदि अपि मुक्तमनाः तथा संपदि अपिदुःखमनोत्सुका अपगतविषादहर्षा च पुनः हतशोकोत्साहनिःसत्त्वा ) आपत्तिमें छोडा है मन जिसने और संपत्तिमें दुःखयुक्त मनकी अभिलाषा करनेवाली और गया है दुःख और हर्ष जिसका और नष्ट होगया है शोक और उत्साह जिसका ऐसी स्त्री पराक्रम रहित जानिये ॥ १२८ ॥

सत्त्वोपेता प्रायः सदया सत्या स्थिरा गभीरा च ।
कौटिल्यशल्यरहिताऽऽहितकल्याणा भवति नारी ॥ १२९ ॥

अन्वयार्थौ-(प्रायःसत्त्वोपेता नारी सदया सत्या स्थिरा गभीरा कौटिल्यशल्यरहिता आहितकल्याणा भवति ) बहुधा शक्तियुक्त स्त्री दयासहित सच्ची,स्थिर गंभीर, कुटिलतादि रहित,कल्याण करनेवाली होती है॥१२९॥

## अथ स्वरलक्षणम् ।

नारीणामनुनादः शुभस्वरः कामलाकलामन्दः ।
श्रुतिपथगतापि नियतं जगतोऽपि मनः समादत्ते ॥१३०॥

अन्वयार्थौ-( नारीणाम् अनुनादः शुभस्वरः कामलाकलामन्दो भवति नियतं श्रुतिपथगता सती अपि जगतःमनः समादत्ते ) स्त्रियोंका बोल और अच्छा स्वर कामकी कलाओंमें थोडा होताहै-और ऐसे शुभ बोल युक्त स्त्री निश्चय कर शास्त्रके मार्गमें चलनेवाली हो तिससे जगत्के मनको पकडती है अर्थात् ग्रहण करती है ॥ १३० ॥

वीणावेणुनिनादाः कोकिलहंसस्वराः पयोदरवाः ।
केकिध्वनयो भुवने भवति ललना नृपतिपत्न्यः ॥ १३१ ॥

अन्वयार्थौ-( वीणा और वंशीकासा है बोल जिसका और कोकिल और हंसकासा है स्वर जिसका और मेघकासा और मोरकासा है बोल जिसका ऐसी स्त्री लोकमें राजाकी रानी होती है अन्वय यथाक्रम है॥ १३१

गतकौटिल्यमदीनं स्निग्धं दाक्षिण्यपुण्यमकठोरम् ।
सकलजनसांत्वनकरं भषितमिह योषितां शस्तम् ॥ १३२ ॥

अन्वयार्थौ-( इह योषितां शस्तं भाषितं गतकौटिल्यम् अदीनं स्निग्धं दाक्षिण्यपुण्यम् अकठोरं सकलजनसांत्वनकरं भवति ) इस लोकमें स्त्रियोंका अच्छा बोल चाल कुटिलता और दीनतारहित सुन्दर मीठा चतुरता, पवित्रता, मुलायम, सब मनुष्योंको आनंदका करनेवाला होता है ॥ १३२ ॥

नारी विभिन्नकांस्यकोष्टृखरोलूककाककङ्करवा ।
बहुदुःखशोकशङ्कावैधव्यव्याधिभाग्भवति ॥ १३३ ॥

अन्वयार्थौ-( विभिन्नकांस्यकोष्टुखरोलूककाकरवा नारी बहुदुःखशोकशंकावैधव्यव्याधिभाक् भवति ) फूटी कांसी, गीदड, गधा, उल्लू कउवा, कंक ( पक्षीविशेष ) इनकासा बोल होय तो ऐसी स्त्री बहुत दुःख शोकशंका और विधवापन रोगव्यथा इनको भोगनेवाली होती है ॥१३३॥

विस्फुटितश्च श्रोतुः स्वस्त्ययनकरः शुभस्वरो मधुरः ।
संक्रांताधरपल्लवसुधारसच्छद इव स्त्रीणाम् ॥ १३४ ॥

अन्वयार्थौ-( स्त्रीणां विस्फुटितः संक्रांताधरपल्लवसुधारसच्छद इव मधुरः शुभस्वरः श्रोतुः स्वस्त्ययनकरो भवति ) स्त्रियोंका प्रगट लगाहुवा होठोंसे सुधारसकी पत्रकी भांति मीठा अच्छा बोल सुननेवालेका कल्याण करनेवाला होता है ॥ १३४ ॥

## अथ गतिलक्षणम् ।

मत्तेन संनिभपदा मदमत्तमतङ्गहंसगतितुल्या ।
सुभगा गतिः सुललिता विलसति वसुधेशपत्नीनाम् ॥ १३५ ॥

अन्वयार्थौ ( वसुधेशपत्नीनां मत्तेन संनिभपदा मदमत्तमतंगहंसगतितुल्या सुललिता सुभगा गतिर्विलसति ) राजाओंकी रानीकी, मतवाल



मनुष्यके पांवकीसी और मतवाले हाथी और हंसकीसी चालकी भांति अच्छी सुन्दर चाल होती है ॥ १३५ ॥

गोवृषभनकुलमृगपतिमयूरमार्जारगामिनी नियतम् ।
सौभाग्यैश्वर्ययुता भाग्यवती भागिनी भवति ॥ १३६ ॥

अन्वयार्थौ- गाय, बैल, नौला, सिंह,मोर बिल्ली इनकीसी चालवाली स्त्री निश्चयकरके सुहागपन और ऐश्वर्ययुक्त भाग्यवती भोगनेवालीहोती है॥ १३६॥

मण्डूकघूकवृकबकजंबूकक्रोष्टुसरटकपिगतयः ।
दौर्गत्यदुःखसहिता जायन्ते युवतयः प्रायः ॥ १३७ ॥

अन्वयार्थौ-( मेंडक, उल्लू, भेडिया, बगुला, गौदुवा, गीदड, करकेटा बन्दर इनकीसी चालवाली ( प्रायः दौर्गत्यदुःखसहिता युवतयः जायन्ते ) बहुधा बुरी गति और दुःखसहनेवाली स्त्रियां होती हैं ॥ १३७ ॥

ह्रस्वप्लुतानुविद्धा लसत्पदाभ्यन्तराबला बाह्या ।
स्तब्धा मन्दा विषमा लघुक्रमा शोभना न गतिः ॥ १३८ ॥

अन्वयार्थौ-कुछ ऊपरको उछलके जो गति होय और शोभायमान पांव भीतर बाहर जिस चालमें होयँ और रुकरुकके थोडी कमती बढती चाल और हल्के पडें पांव जिनमें ( ईदृशी गतिः शोभना न ) ऐसी चाल अच्छी नहीं है ॥ १३८ ॥

निःस्वा विलम्बितगतिर्विषमगतिविषममानसा योषित् ।
दासी कुरङ्गगमना कुलटा द्रुतगामिनी भवति ॥ १३९ ॥

अन्वयार्थौ-( विलंबितगतिः निःस्वा भवति विषमगतिः योषित् विषमः मानसा, कुरंगगमना दासी, द्रुतगामिनी कुलटा भवति ) धीरे चलनेवाली स्त्री दरिद्रिणी होती है और कमती बढती चालवाली ऐसी स्त्री तीक्ष्ण मनवाली होती है और हिरणकीसी चालवाली स्त्री दासी होती है और शीघ्र चलने वाली स्त्री खोटी व्यभिचारिणी होती है ॥ १३९ ॥

## अथ छायालक्षणम् ।

छादयति लक्षणानि स्त्रीणामग्रे तदुच्यते छाया ।
लावण्यं सौभाग्यं तां लक्षणवेदिनो ब्रुवते ॥ १४० ॥

अन्वयार्थौ-( स्त्रीणां लक्षणानि छाया छादयति तत् अग्रे उच्यते; च पुनः लक्षणवेदिनः सौभाग्यं लावण्यं तां ब्रुवते ) स्त्रियोंके लक्षणोंको छाया ढक देती है तिसको आगे कहते हैं और लक्षणके जाननेवाले जो हैं सो इन लक्षणोंको सुन्दर सौभाग्य शोभा कहते हैं ॥ १४० ॥

वस्त्वतिरिक्तं किञ्चन महाकवीनां यथा गिरा स्फुरति ।
अंगे दक्षा तद्वन्मनोहरा लवणिमा छाया ॥ १४१ ॥

अन्वयार्थौ-( किंचन वस्त्वतिरिक्तं महाकवीनां यथा गिरा स्फुरति तद्वत् स्त्रीणाम् अंगे छाया दक्षा लवणिमा मनोहरा भवति ) कुछ वस्तुओंके सिवाय व्यंगरूप बडे कवीश्वरोंको जैसे वाणी फुरै है तैसेही स्त्रियोंके अंगमें कांति चतुरता नमकीनी शोभा मनको हरनेवाली होती है ॥ १४१ ॥

सौभाग्यं छायैव प्रमुखा निखिलेषु लक्ष्मसु स्त्रीणाम् ।
यदभावे भुवि वनिता पांचालीवन्न भोगार्हा ॥ १४२ ॥

अन्वयार्थौ-( निखिलेषु लक्ष्मसु स्त्रीणां छाया एव प्रमुखा सौभाग्यम् ) संपूर्ण चिह्नों वा लक्षणोंमें स्त्रियोंकी छाया जो है सोई मुख्य सौभाग्यकी करनेवाली है और ( भुवि यदभावे वनिता पांचालीवत् भोगार्हा न भवति ) लोकमें विना छायाके स्त्री व्यभिचारिणी की भांति भोगनेके योग्य नहीं होती है १४२

चित्तचमत्कृतिजननी हृदि संतापं तनोति जगतोऽपि ।
या दृष्टापि स्पष्टं सा छाया शस्यते सुदृशाम् ॥ १४३ ॥

अन्वयार्थौ-( चित्तचमत्कृतिजननी या स्पष्टं दृष्टा सती अपि जगतः हृदि सन्तापं तनोति सा सुदृशाम् ईदृशी छाया प्रशस्यते ) चित्तको प्रसन्न करनेवाली और जो स्पष्ट देखनेपरभी जगत्के हृदयको संताप करे तो स्त्रियोंकी छाया प्रशंसाके योग्य है ॥ १४३ ॥

यस्याः सर्वाङ्गीणा विराजते हंत लवणिमा छाया ।
चित्रमिदं सा जगति माधुर्यं समधिकं धत्ते ॥ १४४ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः सर्वांगीणा लवणिमा छाया हंत विराजते सा छाया जगति माधुर्यं धत्ते इदं समधिकं चित्रम् ) जिन स्त्रियोंके सब अंगकी



अच्छी छाया आनंदकी देनेवाली शोभायमान है सोई छाया जगत्में मीठेपनको धारण करती है, यह बहुत बडा अचरज है ॥ १४४ ॥

यदि सौभाग्यच्छायालङ्करणा विलसति ध्रुवं बाला ।
रूपेण लक्षणैर्वा प्रयोजनं जगति किं तस्याः ॥ १४५ ॥

अन्वयार्थौ-( यदि बाला सौभाग्यच्छायालंकरणा ध्रुवं विलसति, तस्याः रूपेण वा लक्षणैः जगति किं प्रयोजनम् ) जो स्त्री छायाही भूषण करके निश्चय शोभायमान है उस स्त्रीका रूप और लक्षण करके जगत्में क्या प्रयोजन है ? ॥ १४५ ॥

रूपाकारविहीने शुभलक्षणविरहिते नियतमङ्गे ।
सौभाग्यमस्ति यस्याः सा ललना दुर्लभा भुवने ॥ १४६ ॥

अन्वयार्थौ-( यस्याः अंगे रूपाकारविहीने तथा शुभलक्षणविरहिते सति सौभाग्यम् अस्ति, इह भुवने सा ललना नियतं दुर्लभा भवति ) जिस स्त्रीका अंग रूप आकार और शुभ लक्षणरहित होते हुए भी सौभाग्ययुक्त है ऐसी स्त्री निश्चय करके इस लोकमें दुर्लभ होती है ॥ १४६ ॥

यदि लावण्यच्छायाछन्नं शुभलक्ष्मयुक्तमङ्गं स्यात् ।
तद्द्वयसंयोगेन शृतदुग्धे शर्कराक्षेपः ॥ १४७ ॥

अन्वयार्थौ-( जो लावण्यरूप छायागुप्त और शुभ लक्षणयुक्त अंग होय तो उन दोनोंके संयोग करके जैसे औटाये दूधमें मिश्रीका डाल देना तैसेही जानिये । अन्वय यथाक्रम है ॥ १४७ ॥

यत्रोक्तं पूर्वस्मिन्नरौचित्यं तन्नरेऽपि तारावत् ।
यन्नास्मिन्नपि पुनः सकलं तन्नरवदभ्यूह्यम् ॥ १४८ ॥

अन्वयार्थौ-( यत्र पूर्वस्मिन् नरे उक्तम् तत् पुनः तारावत् न औचित्यं यदि अस्मिन् पुनः न उक्तं तत् सकलं नरवत् अभ्यूह्यम् ) जैसे कि पहले नरप्रकरणमें जो कहा सो फिर कहना तारोंकी भाँति उचित नहीं है और जो इस नारी प्रकरणमें फिर नहीं कहा सोई वह सब नर प्रकरणकी भाँति जानना चाहिये ॥ १४८ ॥

सामुद्रिकतिलकाख्यं पुरुषस्त्रीलक्षणं प्रपंचभयात् ।
दिङ्मात्रमत्र गदितं सापि समुद्रोक्तिरपि नान्या ॥ १४९ ॥

अन्वयार्थौ–( पुरुषस्त्रीलक्षणं प्रपंचभयात् सामुद्रिकतिलकाख्यम् अत्र यत् दिङ्मात्रं गदितम् सा समुद्रोक्तिः अपि अन्या न ) पुरुष और स्त्रीकेलक्षणोंवाली सामुद्रिककी टीका बढ जानेके भयसे यह दिशामात्र ही कहा है सो भी समुद्रका कहा हुआ है अर्थात् किसी दूसरका नहीं है ॥ १४९ ॥

इति श्रीमहत्तमश्रीनरसिंहात्मजदुर्लभराजमिरचिते सामुद्रिकतिलकापरनाम्नि पुरुषस्त्रीलक्षणे वर्णाद्यधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

---

## अथ कविवृत्तान्तकथनम् ।

अत्रास्ति कोऽपि वंशः प्राग्वाटाख्यस्त्रिलोकविख्यातः ।
नृपसंपदि वृद्धौ वा चालम्बनयष्टिरभवद्यः ॥ १ ॥

अन्वयार्थौ–( अत्र कः अपि त्रिलोकविख्यातः प्राग्वाटाख्यो वंशः अस्ति यः नृपसंपदि वा वृद्धौ आलंबनयष्टिः अभवत् ) इन तीनों भुवनोंमें प्रसिद्ध है नाम जिसका ऐसा कोई एक प्राग्वाटाख्य वंश है और जो वंश राजाकी संपत्ति वा समृद्धिमें सहारेकी लाठी हुआ ॥ १ ॥

आसीत्तत्र विचित्रश्रीमद्वाहिल्लसंज्ञया ज्ञातः ।
व्ययकरणपदामात्यो नृपतेः श्रीभामदेवस्य ॥ २ ॥

अन्वयार्थौ–( तत्र विचित्रश्रीमद्वाहिल्लसंज्ञया ज्ञातः श्रीभामदेवस्यनृपतेः व्ययकरणपदामात्यः आसीत् ) तहां चित्र विचित्र लक्ष्मी करके युक्त वाहिल्ल संज्ञासे जानाजाय जो सो श्रीभामदेव राजाका व्ययकरण मंत्रीहोताभया ॥ २ ॥

समजनि तदङ्गजन्मा प्रथितः श्रीराजपाल इति नाम्ना ।
प्रतिपक्षद्विपसिंहः श्रीनरसिंहः सुतस्तस्य ॥ ३ ॥
श्रीमान् दुर्लभराजस्तदपत्यं बुद्धिधाम सुकविरभूत् ।
यं श्रीकुमारपालो महत्तमं क्षितिपतिं कृतवान् ॥ ४ ॥

अन्वयार्थौ–( तदङ्गजन्मा श्रीराजपालः इति नाम्ना प्रथितः प्रतिपक्षद्विपसिंह श्रीनरसिंहः तस्य सुतः समजनि, श्रीमान् बुद्धिधाम सुकविः दुर्लभराजः तदपत्यम् अभूत्, श्रीकुमारपालः महत्तमं यं क्षितिपतिं कृतवान् ) तिसके अंगसे जन्म जिसका सो श्रीराजपाल नाम करके प्रसिद्ध है, सो शत्रुरूप हस्तियोंको सिंहके तुल्य श्रीनृसिंह तिसका पुत्र हुवा, सो लक्ष्मीवान् और बुद्धिका घर अच्छा कवि दुर्लभराज नामसे प्रसिद्ध होता भया और श्रीकुमारपाल तिसको राजा करता भया ॥ ३ ॥ ४ ॥



प्रक्षालयितुं मलमिव वाणी मज्जति चतुर्विधाम्बुधिषु ।
यस्य विलासवती गजतुरंगशकुनिप्रबंधेषु ॥ ५ ॥
तेनोपज्ञातमिदं पुरुषस्त्रीलक्षणं तदनु कविता ।
तस्यैव सुतेन जगद्देवेन समर्थयांचक्रे ॥ ६ ॥

अन्वयार्थौ–( गजतुरंगशकुनिप्रबन्धेषु चतुर्विधाम्बुधिषु मलं प्रक्षालयितुम् इव यस्य विलासवती वाणी मज्जति, तस्यैव सुतेन जगद्देवेन इदं पुरुषस्त्रीलक्षणम् उपज्ञातं तदनु कविता उपज्ञाता इव समर्थयांचक्रे) हाथी, घोडे, शकुनि इनके जो प्रबंध कहिये शास्त्रोंमें चारों दिशाके जो समुद्रकी भाँति मलके धोनेको जिनकी चमत्कारी वाणी गोता मारती है तिसके पुत्र जगद्देवने यह पुरुष स्त्रीके हैं लक्षण जिसमें ऐसा आद्य ज्ञान वर्णन किया तिसके पीछे कविता वर्णन करके इसको आर्या छंदमें बनाया ॥ ५ ॥ ६ ॥

अहमपि परेऽपि कवयस्तथापि महदन्तरं परिज्ञेयम् ।
ऐक्यं रलयोरिति यदि तत्किं कलभायते करभः ॥ ७ ॥
सुललितपदा सुवर्णा सालंकारा सुदुर्लभा साऽऽर्या ।
एकाप्यर्थसुरम्या किं पुनरष्टौ शतं चैताः ॥ ८ ॥

अन्वयार्थौ–(अहम् अपि परेऽपि कवयःसंति,तथापि-महदन्तरंपरिज्ञेयम् यदि रलयोः ऐक्यम् इति तत् किं करभः कलभायते ? सुललितपदा सुवर्णा सालंकारा अर्थसुरम्या एकापि सा आर्या सुदुर्लभा अष्टौ शतम् एताः किं पुनः वक्तव्यम् ) मैं भी कवि हूं और भी कवि हैं तौभी बडा अन्तर समझना चाहिये, क्योंकि जो रकार और लकारकी एकता है तो क्या करभ ( ऊंट ) कलभ ( हाथी ) होजायगा ? सुन्दर है पद जिसमें और सुन्दरही हैं अक्षर जिसमें और अलङ्कार सहित अर्थ करके सुन्दर आर्या एकभी बनाना

कठिन है और जो वे आठ सौ ऐसे अर्थ सहित होंय तो फिर क्या कहना है ॥ ७ ॥ ८ ॥

परहृदयाभिप्रायं परगदितार्थस्य वेत्ति यः सत्त्वम् ।
सत्त्वं भुवने दुर्लभसम्भूतिः सुकविरेकः ॥ ९ ॥
नृस्त्रीलक्षणपुष्पां स्रजमेतां सुरभिवर्णगुणगुम्फाम् ।
मृगराजसभाविख्याता अपि सन्तः कुरुत कण्ठस्थाम् ॥१०॥

अन्वयार्थौ-( यः परगदितार्थस्य हृदयाभिप्रायं वेत्ति, स सत्त्वम् तथा भुवने सत्त्वं दुर्लभम् एकः सुकविः एव सम्भूतिः हे मृगराजसभाविख्याता सन्तः अपि पुरुषा एतां नृस्त्रीलक्षणपुष्पां सुरभिवर्णगुणगुंफां स्रजं कण्ठस्थां कुरुत ) जो दूसरेके कहे हुए प्रयोजनको जानले सोई सत्त्व है और लोकमें सत्त्व ही दुर्लभ है-और एक सुन्दर कवि है यही सम्भूति है हे सिंहसभामें विख्यात पंडितो ! इस पुरुष स्त्रीके लक्षणरूप हैं पुष्प जिसमें और सुगन्धित रंगवाले इन गुणों करके गुँथी हुई मालाको कण्ठमें स्थित करो ॥९॥१०॥

इति सामुद्रिकशास्त्रे कविवृत्तान्तकथनम् ॥

सामुद्रिकभाषेयं राधाकृष्णेन निर्मिता रम्या ॥
लब्ध्वा साहाय्यं वै विदुषो घनश्यामनाम्नश्च ॥ १ ॥
गिरिवेदनवक्ष्माभिः प्रमिते संवत्सरे सुपौषे च ॥
मेचकपक्षे रुचिरे दुर्गातिथियुतरवेर्वारे ॥ २ ॥
अर्गलपुरवरनगरे कालिन्दीतीरसंस्थिते रम्ये ॥
नृस्त्रीलक्षणशास्त्रं पूर्णं जातं हि लोकेऽस्मिन् ॥ ३ ॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

पुस्तकें मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस
कल्याण-बम्बई

B.S.V.PRESS